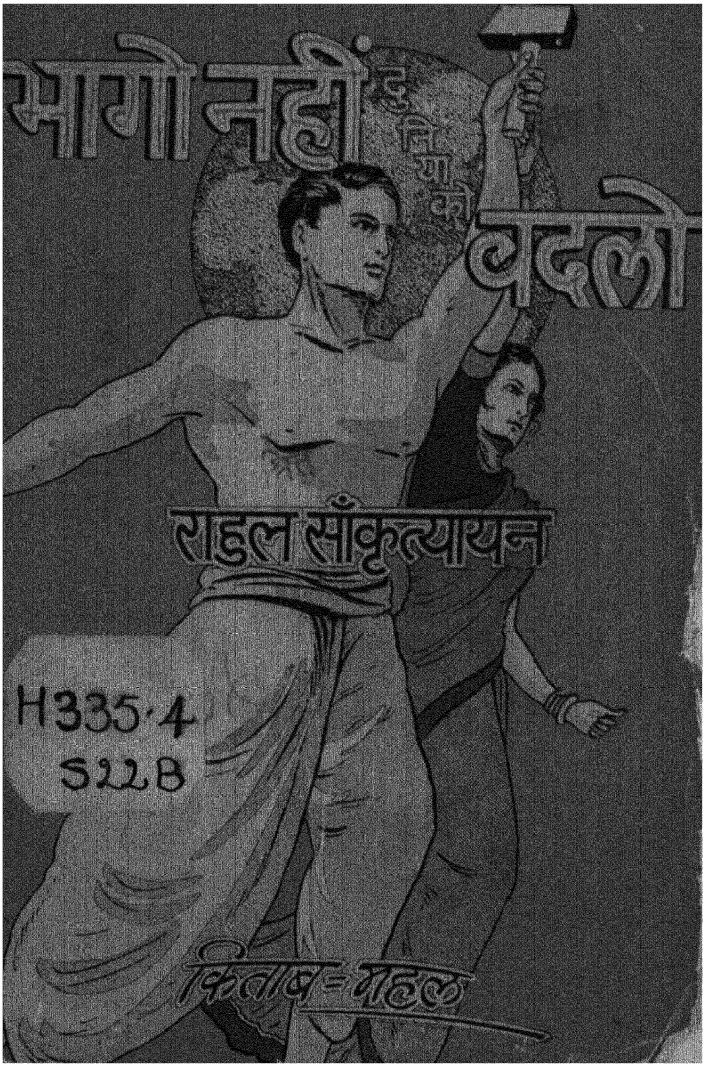
UNIVERSAL
LIBRARY

OU_186054

UNIVERSAL
LIBRARY



H335.4
S22B

OUP—67—11-1-68—5,000.

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H335.4 322B Accession No. H25; H2556

Author सांकृत्यायन, राहुल

Title भागो नहीं दुनियाको बदलो · 19;

This book should be returned on or before the date last marked bel

यह छाप, १९५५
(सोधि और बुद्धा के)
लेखक
राहुल सांकिरतायन
प्रकाशक
किताब महल, इलाहाबाद
मुद्रक
राम प्रिंटिंग प्रेस
इलाहाबाद

तनिक अरज

पहिली छाप

इस किताबकी भाखा देखके कितने ही पढ़नेवाले अचरज करेंगे, लेकिन मुझे उमेद है, कि वह नाराज नहीं होंगे; काहेसे कि यहाँ उन्हें ऐसे सैकड़ो सबद मिलेंगे, जिनको उन्होंने माँका दूध पीनेके साथ सीखा है और अब भी यह ऐसे ही फिर मीठे लगते होंगे। लेकिन मैंने इस पोथीको भाखा फैलानेके ख्यालसे नहीं लिखा। एक बरस पहले जो कोई कहता, कि तुम इस भाखामें एक किताब लिखोगे, तो मुझे बिसवास न होता। मैंने छपरा-बलियाकी भाखा में आठ छोटे-छोटे नाटक लिखे, और मैंने देखा कि बातोंको रखनेमें कोई कठिनाई नहीं है। उस भाखामें मै इस पोथीको लिख सकता था, लेकिन फिर वह चार-पाँच जिलो हीके कामकी होती। लेकिन इस तरहकी हिन्दीमे लिखना बहुत मुसकिल मालूम होता था। तो भी मैंने सोचा कि जिन लोगोंके पास मै अपनी बातोंको पहुँचाना चाहता हूँ, उनके लिये ऐसी ही भाखामें लिखनेकी कोसिस करनी चाहिये। पोथी लिखते बखत मेरे दिलमें हमेसा इस बातका ख्याल रहा है, कि जिन्होंने प्राइमरी तक हिन्दी पढ़ी है, वह इसे समझ पायें। इस काममें सन्तोखी और दुखरामने मेरी बड़ी मदद की है, जो यह दोनो मेरे सामने न रहते, तो मैं बहक जाता। मेरी जनम-भाखा बनारसी (कासिका) है, लेकिन ३१ बरसोंसे छपरामें ज्यादा रहनेके कारन मुझे वहींकी भाखाका ज्यादा ग्यान है। बनारसी बोलने लिखनेमें मैं गलती कर जाता हूँ, तो भी भाखा लिखते बखत मुझे बनारसी और छपरही भाखाओंसे बहुत मदद मिली है। किसी समय मैं सालसे बेसी बुन्देलखण्डमें रहा था और उस भाखाने भी मुझे जरूर मदद की। इसके बाद सबसे बेसी मदद सिरी सतनरायेन दूबे (सेठवी) से मिली। मै बोलता जाता था, और वह कागजपर उतारते जाते थे। कागज पर उतारनेके साथ-साथ वह सबदोंके बारेमें अपनी राय देते जाते थे, जिससे भाखा और आसान बन सकी। वह भी राय देनेमें बहक जाते, जो उनके सामने

अपने गाँवकी पुरबहिया (अहिरिनि) भौजाई न होती। इस तरह फैजाबाद जिलेकी अवधी भाखासे भी मदद मिली। तो भी हिन्दी पढ़नेवालोंके थोड़ेसे जिलोंकी मदद मिली। हो सकता है, इस पोथीमें कुछ ऐसे सबद भी आ गये हों, जो पच्छिमके कुछ जिलोंमें न चलते हों। मैंने अपने जान ऐसे सबदोंको न लेनेकी कोसिस की।

राजनीतिको थोड़ेसे पढ़े-लिखे आदमियोंके हाथमें देकर अब चुप बैठा नहीं जा सकता। ऐसा करनेसे जनताको बराबर नुकसान उठाना पड़ा। जनताको चोट देनेका अख्तियार दे देनेसे काम नहीं चलेगा, उसे अपनी भलाई बुराई भी मालूम होनी चाहिये और यह भी मालूम होना चाहिये कि राजनीतिके अखाड़ेमें कैसे दाँव-पेंच खेले जाते हैं। इस पोथीमें इस बातके समझानेकी मैंने थोड़ी-सी कोसिस की है। लोगोंको, इससे कुछ फायदा होगा या नहीं, इसे मैं नहीं कह सकता। और इतना बड़ा काम एक पोथीसे हो भी नहीं सकता। मुझे उमेद है कि मेरे दूसरे भाई अपनी मजबूत कलमसे और अच्छी किताबें लिखेंगे; तब ज्यादा काम हो सकेगा।

हो सकता है किसी-किसी भाईको पोथी पढ़ते वखत कुछ सबद कड़े मालूम हों—दुखराम भाईकी कोई-कोई बातें देहमें तीर जैसी लगती हैं, लेकिन दुखराम जैसे किसानको हम वैसी ही भाखामें बोलते सुनते हैं। तो भी जो किसी भाई के दिलमें चोट लगे तो मैं छमा माँगता हूँ। मै किसी एक आदमीको दोसी नहीं मानता, आज जिस तरहका मानुख जातिका ढाँचा दिखाई पड़ता है, असलमें सब दोस उसी ढाँचेका है। जब तक वह ढाँचा तोड़कर नया ढाँचा नहीं बनाया जाता, तब तक दुनिया नरक बनी रहेगी। ढाँचा तोड़ना भी एक आदमीके बूतेका नहीं है, इसके लिये उन सब लोगोंको काम करना है, जिनको इस ढाँचे-ने आदमी नहीं रहने दिया।

आखिरमें मैं एक बार फिर सिरी सतनरायेन दूबे (सेठवी) को धन्नवाद देता हूँ, कि उन्होंने रात-दिन लगाके बारह दिनों (१७ मई—२८ मई) में लिख डालनेमें अपनी कलमसे मुझे मदद दी!

प्रयाग
२८ मई १९४४

-राहुल सांकृतायन

तीसरी छाप

तीन बरिस पहिले मैंने इस पोथीको लिखा था। तबसे अपने देसमें बहुत बड़ा फेर-फार हुआ है। उस बखत भी मैं देखता था कि लड़ाईके पीछे हिन्दुस्तानको गुलाम बनाकर रखा नहीं जा सकता, सो बात अब आँखके सामने है। गुलामी गई मुदा गरीबी बाकी है। गरीबी दूर करके हिन्दुस्तानको एक बलवान देस बनना है। रूस और अमिरकाके बाद तीसरी जगह अपने देसको लेनी है। मुदा, यह मुँहसे कहनेसे नहीं होगा। इसकी खातिर समूचे देसमें पचैती खेती, नये ढगकी खेती और कल-कारखाने छा जाना चाहिये और जल्दीसे जल्दी। कुल पच्चीस बरिस हमारे पास है। इसी बीच हमें यह कुल मजिल मारना है। यह तभी हो सकता है कि सब जगह सेठोंके "लाभ-सुभ" को हटाकर देसकी भलाईको सामने रखा जाय। सेठ और सेठके पायक लोग लम्बी-चम्बी बात करके भरमाना चाहते हैं और देसकी भलाईका बहाना करके। हमें बात नहीं, काम देखना है। काममें देख रहे हैं कि लड़ाईके बखत भी सेठ लोगोंने दोनों हाथोंसे नफा बटोरा और आज भी उन्हींकी पाँच अँगुरी घीमें है। खाली चीनी-परसे आँकुस (कनटरोल) उठानेसे कई करोड़ रुपैया सेठोंकी थैलीमें चला गया। कपड़ा और अनाज परसे आँकुस उठनेपर और बहुत करोड़ रुपैया सेठों और चोरबजारी बनियोंकी थैलीमें जायगा। कब तक थोड़ेसे आदमियोंके हाथमें देसका सारा धन और देसकी सारी जिनगी बटुरती जायगी? और, ऊपरसे जो बेसी नफापर बड़ा एकसटिकस (इनकम टेक्स) भी सेठोंपरसे उठा लिया गया है। सेठोंके लिए सब काम कितनी फुर्तीसे हो रहा है, सो हमारे सामने है।

दूसरी ओर जनताकी भलाईके सब कममें आज-कल आज-कल हो रहा है। जिमीदारी उठानेकी बात खटाईमें पड़ी हुई है। कमेरोंके खिलाफ खूब हथियार चलाया जा रहा है और उनको फोड़कर आपसमें लड़ानेकी तदबीर की जा रही है। बाहरसे, कमेरोंके परघट दुसमन बारयाम उछल-कूद रहे हैं। मुदा, एक ही भरोसा है "जिसको सालिगरामको भूनकर खानेमें अबेर नहीं हुई उसे बैगन भूननेमें कितनी देर लगेगी?" जनताकी तागत बहुत बढ़ गई है। जनताके

सेवकोंकी भी तागत बहुत बढ़ी है। कुल जन-सेवकोंको एक होनेका वखत आ गया है। घरके भीतर कमुनिस, सोसलिस, फरवडब्लिाकी, करन्तिकारी सोसलिस आपसमें चाहे लड़ो मुदा बूझलो कि अकेले चना भाड नहीं फोड़ सकता। जो सब लोग आपुसमें लिमकर काम नही कर सकते हैं तो कमेरोंके पचैती राज (समाजवादी प्रजातन्त्र) का सपना दूर बहुत दूर चला जायगा।

लडाईके बाद अब क्या करना चाहिये, यही बात इस छापमें बढ़ादी गई है। और पहले की बहुत-सी पाँती और एक समूचा अधियाए निकाल दिया गया है।

परयाग
१६-१-४८

—राहुल सांकिरतायन

चौथी छाप

सात बरस बाद चौथी छाप निकल रही है। पोथीके खतम हो जानेपर भी इतनी देर लेखक और परकासक दोनोंकी ढिलाईके कारन हुई। इस छापमें भी बहुत सी बातें घटा बढ़ा दी गई हैं।

परयाग
८-१०-५५

—राहुल सांकिरतायन

विषय-सूची

१—दुनिया नरक है	...	...	१
२—दुनिया क्यों नरक है ?	...	...	२०
३—जोंक-पुरान	...	...	३६
४—जोंकोंके दुसमन मरकस बाबा	...	...	५८
५—वह देस जहाँ जोंकें नहीं हैं	...	...	८२
६—भसमासुर भूतनाथपर चढ़ दौड़ा	...	...	११४
७—पागल सियार गोबकी ओर	...	...	१२५
८—लाल चीन	...	...	१४४
९—सान्ती का रस्ता	...	...	१५८
१०—हिन्दुस्तानकी आजादी	..	...	१७१
११—पंडा, मुल्ला, सेठ	...	...	१८१
१२—औरतकी जाति	...	...	१९४
१३—अछूत और सोसित	...	...	२०६
१४—मरकस बाबाका रस्ता बिदेसी है ?	...	...	२१८
१५—ग्यान और भाखा	...	...	२३३
१६—सुतन्त भारत	...	...	२४९
१७—दुनिया-जहानकी बात	...	...	२५८
१८—अनाज कैसे बढ़े ?	...	...	२६७
१९—कल-कारखानोंका फैलाव	..	...	२७९
२०—कमेरोंका राज	...	...	२८८

भागो नहीं बदलो

अध्याय १

दुनिया नरक है

और जगह जानेकी क्या जरूरत है, सामने देखते नहीं, यह दुनिया नरक नहीं तो क्या है ?—दुखरामने सन्तोखीसे कहा। अभी दोनोंकी बात यहीं तक थी, कि एक तीसरा जवान आया, जिसे दोनोंने 'आओ भैया' कहकर पास बैठनेके लिए कहा। अब फिर उनकी बात शुरू हुई। भैयाने ही पहले कहा—कहो क्या बात हो रही थी, मैं भी सुनूँ।

सन्तोखी—यही दुखराम दुनियाका रोना रो रहे थे, दुनिया नरक है, नरक।

भैया—तो इसमें कोई सक है ? देखते नहीं हमारे गाँवमें पचास घर हैं, लेकिन उनमें कितने घर हैं, जो पेट भर खा सकते हैं ?

दुखराम—मैं समझता हूँ, पाँचसे अधिक नहीं।

भैया—और वह पाँच भी सूखा-रूखा घास-पात खाकर किसी तरह पेट भर लेते हैं, बाकी पैंतालीस घरोंमें किसीको एक साँझ खानेको मिलता है, किसी-को दो दिन पर मिलता है। चैतमें जब फसल कटती है, तो एकाध महीना पेट भर खा लेते हों। छोटे-छोटे बच्चोंको देखते नही, कैसे उनका पेट कमरसे सटा हुआ है ! और किसीके लिए होगा कभी-कभी सूखा—अकाल, लेकिन हमारे यहाँके लोगोंके लिए तो सदा ही अकाल रहता है, उन्हें सदा ही भूखा रहना पड़ता है।

भैया—जानते हो लोग जो इतना बीमार पड़ते हैं, वह भी भूखेही रहने के कारन।

दुखराम—क्यों नहीं भैया! पेटमें जब अन्न नहीं रहता, तो जान पड़ता है, आग भभक उठी है और सारे शरीरमें लहर चलने लगता है।

भैया—ठीक कहा दुक्खू भाई! जब शरीरको अन्न नहीं मिलता, तो वह दुर्बल हो जाता है। और सुना नहीं है 'दुर्बलोदैवघातकः'। कोई भी आस-पास से बीमारी जा रही हो, दुर्बल आदमीको देखते ही उसका मन ललचा जाता है। अकालमें जितने लोग भूखे मरते हैं, उससे तिगुने बीमारीसे मर जाते हैं। अभी जो बंगालमें अकाल पड़ा था, जानते हो वहाँ कुछही महीनोंमें साठ लाख आदमी मरे, जिनमें भूखसे मरने वाले २० लाखसे ज्यादा न होंगे। मालूम है साठ लाखके अकाल-मरनके सुननेसे तुम्हें वह रोमांचकारी दुख नजर नहीं आएगा, जो मरनेसे पहले उनपर बीता।

—क्या ऐसी बीती भैया?

भैया—कुछ न पूछो, यदि वह रातको सोते और सबेरे मरे पाये जाते, तो इतना दुख न होता। लेकिन उन्हें लाज छोड़नी पड़ी। सुना होगा तुमने, कलकत्ताकी सड़कों पर पचास-पचास हजार भूखे नर-नारी बाल-बच्चे पड़े हुए थे। यह ऐसे लोग नहीं थे, जिन्हें भीख माँगने की बान थी। कितने ही उनमें पढ़े-लिखे भी थे, कितनी ही औरतें ऐसी थीं, जिन्होंने घरके चौखटसे बाहर पैर नहीं रखा था।

सन्तोखी—और वह भी घरसे निकल कर शहरकी सड़कों पर चली आईं।

भैया—सारा बड़प्पन, सारा पर्दा-पानी तीनही दिन तक चलता है, चौथे दिन जब भूख से अँतड़ियाँ तिलमिलाने लगती हैं, तो सब लाज-सरम इज्जत-पानी हट जाता है। फिर एक दो आदमीके ऊपर आफत आई हो, तो हो सकता है, लाज-सरम के मारे आदमी घरमें बैठा ही बैठा जान दे दे। लेकिन बंगालमें यह एक घरकी बात नहीं, एक गाँवकी बात नहीं, जिले की बात नहीं थी, बल्कि एक सूबे के दो-दो तीन-तीन करोड़ आदमियों पर यह आफत आई थी। अन्न परानसे भी मँहगा था। पहले लोगोंने जेवर बेंचकर रुपये-दो-

रुपये सेरका चावल खरीदा, लेकिन जेवर कितने लोगोंके पास था ? लोगों-ने खेत बेंचा। खेत अन्न देते, लेकिन तीन महीने बाद—तब तक घरके लोग जिएँ कैसे ? इसलिए लोगोंने अपने खेतोंको माटीके मोल बेंचा। बैल, गाय बेंचा, घर भी बेंच दिया, तब भी अन्न दुर्लभ था, खरीदनेके लिए पासमें कुछ भी नहीं था। करोड़-करोड़ आदमी कुएँ, तालाबमें डूबनेके लिए तैयार नहीं हो सकते थे। जानते हो न जीनेका मोह ?

सन्तोखी—हाँ भैया ! जीनेके लिए आदमी क्या नहीं करता ?

भैया—वे लोग जीना चाहते थे। सुना कि कलकत्ता बड़ा शहर है। वहाँ देस-देसाउरसे अन्न आता है, वहाँ जानेसे क्या जाने, जीनेका कोई रास्ता निकल आए। इसलिए घरके घर खाली हो गए। लोग भूखे-प्यासे कलकत्ता-की ओर चल पड़े। सारे बंगालके लोग कलकत्ता कैसे पहुँच सकते थे ? भूखो-के शरीरमें इतनी ताकत कहाँ थी, कि साठ-सत्तर मीलसे ज्यादा चल सकें। कितने ही रास्तेमें मर गए, कितनेही कलकत्ताकी सड़कोंपर भी पहुँच गए। जानते हो न कलकत्ताकी बरखा ?

दुखराम—हाँ भैया ! वहाँ तो जान पड़ता है, बारहो महीने बरखा रहती है।

भैया—लेकिन यह सन् १९४३ के बरखाके ही महीने थे, जबकि भूखे नर-नारी कलकत्ताकी गलियोंमें पहुँचे। कितनोंके पास तन ढाँकनेके लिए कपड़ा नहीं था वह शरीरमें फटे बोरे लपेटे थे। मूसलाधार बरखा बरसती रहती थी और सड़कपर, पगडंडियों पर ये भीगते रहते थे।

सन्तोखी—क्या वहाँ धरमसाला-मुसाफिरखाना नहीं है ?

भैया—धरमसाला-मुसाफिरखाना दो-चार हजारके लिये हो सकता है, लाख-लाख आदमियोंके लिए धरमसाला कहाँ तैयार है ? कलकत्तामें भी सब को कहाँ खानेको मिलता ? लड़के और सयाने भी कूड़ों परसे बीनकर दाना खाते थे, सड़कपर फेंके सूखे टुकड़ों को भी कुत्तों के मुँहसे छीन लेते थे। जीवनका लोभ ऐसाही है। आदमी कैसे भी हो, जीना चाहते हैं। मैं समझता हूँ, नरकमें भी आदमी इसी तरह जीनेकी इच्छा रक्खेगा।

दुखराम—भैया ! इससे बढ़कर और नरक क्या होगा ?

भैया—हाँ मुर्दे सड़कोंपर पड़े रहते थे, कोई उठानेवाला नहीं मिलता था। यह कलकत्तेकी बात थी, देहातमें तो और भी बुरी हालत थी, क्योंकि वहाँ कोई पूछ-ताछ करनेवाला न था, न डाक्टरी महकमा, न डाक्टर, न मुर्दोंकी तस्वीर खींचकर अखबारोंमें छापने वाले। लाखो आदमी दिल मसोसकर चुपचाप अपने गाँवोमें मर गए। और जानते हो, कलकत्ताकी सड़कोंपर कुत्ते-बिल्लीकी मौत मरनेवाले ये लोग कौन थे ?

दुखराम—नहीं भैया ! बताओ, बंगाली रहे होंगे।

भैया—हाँ, बंगाली। इनमें थे बाम्हन, इनमे थे कायथ, इनमें थे ग्वाले, इनमें थे सेख, इनमें थे सैय्यद, सब जाति, सब धरमके लोग थे। भूख ने सब को एक जैसा पंथका भिखारी बना दिया। इतना ही नहीं, भूखने उनसे इज्जत बेचवा दी।

सन्तोखी—क्या कहा भैया इज्जत बेंचवा दी !

भैया—हाँ जान पड़ता है, इज्जत भी आदमी तभी रखता है, जब पेटमें दो दाना पड़ता है। जवान लड़कियाँ, जवान बहुएँ और अधेड़ औरतें एक वक्त के भोजनके लिए अपनी इज्जत बेच रही थी। कलकत्ताकी सड़कों पर इज्जत बेंची जा रही थी। चटगाँव, नवाखाली, बरीसालकी गलियोंमें इज्जत बिक रही थी, बाजारों नहीं हर जगह इज्जत बिक रही थी। अन्न इज्जतसे बहुत महँगा था। माँ अपनी बेटीकी इज्जत का सौदा करती थी। पति अपनी स्त्रीकी इज्जत बेच कर कुछ लानेका इसारा करता था। कलकत्तामें कितनी नारियाँ खानगी (बेसवा) बननेके लिए मजबूर थीं, जानते हो ?"

सन्तोखी—बहुत होंगी।

भैया—बहुत कहनेसे वह दिल दहलानेवाला नजारा हमारे सामने नहीं आता। किसीने हिसाब लगाकर बतलाया था, कि एक समय तीस हजार औरतें अपनी इज्जत से चावल बदल रही थीं।

दुखराम—इससे तो एकही बार आँख मूँद लेना अच्छा होता।

भैया—लेकिन यह एक आदमीके आँख मूँदनेकी बात नहीं थी, करोड़-

करोड़ आदमी कैसे बिना हाथ-पैर हिलाये मरनेके लिए तैयार हो जाते? इसी लिए भूखने उनसे इज्जत बेचवाई, जो कभी इज्जतके लिए मरते थे। साठ लाख आदमी मर गए, क्या उससे कम हैं, यह लाखों औरतोंका इज्जत बेंचना?

सन्तोखी—यह उससे भी बुरा है।

भैया—और जब फसल हुई, लोगोंको थोड़ा-थोड़ा अन्न मिला, तो बरसात बीतने भी न पाई कि मलेरियाने आ घेरा। घर-के-घर बीमार पड़ गए, कोई पानी देनेवाला नहीं रह गया। किसी-किसी गाँवमें दो-तिहाई आदमी मलेरिया और महामारीमें मर गए। घर-के-घर सूने हो गए। मुर्दे सात-सात दिन तक घरके भीतर सड़ा किए।

सन्तोखी—जीता ही देस मसान हो गया।

भैया—तो देखा न सन्तोखी भाई! इससे बढ़कर नरक कहाँ होगा, जहाँ इस तरह घुल-घुल कर आदमीको मरना हो और बेइज्जत बे-पानी। वह तो बंगालकी बात है, अभी १९४४ में जान रहे हो, बिहारमें क्या हो रहा था?

दुखराम—बिहारमें भी कुछ हुआ भैया?

भैया—कुछ नहीं, बहुत। चम्पारन, मुजफ्फरपुर, दरभंगाके सिरिफ तीन जिलोंमें और वह भी सिरिफ तीन-चार महीनेमें एक लाखसे ऊपर आदमी हैजा और मलेरियासे मर गए।

सन्तोखी—मरना-जीना भगवानके हाथमें है।

दुखराम—जो मरना-जीना भगवानके हाथमें होता, तो दवा-दारू करने की जरूरत न होती। फिर सन्तोखी भाई! तुम्हें खानेकी जरूरत नहीं, जो भगवानको जिलाना होगा, तो तुम्हें हवा पिलाकर भी जिला देंगे!

भैया—कोई आदमी बहुत बूढ़ा सरीरसे मजबूर होकर मरता है, तो उसके लिए कहा जा सकता है, कि बुढ़ापेको कोई नहीं रोक सकता, बूढ़ेको मौतसे कोई नहीं बचा सकता। लेकिन बूढ़ेको भी बीमार पड़ने पर हम भागके ऊपर छोड़ नहीं देते। उसकी दवा करते हैं, पथ्य देते हैं। बिहारके तीन जिलोंमें एक लाखसे अधिक आदमी मर गए, वह बूढ़े नहीं थे। बीमारीने इसलिए

उन्हें धर दबाया, कि साल-साल तक आधा पेट और भूखे रहते-रहते उनके सरीरमें सकती नहीं रह गई थी। मलेरियाके कीडोंने जब उनके ऊपर धावा बोल दिया, तो उन्हें रोकनेके लिए भीतर ताकत नहीं रह गई। हैजाके कीड़े जब पानीके रास्ते या साँससे होकर भीतर पहुँचे, तो उन्हें निकालनेके लिए उनके पास कोई ताकत नहीं बच रही थी। तन्दुरुस्त आदमीको बीमारी कम लगती हैं।

सन्तोखी—बीमारी न होने से आदमी तन्दुरुस्त होता है ?

भैया—नहीं सन्तोखी भाई ! यह बात नहीं है। पुस्टईवाले खान-पानसे आदमी तन्दुरुस्त होता है और तन्दुरुस्त होने पर बीमारी उसके पास नहीं आती।

दुखराम—तो अन्नही मूल हुआ ?

भैया—अन्नही मूल है, अन्न ही परान है, अन्नके मिलनेसे जीवन रहता है, अन्नके मिलनेसे इज्जत बचती है।

दुखराम—तो जो अन्न मिले, तो दुनियाका आधा नरक खतम हो जाएगा।

भैया—हाँ, दुक्खू भाई ! इस बातको गाँठमें बाँध रक्खो। हम आगे बतलाएँगे, कि क्यो अन्न रहते भी अन्न नहीं मिलता, पथ्य रहते भी पथ्य नहीं मिलता, दवा रहते भी दवा मुयस्सर नहीं होती।

सन्तोखी—'सन्तोखी परम् सुखम्,' हमने तो यही सुना था।

भैया—तुम्हारे ऊपर भी वह आ सकती है, आती तो देसमें कौन बच सकता, कल बंगालकी बारी थी, आज मिथिला-तिरहुतकी और बिहान हमारी तुम्हारी भी बारी आ सकती है। 'सन्तोखं परम् सुखम्' को उसने लिखा होगा, जिसे कभी भूखसे पाला न पड़ा होगा। उसका पेट भरा होगा, वह निश्चिंत सोया रहा होगा। लेकिन इतनेहीसे दुनियाका नरक होना पूरा नहीं हो जाता।

दुखराम—हाँ, खाना कपड़ा तो मूल है, लेकिन और भी पचासों चिन्ताएँ हैं, पचासों विपदाएँ हैं।

भैया—ठीक है दुक्खू भाई ! चिन्ताकी कुछ मत पूछो। माँ-बाप हैं, घर में चार बीघा खेत है, किसी तरह गुजारा चल जाता है। फिर हो जाते हैं चार लड़के और चार लड़कियाँ। अब चार बीघे खेतसे दस मुहोंका काम कैसे

चल सकता है। फिर जैसे-जैसे उमर बीतती जाती है, वैसे-वैसे मुँह भी बढ़ते जाते हैं, आहार भी बढ़ता जाता है। लड़कोका ब्याह करना, गरीब होने पर लड़की खरीदने हीमें खेत बिक जाएगा, इज्जतदार होनेपर एकही लड़कीके ब्याह में सारा खेत चला जायगा। फिर परिवारको भी भूखा रहना पड़ेगा। दो हाथ की चादर सिर ढाँको तो पैर नगा, पैर ढाँको तो सिर नगा।

दुखराम—चार बीघा क्या चालिस बीघा वालोंको भी चिन्ता खाये जाती है।

भैया—क्यों न खायेगी ? चार लड़के हुए, तो दूसरी पीढ़ीमें दस-दस बीघा रह जायगा, मानो उनको जो एक पीढ़ी या पन्द्रह सालके लिए कुछ कम चिंता हुई, लेकिन तीसरी पीढ़ीमें तो फिर दो-दो बीघा खेत और आठ-आठ लड़के-लड़की। जिसके घरमें आज दाल भी है, तो नमक नहीं है।

दुखराम—और फिर भैया ! गाँवमें आधेसे अधिक तो ऐसे घर हैं, जिनके पास खेती-पथारी भी नहीं है। दिन भर मजदूरी करते हैं, शामको जो सूखा-रूखा मिल गया, तो लड़को-बालोंके मुँहमें अन्न पड़ा। रोज कमाना, रोज खाना। एक दिन गाड़ी बैठ गई, तो हाहाकार। तीस दिन मजूरी भी तो नहीं मिलती और सालमें छ महीना भी करनेके लिए काम नहीं रहता। सिरिफ बोने, काटनेके वक्त काम रहता है।

भैया—मजूर पेसा आदमियोंकी तो और आफत है। जेठ, असाढ़, सावन-का दिन काटना मुस्किल हो जाता है। जो महुआ उस साल रहा, तो कुछ अवलम्ब लगा।

दुखराम—और महुआ भी तो अब नोहर (दुर्लभ) हो गया है। कहाँ पैसेका दो सेर और कहाँ वह भी अब चार आना सेर लग गया। आमकी गुठली जमा करके कुछ दिन रोटी पकाते-खाते थे, और अब उसके खाने वाले इतने अधिक हैं, कि सबको गुठली कहाँ से मिलेगी ?

भैया—दुक्खू भाई ! इसे भी क्या कोई जीना कहोगे ? यह नरककी जिन्दगी नहीं तो और क्या है ? फिर देखते नहीं, मजूर-घरोंकी क्या दसा है ? फूस-की छत भी उन्हें ठीकसे मुयस्सर नहीं। एक बार छा पाये, तो चाहे सड़-गल जाय, और बरसातका आधा पानी भीतर ही जाता हो, लेकिन फिर उसको नया

करना मुस्किल है। कितनी छोटी छत, कितना छोटा दुवार, भीतर सीड़ बाहर नाबदान और कूड़े-करकटकी बदबू! यह क्या आदमियोंके रहने लायक घर है? इन्हीं सड़ी झोपड़ियोंमें बच्चे पैदा होते हैं। जब वह आँख खोलते हैं, तो उनके आस-पास क्या दिखलाई पड़ता है। गरीबीका नंगा नाच, तिलमिलाती अँतड़ियाँ, सूखा मुँह, नंगा बदन!

दुखराम—आजकलके जमानेमें बीस-बीस रुपयेकी साड़ी कौन खरीदेगा? फटा-चीथड़ा भी तो नसीब नहीं होता। जान पड़ता है, टाट भी पहिननेको नहीं मिलेगा।

भैया—हाँ, और बच्चा नङ्गा-भूखा-सरीर और वही गरीबी चारो ओर देखता है। सूखे थनोंसे दूध निकालना चाहता है। इस पर भी जो हमारे देसके आधे बच्चे बचपन हीमें मर जायँ तो बड़े अचरजकी बात है।

दुखराम—हाँ! भैया सतमी के बच्चो को नहीं देखा? दो तीन बरसो के भीतर उसका लड़कोंसे भरा घर खाली हो गया।

सन्तोखी—मैं समझता हूँ, बच्चोंके लिए अच्छाही हुआ? पेट भर खाना किसे कहते हैं, क्या इसे उन्होंने कभी जाना? जाड़ेमें बेचारे जो किसीके कोल्हुआड़ेमें आग तापने जाते, 'ऊख चुराकर ले जायगा' कह कर दुतकार दिये जाते। मानों वह आदमी नहीं कुत्ते थे। कोदोका पुवाल या ऊखकी पत्तियोंमें घुस कर रात बिता देते। भूख लगती, तो किसीके द्वार पर खड़े होते। दया आई, तो किसीने एक कौर दे दिया, नहीं तो फिर फटकार। जड़ैया (मलेरिया) में सब गिर जाते, तिल्ली बढ़ती, पेट फूल कर कुंडा जैसा हो जाता, मुँह पीला और आँखें फूल जातीं। फिर एक-एक करके पके पत्तेकी तरह झड़ने लगते! क्या यह आदमीका जीवन है?

भैया—अब समझा न, यही नरकका जीवन है! तुम समझते होगे कि सहरके साफ कुर्त्ता-धोती पहननेवाले बाबू लोग अच्छी जिन्दगी बिताते होगे?

दुखराम—हाँ, भैया! हम तो ऐसाही समझते हैं—वह तो पान भी खाते हैं, सिनेमा भी देखते हैं, हम लोगोंको देख कर गन्दा-गँवार कह कर हट जाते हैं।

भैया—उन सफेद कपड़ोंके भीतर ही भीतर कितना धुआँ उठ रहा है, यह तुम्हें नहीं मालूम है दुक्खू भाई ! पहिले कभी जमाना था, कि विद्या का मोल जियादा था। इन्ट्रैन्स भी नहीं पास होते थे, कि लोग वकील, मुन्सिफ, सदरआला हो जाते, लेकिन अब एम० ए०, बी० ए० पास कर साठ-साठ रुपल्लीकी नौकरीके लिए इधर-उधर मारे-मारे फिरते हैं। सेर भरका आटा, सेर भरका चावल, पाँच रुपया सेर घी, तीन रुपया मन ईंधन, बताओ साठ रुपयेमें तो अकेले आदमीका भी पेट नहीं भर सकता। फिर मकानका किराया तिगुना। पैर पसारने पर इस दीवारसे उस दीवार पहुँच जायँगे, ऐसी-ऐसी कोठरियोंका किराया दस रुपया महीना। कपड़ेका दामभी चौगुना। फिर बाबू अकेले नहीं होते। माता-पिता अपने पैर पर खड़ा करनेसे पहिले लड़केका ब्याह कर देते हैं और पचीस बरसके होते-होते बाबूके चार-पाच बच्चे भी हो जाते हैं। अब बताओ साठ रुपयेमें वह क्या अपने खायेंगे, क्या बीबी और बच्चोंको खिलायेंगे ? कहाँसे घर भरके लिए कपड़ा ले आयेंगे ? मकानका किराया कैसे देंगे ? लड़कोंकी फीस कहाँसे आयेगी ? यदि लड़के लड़कियोंको पढ़ाया नहीं, तो उन्हें भीख भी नहीं मिलेगी। फिर लड़कियोके ब्याहके लिये दहेजका रुपया कहाँसे आये ? उनके घरके घर तपेदिकमें उजड़ जाते हैं। ठीकसे खाना नहीं, चिन्ताके मारे दिन-रात कलेजा सुलगता रहता है, दवाका भी ठिकाना नहीं। इतने कमजोर शरीरमें तपेदिक क्यों न घुसे ? ठीक कहता हूँ दुक्खू भाई ! बाबू लोगोंके घरके घर साफ हो गये।

दुखराम—मैं तो समझता था भैया ! कि बाबू लोग बहुत अच्छी तरहसे होंगे, खूब लोगोंसे रुपया ऐंठते हैं।

भैया—सौमें पाँच तो सभी जगह अच्छे मिल जायँगे। जानते नहीं हो, बकालत पास करके कचहरीमें आधे लोग सिर्फ मक्खी मारने जाते हैं। इधर-उधर से माँग-जाँचके पैसे दो पैसेका पान खाकर मुँह पर रोब और रोसनी लाना चाहते हैं ? लेकिन दुक्खू भाई ! रोसनी मुँह में खैर-चूना लपेटनेसे नहीं आती। जब आदमीको पेट भर खानेको मिलता है, निचिन्त रहता है, रोसनी अपने

आप झलकने लगती है। तुम समझते होगे कचहरीके मुहर्रिर, थाना के मुंसी जी—जिनसे तुम्हें भी कभी पाला पड़ा होगा।

दुखराम—हाँ, भैया! वह तो अपने बाप से भी पैसा लिये बिना नहीं छोड़ते, हड्डी पेर कर पैसा निकालते हैं।

भैया—तो उनका ऐसा करना क्या हद दरजेका कमीनापन नहीं है? गरीब आदमी किस्मतका मारा न्याय पानेके लिए थाना-कचहरी जाता है, और उसे जेवर बेंच कर, खेत रेहन रखकर रुपया लानेके लिए कहा जाता है।

दुखराम—देह बेंच कर देना पड़ता है भैया! क्या करें, नहीं तो जेल भेज दें, मुकदमा खराब कर दे।

भैया—यह तो पापकी कमाई है न दुक्खू भाई! लेकिन आदमी क्यों ऐसा करता है? इसीलिए न कि तनखासे उसका पेट नहीं भरता। उसे अपने बाल-बच्चोंको पढ़ाना है, और सबसे बड़ी आफत है, आजकल लड़कियोंका ब्याह करना। बाबू लोगोंके लड़के बिना पढ़ी-लिखी लड़कीसे ब्याह नहीं करते, इस-लिए लड़कीको भी पढ़ाना पड़ता है।

सन्तोखी—बनारसमें हमारी अगरवाल बिरादरीके हैं एक भाई, जिनकी लड़की ने एम० ए०, बी० ए० पास किया है।

भैया—हाँ, कोई-कोई लड़कियाँ एम० ए०, बी० ए० भी पास कर लेती हैं। माँ-बाप तो चाहते हैं, कि बारह-तेरह ही वर्ष में ब्याह हो जाय, लेकिन जानते हो न लड़कोंका मोल-भाव? तिलक-दहेज नहीं जुटता, आजकल करते दिन बीत जाता है। लड़की पढ़नेमें लगी है, वह कहते हैं, चलो तब तक पढ़ती रहे। फिर जानते हो न विद्याका चसका। जब आँख पर पट्टी बँधी रहती है, तो मरद हो चाहे मेहरी, उसको दुनिया-जहानका कोई पता नहीं रहता, लेकिन विद्या आँख खोल देती है। कुछ पढ़ लिख लेने पर लड़कीको विद्याके घरमें सजाकर रक्खे जगमग-जगमग करते रतन दिखाई देने लगते हैं। उसे खुद और पढ़नेका लोभ हो जाता है और जब बेचारी एम० ए०, बी० ए० पास कर लेती है, तो ब्याह होना और मुसकिल हो जाता है।

सन्तोखी—क्यों भैया ? तब बाबू लोगों को बहुत पढ़ी-लिखी से ब्याह करने के लिए उतावला होना चाहिये।

भैया—घबराते हैं, घबराते। मेहरी जो एम० ए०, बी० ए० तक पढ़ी होगी, उसके दिमागमें गोबर नहीं न भरा रहेगा ? वह खुद अदबसे बात करेगी, लेकिन बाबूको भी अदब सीखना होगा। वहाँ 'ढोल गँवार सूद्र पसु नारी' से काम नहीं चलेगा, छूठा रोब भी नहीं गाँठा जा सकेगा।

दुखराम—एम० ए०, बी० ए० की क्या बात कर रहे हो भैया ! हमारी बुधुआकी माईको नहीं देखते, बलिस्टर बन जाती है बलिस्टर। मुँहसे बात नहीं निकलने देती। उसके सामने हम क्या ढोल गँवारकी बात कर सकते हैं ?

भैया—इसीसे समझ जाओ, जियादा पढ़ी-लिखी औरतको ब्याहनेसे बाबू-भैया लोग क्यो घबराते हैं। अभीसे पचास-पचास बरस तक कुँवारी बैठी रहनेवाली मेहरियाँ देखी जाने लगी हैं, आगे न जाने क्या होगा ?

दुखराम—तो माँ-बापके लिए भी बड़ी चिन्ता है।

भैया—कुफुत है कुफुत, तीस ही पैंतिस बरसमें बाबू लोग बूढ़े हो जाते हैं, इसी सब चिन्ताके कारन। लडकियाँ तो ब्याहे बिना जवानी बिताने लगती है और लड़कोंको जल्दी ब्याह कर देनेके लिए लडकीवाले घेरने लगते हैं। बापको ऐसे ही गिरस्ती चलाना मुस्किल है, ऊपरसे लडकेकी बहू बनकर एक और घरमें पहुँच जाती है।

दुखराम—और वह अकेलीभी तो नहीं रहती।

भैया—बस बरस ही भर बादसे घर में नए-नए मुंह आने लग जाते हैं। पहिले जितने मुँह थे, उन्हींके खानेका ठिकाना न था, अब पोता-नाती और बढ़ने शुरू होते हैं। फिकरकी बात क्या पूछते हो ? हर बखत मन परेसान रहता है, फिर घर में बिना बातहीका जगड़ा क्यों न होता रहे ? मेहरी मर्दसे लडती है, बाप बेटासे लड़ता है और सब आपसमें लड़ते हैं। मार-पीट, गाली-गलौज क्या कोई बात उठा रखते हैं ? सारा मुहल्ला सुनता है, ज्यादा सिर-विर

फूश या किसीने अफीम-संखिया खा ली, तो जेलकी भी हवा खानी पड़ती है। यह घर नरक नहीं तो क्या है ?

सन्तोखी—हाँ भैया ! मेरे भी सहरमें कुछ रिस्तेदार हैं। हमको तो गाँवका गँवार समझ कर नाक-भौं सिकोड़ते हैं, लेकिन मैं जानता हूँ, कि चूनाकली किए उनके सफेद घरों, धोबीके घरसे आये बगुलेके पर जैसे धुले कपड़ों के भीतर आग धाँय-धाँय जल रही है, चिन्ताके मारे परेसान हैं। व्यापार मन्दा, दिवालेका डर, सिर पर महाजन, घरमें लड़की सयानी। क्या करें बेचारे, यही सोचते हैं कि किसको लूटें, किसको मारें।

भैया—देखा न दुक्खू भाई ! जो सफेद दिखाई देता है, उसके भीतर भी ढोल की पोल है। साठ-सत्तर पानेवाले बाबुओंकी बात नहीं, जो चार-सौ पाँच सौ पाने वाले बड़े-बड़े हाकिम हैं, उनके घरमें भी नरककी आग धाँय-धाँय जल रही है।

दुखराम—चार-पाँच सौ रुपया महीना जो पाएगा, उसको क्या दुख होगा भैया ?

भैया—चार-पाँच सौ पानेवालेके घरमें मेहरी बच्चे मिला कर चार-पाँच आदमी तो होंगे। कितना ही बच्चा पैदा करनेसे हाथ रोके, लेकिन घरमें इतने-से कम परानी कहाँ होंगे।

दुखराम—हाथ रोकनेकी बात क्या है भैया ! बाल-बच्चा देना भगवानके हाथमें है।

भैया—भगवान अपने कितनेही कामोंसे इस्तीफा दे चुके हैं, हमारे सामने नहीं, उन लोगोंके सामने, जो भगवानकी नस-नाड़ी पहचानते हैं। एक बुन्द पुरुखका और एक बुन्द तिरियाका मिलकर बच्चा पैदा होता है। आजकल बहुतसे तरीके निकल आये हैं, जिनके इस्तेमालसे दोनों बुन्द मिलने ही नहीं पाते। लेकिन अभी हमारे देसमें पुरुखोंमें न हो, लेकिन तिरियोंमें पूत की लालसा बेसी होती ही है। इसलिये चार-सौ पाँच-सौ पानेवाले हाकिमके घरमें भी चार-पाँच परानी तो होते ही हैं। बेचारोंको आदमीका धरम छोड़ना पड़ता है।

सन्तोखी—धरम क्यों छोड़ना पड़ता है भैया ?

भैया—माँ-बाप ने पढ़ाया-लिखाया कि लड़का कमाएगा, तो बुढ़ापेमें उनकी भी खबर लेगा। एक उदरसे पैदा हुए भाई-बहिनोंने समझा था, कि यह हमारे अपने हाड़-माँस हैं; लेकिन हाकिम बनते ही लड़केकी आँख बदल जाती है। उसे साहबसे हाथ मिलाना है। उसे कलट्टर साहबके सामने पूँछ हिलाना है। अच्छा कोट चाहिए, अच्छा बूट चाहिए, नहीं तो दरसन मिलना मुसकिल हो जायगा। यहींसे लिबास और लिफाफा बढ़ना शुरू होता है। पाँच सौमें चार सौ तो बँगला-भाड़ा, टोप-कोट, घोड़ा-गाड़ी या मोटर ही पर खर्च हो जाते हैं—आजकल तो बातही मत पूछो। फिर बताओ सौ रुपये में अपने खाएँ, बीबी बच्चों को खिलाएँ या नौकर चाकरको।

सन्तोखी—तो वहाँ भी सचमुच लिफाफा ही है।

भैया—लिफाफा मत कहो, सन्तोखी! वहाँ भी नरककी आग धाँय-धाँय कर रही है। बेचारे माँ-बापकी भी आसा तोड़ते हैं, भाई-बहिनकी ओरसे भी तोताचसम बनते है; सिरिफ अपना और अपने अड़े-बच्चेका ख्याल करते हैं। तुम्हीं बताओ, बचे सौ रुपयेमें वह और क्या कर सकते हैं? वह मजबूर हैं, पढ़े-लिखे आदमीसे जानवर बननेके लिए। लोग कहते हैं कि परले दरजेकी खुदगरजी और कमीनापन है। लेकिन बेचारे करें तो क्या करें? जो लिफाफामें कम करें तो बड़े अफसर घिनकी नजरसे देखेंगे, फिर आगेकी तरक्की-बरक्की की आसा गई। नहीं तो घूस रिसवत लें।

सन्तोखी—इतनी-इतनी तनख्वाह पानेवाले हाकिमोको तो रिसवत नहीं लेनी चाहिये।

भैया—मैने लेखा-जोखा बतलाया न? उसीसे लेना पड़ता है? पाँच सौ वाले भी लेते हैं, पाँच हजारवाले भी लेते हैं और पच्चीस हजारवाले भी, इस दुनियाँमें घूँस-रिसवत का बाजार ही सबसे तेज है। सब इसे जानते हैं, सब एक दूसरेकी आँखमें धूल झोकना चाहते हैं। कहीं-कहीं इस घूँस-रिसवतका नाम है बड़ा-बड़ा भोज और मेम साहब की अगुलीमें हजारोंकी अँगूठी, लाखों की मोती-रतन-माला।

सन्तोखी—भैया! मैं क्या सुन रहा हूँ?

भैया—चुपचाप सुनते जाओ, बड़े घरोंकी बड़ी पोल, बड़ी फिकर, बड़ी दोजखकी आग। सब जानते हैं, घूँस-रिसवत बुरी चीज है। कभी कभी पकड़े जाने पर सबसे बड़ी मछलियोंको तो कुछ नहीं होता, लेकिन छोटी-मझोली मछलियों पर हाथ उठाना पड़ता है, आखिर न्यायका ढोंग तो कुछ दिखलाना ही पड़ेगा। लेकिन दुक्खू भाई! तुम खुद समझ सकते हो, जो सौकी आमदनी पर डेढ़ सौ खर्च करनेके लिए मजबूर है और उसे घूँस-रिसवत, जैसे भी हो तैसे, पूरा करना चाहता है, उसका चित्त सान्त होगा या असान्त, वह भयभीत होगा या निरभय?

दुखराम—वह भीतर ही भीतर काँपता रहेगा भैया!

भैया—फिर उसकी जिनगी सुख की जिनगी नहीं हो सकती, चाहे उसके मँह पर मुसकुराहट दीख पड़ती हो, चाहे उसके चारों ओर सुन्दरताई फैल रही हो। इन बड़े लोगोंके लड़के-लड़कियाँ बड़े ठाटमें पलते हैं। लड़कियों को इन्द्रपुरीकी परी बनानेका उद्जोग बचपन ही से सुरू हो जाता है। जवानी में पैर रखते-रखते वह अप्सरा बन भी जाती हैं, लेकिन कितना मँहगा सौदा!

सन्तोखी—सहरमें जाता हूँ, तो मै भी कभी-कभी इसे देखता हूँ? मेरी ही जातिके लोग हैं, जातिके चौधरी हैं, उनकी ओर उँगली कौन दिखला सकता है। लेकिन जान पड़ता है सील-संकोच, धरम-करमसे उन्हें वास्ता नहीं।

भैया—लेकिन सन्तोखी भाई! तुम समझ रहे हो कि वह अपने मनसे ऐसा करते हैं। नहीं, ऐसा नहीं। बड़े दामाद चाहिये, दामाद अप्सरायें पसन्द करते हैं, नाच-गाना, हाव-भाव चाहते हैं। जो यह सब बातें लड़कीमें न हो तो उसे कौन पूछेगा? इतना होनेपर भी तो कितनी ही लड़कियों को कुँआर ही जिनगी बिता देनेके लिए मजबूर होना पड़ता है।

सन्तोखी—नहीं भैया! मै यहाँ तुम्हारी बातको नहीं मानता। जो साहब-बहादुर बन जाते हैं, उनमें बराबर एक दूसरेकी औरत भगा ले जानेका रोग होता है।

भैया—रोगसे तुम्हारा मतलब है महामारी? लेकिन ऐसी कोई महामारी नहीं है। यह लोग हैं तो हमारे देसके, लेकिन इनका दिमाग सातवें आसमान

पर रहता है। कलट्टर हो गए, पन्द्रह सौ रुपयेमें अपनी देह और आत्माको बेंच दिया, इसके लिए उन्हें सरम होनी चाहिये थी; लेकिन यह हमारे भाई—काले साहब गोरोंका भी कान काटते हैं और हम लोगोंको जगली, उजड्ड गँवार समझते हैं। हम भी आदमी हैं, हमभी समझते हैं, आखिर "हित अनहित पसु पंछिहु जाना" हम उनसे घिना करते हैं।

सन्तोखी—यह बात ठीक कही भैया।

भैया—और जब आदमीके दिलमें घिना हो जाती है, तो सदा छिद्दर ढूँढ़ने लगता है, और जरा भी छिद्दर मिल गया, तो बातका बतंगड़ बना डालता है। मैं मानता हूँ कि इनमें कभी-कभी एक दूसरेकी औरत को भगाने की बात भी देखी जाती है। लेकिन वह भी क्यों? उन्हें अप्सरा बनाओ, उन्हें बिल्लायतवालों के लिखे गन्दे-गन्दे उपन्यास पढ़वाओ या सिनेमाकी रासलीला दिखलाओ। पुरुषोंको तो कचहरीके दफ्तरमें कुछ काम भी रहता है, इनकी तिरियोंको तो कोई काम भी नहीं रहता। काम करने लगे, तो मक्खनकेसे हाथ कहाँ रहें? बेकार रहनेका मतलब है, दिलमें हमेसा खुराफात पैदा करना। इसके बाद दूसरे भी लोभ होते हैं। किसीके पास दो हजारकी मोटर है, तो किसी के पास दस हजारकी। किसीके पास इतना पैसा नहीं, कि नैनीताल-मंसूरी जाय और कोई वहाँ जाकर ५०) रोज खर्च कर सकता है। किसीके लिए २०) की साड़ी खरीदना मुस्किल है और कोई दो सौकी साड़ी ले सकता है, जो सिनेमा सुन्दरियोंके शरीर पर देखी जाती हैं। यह निठल्लापन, लोभ और उपन्यासो की कामुकताका कारन हैं, जिनसे तिरियोंके भागनेकी नौबत आती है। इनके घरों की लड़कियोंकी तो और दुरदसा है। वह सिरिफ माता-पिताके भरोसेपर पति नहीं पा सकतीं, इसीलिए उन्हे अप्सराकी तरह सजना पड़ता है।

सन्तोखी—यह ठीक कहा भैया! हमने अब तक सुना था, कि महावर पैर में लगाया जाता है, लेकिन अब सुनते हे, कि इनके घर की लड़कियाँ ओठ में भी महावर लगाती हैं।

भैया—इनका सारा जीवन नाटक है सन्तोखी भाई! और सुखका नाटक सायद सौमें दो-चार का, बाकी सबका ही दुखका नाटक है। लड़कीको पढ़ाया-

लिखाया, बी० ए०, एम० ए०, कराया। बंसी फेंकी जा रही हैं, कि कोई कलट्टर मजिहट्टर या लाख-दो-लाख वाला आदमी फँसे, लेकिन यह सबके भागकी बात तो नहीं है। उनके लड़कोंकी तो और बुरी हालत होती है।

दुखराम—लड़कोंका मिजाज तो बापसे भी बढ़-चढ़ कर होता है।

भैया—यही मिजाज तो उनके लिए और घातक होता है। यह पान-फूल की तरह पाले-पोसे जाते हैं, मेम लोगोंके स्कूलमें पढ़नेके लिए भेजे जाते हैं, वह नहीं हुआ तो देवफोफी-समाज वालोंके स्कूलोंमें जाते हैं।

दुखराम—देवफोफी-समाज क्या भैया?

सन्तोखी—अरे सखीसमाज की तरह कोई होगा?

दुखराम—यह सखी समाज क्या है सन्तोखी भाई?

सन्तोखी—अरे तुम तो गाँवसे बाहर कहीं जाते भी नहीं।

दुखराम—वही एक बार कलकत्ता गया था, बरस दिन चटकलमें काम किया, बीमार होकर घरपर आया, बचनेकी उम्मेद नहीं थी। अब यहीं पुरखो के गाँवमें मट्टी पीट-पाट कर चाहे आध पेट खायें चाहें भूखे रहें।

सन्तोखी—अजोध्यामें एक बार हम गए थे, हमारे बनारसके रिस्तेदार थे, महात्माका दरसन कराने ले गये। लेकिन महात्माको देखकर देहमें आग लग गयी। मेहरीकी तरह सोलहो सिंगार करके बैठे थे—आँखमें मोटा-मोटा काजल, सिरमें टीका, मटक-मटक कर चलना, मीठा-मीठा बोलना। मैंने उनसे पूछा "वह महात्मा कहाँ है?" उन्होंने मेरा हाथ पकड़ कर कानमें कहा—"चुप, यही तो महात्मा हैं।" पीछे बतलाया कि यह महात्मा रामजीसे मिल चुके हैं। रामजी रोज इनके पास आते हैं।

दुखराम—धत्तेरे की! रामजी राजा रहे, उनको हजार-हजार सुन्दर जोरू मिल जातीं, लेकिन सीताजीको छोड़ कर किसीकी ओर नजर उठाकर नहीं देखा, वह भला इन जनखे मर्दों के पास आयेंगे! मैं होता, सन्तोखी भाई! तो कुछ तो जरूर बोल उठता।

सन्तोखी—कुफुत तो मुझे भी हो गई थी, क्या करता रिस्तेदारका ख्याल करके चुप रह गया। यह लोग अपनेको सखी कहते हैं।

दुखराम—तो यही है सखी समाज, और देवफोफी समाज भी इसी तरह-का क्या कोई है भैया ?

भैया—कुछ फरक है, सखी समाज हमारे काले भाई लोगोंकी करतूत है और देवफोफी समाज गोरे लोगोंकी।

सन्तोखी—किरिस्तानका धरम तो नहीं है ?

भैया—नहीं सन्तोखी भाई ! यह सतनजा है सतनजा। कुछ हिन्दू धरम-से लिया, कुछ किरिस्तानसे लिया, कुछ मुसलमानसे लिया ! लेकिन इतना ही रहता तो कुछ काम चल जाता।

सन्तोखी—तब तिननजा ही न रह जाता। सतनजा कैसे बना भैया ?

भैया—अरे इन्होंने ओझा-सोखा भूत-परेत, चुड़इल-डाइन सब मिलाकर बहुत बड़ा धरम खड़ा कर दिया।

दुखराम—बहुत बडा धरम, वह तो ताडसे भी बड़ा धरम होगा। तो पढ़े-लिखे लोग यह ओझा-सोखा, भूत-परेत वाली बात मानते हैं।

सन्तोखी—देवफोफी सुना नहीं है, देवता लोगों से बात करनेकी फोफी है, इसलिए न भैया ! नाम देवफोफी पड़ा है ?

भैया—नाम तो वह लोग थेयोसोफी कहते हैं, लेकिन मतलब वही देव-फोफीका।

सन्तोखी—तो देवफोफीका भी अपना स्कूल है भैया ?

भैया—देवफोफी के स्कूलमें मामूली घर के लड़के थोड़े ही पढ़ सकते हैं, बड़े घरके लड़के जाते हैं। हवा-बतास धूप-घामसे बचाकर उनको रखा जाता है।

दुखराम—तब तो एक ही झकोरा में मुरझा जायेंगे ?

भैया—मुरझा तो जाते ही हैं। हाकिमके लड़के हैं तो हाकिम भी तो हजारों हैं और सबके घरमें दो-दो चार-चार लड़के हैं। एम० ए०, बी० ए, तो किसी तरह ठोंक पीटकर खुशामद बरामद करके बना लिए जाते हैं लेकिन सबको नौकरी कहाँसे मिले !

सन्तोखी—तब बैठे-बैठे मक्खी मारते होंगे।

भैया—मक्खी मारना भी तो इन्होंने नहीं सीखा। लड़की होते तो शायद कभी भाग भी खुल जाता। राजकुमारों की तरह पाले गये, मिजाज आसमान पर रहा। पढ़-लिखकर तैयार हुए, तो बड़ी नौकरी मिली नहीं। पचास-पचीस-की मुहर्ररीपर मन ही नहीं जाता। बापके मत्थे खाये। पेंसिन ले ली, तो घर का चलाना और मुस्किल और दो-चार बेटा-बेटी गले में लटक गये बस।

दुखराम—जीते ही नरक।

सन्तोखी—तो मालूम होता है सब जगह यही हाल है।

दुखराम—हम तो अपना ही दुख देखकर दुनियाको नरक कहते थे।

भैया—नहीं दुक्खू भाई! नरककी आग घर-घर जल रही है, किसीका घर आज बचा हुआ है तो कल नहीं बच पायेगा।

सन्तोखी—सायद राजा-महराजा लोग अच्छी हालतमें होंगे, उनके पास बहुत धन...

भैया—बहुत रानी-महारानी रंडी-मुंडी नौकर-चाकर होते हैं, इसलिए उनके यहाँ बैकुंठ है यही न कहते हो सन्तोखी भाई? लेकिन जानते हो न? इन्दौर निकाले गये, अल्वरके महाराज निकाले गये, नाभावाले न जाने कहाँ जाकर मरे। और अब तो सभी गद्दीसे अलग।

दुखराम—बिल्लायतके बादशाह तो बहुत सुख से होंगे भैया?

भैया—मैं कब कहता हूँ कि सौ में दो-चार आदमी भी सुखी न मिलेंगे। लेकिन कलके लिए निश्चिंत, ऐसा सुख तो दोरंगी दुनियामें कहीं नहीं है। तुमने सुना नहीं है दुक्खू भाई! अभी बहुत दिनकी बात तो नहीं है, बिल्लायत-के बादशाह एडवर्ई निकाल दिये गये।

सन्तोखी—हाँ, हाँ? आजकल जो बादशाह हैं, इन्हींके तो बड़े भाई थे और सिर्फ ब्याह करनेके कसूर में।

दुखराम—ब्याह करनेमें कौन कसूर था?

भैया—कसूर तो नहीं था। बेचारा कुँआरा था, अपने मनकी स्त्रीसे ब्याह करना चाहता था।

दुखराम—साहब लोग तो अपने मनका व्याह करते ही हैं फिर इसमें क्या बुराई थी ?

भैया—साहब लोग कर सकते हैं, लेकिन बादसाह नहीं।

दुखराम—कलकत्तामें सुना था कि टोप-टोप सब एक जाति होती हैं।

भैया—बिलायतमें राजाका खून दूसरा होता है और परजाका दूसरा।

दुखराम—तो राजाका खून लाल नहीं सुनहले रंगका होगा ?

भैया—खून तो सबका ही लाल होता है लेकिन कोई समझता है हमें भगवानने दाहिने हाथसे बनाया है और दूसरेको बाएँ हाथसे।

सन्तोखी—तो साहेब लोगोंमें भी बेकूफोंकी कमी नहीं है ?

भैया—चालाकोंकी कमी नहीं है कहो, इसे मैं पीछे बताऊँगा। जैसे हमारे घर-घरमें नरक बन गया है, वैसे ही बिलायतमें भी है।

सन्तोखी—सुनते हैं कि अरब रुपया हर साल हिन्दुस्तानसे दूर बिलायत जाता था फिर वहाँके लोग इतने तकलीफ में क्यों ?

भैया—वह सब रुपया बिलायतके चारों करोड़ आदमियोंमें नहीं बाँटा जाता। वहाँ पाँच सौ-छ सौ परिवार हैं जो करोड़पति, अरबपति हैं। ताल-तलैया, ऊसर-डाबर, नदी-नाला, सबका पानी बहकर समुद्रमें चला जाता है; वैसे ही दुनियाके बहुतसे भागका और हिन्दुस्तानका भी धन पाँच सौ छः सौ परिवारोंके पास चला जाता ! बिलायतमें तो गरीबी और असह हो जाती है। १९३०-३१ में तीस-तीस चालीस-चालीस लाख आदमी बेरोजगार हो गए थे, दस-पाँच लाख आदमी तो वहाँ बराबर ही बेरोजगार रहते हैं। वहाँ बेरोजगार रहने का मतलब और भी साँसत। बारह आने में जहाँ एक प्याला चाय और एक टुक्का रोटी मिले वहाँ नातेदार-रिस्तेदार भी कैसे किसीकी खातिर कर सकते हैं। लोग बुरी तरहसे मरते हैं।

दुखराम—जैसे बंगालमें साठ लाख आदमी मर गए।

भैया—नहीं, वैसा हो तो दूसरे ही दिन उन छः सौ परिवारो के महलों-दरबारोंको लोग जमीनसे खोदकर फेंक दें। इक्के-दुक्के करके हजारों आदमी मरते हैं। कोई रेलके नीचे कटकर मरता है, कोई गैसका पाइप खोलकर नाक

रखकर मर जाता है, कोई टेम्स नदी या समुन्दरमें अपने कूद मरता है। छ सौ परिवार और उनके साथी समाजी घबड़ा कर खैरात बाँटने लगते हैं !

दुखराम—खैरात खाके जीना तो और बुरा है।

भैया—बुरा है, वह भी नरकका जीवन है, लेकिन जीवन बहुत प्रिय है, नरकवाले भी जीवन को छोड़ना न चाहते होंगे।

दुखराम—तो घर-घर मट्टीका चूल्हा है, किसीके यहाँ सोनेका चूल्हा नहीं है ?

भैया—हाँ बेसी मट्टीका ही चूल्हा है, और जिनके पास आज सोनेका चूल्हा है, उनके बेटे-पोतोंके लिए ठिकाना नहीं है कि मट्टी का भी चूल्हा मिलेगा।

दुखराम—तो मैंने ठीक कहा न दुनिया नरक है ?

भैया—नरक है लेकिन बनानेसे नरक बनी है।

———

अध्याय २

दुनिया क्यों नरक है ?

दुखराम—सन्तोखी भाई, कल रात तो बहुत देर हो गई थी, लेकिन भैयाने बात खूब बतलाई।

सन्तोखी—हम लोगोंको दुक्खू भाई ! दुनिया जहानका क्या पता है, हम तो गूलरके कीड़े हैं, हमारी दुनिया बस उतनी ही बड़ी है। लेकिन भैया रजबली कितना समझा-समझाकर बतलाते हैं। नरक-नरक तो हम सुनते चले आए थे।

दुखराम—लेकिन सुना न भैयाने क्या कहा था ?

सन्तोखी—हाँ, कि दुनिया नरक बनाने से बनी है। अच्छा अब सावधान हो जाओ भैया आ गए।

भैया—कहो, दुक्खू भाई ! रात को तो सोने का बखत बहुत कम मिला होगा।

दुखराम—बखतही कम मिला था भैया ! फिर दो घड़ी दिन गिरे तक हल चलाते रहे, हल छोड़कर एक घन्टा सो लिए हैं। तुम्हारी बात सुननेका बहुत मन रहता है भैया।

मैया—मैं किस्सा-कहानी नहीं कहता दुक्खू भाई ! दुनिया नरक है, यह तो बहुत दिनसे सुनते आए हैं, लेकिन अब जानना है कि यह दुनिया नरक क्यों बनी। किसने बनाई। इसके बाद हमें यह भी जानना होगा, कि दुनिया अच्छी कैसे बनाई जा सकती है।

सन्तोखी—हाँ मैया ! हम वही सुनना चाहते है, और हमारी तागतही क्या है, लेकिन जो बन पड़ेगा करेंगे। सुना है, जब कन्हैयाजीने गोवरधन उठाया था, बालगोपालोंने भी अपनी-अपनी लाठी लगा दी थी।

मैया—कन्हैयाजी का गोवरधन नही है सन्तोखी भाई ! यह है दुक्खू भाई-का छान (छप्पर)।

दुखराम—दस-पाँचका हाथ लगनेसे छान भी उठ जाती है मैया।

मैया—बस यही बात है सन्तोखी भाई ! लाखो हाथ लग जाएंगे, तो बिगड़ी दुनिया बन जायेगी। लेकिन पहले तो यह देखना है, कि दुनिया नरक कैसे बनी ! घाघकी कविता सुनी है न।

"गेहूँके रोटी जड़हनेके भात।
गल-गल नेमुआँ ओ घिउ तात।
तिरछी नजर परोसे जोय।
ई सुख सरग पैठिले होय।"

दुखराम—हाँ मैया ! गेहूँ की रोटी महीन चावल का भात गरम घिउ हरख-प्रसन्न से अपनी इस्त्री परोसकर खिलाए, नेमू न भी रहेगा तो भी यही दुनिया बैकुंठ हो जायेगी।

मैया—तो दुनियाको बैकुंठ बनानेके लिए कौन चीजकी जरूरत है ! पेट भर खानेको मिले अच्छा अन्न, घर भरको लाज ढाँकने जाड़ा गर्मीसे बचनेके लिए कपड़ा मिले, घरनीके मुँहपर चिन्ता और फिकिरकी छाँह न पड़े। इतना हो जानेपर दुनिया नरक नहीं रह जायगी ?

दुखराम—चिन्ता न रहे, घर भरको सुन्दर कपड़ा-खाना मिले फिर क्या चाहिए मैया ?

मैया—दुक्खू भाई, हमारे गाँवके बगलमें यह गड़ही है न ?

दुखराम—हाँ भैया! यह भी नरक है। जब माघ-फागुन में पानी सूख जाता है, तो गाँव भरके पाखाने की जगह बन जाती है, गाँव भरकी छुतहर हाड़ी और सब गन्दी-गन्दी चीज इसीमें फेंकी जाती हैं, असाढ़में पानी जो खूब जोरका नहीं बरसा, तो सब बज-बज करने लगता है।

भैया—अभी हम बज-बज की बात नहीं कहते, यह गढ़ही बनती क्यों है?

दुखराम—हम लोग घर बनानेके लिए मट्टी जो निकालते हैं।

भैया—तो यह जो पासमें ऊँचे-ऊँचे घर खड़े हैं। इसीलिए न यह जमीन गड़ही बन गई? इसी तरह तुमको जो खाना नहीं मिल रहा है, नंगा रहना पड़ता है वह क्यो? तुम जितना गेहूँ अपने खेतमें पैदा करते हो, जो सब तुम्हारे पास रह जाय तो गेहूँकी रोटी मिलेगी कि नहीं?

दुखराम—मिलेगी! हम एक सालकी कमाई दो साल तक खाएँगे। लेकिन हमारे पास गेहूँ रहने कहाँ पाता है? खलिहानमें उतनी बड़ी रासि देखते हैं, लेकिन बैसाख बीतते-बीतते घरमें चूहे डंड पेलने लगते हैं, न जाने कहाँ वह रासि अलोप हो जाती है?

भैया—कहाँ अलोप हो जाती है, क्या तुम जानते नहीं हो? जो सब रासी तुम्हारे पास रहे, तो कुछ गेहूँको मुक्खू अहीरको देकर तुम घी भी ले सकते हो, कुछसे अपने लिए कपडा भी खरीद सकते हो! लेकिन आधेसे बेसीको बेच-कर तो तुम मालगुजारी भी नहीं दे पाते, फिर जमीदार की हर-हकूमत, जरिबाना-तलबाना, पटवारी-मुन्सीको ब्रूस-रिसवत, थानेदारको मास-मूलीदा, कचहरीके वकील-मुख्तारको मुँहसुँघाई, और सैकड़ों तरहके दूसरे खर्च किये बिना तुम्हारी जान नहीं बचेगी।

दुखराम—और आजकल तो और पचास तरह के डंड लगे हुए हैं। सर-कारको चन्दा दो, नहीं तो तहसीलदार साहब आँख निकाल लेंगे, थानेदार एक सौ दसमें चालान करनेकी धमकी देगे। एक आफत है हम लोगोंके सिरपर?

भैया—तो तुम्हारे सामनेकी परोसी थाली खींच ली जाती है न?

दुखराम—हाँ भैया ! यही कहना चाहिये। परोसी थाली तो खींच ली ही जाती है।

भैया—दुनियामें जितना धन है, उसको पैदा करते हैं कमेरे लोग। किसान न हों तो मट्टीका सोना कौन बनावे ?

दुखराम—हाँ, गेहूँ सोनासे भी बढ़कर है। अनाज न रहे तो सोना खाकर कोई नहीं जी सकता है, न सोना पहनकर जाड़ा काट सकता है ?

भैया—मजूर न रहें तो चटकल-पटकल में सूत कौन कातेगा ? ताँत (करघा) कौन चलाएगा ? किसान कपास पैदा करता है, उसीका भाई मजूर कपड़ा तैयार करता है। लेकिन दोनोंको तन ढाँकनेके लिए कपड़ा भी नहीं मिलता।

दुखराम—बीस रुपया जोड़ा धोती कौन खरीदेगा भैया ?

भैया—बीस रुपया नहीं कुछ ही दिन पहले तीस रुपया जोड़ा धोती बिकती रही है। आध सेर कपास लगा होगा, किसान को बारह आना दे दिया। मजूर ताँतपर दिनमें दो जोड़ेसे भी बेसी कपड़ा बुन सकता है। मँहगाई मिलाके साठ रुपया महीना मिलनेपर धोतीके दामोंमेंसे उसे एक रुपया मिला।

सन्तोखी—बारह आना, एक रुपया, एक रुपया तो भैया ! बीस रुपयाके धोती जोड़ामें पौने दो रुपया न मजूर किसानको मिला बाकी सवा अठारह रुपया ?

भैया—बाकीका हिसाब समझ लोगे तो पता लग जायगा कि इस दुनिया-को नरक किसने बनाया। लड़ाईसे पहिले यह धोती जोड़ा साढ़े तीन-चार रुपये में मिलता था, उस वक्त किसान मजदूरको दस-बारह आना मुस्किलसे मिलता था, बाकी तीन सवा तीन रुपया उड़ जाते थे।

सन्तोखी—पहले तीन सवा तीन रुपया उड़ जाते थे, अब अठारह-अठारह रुपये और धोतीके बनाने वाले हैं मजूर-किसान !

भैया—किसी चीजके पैदा करनेमें जो देह चलाता है, खून पसीना एक करता है; वह है कमकर, कमेरा, कारीगर। घरके लोग काम कर रहे हों और कोई आदमी छाँहमें सोवे, तो उसे क्या कहेंगे दुक्खू भाई ?

दुखराम—जांगरचोर कहेंगे, कामचोर कहेंगे, देहचोर कहेंगे और क्या कहेंगे भैया ? घरके लोग खून-पसीना बहा रहे हों और वह छाँहमें बैठा सोवे, वह भी कोई आदमी है ?

भैया—और, दुक्खू भाई ! जो वह कहीं संझाको आकर कहे कि हम तो बासमती का भात खायेंगे, दालमें एक छटाँक घी डालकर, और उसके साथ आधासेर सजाव दही भी चाहिये, नेबुआ भी चाहिए, और छम-छम करके कोई गोरी परोसनेके लिए आए। तब क्या कहोगे दुक्खू भाई ?

दुखराम—कहनेकी बात पूछ रहे हो भैया ? उस कामचोरसे एक भी बात नहीं कहेंगे, उसका दोनों कान पकड़ेंगे, गाँवके सिवानेके बाहर ले जाएँगे और गालपर खूब जोरसे दो-दो थप्पड़ लगाएँगे। फिर कहेंगे—"कामचोर, जा मुँह काला करके चला जा, फिर हमारे घरकी ओर मुँह नहीं करना।"

भैया—तुम्हारा बेटा जीवे दुक्खू भाई। तुमने ठीक किया और ठीक कहा। किसान-मजूर, कमकर हैं, कामचोर नहीं हैं, उनके पल्ले पड़ा एक रुपया बारह आना और सवा अठारह रुपया कामचोरोंके हाथमें गया, जो बासमती का चावल खाते हैं, जिनकी थालमें गोरी छम-छम करके घी और सजाव दही परोसती है। वह तुमसे माँगने नहीं आते, तुम्हारे सामने हाथ नहीं पसारते कि तुम उनका कान पकड़कर गाँवकी सीमाके बाहर कर आओ।

सन्तोखी—भैया ! हम लोग तो छोटी-मोटी दौरी-दूकान करते हैं, रुपयेपर एक पैसा मिल गया तो उसीको बहुत समझते हैं। लेकिन एक असली काम करनेवालोंको दो रुपया थमाकर अठारह, रुपया अपनी जेबमें रख लेना यह रोजगार नहीं है भैया ! यह तो सीधी लूट है !

भैया—लेकिन यह अठारहो रुपया एक आदमीकी जेबमें नहीं जाता सन्तोखी भाई ! इसमें बहुत लोगोंको हिस्सा मिलता है।

दुखराम—चोरीका माल अकेले नहीं न पचता।

भैया—अच्छा तीन का हिसाब बताएँ कि तेरह का ?

दुखराम—तीन-तेरह क्या भैया ?

भैया—अरे यही लड़ाईके पहले एक-एक जोड़ेपर तीन रुपये की लूट थी और अब तेरहकी।

दुखराम—पहिले तीनके ही बारेमें बतलाओ भैया। पहिले हथौडी की मार सह लें, फिर घनकी सहेंगे।

भैया—तीन रुपयेमें जाते तो सभी कामचोरोंके पास हैं, लेकिन उनमेंसे चार आना चला जाता है कल-मशीन बनाने वालोंके पास! जानते हो न? कल-मशीन बिलायतसे बनकर आती है?

दुखराम—तो यह चार आना कल मशीन बनानेवाले मजदूरोंके पास चला जाता है?

भैया—दुक्खू भाई! क्या तुम समझ रहे हो, बिल्लाइतमें सतयुग चल रहा है? दुनिया भरमें सबसे जियादा जो परान देकर काम करते हैं, वही सबसे जियादा भूखे-नंगे रहते हैं। बिलायत के मजूरोंकी तनखाह बेसी है, उनको एक दिनका दस-पन्द्रह रुपया मिल जाता है!

दुखराम—जनु हमारे यहाँका एक महीना और वहाँका एक दिन बराबर है।

भैया—तो तुम समझते हो कि उनके पास रुपया रखनेकी जगह भी नहीं रह जाती होगी?

दुखराम—हाँ भैया। दो-दो ढाई-ढाई सौ रुपया महीनेमें जिसके घर आता हो, उसके घरमें तो तोड़ेका तोड़ा रुपया गॅज जाता होगा।

भैया—तोड़ा गॉजनेवाले दूसरे हैं, वे सब बिलायतके कामचोर हैं। मैंने बतलाया नहीं था, कि बारह आनामें तो वहाँ एक प्याला चाय और एक टुक्का रोटी मिलती है, और यह लड़ाईसे पहलेकी बात कह रहा हूँ।

दुखराम—तो क्या बेचारोंके पास बचता होगा?

भैया—तो धोती जोड़ेका चार आना जो बिलायत जाता है उसमेंसे एक आना कल बनानेवाले मजूरोंको मिलता है, औ तीन आना वहाँके कामचोरों की जेबमें।

सन्तोखी—तीन रुपैयेमें चार आनेका हिसाब तो मालूम हुआ बाकी पौने तीनका ?

भैया—चार आना और देना-पावना सूद-सादमें चला जाता है, आठ आनामें सरकारी टिकस, खुदरा बेचनेवालोंके नफाको रख लो, बाकी दो रुपया सीधा चटकलके मालिकके जेबमें जाता है।

दुखराम—तब भी भैया ! बहुत है। मैं तो किसान हूँ, एक साल कलकत्ता-में पटकलमें काम करके मजूरोंके भी दुखको जानता हूँ। कमेरोंको दस-बारह आना मिले और सेठ लोग दो रुपया अपनी जेबमें रख लें, यह क्या कम लूट है; लेकिन तेरह रूपये की लूटके सामने तो यह कुछ भी नहीं है। वह कैसे हुई भैया !

भैया—लड़ाईके पहले जिस धोती जोडेका दाम चार-साढ़े चार रुपये था अब चौदह हो गया। वह इस तरहसे हुआ, सरकारने कलवाले मालिकोंसे कहा, कि बहुत भारी लड़ाई हमारे सर पर आई, उसके लिए हमें खर्च चाहिए, लड़ाई के कारन तुम्हें भी बहुत ज्यादा नफा होगा, इसलिए हम तुमसे टिकस लेंगे।

सन्तोखी—एकम टिकस न भैया !

भैया—हाँ इनकम टिकस लेकिन लड़ाई वाला एकम टिकस। सरकारने कहा कि रुपयेमें पौने पन्द्रह आना हमारा और पाँच पैसा तुम्हारा।

दुखराम—लेकिन यह सोरहो आना तो हम लोगोंके ही मत्थे न पड़ा ?

सन्तोखी—जो-जो कपड़ा पहिनता है, उसीके मत्थे पड़ा, इसमें भी कोई पूँछने की बात है।

भैया—सरकारने यह तो कह दिया कि सोलह आनेमें पौने-पन्द्रह आना हमारा और पाँच पैसा तुम्हारा, लेकिन यह नहीं हुकुम दिया कि धोती ४) जोड़ा ही बेंचनी पड़ेगी।

सन्तोखी—तो मिलवालोंका हाथ खुला छोड़ दिया ?

भैया—चार रुपयाकी धोती बेंचते तो साढ़े-उन्नीस आना सरकारके पास चला जाता, और पटकलवालेको मिलता दस पैसे। उसने धोती जोड़ेका दाम आठ रुपया लगा दिया। अब उसको मिलने लगा पाँच आना। फिर

उसने सोचा कि जितना ही दाम बढ़ाओ, उतना ही हमारा पैसा ज्यादा होगा। सोलह उपया करनेमें उसको दस आना मिलता। सरकारको भी नुकसान नहीं था, उसे भी सात रुपया छः आना मिल जा सकता था।

दुखराम—अब मालूम हुआ भैया ! कैसे कपड़ेको इतना मँहगा कर दिया।

भैया—लासा या खड़ ताननेसे बढ़ता है, लेकिन उसकी भी हद होती है ! कोस दो कोस तक कोई लासा को थोड़े ही तान सकता है ?

दुखराम—कोस दो कोस क्या हाथ दो हाथ भी नहीं खींच सकते।

भैया—कारखाने वालोंने नफा कमानेके लिए चीजोंका दाम चौगुना-पचगुना कर दिया। अब तुम्हीं बताओ, सोलह रुपया जोड़ा खरीदनेमें एक छोठी-मोटी भैंस बेचनी पड़ती न ? दस सेरका गेहूँ बेंचते तो चार मन गेहूँ घरसे निकालना पड़ता। किसान गँवार होते हैं, उनको समझ नहीं होती, सब कहा जाता है; लेकिन जब वह देखते हैं, कि बजारमें जिस चीज पर भी हाथ लगाते हैं, उसीका दाम चौगुना-पचगुना है, तो वह गेहूँको दस सेरका कैसे बेचते ? गेहूँका दाम भी महँगा होने लगा। जब ढाई दो सेरका होने लगा, तो पहिले उन लोगोंमें घबराहट हुई, जो कि न किसान हैं, न सेठ हैं, न सरकार। अनाज महँगा होना उसके लिए उतना बुरा नहीं होगा, जिसको देना पावना बेबाक करके खाने भरको घरमें अन्न रह जाता है। लेकिन जिसके घरमें बैसाखमें ही अन्न नहीं रह जाता, वह क्वार तक कैसे काटेगा ? बंगालमें यही हुआ, चावल रुपयेका दो सेर नहीं दो रुपये सेर हो गया। अब तुम बताओ, जिसके पास बैसाखमें ही अनाज खतम हो जाता है, वह दो रुपये सेर अनाज खरीदकर कितने दिनों तक खा सकता है ?

दुखराम—घरमें दस परानी हुए तो पेट जिलानेके लिए भी तीन सेर चावल चाहिये। छ रुपया रोज लगने पर तो असाढ़ ही तक हल-बैल, घर-दुआर, जर-जमीन सब बिक जायगी।

भैया—तब बिक जायेगी, तब घरवाले क्या करेंगे ?

दुखराम—वही भैया जो तुमने कहा है, लाज-सरम भी चली जायगी, इज्जत भा बिक जायगी, और तब भी नैया पार होगी कि नहीं इसमें भी सक है।

भैया—तो जो साठ लाख आदमी बंगालमें मर गये उनका कारन तुम्हें मालूम हुआ? उनका खून किसकी गर्दन पर है।

दुखराम—कारखानेवालों और सरकारके ऊपर, उन्होंने ही अन्धेर-गरदी की, तभी न अन्न का दाम बढ़ा।

भैया—दो गरदन तो तुमने ठीक बतलाई लेकिन एक गरदन अभी और बाकी है। नहीं बल्कि एक मद कहो, यह चोरबाजारका मद है।

सन्तोखी—साहु लोगकी बाजार लगती है यह तो सब जानते हैं, क्या चोरों की भी बाजार होती है भैया?

भैया—होती है और सरकार बहादुरके राजमें दिन-दहाड़े लग रही है। कपड़ेके कारखानेवालोंने देखा, यह तो दस आना हमारे हाथमें थमाकर सात रुपया छः आना सरकार ले लेती है, क्यो न हम अपने मालको चोरी-चोरी बेंच ले। लाखों गाठोके बेचनेका सवाल था, सेर दो सेर चीनी नहीं थी कि लुका छिपाके काम चल जाता।

सन्तोखी—लेकिन सरकारने तो कारखाने वालोंका हाथ खुला छोड़ दिया था?

भैया—खुला छोड़ दिया था कि जितना चाहें दाम रखें, लेकिन दाम को बिक्री खाते में लिखना पड़ता, फिर धोती पीछे दस आना और सात रुपये छः आनाका हिसाब रहता। मालिकोंने सोचा, बिना खाता बही पर लिखे माल बेंच डालो।

दुखराम—न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी।

भैया—उन्होने जाली बही खाते रखे, बहुत अधिक मालको चोरी-चोरी बेचा, इसीको कहते हैं चोर-बजार। तुम कहोगे बही खाता जाली बनाना और सरकारी टिकिस अदा करनेमें धोखा देना यह तो बहुत भारी कसूर है। लेकिन जहाँ करोड़ोंका वारा न्यारा हो, वहाँ लाखोंकी घूस-रिसवत चलती है। फिर कौन है जो घर आई लक्ष्मीको लौटायेगा? हजार-दो-हजार नहीं एक लाख एकमूठ घूस दिया जाता है! बताओ कितने मिलेंगे इन्कार करने वाले? कालों हीके बारेमें नहीं कहता गोरे साहबोंकी भी बात पूँछ रहा हूँ।

सन्तोखी—तब तो भैया ! सबका इमान-धरम डिग गया होगा ?

भैया—लाख ही नहीं सन्तोखी भाई ! करोड़का भी घूस चला है, उसने हिमालयकी सबसे ऊँची चोटियों तकको भी ढाँक दिया है। लोग टुक-टुक देखते रहे, सब जानते हुए भी; लेकिन करें क्या किसके पास फरियाद ले जाएँ ?

दुखराम—चोर-बाजारवालोंने कहर किया भैया !

भैया—इन कपड़े और दूसरी चीजोंके कारखानेवालोंने करोड़ों रुपये बनाए, मालामाल हो गये। कितनोंने तो पाँच सौ पाने लायक नौकर पन्द्रह सौ रुपयेमें रक्खा, पाँच सौ उसे दिया, डेढ़ हजारकी रसीद लिखाई और एक हजार अपनी जेबमें रख लिया। बताओ इन करोड़पतियोंको कौन पकड़ सकता है, यहाँ कागज-पत्तर भी ठीक है। फिर अनाजके चोरीके अपराधको तो कोई भूल ही नहीं सकता।

सन्तोखी—अनाज-चोरोंने क्या किया भैया ?

भैया—जानते हो न ! चैतमें गेहूँ तैयार हुआ या अगहनमें धान। घर आया, दो महीनेके भीतर ही खाने या भूखे मरनेके लिए जो कुछ अन्न घरमें रह गया वह रह गया, नहीं तो सब झार-झूरकर बनिएके पास चला गया। सन्तोखी दास ! तुम भी अनाज खरीदते हो, बताओ उसे कितने महीने तक अपने घरमें रखते हो ?

सन्तोखी—महीने और घरमें रखना ! हमारे पास तो उतना पैसा भी नहीं होता। किरानावाले बड़े-बड़े -सेठ हैं, हम उनके लिए अनाज खरीदते हैं। रुपये पीछे पैसा-दो-पैसा बच गया तो बहुत है।

भैया—तुम्हारे सेठ लाखवाले होंगे ?

सन्तोखी—हाँ, यही लाख दो लाखका रोजगार होगा और क्या ?

भैया—किरानाके असली मालिक लाख-दो-लाख नहीं पाँच-दस करोड़का रोजगार करते हैं। चैतमें तुमने खरीदा, तो बैसाख-जेठमें वह अनाज करोड़-पति सेठोंका हो जाता है। असाढ़-सावनमें आठ सेर-के भावसे खरीदा और दो

सेर तीन सेर कर दिया। अब यह दुगुना-तिगुना नफा किसके पेटमें गया ?

सन्तोखी—उन्हीं करोड़पति सेठोंके मुँहमें।

दुखराम—लेकिन भैया ! अन्न तो जीवका अहार है। अन्नको महँगा करके यह तो लोगोंको जबह करना है। सरकार एक आदमीके खून करनेपर फाँसी चढ़ा देती है, फिर लाख-लाखके खूनपर चुप क्यों है ?

भैया—जब आदमी मरने लगे, हाय-हाय मचने लगी, तो सरकारने भाव पक्का किया। लेकिन भाव पक्का करनेसे क्या होता है ? अनाज तो करोड़-पतियोंके हाथमें था। जो एक करोड़ नफा हो तो बीस लाख घूस-रिसवत कौन नहीं दे देगा।

सन्तोखी—तो छोटे-छोटे बच्चोंके बिलख-बिलखकर मरनेका ख्याल नहीं किया, पेटके लिए औरतों की इज्जत बेचनेका ख्याल नहीं किया, ख्याल किया तो एक अपने ही नफेका ? छी ! धिक्कार है ऐसे पापियोंको !!

भैया—धिक्कार मत कहो सन्तोखी भाई। वे बड़े धर्मात्मा हैं। उनके बड़े-बड़े मन्दिर हैं, तीर्थों में सदाबरत और धरमसाला चलती है, गोसालामें चन्दा देते हैं। साधू-सन्त और पडित-पाधा लोग सेठकी जयजयकार मनाते हैं, मौलवी लोग सौदागरके लिए दुआ माँगते हैं।

दुखराम—तो इन कसाइयोंमें हिन्दू मुसलमान दोनों हैं ?

भैया—हाँ, सब अपने-अपने धरमके चौधरी हैं। हिन्दू सेठ दोनों साँझ ठाकुरजी का दरसनकर चरनामिरित लेते हैं, मुसलमान सेठ पाँच बेर नमाज पढ़ते हैं।

दुखराम—भैया रजबली ! यह क्या है ?

भैया—मुँहमें राम बगलमें छूरी और क्या ? लाखो औरतोंने अपनी इज्जत बेंची खानगी बनीं; लाखो बच्चोंने तड़प-तड़पकर जान दी, साठ लाख आदमी मर गए, लेकिन इन मोटी तोंदवालोंके कानपर जूँ भी न रेंगी।

सन्तोखी—इनके कानपर न जूँ रेंगी, तो भगवानके कानपर तो जूँ रेंगनी चाहिए, थी ? राछछ आततायी ! साठ-साठ लाख आदमियोंको तड़पा-तड़पाकर मार डालें ! भगवान अब भी अवतार न लें तो कब लेंगे ?

भैया—भगवान बहुत दूर रहते हैं सन्तोखी भाई ! कौन समुन्दरमें रहते हैं, मुझे तो याद नहीं आता।

सन्तोखी—छीर समुन्दरमें भैया ! सेसनागके ऊपर सोते हैं और लच्छिमी चरन दबाती हैं।

भैया—एक तो दूर बहुत दूर छीर समुन्दर न जाने कहाँ है, भूखके मारे बोल भी न सकनेवाले इन लाखों आदमियोंकी सिसकीकी अवाज वहाँ तक पहुँचती भी कैसे ? फिर वह सेस नागपर सोये हैं, गुलगुल बिछौनेपर नींद जल्दी आ जाती है ? तिसपरसे अपने नरम-नरम हाथोंसे लच्छिमीजी चरन दबा रही हैं, तो क्या मामूली नींद आएगी ?

सन्तोखी—लेकिन भैया ! प्रहलादके ऊपर गाढ़ पड़ा, तो तुरन्त खम्भ फाड़कर निकल आये, ध्रुवने पुकारा, तो तुरन्त दरसन दे दिया। द्रौपतीकी चीर खींची जाने लगी तो आके उसमें समा गये !

भैया—पहलाद और धुरुव राजाके लड़के थे द्रौपती रानी थी। राजा-रानी कोई मरता, तो जरूर भगवानकी नींद टूट जाती, वह नंगे पैर दौड़ पड़ते।

सन्तोखी—भगवानका राजा-रानीके साथ इतना प्रेम क्यों है भैया ?

दुखराम—मूर्ख चपाट। तुमको इतना भी पता नहीं है ? हमारे-तुम्हारे बूतेका है, कि भगवानके लिए मन्दिर बनवा दें। जो उनके लिए बड़े-बड़े मन्दिर बनाता है, छप्पन परकारका भोग बनवाता है, दान-दच्छिना देता है; भगवान उसके लिए अवतार न लेंगे तो क्या तुम्हारे-हमारे लिए लेंगे ?

भैया—दुक्खू भाई ! तुमने बड़ी कड़ी बोली मारी !

दुखराम—बोलीकी चोट गोलीसे भी बढ़कर होती है भैया ! लेकिन सन्तोखी भाईका हम पैर पकड़ते हैं, वह हमारा अपराध जरूर छिमा कर देंगे।

सन्तोखी—नाहीं दुक्खू भाई ! हम तुम्हारे ऊपर भला नराज होंगे ? हम दोनों लड़कपनके सँघतिया।

भैया—तनिक कड़ा कहा लेकिन दुक्खूभाई, कहा तुमने बावन तोला पाव रत्ती ठीक ही।

दुखराम—भैया ! और तनिक आँख खोलो, चारों ओर मालूम होता है

किसने जकड़बन्द कर दिया है, साँस लेनेकी भी छुट्टी नहीं है। उधर सेठ लोगों की धरमसाला और सदाव्रत इधर अजोधियाजीका सखी समाज, फिर छीरसागर के गगवान जो राजा-रानीके लिए नंगे पैर दौड़े-दौड़े आवें और पचास-पचास लाख गरीब कुत्ते की मौत मार डाले जायँ, और वह सुगबुगाएँ भी नहीं !

भैया—लेकिन दुक्खू भाई ! यहाँ हमारे सामने भगवान नहीं हैं कि उनको गाली-फदीहत दें। भगवान बेचारेका दुनियाके बनाने-बिगाड़नेमें कोई हाथ नहीं है।

दुखराम—तो वह हैं किस वास्ते ?

भैया—अभी हमें यह जानना है कि दुनियाको नरक किसने बनाया।

सन्तोखी—हाँ, ठीक तो है दुक्खू भाई ! रजबली भैयाने तो कह दिया कि भगवानका दुनियाके बनाने-बिगाड़नेमें कोई हाथ नहीं। हम लोगोंको यह जानना चाहिये कि दुनियाको नरक बनाया किसने ? भगवानको लेकर हम क्या करें।

दुखराम—साँच ही कह रहे हो सन्तोखी भाई ! मुझे तो मालूम होता है कि भगवान-वगवान कोई नहीं है, यह केवल धोखाकी टट्टी है।

भैया—भगवानके बारेमें फिर किसी दिन पूँछना दुक्खू भाई ! आज दुनियाको नरक बनानेवालोंकी बात सुनो। साठ लाख आदमियोंको किसने मारा ? कमेरों-कमकरों किसान-मजूरोंने ? या कामचोरोंने ?

सन्तोखी—कामचोरोंने मारा। किसान-मजूरोंने तो अन्न-कपड़ा तैयार करके रख दिया था, लेकिन इन सेठोंने, इन घूँसखोरोंने और अंधी लालची सरकारने यह सब कहर किया। लेकिन इन कामचोरोंके ऊपर साठ ही लाखों का खून नहीं चार हजार बरससे इनके दाँतमें बेकसूरोंका खून लगा हुआ है।

दुखराम—चार हजार बरससे ? न जाने कितने करोड़ कितने अरब बेकसूरोंका खून किया ?

भैया—इन्हींके जुलुमसे यह दुनिया नरक हो गई है। मैंने पहिले ही नहीं पूछा था कि हमारे गाँवके पासमें गड़ही कैसे बन गई ? जो बड़े-बड़े कोठे-अटारी, मोटर-हाथी, लाव-लसकर, नोकर-चाकर और छप्पनछूरी का नाच तुम देख रहे हो, यह धन कहाँसे आता है ? लाख रुपया महीना लाटसाहब और

दो लाख रुपया महीना दिल्लीके बड़े लाटपर जो खरचा होता है, यह कहाँसे आता है। पाँच-पाँच सालमें एक चीनीकी मिल खोलकर दस-दस लाख रुपया कमा लेना, यह कहाँ से आता है ? यह चिकने-चिकने गाल और लाल-लाल ओठ किसके खूनसे रँगे जाते हैं ?

सन्तोखी—कहते हैं, धन-वैभव भगवान देते हैं।

दुखराम—सन्तोखी भाई ! देखो हमारी-तुम्हारी बिगड़ जायेगी। चाहे तो पहिले ही भगवानके बारेमें फैसला कर लो, नहीं तो भगवानका नाम अभी मत लो।

भैया—झगड़ो मत दोनों जने। सन्तोखी भाई जो कहते हैं, वह दूसरोंकी सुनी-सुनाई बात है। अच्छा दुक्खू भाई ! जो हमारे गाँवमें यह घर-दीवार उठी है, इसके बारेमें कोई आकर कहे, कि यह सब माटी भगवानने दी है; तो क्या जवाब दोगे ?

दुखराम—पहिले जवाज नहीं दूगा भैया, पहिले देखूँगा कि उसके आँख है कि नहीं। और आँख जो हुई, तो कान पकड़कर ले जाऊँगा गड़ही के पास और कहूँगा—'देख आँख के अंधे, यह जो जमीन गड़ही बन गई है, वह इन्हीं घरों के कारण, यहाँकी माटी वहाँ गई है।

भैया—सन्तोखी भाई ! किसीके आँगनमें सोनेका पेड़ नहीं है कि हिला दिया और आँगन भर गया। किसीके घरमें हम सोनेकी बरखा होते नहीं देखते; फिर हम कैसे मान लें, कि जो यह भोग-विलास करोड़-करोड़ रुपयेपर पानी फेरना हो रहा है, वह भाग और भगवानकी ओरसे उनके पास आता है ? किसान ऊख पैदा करता है, मिलवाले ऊखका दाम कितना मन देते थे दुक्खू भाई ?

दुखराम—एक बार तो चार आना मन भी नहीं दे रहे थे, फिर हम सब किसानोंने एका किया तब कुछ हल्ला-गुल्ला हुआ, रजबली भैया ! तुमने ही तो मदद की थी ? तब जाकर आठ आना मन हुआ था।

भैया—मन भर ऊखमें जानते हो कितनी चीनी होती, चार सेर।

दुखराम—तो हमें आठ आना थमा के चार सेर चीनी ले लिया न ? डाकू कहीं का।

भैया—तुम्हें भी लूटा और जो यह चार-चार आना मजूरी पर दस-दस घंटा खटते हैं, इन मजूरोंको भी लूटा। उसका दस-बारह आनासे बेसी नहीं खर्च हुआ।

सन्तोखी—और बेचा था डेढ़ रुपये पर न ? जनु दूना का नफा।

दुखराम—जो जेठ-बैसाख की धूपमें खून-पसीना एक करे, जो मसीनमें हाथ-पैर कटावे, और देह भर कोइला-कालिख लगावे, उसको तो चार आना और आठ आना मिले और यह ठंडे-ठंडे घर में बैठे बिना हाथ-पैर डुलाये आधा हमारा लूट लें।

भैया—और जानते हो, वह लूट रहे हैं दस-दस बीस-बीस हजार किसानों को, सैकड़ों मजूरोंको तब न एक-एक साल में दो-दो तीन-तीन लाख का नफा करके रख देते हैं ? जो यह कहें कि यह तीन लाख रुपया भगवानने छीरसागरसे भेजा है, तो यह मानने की बात है ?

दुखराम—नहीं भैया ! यह हमी लोगोंके खूनको पीकर मोटे होते हैं।

भैया—यह जोंक हैं जोक दुक्खू भाई !

दुखराम—जोक ! ठीक कहा भैया ! यह जोंक ही हैं और कितनी होसियार जोंक हैं, कि लाखों आदमीका खून पी रहे हैं और किसीको पता भी नही लगता। एक बात कहें रजबली भैया ! मैं तो समझता हूँ कि जोकों के छिपानेके लिए ही भाग-भगवान को किसीने गढ़ा है।

सन्तोखी—मैंने भगवानका जब नाम लिया, तो दुक्खू भाई ! तुम नाराज हो गये ?

दुखराम—अच्छा सन्तोखी भाई ! जीभ लुटपुटा गई, छिमा करना। हम पीछे यह बात पूछेंगे।

भैया—जब से आदमियोंमें जोंक पैदा हुई, तभीसे यह दुनिया नरक बनी।

दुखराम—जोंक माने कामचोर, जाँगरचोर, सेठ, राजा, नवाब यही न ?

भैया—हाँ, इन्हींने खून चूस-चूसकर किसानोंको, मजूरोंको, गरीब बना

दिया, उनको किसी लायक नहीं रहने दिया। सरकारमें सब जगह यही कामचोर बैठे हैं; पलटन, पुलिस सब जोंकोंकी रक्षाके लिए बनी है।

दुखराम—जिसमें अपनी देहमें लगी जोकको भी हम निकालकर फेंक न सकें !

भैया—जोकोंको निकालकर फेंक दोगे, तो वह जियेंगी कैसे ? उनके हाथ-पैर भी नहीं, वह घासपात भी नहीं खातीं उन्हें चाहिये तुम्हारा गरम-गरम खून। इसीलिए तो यह सब सरकार-दरबार बनाया गया है, यह लाव-लसकर रखी गई है, कि जिसमें तुम जोकोंको निकालकर फेंक न सको। जिस दिन तुमने जोकोंको निकाल फेंका, उसी दिन यह दुनिया नरकसे सरग हो जायगी।

दुखराम—भैया रजबली ! अब आँख कुछ-कुछ खुलती है, कितना बड़ा पट्टर बाँधा हुआ था।

भैया—एक पीढ़ीका नहीं डेढ़ सौ पीढ़ीका पट्टर, और हर पीढ़ीमें जोकोने नया-नया पट्टर तुम्हारी आँखोपर चढ़वाया।

दुखराम—हाँ भैया, यह पट्टर उखाड़ फेंके बिना काम नहीं चलेगा।

सन्तोखी—इतनी जोंकें जिसके सरीरमें लगी हो, उसके पास कहाँसे खून बचा रहेगा।

भैया—और जोंकें दिन पर दिन बढ़ती गईं सन्तोखी भाई ! पहिले एक अंगुलकी थी, फिर दो अंगुलकी और अब तो हाथ-हाथ भरकी हो गई हैं।

दुखराम—पूरी भैंसिया जोंक, देखके डर लगता है। जब भैंसको लग जाती है, तो यह नहीं कि पेट भर खाके छोड़ दे।

भैया—पेट भी तो उनका सरीरके छोटेसे कोने-अँतरेमें नहीं होता।

दुखराम—हाँ भैया, जोकका तो सारा सरीर ही पेट होता है। जितना पीती है, उससे भी ज्यादा खून तो बाहर गिरा देती है। लेकिन भैया एक अंगुल-की जोंक एक हाथ की कैसे बन गई ?

भैया—बतलाता हूँ, लेकिन यह भी मनमें रखना, कि जैसे-जैसे जोकें बढ़ीं वैसे-वैसे दुनिया और नरक बनती गई। लेकिन पहले एक समय था दुक्खू भाई ! जब आदमियोंमें जोंकें नहीं थीं। और अब भी दुनियाका चौथा भाग है, जिसमें जोंकें नहीं हैं।

दुखराम—तब तो वहाँ नरक नहीं होगा भैया, लेकिन कैसी जगह है वह जहाँ जोंकें नहीं हैं।

भैया—रूसका और चीनका नाम सुना है न ?

दुखराम—हाँ भैया, रूसका चीनका नाम किसने नहीं सुना होगा? वही रूस न जहाँ आदमी पीछे पाँच बीघा (३ एकड़) खेत और गाय बाँटी गई थी ?

भैया—हाँ वही, लेकिन बाँटनेकी बात शुरू-शुरूमें रही, पीछे तो उन्होंने गाँवके गाँवका सारा खेत साझेमें जोतना शुरू कर दिया।

सन्तोखी—वही न भैया जहाँ की लाल सेनाकी बीरताकी खबर रोज अखबारोंमें सुनते रहे।

भैया—हाँ सन्तोखी भाई ! जो लाल सेना नहीं रही होती और रूस बेजोड़-वाला राज न रहा होता, तो आज दुनिया भरमें रावनका राज हो गया होता। चकिन रूस और रावनके बारेमें फिर किसी दिन बात करेंगे। आज तो अभी जोंकोके बड़ा होनेकी बात थोड़ी सुन लो।

दुखराम—हाँ सुनाओ भैया !

भैया—हम जानते हैं रात ज्यादा हो गई है फिर कातिककी भीड़ है। कल फिर तुम्हें दुक्खू भाई, हल नाधना पड़ेगा। पहिले जोकें नहीं थीं, यह बहुत पुरानी बात है, लेकिन लाख दो लाख बरस नहीं किसी देसमें जोकोंको पैदा हुए दो हजार बरस हुआ, किसी देशमें चार हजार और ज्यादासे ज्यादा सात-आठ हजार समझ लो।

सन्तोखी—तो सात-आठ हजार बरससे पहिले दुनियामें जोकोंका कहीं नाम नहीं था ?

भैया—बिल्कुल नाम नहीं था। जब आदमी इतना ही कमा पाता था कि दिन भरके खानेसे निश्चित हो जाय, तो जोंक कैसे पैदा हों ? कलमुँहा और ललमुँहा बानरोंको तुमने देखा है न दुक्खू भाई ?

दुखराम—कलमुहाँ बानर तो हमारे ही गाँव में बहुत हैं।

भैया—तो देखते हो न बानर पेड़से तोड़कर या जमीनसे बीनकर अपना

पेट भरता है, वह जमा नहीं कर पाता। इसीलिए दूसरेकी पैदा की हुई चीज को हड़पने वाली जोंकें वहाँ नहीं।

दुखराम—हाँ भैया ! उनमें जो सबसे बलिष्ठ हनुमान होता है, उसे हम लोग खेखर कहते हैं। लेकिन खेखरको भी आहारके लिए उतनी ही मेहनत करनी पड़ती है, जितनी दूसरे बानर-बानरियोंको।

भैया—लेकिन जिस समय आदमीमें जोंक नहीं थी, उस समय भी उसमें और बानरोंमें अन्तर था। आदमी अपने लिए पत्थर, सींग या लकड़ीका हथियार बनाता था। इन हथियारोंसे वह अपने शत्रुओंसे लड़ता और अपने लिए सिकार या फल गिरा कर आहार जमा करता।

दुखराम—तो भैया ! उस समय लोहेका हथियार नहीं था ? तीर-धनुष भी नहीं था।

भैया—लोहाको तो दुनियामें पैदा हुए चौंतीस सौ बरससे ज्यादा नहीं हुआ।

दुखराम—और भैया, उससे पहले खाली सींग, लकड़ी-पत्थरका हथियार चलता था ?

भैया—नहीं लोहासे पहले आदमीको ताँबेका पता लग गया था, लेकिन उसे भी पाँच हजार बरससे जियादा नहीं हुआ। और यह भी दुनिया भरमें एकही बार सब जगह नहीं हुआ। अकबरके दादा बाबरके हिन्दुस्तानमें आनेके पहले हमारे यहाँ बारूदका कोई हथियार नहीं था, दूर तक मार करनेके लिए सिर्फ तीर धनुष था। तीरके मुँहपर तिकोना लोहा लगा रहता जिसको लोग बिखसे बुझाकर रखते थे। लेकिन जब तोप-बन्दूक आई तो तीर-धनुषका रिवाज उठ गया, लेकिन भील-संथाल लोगोंमें अब भी तीर-धनुष चलता है।

सन्तोखी—हाँ भैया, यह तो हम भी संथालपरगनामें देख आए हैं।

दुखराम—तो पहले लोग सिकार और फलसे ही गुजारा करते थे क्या ?

भैया—हाँ, दुक्खू भाई ! पहिले सिकार-फल फिर लोग पशु पालने लगे।

दुखराम—गाय, घोड़ा, भेड़, बकरी ?

भैया—हाँ, पशु पालने लगे। और जानते हो सिकार एक दिनसे ज्यादा

रखा नहीं जा सकता। फल भी बहुत महीनों तक नहीं रह सकता। लेकिन पसु-धनको सालोंतक रखा जा सकता है और जितने दिन रक्खें वह उतने ही दिन और बढ़ते जाते हैं।

दुखराम—सूअर तो भैया सालमें एकसे बीस हो जाती...

सन्तोखी—और दूसरे साल बीससे चार सौ?

भैया—जो खाये-पकायेसे बच जाये या मरे-बरे नहीं। हाँ, तो जब आदमी के पास पसु-धन हुआ, जो बरसों तक उसके पास रह सकता है; तब पहिले-पहल जोंक पैदा हुई। बल्कि वह पूरे रूपमें जोंक नहीं थी, वह बहुत कुछ आदमियों जैसी ही थी।

सन्तोखी—यह कौन जोंक थी भैया, राजा या सेठ या कौन?

भैया—अभी न राजा थे, न सेठ थे, वह पहिली जोंक थी पुरखा या पितर। जब आपस में झगडा-झंझट होता, तो एक पचाइत देखनेवालेकी जरूरत पडती थी। जब बाहरसे झगड़ा होता, तो पल्टन चलानेके लिये एक नेताकी जरूरत होती। यह दोनों काम जो आदमी करता, उसे पितर या महा-पितर कहते थे। अभी उसके सिरपर मुकुट नहीं आया था, अभी भी वह चटाई पर साथ बैठने-वाला बिरादरीका चौधरी था। लेकिन उसके पास धीरे-धीरे पसु बढ रहे थे, धन बढ़ रहा था।

सन्तोखी—तो भैया पसु-पालनेसे पहिले ज्यादा दिन रहनेवाला धन तो किसीके पास था नहीं फिर धनी-गरीबका फरक भी नहीं रहा होगा?

भैया—पसु-पालनेके जुगसे पहिले मेरा-तेराका सवाल ही नहीं था। एक जगह रहनेवाले लोग साथ मिलकर सिकार मरते, साथ मिलकर फल जमा करते और साथ ही खाते-पीते थे।

दुखराम—माँ-बाप, बहिन-भाई, चाचा-चाची सब न साथ रहते होंगे? कितना बड़ा कुनबा रहता होगा।

भैया—अभी बाप नहीं बना था दुक्खू भाई!

दुखराम—बाप नहीं था इसका क्या मतलब भैया?

भैया—ब्याहका रवाज नहीं था। माँ को सब जानते थे।

दुखराम—माँको क्यों नहीं जानेंगे ? माँके उदरसे तो बच्चा पैदा होते देखा जाता है ।

भैया—तो जंगलमें गाय, घोड़े, भेड़, बकरी रहा करते थे, उन्हींमेंसे कुछ को लोगोंने पालतू बनाया । आखिर रोज-रोजका सिकार मिलना तो आसान नहीं था । पसु पालनेका काम मर्दने शुरू किया, उससे पहले परिवारकी मुखिया माँ होती । अब अधिक धनवाला पुरुख मुखिया हो गया ।

दुखराम—जनुक तिरियाके राजकी जगह मरदका राज, माताके राजकी जगह पिताका राज सुरू हुआ ।

भैया—अभी इतना ही समझो, कि नारीको हटाकर मरद मुखिया बन गया ! लेकिन अभी जोंक नहीं तैयार हुई थी । जब पसुधन और बढ़ा, भीतरी और बाहरी झगड़े और बढ़े; तब मुखियाका जोर बढ़ा, और कभी-कभी घर बैठे लोग उसके पास खान-पान पहुँचाने लगे । बस छोटे रूपमें जोंक शुरू हो गई । मैंने बतलाया था न, कि जोंकोंने दुनियाको नरक बनाया ।

दुखराम—हाँ भैया ।

भैया—तो जोंकोंका अवतार कैसे हुआ यह मैंने तुमसे कहा । लेकिन पूरा जोंक-पुरान आज नहीं कह सकता ।

सन्तोखी—हाँ भैया, आज रात बहुत हो गई है ।

भैया—कल रातको इसी बखत जोंक-पुरानकी कथा होगी ।

अध्याय ३

जोंक-पुरान

सन्तोखी—भैया ! बेचारा दुखराम आज बडी देर तक हल चलाता रहा । कातिक की भीड़ है न, आता ही होगा ।

भैया—वह देखो पेटपर हाथ फेरते दुक्खू भाई आ रहे हैं । कहो दुक्खू भाई ! आज बहुत डकार लेते चले आ रहे हो ।

दुखराम—क्या पूँछते हो भैया, आज मलकिनने पूरी-खखीर बनाई थी,

हम गरीबोंको छठे-छमाहे कभी कुछ अच्छा खाना मिल जाता है, तो अपनेको धन्न-धन्न समझने लगते हैं।

भैया—जो जोंकें न रहें तो छठे-छमाहे क्यों रोज अच्छा-अच्छा भोजन मिल सकता है और तेलकी पूरी और गुड़की खीर नहीं खालिस घीकी बनी पूड़ी और दूध-चीनीकी बनी खीर।

दुखराम—हाँ भैया! यह हो सकता है, इतनी-इतनी जोंकें जो हमारे गेहूँ घी-चीनीको छोड़ देंगी, तो क्यों नहीं हम मौजसे खायें-पियेंगे?

भैया—तो कल हमने जोंकका जनम बतलाया था? अब उसकी बाललीला, जवानी और मरनेकी घड़ीकी बात सुनो।

सन्तोखी—मरनेकी घड़ी भी? क्या भैया जोंकोंके मरनेकी घड़ी आ गई?

भैया—मैंने बतलाया नहीं कि दुनियाके चार भागमेंसे एक भाग रूसमें अब जोंकें नही हैं। रूसमें जोंकोंके मरनेकी घड़ी आजसे सत्ताईस बरस पहले बीत चुकी, चीनमें अभी-अभी लेकिन बाकी तीन भागमें जोंकें अब भी हैं और बड़े जोर से। यही समझ लो सिर्फ एक सूबामें पाँच-छ महीनेके भीतर साठ-साठ लाख आदमियोंकी जान ले लेना बतला नहीं रहा है, कि वह कितनी भयंकर है।

सन्तोखी—हाँ भैया! हम तो भगवानसे रोज मनाते हैं, कि कब यह जोंकें जाएँगी।

दुखराम—फिर सन्तोखी भाई, तुमने भगवानका नाम लिया।

सन्तोखी—दुक्खू भाई, नाराज मत हो। न हमने भगवानसे अवतार लेने के लिए कहा और न पाव-पियादे दौड़नेके लिए। भैयाकी बात हमें ठीक मालूम होती है; भगवान इतनी गाढ़ी नींद में सोये हैं, कि लाख दो लाख बरस में भी उनके जागनेकी उमेद नहीं है।

दुखराम—वह सदाके लिए सो गए हैं सन्तोखी भाई! मैं तो यही मानता हूँ।

भैया—तो दुक्खू भाई जोंकोंकी बाल-लीला और पहिलेकी कथा मैं बहुत संक्षेपमें कहूँगा, पीछेकी कथाको तुम्हें जियादा सुनना चाहिए!

दुखराम—हाँ भैया, पीछे हीकी जोंकोंसे तो हमें पाला पड़ा है।

भैया—मैंने बतलाया था कि पहिले इसतिरी मुखिया होती थी, सारा परिवार उसका होता था, सबको ठीकसे रखना, सबकी देख-भाल करना उसीका काम था। पचीस, पचास या सौका जो भी परिवार होता, उसकी मुखिया या महामातर इसतिरी होती थी। कभी दो-दो परिवारोंमें खून-खराबी भी होती थी।

दुखराम—खून-खराबी क्यों होती थी भैया, वहाँ तो जोकें नहीं थीं।

भैया—जंगलके लिए झगडा हो जाता था। जिसका परिवार बढ़ जाता, उसे अधिक सिकार, अधिक फल बटोरनेकी जरूरत पड़ती थी!

सन्तोखी—तो वे उन्हीं पत्थर, सींग और लकड़ीके हथियारसे लड़ते होंगे?

भैया—वही तो उनके पास हथियार थे, उन्हींसे वे बैल, हरिन और भालूका सिकार करते थे, लेकिन जानते हो न जिसके पास आदमी ज्यादा, वही लड़ाईमें जीतता था, हथियार तो सबके पास एकसे थे। इसी वास्ते बलवान परिवारसे बचनेके लिए कितने ही छोटे-छोटे परिवार एक हो जाते हैं। इसको कहा जाने लगा जन।

सन्तोखी—हम लोग तो एक जन दो जन कहते हैं एक आदमी दो आदमी के वास्ते।

दुखराम—और जन-मजूर भी कहते हैं, कमकरके वास्ते।

भैया—लेकिन पहले-पहल जन एक आदमी या मजूरके लिए नहीं बोला जाता। उस वखत कई परिवारोंको मिलाकर जो एक बडा परिवार बनता उसी को जन कहते हैं।

दुखराम—माने कई महामाइओंके परिवारोंको इकट्ठा कर दिया जाता था।

भैया—हाँ, इसीको जन कहते थे। जनवाले जुगमें भी जोकें नहीं पैदा हुई थीं। जोकें तब पैदा हुईं जब पशुओंको पालके मरद धनवाला बन गया, वह महापितर बन गया और दूसरोंकी कमाई उसे मुफ्तमें मिलने लगी। धीरे-धीरे आदमीने खेती करना सीखा, फिर चमड़ेका सीना, फिर सूत कातना और

आखिरमें कपड़ा भी बुनने लगा। अब उसके पास ऐसी चीजें आने लगीं कि जिन्हें वह बरस दो बरस रख सकता था। सिले चमड़ेको देकर खाने-पीनेकी चीजें बदल सकता था, कबलसे भी अपने मनकी चीज बदल सकता था। जनके भीतर, या महापितरके बड़े गिरोहके भीतर कभी-कभी झगड़ा-बगड़ा हुआ, तो उसका फैसला तो आपस हीमें हो जाता था, लेकिन बाहरके लोगोंसे जब-तब लड़ाई हो पड़ती थी। खेती सुरू करने के बाद तो आदमी घर में रहने लगा।

सन्तोखी—पहिले क्या घरमें नहीं रहता था?

भैया—पहिले सिकार और फलके पीछे एक बनसे दूसरे बनमें घूमता रहता था। जब ढोरडंगर पोसने लगा, तो जहाँ चराईका सुभीता होता वहां चला जाता। लेकिन खेती शुरू कर देनेपर वह कैसे जाता?

दुखराम—तो खेती आदमीके लिए खूँटा हो गई, अब वह बँध गया?

भैया—हाँ बँध गया, अब उसने अपने लिए घर बनाया। दूसरे गिरोहसे बचनेके लिए सब लोगोंने अपना घर पासमें बनाया, जिसमें दुसमनसे लड़नेके लिए जल्दी एक दूसरेकी मदद कर सकें। पास-पासके घरोंको गाँव कहा गया, क्योंकि ग्राम का मतलब है झुन्ड।

दुखराम—घरोंका झुन्ड, यही मतलब है न गाँवका?

भैया—हाँ, महापितरोंके जुगमें लड़ाई और बढ़ी, क्योंकि दुसमनको हरानेसे सब पसु, सारा धन उसे मिल जाता था। महापितर मुखिया था। उसको लूटका माल ज्यादा मिलता था और दूसरोंको थोड़ा-थोड़ा।

सन्तोखी—तो धनी-गरीबका फरक और बेसी हुआ। हारे लोगोंके बचे हुए आदमियोंको क्या करते थे?

भैया—पहिले तो, जो मरद मिलता, सबको मारते, जो औरत हाथ आती उन्हें अपने में बाँट लेते।

दुखराम—तो मरद कोई नहीं बचने पाता था?

भैया—हाँ, मरदका परान नहीं छोड़ते थे। लेकिन पीछे खेतीके कामके

लिए, चमड़े-जूतेके कामके लिए, कपड़ा-मिट्टीका बर्त्तन बनानेके वास्ते आदमियों की अधिक जरूरत पड़ने लगी।

दुखराम—बेसी माल तैयार हुआ तो बदलकर खूब बेसी माल हाथ लगेगा यही सोचकर न भैया?

भैया—हाँ, इसीलिए पहिले लड़ाईमें हारे सतरूको कैदी बनाते थे, कौन उसे घर बैठाकर खिलाता। लेकिन जब देखा कि आदमी हाथसे मेहनत करके अपने खानेसे दुगुना-तिगुना पैदा कर सकता है, तो हारे मरदोंको कैदी बनाने लगे। इन्हींको दास या गुलाम कहा जाता।

दुखराम—तो यह गुलाम दूसरे लोगोंमें बाँट दिये जाते होंगे?

भैया—हाँ, अच्छे-अच्छे दास और दासी महापितरको मिलते, बाकीको और लोग बाँट-चोंट लेते।

सन्तोखी—तो यह दास-दासीभी ढोरकी तरह ही हुए?

भैया—वह भी मालिकके धन थे, वह मालिकके लिए काम करते थे। यह जुग हुआ गुलामीका।

दुखराम—जनु तबसे गुलाम बनानेका रवाज हुआ।

भैया—गुलामको मालिक खाना-कपड़ा देता था। नहीं देता तो वह मर जाता, फिर उसका नुकसान होता। जानते हो न दुक्खू भाई! गुस्सा होनेपर बैलको मारते हैं, लेकिन इतना नहीं मारते कि वह मर जाय।

दुखराम—हाँ भैया! कौन अपना नुकसान करेगा?

भैया—गुलामोंके आनेसे अब कम्बल, जूता-चमड़ा और कई तरहकी चीजें बहुत इफरात बनने लगीं। लोग उन्हें आपसमें बदलने लगे। बदलनेके सुभीतेके लिए हाट लगने लगी। सब लोग अपना-अपना माल ले आते थे और जिसको जो लेना होता, उसे अपनी चीजसे बदल लेते थे। लेकिन कभी-कभी हाटमें आदमीको अपने कामकी चीज जल्दी नहीं मिलती या अपनी चीज के खाहिसमन्द नहीं मिलते, तो आदमीको बहुत हैरान होना पड़ता। सब काम-धन्धा छोड़कर दो-दो, तीन-तीन दिन हाट अगोरना पड़ता। फिर लोगोंने गाँव पीछे एक-दो आदमीके जिम्मे अपनी चीज लगाके छुट्टी ली। जो

आदमी हाट अगोरता, उसने दूसरोंके लिये भी अपना काम-धन्धा छोड़ा, इसलिए सब लोग अपने मालमेंसे उस आदमीको दे कुछ देते थे।

दुखराम—जैसे भँड़भूजाको भूननेके लिए हम लोग थोड़ा-थोड़ा अनाज दे देते हैं।

भैया—हाँ, तो पहिले तो हाट अगोरनेवाला अपने गाँवके दो-चार घरोंकी जिम्मेवारी लेकर बैठता था और सो भी कभी-कभी। फिर वह गाँव भरकी जिम्मेवारी लेने लगा, और बराबर हाटमें बैठा रहता। उसका रूप अब कुछ-कुछ बनिया जैसा था। लेकिन अभी दो आदमियोंकी चीजोंकी अदला-बदली में वह खाली एक ओरका बिचवई था, फिर वह दोनों ओरका बिचवई बन गया। जब उसके पास बेसी नफा जमा हो गया, तो वह हर तरहकी चीजोंको अपने पास रखने लगा। इस चीजको मँहगा किया और दूसरी चीजको सस्तेमें खरीदा, अब वह पूरा बनिया हो गया।

सन्तोखी—लेकिल रोजगार तो था चीजका चीजसे बदलना ही न ?

भैया—लेकिन जब ताँबा मिल गया, लोगोंने देखा कि उसकी धार पत्थर और हड्डीसे ज्यादा तेज है, उसकी मार आदमी और पेड़को काटकर गिरा सकती है, तो सभी लोग ताँबेके हथियार रखना चाहने लगे। लेकिन ताँबा पैदा होता था थोड़ा, चाहनेवाले ज्यादा थे। एक दूसरेने चढ़ा-ऊपरी करके ताँबेका दाम बढ़ा दिया। दस मन गेहूँके लिए दस सेर ताँबा काफी समझा जाने लगा। अब बहुतसे लोग दस मन गेहूँ ढोकर ले जानेकी जगह दस सेर ताँबा ले जाने लगे। एक छटाँक ताँबा भी पास रहनेसे अढ़ाई सेर गेहूँ ढोनेका काम नहीं था।

सन्तोखी—तो ताँबा पैसे-रुपयेका काम देने लगा।

भैया—हाँ, पहले-पहल पैसे-रुपयेने इसी सरूपमें औतार लिया। महापितर गुलामोंके कमाए धनसे और मोटी जोक बन गया और इधर बनिया दूसरी जोंक तैयार हो गया।

दुखराम—उस बखत जोंकें न पैदा हुई होतीं भैया ?

भैया—तो बहुत बुरा हुआ होता दुक्खू भाई ! गाड़ी ही रुक जाती।

आदमी पत्थर और सींगके हथियार ही चलाता रहता और हारे दुसमनको बीन-बीनकर मारता रहता।

सन्तोखी—तो जोंकोंने कुछ फायदा भी किया था।

भैया—जो फायदा न पहुँचाया होता, तो जोंक पैदा ही नहीं होतीं। लेकिन देख रहे हो न, जोंकोंकी दो जाति अब तैयार हो गई।

दुखराम—गिरोहका सरदार और बनिया, यही दोनों न भैया ?

भैया—ठीक ! गुलामोंके जुगसे हम और आगे बढ़े। महापितर या सरदार तो भी अभी साथ चटाईपर बैठनेवाले चौधरी थे, लेकिन उसके पास धन ज्यादा था, लौंडी-गुलाम ज्यादा थे। वह खिला पिलाके बिरादरीके लोगोंमेंसे भी कितने हीको फोड़ लेनेमें सफल हुआ। वही आगे चलकर राजा बन गया।

सन्तोखी—तो अब राजसी ठाट और हजार रनिवासोंका जुग आ गया।

भैया—अब बड़ी मोटी और बडी भयंकर जोक तैयार हो गईं। वह सभी छोटी-बडी जोंकोंको अपने छतरछायामें रखने लगी। लेकिन लोग तो समझते थे कि यह कल तक हमारी बिरादरीका चौधरी था, एक साथ चटाईपर बैठता था। राजाने समझा कि हमारी नींव अभी मजबूत नहीं है। जातिका चौधरी होने से तैंतीसों कोटि देवताके सामने बलि देना, पूजा करना, महापितर हीका काम था। वह ओझा भी था, पुरोहित भी था और जातिका चौधरी भी।

दुखराम—ओझा भी था ! जोक ओझा भी हो जाय, तो खैरियत नहीं।

भैया—ठीक कहा दुक्खू भाई ! महापितर अपने कामकी जो कोई बात करवाना चाहता, तो आँख लाल-लाल करके सिर हिला देवताके नामसे कह देता। और उस समय आजकलसे बहुत बेसी देवता थे।

दुखराम—लोग भी बहुत सीधे-सादे रहे होंगे भैया ?

भैया—बहुत सीधे-सादे लेकिन जब लड़ पड़ते, तो उनका दिल भी बहुत कठोर होता। लेकिन महापितर या जातिका बड़ा चौधरी एक खूनकी बिरादरी-का ही अगुआ होता था। राजाकी ताकत ज्यादा थी, हथियार भी चोखे थे।

वह अपने धनका लोभ दिखा बिरादरीमें बेसी फूट डलवा सकता था। उसको एक बिरादरीपर संतोख नहीं हुआ, वह कई बिरादरियोंको हराकर उनका राजा बन गया।

दुखराम—तो जमात बढ़ती ही रही ?

भैया—हाँ, माईसे महामाईकी जमात बड़ी थी, महामाईसे पितरकी जमात बड़ी थी, पितरसे सैकड़ों गुलाम रखनेवाले महापितरकी जमात बड़ी हुई। और माहापितरसे भी बड़ी जमात राजाकी बनी। लेकिन महापितर तक कुछ भाई-चारा था। अब राजाने बिरादरियोंसे अपनेको ऊपर कहना सुरू किया। लेकिन लोग कैसे मान लेते, इसलिए उसने ओझा सोखासे मदद ली। किसी बड़े होसियार ओझाको अपना पुरोहित बनाया। उसने देवताके नामसे राजाको देवता बनाना सुरू किया। इसके लिए राजा पुरोहितको भेंट चढ़ाने लगे।

दुखराम—तो भैया ! पुरोहित एक और बड़ी जोंक पैदा हो गया।

भैया—देखा न दुक्खू भाई ! कैसी हमारी-तुम्हारी आँखपर एकके बाद एक नए-नए पट्टर बाँधे जाने लगे।

संतोखी—जोंकोंने चारों ओर अपना जाल फैला दिया।

भैया—और कमेरे उस जालमें फँसने लगे। उनका बल घटने लगा। कमेरे देस भरमें बिखरे हुए थे। उनका कोई मजबूत दल नहीं था। राजाने लोभ देकर कमेरोंके बहुतसे लड़कोंको सिपाही बना लिया।

दुखराम—इसीको कहते हैं काँटेसे काँटा निकालना। कमेरे जिसमें कान पूँछ न हिलाएँ, इसलिए उन्हींके लड़कोंके हाथमें तलवार दे दी।

भैया दुनियामें राजा लोग खूब मजबूत होने लगे। अपना राज बढ़ाने-के लिए, और बेसी लोगोंका खून चूसनेके लिए एक दूसरेसे लड़ने लगे। फिर बड़े-बड़े राज कायम हुए। दूर-दूरके देसोंपर हाथ फैलाये। पुरोहितोंका बल और धन भी बढ़ा, व्यौपारियोंका व्यौपार भी खूब चमका। इसी बीचमें लोहा निकल आया और खूब तेज-तेज तलवारें बनने लगीं। पत्थरके रूपमें पड़ा सोना चाँदी भी अलग करके निखालिस रूपमें तैयार होने लगा। असरफी, रुपया और ताँबेका पैसा बनने लगा। व्यौपारमें और तरक्की हुई।

लखपती सेठ जगह-जगह दिखलाई देने लगे। सेठ, पुरोहित और राजाका खूब गठबंधन था।

दुखराम—चोर-चोर मौसियाउत भाई, सभी जोंके मिलकर कमेरोंका खून चूसने लगीं।

भैया—व्यौपारी, कारीगरों-किसानोंके पैदा किए हुए धनको दुगुने-तिगुने दामपर दूर-दूर देसोंमें ले जाकर बेचने लगे। गङ्गामें बड़ी-बड़ी नाव, समुन्दरमें बड़े-बड़े जहाज चलने लगे। बढ़िया कपड़ा, बढ़िया गहना और सौककी हजार तरहकी चीजोंकी माँग बढ़ी। कमेरों, मजूरों, किसानोंको इतनी ही मजूरी मिलती, जिसमें उनका बंस खतम न हो जाय, लाख दो लाख भूखे मर जायँ, तो उसकी कोई परवाह नहीं, लेकिन देसके देसमें कोई दिया-बत्ती जलाने वाला न रह जाय इस बातको जोंकें पसन्द नहीं करतीं। जब जोंके परजापर दया करनेकी बात कहती हैं, तब उनका मतलब यही है कि चिराग न बुझ जाय।

सन्तोखी—उनका अपना मतलब पूरा होना चाहिये, दुनिया जाय चूल्हा भाँड़ में!

भैया—व्यौपारसे बनियोंको खूब फायदा होने लगा, जिसमें राजाको भी भाग मिलता। हर राजा अपने बनियोंकी सहायता करनेके लिए तैयार रहता था। काठके बड़े-बड़े जहाज कपड़ेके बड़े-बड़े पाल उड़ाते समुन्दरको छान डालते थे। नफाकी कुछ न पूँछो। ढाकाका मलमल बिलायतमें जाकर दुगने-तिगुने नफामें बिकता था। यूरुपके बनियोंने देखा, कि इस व्यौपारसे हमें भी नफा उठाना चाहिए। पहिले इटलीवाले व्यौपार करने लगे, फिर पुर्तगालवाले बनिये चढ़ दौड़े। उसके बाद तो हालैण्ड भी, फ्रांस भी, इंग्लैण्ड भी कैसे पीछे रहते। सब जगहके बनियोंने अपनी-अपनी गुट्ट बनाई। उनके राजाओं-ने मदद दी। वह काले लोगोंके देसकी ओर दौड़ पड़े। लेकिन जो समुन्दरमें जहाज दौड़ाने और मोल-तोल करनेकी ही चतुराईसे ही काम चल जाता, तो हिन्दुस्तानके बनिये भी पीछे नहीं रहते।

सन्तोखी—तो गोरोंके पास और कौनसी बात थी भैया, जिससे वह दुनियाके राजा बन गए ?

भैया—उनके पास बारूदका हथियार था, अच्छी-अच्छी तोपें, बन्दूकें तमन्चे।

दुखराम—क्या हमारे देसके लोग बारूद नहीं जानते थे ?

भैया—हमारे देसवाले तो नहीं जानते थे, लेकिन हमारे पड़ोसी चीनवाले जानते थे।

सन्तोखी—तो चीनवालोंने क्यों नहीं बारूदसे काम लिया ?

भैया—वह समझते थे कि यह आतिसबाजीके खेलके ही कामकी है चंगेजखाँ नामका एक मंगोल सरदार था, उसने अपने घुड़सवारोंकी मददसे चीनको जीत लिया। बारूदकी बन्दूकें पहले-पहल उसीने बनवाई। उसकी फौज दुनियाको जीतती हुई यूरुपमें घुस गई। मंगोलोंसे ही यूरुपवालोंने बारूदका भेद पाया, उन्हींसे ही यूरुपवालोंने किताब छापनेका ढंग सीखा ?

सन्तोखी—तो किताब छापनेकी विद्या यूरुपवालोंको पहले नहीं मालूम थी ?

भैया—चीन छोड़कर किसीको नहीं, हिन्दुस्तानको भी नहीं मालूम थी। हमारे यहाँ भी उल्टा अच्छर खोदकर लोग अपनी-अपनी मुहर बनाते थे, लेकिन उन्हें यह सूझ नहीं आई कि पूरी किताबको लकड़ीपर उलटा खोदकर छापा जा सकता है।

सन्तोखी—तो चीनी लोग लकड़ीपर उलटा अच्छर खोदकर किताब छापते थे।

भैया—हाँ, फिर यूरुपवालोंने सोचा कि एक लकड़ी पर एक किताबको उल्टा खोदनेसे अच्छा यह होगा कि एक-एक अच्छर उल्टा बनाकर रख लिया जाय और उतने ही अच्छरोंके जोड़नेसे तो बड़ीसे बड़ी पोथी बन जाती है, इस तरह एक बारके बनाये उल्टे अच्छर बहुतसी किताबोंके छापनेका काम देंगे। लकड़ीका अच्छर टिकाऊ नहीं होता, इसी वास्ते उन्होंने सीसेका अच्छर बनाया।

सन्तोखी—तो यूरुपवालोंने दूर तक सोचा ?

भैया बारूदके हथियारोंके बारेमें भी यूरुपवालोंने बहुत दूर तक सोचा और

अच्छे-अच्छे हथियार बनाए। आज-कलके इतने अच्छे-अच्छे हथियार तो नहीं, लेकिन उस समय जो हथियार दुनियामें बनते थे, उनसे यह बहुत अच्छे थे।

दुखराम—तो भैया, पत्थर-लकड़ीके हथियारसे ताँबेकी तलवारोंका जमाना आया, फिर लोहेकी तलवारें, तीर और भाले, फिर बारूदकी तोपें ढलने लगीं?

भैया—लेकिन दुक्खू भाई! ताँबे, लोहे और बारूदके हथियारोंपर जोकों ने ही पूरा कबजा किया।

दुखराम—तभी तो हजार आदमीकी नकेल एक आदमीके हाथमें है।

भैया—बिलायतके व्यौपारी भी हिन्दुस्तानके व्यौपारीके साथ व्यौपार करने लगे। खूब दुगुना-चौगुना नफा कमाने लगे। हमारे यहाँके राजा, नवाब आपसमें लड़ रहे थे। उन्होंने बिलायतवालोंके हथियारोंको बहुत मजबूत देखा। वह गोरोंको लड़नेके लिए किरायेपर रखने लगे। गोरे व्यौपार भी करते थे और किरायेपर लडते भी थे।

सन्तोखी—हमारे देसवाले अपने ही क्यों नहीं उन हथियारोंको बनाने लगे?

भैया—हमारे यहाँ तो सनातन धरम चलता है न? जो चीज जितनी ही पुरानी है, उतनी ही ठीक है। जब नाक तक पानी आ जाता है, तब सनातन धरम का नसा टूटता है? लेकिन "अब पछताये होत का जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत"। गोरोंने कुछ लड़ाइयोंमें अपने हथियारोंकी सफलता देखा, हिन्दुस्तानवालोंको एक-दूसरेके साथ खूब लड़ते देखा; फिर बिलायती बनियों-की कम्पनीने व्यौपारके साथ-साथ देस जीतनेका काम भी अपने हाथमें ले लिया!

सन्तोखी—तो इस तरह हिन्दुस्तानमें कम्पनी बहादुरका राज कायम होगया?

भैया—हाँ, बिलायती बनियोंके गुटको कम्पनी बहादुर कहते हैं।

दुखराम—मैं तो समझता था कि कम्पनी बहादुर कोई राजा है।

भैया—कम्पनी कहते हैं, गुटको दुक्खू भाई! १७५७ ई० से अँग्रेजोंने हिन्दुस्तानमें अपने राजकी नींव मजबूत कर ली।

दुखराम—राजा भी जोंक, बनिया भी जोंक और जब वही आदमी राजा और बनिया दोनों हो, तो देहमें कहाँसे खून बच पाएगा।

भैया—आज सौ बरस हुये, मरकस बाबाने लिखा था कि हिन्दुस्तानके

छ करोड़ आदमी जो कुछ साल भरमें कमाते हैं, वह सब बिलायती कम्पनी बिलायत ढो ले जाती है।

सन्तोखी—छ करोड़ आदमीकी सारी कमाई।

भैया—उस समय हिन्दुस्तानमें बीस करोड़से कम ही आदमी रहते थे; इसलिए हर तीन आदमीमें एक आदमी बिलायतवालोंके लिए कमाता था। और इस रकममें वह धन सामिल नहीं था, जो कम्पनीके नौकर घूस-रिसवत चोरी-ठगीसे जमा करते थे।

दुखराम—यह मरकस बाबा कौन हैं भैया ?

भैया—मरकस बाबाके बारेमें दुक्खू भाई ! फिर हम किसी दिन बताएँगे। मरकस बाबा हीने जोक-पुरानका परदा खोला। उनके ही परतापसे कमेरोंकी आँखका पट खुला। उन्होंने ही बतलाया कि दुनियाको नरक बनानेका कारन यही जोकें हैं। उन्होंने ही रास्ता दिखलाया कि कैसे जोकोंसे पिण्ड छूटेगा; और दुनिया नरकसे सरग बनेगी।

सन्तोखी—तबतो मरकस बाबा कोई औतार हैं भैया ?

दुखराम—किसके औतार हैं सन्तोखी भाई ? उन्हींके तो नहीं जो छीर सागरमें सदाके लिए सो गए हैं।

भैया—सन्तोखी भाईका मतलब है कि मरकस बाबा बहुत भारी परउपकारी जीव रहे हैं और उनकी सूझ ऐसी रही, जैसीकि और आदमियोंमें देखनेमें नहीं आती।

सन्तोखी—हाँ भैया ! यही मतलब है, क्या करें जो लबज लोग बोलते हैं, जान पड़ता है उसीमें बहुत खामी है।

दुखराम—खामी ही नहीं बहुत धोखा है सन्तोखी भाई ! और यह सब धोखा जोकोंका फैलाया हुआ है। अपने जान जोकोंने हमें साँस लेनेका भी कोई रास्ता नहीं छोड़ा था। लेकिन उनको क्या पता था कि कमेरोंका पच्छ करनेवाले मरकस बाबा दुनियामें पैदा होंगे। भैया ! तो जो तुम हम लोगोंके आँखका पट्ट खोल रहे हो, यह सब मरकस बाबा हीने बताया है ?

भैया—हाँ, दुक्खू भाई ! दुनियामें इतना बड़ा नबज पहचाननेवाला

कोई बैद नहीं हुआ। उसने दुनियाके रोगका कारण बतलाया, फिर दवाई भी बतलाई। उस दवाईको दुनियाके चौथे भागके लोगोंने खाया, वह आज निरोग हो गए हैं। मरकस बाबाने यह भी बतलाया कि अब तक जितनी जोकें पैदा हुई थीं, अब उन सबकी कान काटनेवाली सबसे बड़ी जोंक दुनियामें आ गई। इसको घड़े दो घड़े खूनसे सन्तोख नहीं हो सकता, इसके लिए समुन्दरका समुन्दर खून चाहिए।

सन्तोखी—वह सबसे बड़ी जोंक कौन है भैया?

भैया—पहले जनम होता है तब नाम रखा जाता है। सुनो जनमकी बात। बिलायती बनिये हिन्दुस्तानमें राज और व्यौपार दोनों करने लगे—बल्कि राज भी वह व्यौपार हीके लिए करते थे। हिन्दुस्तानका माल वह खरीद-खरीदकर और बहुत कुछ नजर-सौगातमें ठो-ठोकर बिलायत ले जाने लगे। हिन्दुस्तानका कपड़ा सौ बरस पहिले भी बिलायत बहुत जाता था। हिन्दुस्तानके धनसे बिलायत कितना धनी हो गया, यह इसीसे समझ सकते हो, कि जहाँ १८१४ ई० में बिलायतकी सारी सम्पत्ति ३० अरब रुपया (२३० करोड़ पौण्ड) थी, वहाँ ६१ साल बाद १८७५ ई० में बढ़कर ११ खरब ५ अरब रुपया (८५०० करोड़ पौण्ड) हो गई। इस धनकी जो इतनी बढ़ती हुई, उसमें थोड़ा ही बहुत और जगहसे आया बाकी अधिक भाग हिन्दुस्तानसे गया।

दुखराम—माने अरब-खरब रुपया हमी लोगोंके देहका खून न खींच करके गया?

भैया—इसे भी क्या पूछना है? कम्पनी बहादुरने धरम कमानेके लिए थोड़े ही हिन्दुस्तानको अपने हाथमें लिया। बंगालमें कम्पनीका राज कायम होनेके बाद १७६४-६५ ई० में जहाँ १ करोड़ ६ लाख ३४ हजार रुपया (८ लाख १८ हजार पौण्ड) मालगुजारी आई थी, वहाँ दूसरे ही साल वह दस गुना कर दी गई (१४ लाख ७० हजार पौण्ड) और कम्पनीके ६३ वर्षों के राज्यमें मालगुजारी बीस गुना बढ़ गई। और जानते हो इसका फल? अकाल हर दूसरे-तीसरे साल दौड़ने लगे। कम्पनी बहादुरके राज कायम होने के छठवें ही साल (१७७०) में बंगालमें एक करोड़ आदमी भूखों मर गए।

दुखराम—भैया ! तुम चाहे कुछ भी दबाओ और सन्तोखी भाई कितना ही नाराज हों, मैं तो समझता हूँ कि भगवान कहीं भी नहीं हैं, क्षीर सागरमें भी नहीं हैं। कभी पैदा भी हुए हों तो उनको मरे-मिटे हजारों बरस हो चुके।

सन्तोखी—इतना तो मैं भी कहूँगा दुक्खू भाई, कि एक-एक साल में एक-एक करोड़ या साठ-साठ लाख आदमियों को जोंके चूसकर मार डालें फिर भी भगवान औतार न लें, तो उनके सब औतारोंकी कथा झूठी है।

भैया—हिन्दुस्तानसे जो धन दुहा जाता था, उसमें कपड़ेका भी बहुत भाग रहता था। बिलायतके कुछ व्यौपारियोंने सोचा कि यदि हम हिन्दुस्तान से भी सस्ता और अच्छा कपड़ा दे सकें, तो उल्टी गंगा बहा देंगे।

सन्तोखी—माने कपड़ेके नइहरमें कपड़ा बनाकर भेजेंगे।

भैया—इतना ही नहीं, नइहरकी ही रुई लेकर, क्यों कि बिलायतमें कपास नहीं पैदा होती है। विचार करनेवालोंने बुद्धि लड़ानी शुरू की। अठारहवीं सदी-के अन्त तक भापके इंजनका पता लग गया और कपड़े बुननेके करघे भापसे चलाये जाने लगे। मशीनकी चीज हाथकी बनी चीजसे सस्ती होती है।

दुखराम—यह क्यों होता है भैया ? हम देखते हैं कि मिलकी बनी चीज देखनेमें बुरी नहीं होती मजबूत भी होती है, फिर सस्ती क्यों होती हैं ?

भैया—आदमीका जाँगर (परिश्रम या मेहनत) जितना लगता है, चीज-का दाम भी उतना ही होता है। गाढ़ा कपड़ा सस्ता होता है और बनारसी किमखाब बहुत मँहगा, क्यो कि गाढ़ेमें आदमीका उतना जाँगर नहीं लगता जितना कि किमखाबमें। अब हाथके करघेपर पुराने ढंगसे कपड़ा बुननेमें एक आदमी पाँच गजसे ज्यादा कपड़ा नहीं बुन सकता और वह भी हाथ सवा हाथ अरजका। और कपड़ेकी मिलमें एक आदमी दोसे चार करघे तक सँभाल सकता है।

दुखराम—हाँ भैया, उसमें हाथसे दरकी थोड़े ही चलानी पड़ती है। सब तो अपने ही आप होता है, कहीं सूत टूट जाता है, तो उसे जोड़ देना होता है।

भैया—बुनाई कितनी तेजीसे होती है ? एक दिनमें एक आदमी करघों के मुताबिक सौ, डेढ़ सौ, दो सौ गज तक कपड़ा बिन सकता है। १०० गज

लेने पर भी हाथके करघेसे जितना काम १० आदमी करेंगे, मशीनपर उतने कामके लिए सिर्फ एक आदमी चाहिए। अब तुम्हीं बतलाओ १० आदमी के जाँगरसे बना कपड़ा सस्ता होगा या एक आदमीके जाँगरसे बना उतना ही कपड़ा ?

सन्तोखी—एक आदमीके जाँगरवाला भैया ! क्यों कि उसमें मजूरी कम देनी पड़ेगी !

भैया—कलवाले कारखानोंने हाथकी कारीगरीको तबाह कर दिया, इसीलिए कि कल लगानेसे थोड़े ही आदमी ज्यादा काम कर सकते हैं। कुछ दिनों पहले जानते हो न, चीनी और गुड करीब-करीब एक भाव बिकते थे ? वह इसीलिए कि मिलोंमें चीनी बनानेमें बहुत कम आदमी लगते हैं। देखा नहीं है, एक ओरसे बोझाका बोझा ऊख खींची जा रही है और पच्चीसों कलोंमें होते दूसरे छोर पर दानादार सफेद चीनी बोरेमें बन्द होती जा रही है।

दुखराम—कल-मसीनसे भैया, चीज बहुत सस्ती तैयार होती है, यह तो हम रोज देखते हैं।

भैया—सस्ती ही नहीं होती दुक्खू भाई ! वह इतनी इफरात होती है कि अगर मिलवालोंको सस्ती पड़ जानेसे घाटा होनेका डर न होता, तो थोड़े ही जोर लगानेसे आदमी पीछे एक मन चीनी हर साल हिन्दुस्तानमें बाँटी जा सकती है। कल-मसीनने आदमीके खाने, पहिनने, रहनेकी चीजोंको इतना इफरात कर दिया है, कि जो जोंकें बाधा न डालें, तो दुनियामें एक भी आदमी भूखा-नंगा नहीं रह सकता। लेकिन इस बातको अभी हम आगे कहेंगे दुक्खू भाई ! अभी तो यही हम बतला रहे थे कि सबसे बड़ी जोंक कैसे पैदा हुई। जब कल-मसीनों को दिमागवालोंने सोचकर बनाया, तो व्यौपारी तुरन्त दौड़ पड़े। उन्होने सोचा कि अब धुनिया, जुलाहा, लुहारके पीछे दौड़नेकी हमें कोई जरूरत नहीं। हम रुई खरीद कर कारखानेमें लाएँगे और कल उसका सूत कात-कर कपड़ा बना देगी। इसी समय रेल और जहाजवाले इञ्जन भी बन गये, इसलिए माल एक जगहसे दूसरी जगह भेजना भी सस्ता हो गया। व्यौपारियोके पास करोड़ोंकी पूँजी थी, उन्होंने दिमागवालोंकी सोची चीजको तुरन्त ले लिया

और सब तरहके लाखों कारखाने खोल दिये। अब नफाका क्या ठिकाना? किसानसे रुई खरीद रहे हैं, उससे भी कारखानेवालेको नफा। रेलसे भेजते हैं, रेल भी कारखानेवालोंकी है, उसको भी नफा। जहाजसे सामान विलायत भेजते हैं, उसका किराया लगता है; जहाज भी कारखानेवालोंका, फिर कपड़ेकी मिल भी कारखानेवालोंकी है, उसका भी नफा है उन्हींको। उसके बाद कपड़ा हिन्दुस्तानको लौटता है, वहाँ भी हर जहाज और रेल में हर जगह पूँजीपतिका नफा धरा हुआ है। पुराने व्यापारी इतना नफा नहीं कमा सकते थे, क्योंकि वह सिर्फ तैयार मालको एक जगहसे दूसरी जगह भेजते और आजके यह पूँजीपति कच्ची रुईमें हाथ लगानेसे लेकर पग-पग पर नफा कमाते हैं।

सन्तोखी—यह ठीक कहा भैया! हम लोग रुपया पीछे पैसा दो पैसा बहुत समझते हैं और यह तो बारह आनेके कपासमें बीस रुपयेकी धोती बेचते हैं, फिर इनके नफेका क्या पूछना।

भैया—विलायतवाले पूँजीपति...।

दुखराम—पूँजीपति क्या है, सो अच्छी तरह नहीं समझा भैया?

भैया—पूँजी तो समझते हो दुक्खू भाई?

दुखराम—रुपया-पैसा, जमा-पूँजी यही न भैया?

भैया—हाँ, यही रुपया-पैसा लेकिन जो रुपया-पैसा कल-कारखानेमें लगा है, जिसके कारण पूँजीवाला बारह आनेकी कपासको बीस रुपयामें बेचता है, उसे पूँजी कहते हैं। और जो अपनी पूँजीसे इन कल-कारखानोंको खड़ा करते हैं, उन्हींको कहते हैं पूँजीपति। पूँजीपतियोंके नफेके सामने व्यौपारियोंका नफा कुछ नहीं है।

सन्तोखी—ठीक कहा भैया! जो मारवाड़ी, सेठ लोग खाली व्यौपार करते थे, अब सब अपनी चीनी-मिल, जूट-मिल, सीमेन्ट-मिल, कागज-मिल खोलते जा रहे हैं। अब उनका ध्यान कोई दूसरी ओर जाता ही नहीं।

भैया—बिड़ला, डालमिया, सिंघानियाँ, एक ही पीढ़ी पहले खाली व्यौपारी थे, दूसरे कारखानेका माल खरीद कर बेंचते थे, थोड़ासा उन्हें भी नफा हो जाता था। लेकिन अब देख रहे हो न? बिड़लाकी कितनी ही चीनीकी मिलें, कपड़ा

और जूटकी मिलें, हिन्द-बाइसिकिल कारखाना और मोटरका भी कारखाना है। पूँजीपतिके नफेके सामने व्यौपारीका नफा कुछ भी नहीं है दुक्खू भाई!

दुखराम—मैंने तो एक ही बात गाँठ बाँध ली है। जो बारह आनेके कपासको लेकर उसे २०) की धोती बना सकता है, उसके नफेके बारेमें क्या कहना है।

भैया—विलायतवाले पूँजीपति दुनिया भरका धन लूटकर अपने घरमें गांज रहे थे, इसे देखकर दूसरे मुल्कवाले कैसे चुप रहते? फ्रांसने भी कारखाने खोले, अमेरिकाने भी कारखाने खोले, रूसने भी कारखाने खोले।

सन्तोखी—जापानने भी कारखाने खोले?

भैया—हाँ जापानने भी खोले लेकिन अभी हमको जो समझाना है, उसमें जापानका उतना काम नहीं है। विलायतने कारखाना खोला था। पहिले तो दुनियामें और किसी मुल्कमें कारखाने खुले ही न थे, इसीलिए 'चारों मुलक जगीरीमें' उसीके था? लेकिन जब फ्रांसने खारखाना खोला तो दुनियामें जिन-जिन मुल्कोंको फ्रांसीसियोंने अपना गुलाम बनाया था, वहाँ फ्रांसके कारखानेका ही माल बिक सकता था। अमेरिकाके पास अपना ही बहुत बड़ा मुल्क है, इसलिए कितने ही साल तक माल बेचनेके लिए उसे गाहक ढूँढ़ने की जरूरत नहीं थी। जर्मनीके लिए आफत थी। वह सबसे पीछे कारखाना खोलने लगा, लेकिन अपनी विद्या-बुद्धि से वह बहुत तेजीसे बढ़ा। माल टालका टाल जमा हो गया, बेंचनेके लिए दुनियामें जहाँ भी जाते, जवाब मिलता है—हटो-हटो यह तो हमारा राज है। अफ्रीकामें जाते यही बात, हिन्दुस्तानमें आते यही बात। अब तुम्हीं बतलाओ, जो चुप लगा जाए तो उसका क्या मतलब होगा?

सन्तोखी—कारखाने बन्द हो जायेंगे, पूँजीपतियोंका दिवाला निकल जाएगा और क्या होगा?

भैया—और यह भी समझो कि अब दुनियामें राजाओंका राज नहीं है।

दुखराम—क्यों भैया, राजाओंका राज नहीं है तो किसका राज है?

भैया—पूँजीपतियोंका राज है, कल-कारखानेवाले करोड़पतियोंका राज है।

आजसे तीन सौ बरस पहले (३० जनवरी १६४९ ई०) को बिलायतके व्यापारियोंने अपने राजा चार्ल्सका सिर कुल्हाड़ेसे काट डाला था, उसी दिनसे प्रभुता व्योपारियोंके हाथमें चली गई, लेकिन कारखानोंके खुलने और पूँजीपतियोंके पैदा होनेमें अभी डेढ़ सौ साल और लगनेवाले थे। व्योपारियोंमें से ही पूँजीपति पैदा हुए और पूँजीपतियोंको सिर काटने भरसे सन्तोख नहीं हो सकता था, बल्कि वह सिर काटनेको नुकसानकी बात समझने लगे !

दुखराम—नुकसानकी बात क्यों मानने लगे ?

भैया—जोंक हैं न ! जोंकोंको बहुत परदाकी जरूरत होती है, नहीं तो—'उघरे अन्त न होहि निबाहू'। राजा के रहनेपर खूब बड़ा-बड़ा दरबार लगेगा, झंडा पताका निकलेगा, सहर सजाया जायगा, हीरा-पन्ना जड़े मुकुटोंको दिखलाकर लोगोंकी आँखें चौधियायी जायँगी, राजपुरोहित भगवानके नामसे उसके सिरपर मुकुट रखेंगे और अबूझ कमेरोंकी आँखमें धूल झोंककर बतलाया जायगा कि यहाँ कोई जोक नहीं है, यह सब भगवानकी दाया-माया है।

सन्तोखी—तो पूँजीपतियोंने माटीकी मूर्त्ती बनाके रखना चाहा।

भैया—हाँ, देखा नहीं आठवें एडवर्डको किसने निकाला ? यह बाल्डविन था वाल्डविन।

सन्तोखी—बाल्डविन कौन था भैया ?

भैया—बाल्डविन इङ्गलैण्डका महामंत्री था। लेकिन उससे भी बढ़कर वह था गेस्ट, कीन आदि बड़ी-बड़ी कम्पनियोंका करोड़पति पूँजीपति।

दुखराम—तब तो भैया राजा कोई रहे, बिलायत के असली राजा तो यही पूँजीपति हैं।

सन्तोखी—और उस समयके हिन्दुस्तानके असली राजा ?

भैया—जब बिलायतके राजाको ही उन्होंने गुड़िया बना दिया, तो हिन्दुस्तान के बड़े लाट, छोटे लाट, हैदराबाद, बड़ौदा, मैसूरके बारेमें क्या पूँछना है ? यह सब उन्हीं के वरदान पर हिल-डुल रहे थे।

दुखराम—यह तो कठपुतलीका नाच मालूम होता है।

भैया—ठीक कहा दुक्खू भाई ! है यह कठपुतलीका नाच ही। सब सूत

विलायतके छ सौ परिवार पूँजीपतियों के हाथमें और 'सबहिं नचावैं राम गोसाईं'। तो मैं बतला रहा था कि जर्मनोंने अपने यहाँ कारखाने ठीक किये। मालको बेंचनेके लिए जिस देसमें भी गये, वहाँ धक्का मिला। वहाँके पूँजीपति चुप कैसे रहते? उन्होंने कहा कि जो खुसीसे दरवाजा नहीं खोलोगे, तो हम दरवाजा तोड़कर भीतर चले आवेंगे। यही कारन था जो १९१४ में जर्मनीने लड़ाई छेड़ दी। उसने सोचा था कि दुनियाके चार हिस्सामें एक हिस्सा भूमि और आदमी अँगरेज लोगोंके हाथमें हैं। जो इनको खतम कर दिया, तो सब जगह हमारा राज होगा, हमारा माल बिकेगा। फ्रांसने भी दुनियाका बहुत-सा हिस्सा घेर लिया है, उसके खतम होने पर हमारे मालके लिए और भी बाजार मिलेगी।

दुखराम—तो भैया? गया के पण्डे बन गये। जैसे वह जजमानके लिए लड़ जाते हैं, वैसे ही गाहकोंके लिए ये लोग लड़ गये।

भैया—हाँ, यह गाहकोंके लिए लड़ाई हुई। जितना ही अधिक गाहक मिलेंगे, उतना ही अधिक माल बेचेंगे और जो गाहक अपने ही गुलाम हुए, तब उनसे खाली कपास पैदा कराना जैसा सस्ता-सस्ता काम करायेंगे, और बारह आनेका बीस रुपया बनायेंगे, पूँजीपति तभी इच्छा भर खून पीने पायेंगे। बल्कि इच्छा भर मत कहो, जो समुन्दर भर भी खून मिले, तो भी इन जोंकोंकी इच्छा पूरी नहीं होगी। और इन जोंकोंके खूनके प्यासके लिए पहिली लड़ाईमें इतने लोग मरे और घायल हुए :—

	मरे	घायल
अँगरेजी राज्य	१०,८६,९१९	२४,००,९८८
फ्रांस	३०,९३,३८८	४०,९०,०००
जर्मनी	२०,५०,४६६	४२,०२,०३०
अमेरिका	१,१५,६६०	२,०५,७००

दूसरी महालड़ाईमें संसारमें ढाई करोड़ नागरिक और २ करोड़ ७० लाख सैनिक मारे गये, जिनमें सिरिफ जरमनीमें ३३ लाख नागरिक और साढ़े बत्तीस लाख सैनिक मरे। रूसमें ७० लाख नागरिकों और १ करोड़ ३६ लाख सैनिकोंने

परान दिये। पहिली लड़ाईमें ६२ लाख जोंकोके लिए बलि चढ़े, तो इस लड़ाई-में ५ करोड २० लाख।

जोक पुरानके इन दो भयानक अध्यायोंसे अभी उन्हें सन्तोष नहीं है, वह तीसरी महालड़ाईको अणुबमसे लड़ना चाहती है, जिनकी ताकत हिरोसीमावाले बमसे २० गुना से भी अधिक है। एक बम से दसलाख नरनारी तो वहीं खतम हो जायेंगे।

अध्याय ४

जोंकोंके दुसमन मरकस बाबा

दुखराम—आज तो भैया मरकस बाबाके बारेमें कुछ बताओ!

सन्तोखी—हाँ, भैया जोंकोंकी बात सुन करके तो हमारा दिल खौलने लगा। उनके सामने गाय, भैंसकी देहमें लगनेवाली जोंकें तो कुछ भी नहीं।

भैया—देखा न सन्तोखी भाई, जोंकोकी सकल-सूरत चाहे कितनी ही देखनेमें सुन्दर हो, उनके आस-पास कितनी ही दया-धरमकी बात चलती हो, लेकिन चारों ओरकी धरती खूनसे लथपथ रहती है।

सन्तोखी—इनके बड़े-बड़े महलोंके नीचे न जाने कितनी जिन्दा लासें पड़ी हुई हैं और पग पगपर उनके खूनकी प्यास बढ़ती ही गई है।

भैया—हाँ, पहिले बिरादरी-बिरादरीकी छोटी-मोटी लड़ाई होती थी, फिर राजाओंकी बड़ी-बड़ी लड़ाई हुई। लेकिन इन जोंकोंकी लड़ाइयोंके सामने तो पहिलेकी लड़ाइयाँ कुछ भी नहीं? अभी जो इतनी बड़ी लड़ाई हो चुकी है सो भी उन्हीं जोंकोंके कारण। जबसे जोंकोंका त्रास बढ़ा, तभीसे कितने ही दया रखनेवाले महात्मा सोचने लगे, कि कैसे दुनियाका दुख कटे। उन्होंने सोचा कि जब तक धनी गरीब रहेंगे, तब तक लोगोंको सुख-चैन नहीं मिलेगा, क्योंकि धनी होते ही हैं बहुतसे लोगोंको गरीब बनाकर। जो धनी-गरीबका भेद मिटा दिया जाय, तो दुनियामें इतना दुःख नहीं रह जायगा।

दुखराम—क्यों भैया, ऐसे महात्मा लोग दुनियामें पहिले भी पैदा हुए हैं?

भैया—पैदा हुए, लेकिन उन्हें ठीकसे नबज नहीं मालूम हुई। वह रोगके असली कारनका पता नहीं लगा सके।

दुखराम—कारनका पता नहीं लगेगा तब दवा कैसे बतायेंगे!

भैया—खूनके भीतरके रोगको पानीसे धोनेसे क्या होता है? अढाई हजार बरस पहले हमारे ही देसमें बुद्ध नामके महात्मा हुए थे?

सन्तोखी—वही बौधावतार भैया?

दुखराम—बस सन्तोखी भाई! मालूम पड़ता है कि औतार तुम्हारे मुँहसे नहीं छूटेगा। कौन औतार? किसका औतार? कहीं उसका पता भी है? बिलायती बनियोंने एक बरसमें एक करोड़ आदमियोंको मार डाला, लेकिन औतारका कहीं पता नहीं! जोंकोंने साठ लाख आदमियोंको तड़पा-तड़पाकर मार डाला, लाखों तिरियोंसे इज्जत बेंचवाई, तब भी उस औतारका पता नहीं! छोड़ो औतारकी बात। औतार होता है राजाओं-रानियोंके लिये। दुनिया भरकी जोंकों-को बचानेके लिए हमें औतार से कोई मतलब नहीं।

भैया—लेकिन दुक्खू भाई! बुद्धने अपनेको किसीका औतार नहीं कहा, वह मानुख थे और मानुखोंका हित चाहते थे। उन्होंने सोचा कि सारी दुनियाको धनी-गरीबका भेद मिटानेके लिए तैयार करना मुस्किल होगा, राजा और सेठ दोनों बड़ी-बड़ी जोंके खिलाफ हो जायँगी; इसलिए उन्होंने चाहा, जो थोड़ेसे समझदार और त्यागी आदमी अपने भीतरसे धनी-गरीबका भेद मिटाकर अपने सुन्दर जीवनसे दिखला दें, तो क्या जाने दूसरे लोग भी पसन्द करें और उसी रास्तेपर चलें।

सन्तोखी—तो बुद्धने ऐसे लोगोंकी जमात बना ली थी, जिसमें धनी-गरीबका कोई भेद न था?

भैया—हाँ, ऐसे औरत-मरदोंकी जमात बनाई थी, जिसमें न कोई धनी था न गरीब। उनका घर-द्वार, खटिया-बिछौना, खाना-पीना सब साझेमें रहता। बाभन हो या चंडाल उनके भीतर कोई जात-पाँतका भेद न था, सब एक साथ खाते, एक साथ सोते एक दूसरेके दुख-सुखमें सरीक होते।

दुखराम—बड़ी सुन्दर जमात बनाई थी भैया!

भैया—लेकिन जोंकोंका इससे क्या बिगड़ा। बड़ी-बड़ी जोंकोने इस जमातके लिए बड़े-बड़े महल बनवा दिए, गाँव और जमीन दे दी, खाने-पीनेका आराम कर दिया। फिर कहने लगे, यह तो महात्मा लोग हैं, संसार-त्यागी भिच्छु संन्यासी हैं, इनमें सब सामरथ हैं।

सन्तोखी—माने उनके चारों ओर दीवार घेरकर उसीमें उनको बन्द कर दिया, जिसमें उनके आचरनका दूसरोंपर कोई असर न पड़े।

भैया—और असर नहीं पड़ा, क्योंकि लोग समझने लगे, कि ऐसा जीवन तो साधू-संन्यासी ही बिता सकते हैं, वह सारी दुनियाके लिए सम्भव नहीं। इस तरह बुद्धकी दवा सारी दुनियाके लिए नहीं रह गई और फिर जोंकोंने उस जमातको बिगाड़ना सुरू किया। बुद्धने कहा था, कि जिस किसीको कुछ दान देना हो तो सारी जमात (संघ) को दे, एक आदमीको नहीं। लेकिन बुद्धके देह छूटने के बाद जोंकोंने बड़ा-बड़ा दान जमात के नाम नहीं, आदमीके नाम देना सुरू किया। जमातमें फूट पड़ गई, धनी-गरीबका भेद फिर सुरू हो गया, जोंकोंका बाल भी बाँका न हुआ। जैसे बुद्धने हमारे देसमें किया, वैसे दूसरे देसों—चीन, ईरान, यूरप-में भी कितने ही महात्मा पैदा हुए, जिन्होंने धनी-गरीबका भेद मिटाना चाहा पर कोई सफल नहीं हुआ। अन्तमें कल-मसीनकी विद्याका पता लगा। व्यौपारियोंने कारखाने खोल लिये। एक-एक कारखानेमें एक छतके नीचे हजार-हजार दो-दो हजार मजूर काम करने लगे। कारीगरोंका रोजगार कलोंने चौपट कर दिया। धुनिया, जुलाहा, बढ़ई, लोहार, रंगरेज, कुम्हार, लहेरा, ठठेरी कलकी चीजोंके सामने सबको हार माननी पड़ी। सब का घर उजड़ा और कारखानेमें मजूरी करना छोड़ जीनेका कोई रास्ता नहीं दिखाई दिया। लाखों मजूर बिलायतके कारखानोंमें मजूरी करने लगे। मालिक तो मजूर नहीं चाहते, गुलाम चाहते हैं। गुलामोंको चाहे मारो-पीटो, उसको कहीं ठौर नहीं है। उसकी देह तो मालिकके हाथमें बिक चुकी है। मजूरोंके साथभी मालिक ऐसाही सलूक करना चाहते थे। जब चाहा किसीको नौकर रख लिया, नराज हुए तो निकाल दिया। लेकिन कारखाने वाले मजूरोंका घर तो पहले ही उजड़ गया था, अब मालिकके निकालने पर जायँ तो कहाँ जायँ?

अपने भाई मजूरके ऊपर जुलुम करते देख दूसरे मजूरोंका भी दिलू पसीज गया। वह भी समझने लगे जो आज इसकी गति है, वही कल हमारी होगी। मजूरोंमें एका होने लगा, उन्होने कहा कि हमारे भाईको कामसे निकालना ठीक नहीं, निकालोगे तो हम काम नहीं करेंगे।

दुखराम—हड़ताल करेंगे।

सन्तोखी—हड़ताल क्या दुक्खू भाई ?

दुखराम—सब तुम्हीं समझ लोगे ? मजूर कारखानेका काम छोड़ देते हैं, इसीको हड़ताल कहते हैं।

भैया—पूँजीपति जोंकोंको यह पता नहीं था। उन्होंने समझा, कि जिनका घर-द्वार नहीं, ठौर-ठिकाना नहीं, उनकी क्या मजाल है, कि हमें आँख दिखायें। लेकिन उन्हें यह नहीं समझमें आया, कि जिन कल-कारखानोंने उनके घरोंमें करोड़ोंकी बरसा की, उन्होंने इन हजारों मजूरोंको एक जगह कर दिया, एकनावमें बैठा दिया। अब सबका अच्छा-बुरा भाग एकही तरहका था। एकके ऊपर संकट पड़नेपर दूसरे चुप कैसे रह सकते थे ? मजूरोंकी एक बिरादरी बन गई। उन्होंने हड़तालें कीं। हड़ताल करने पर उनके बाल-बच्चोंको भूखा मरना पड़ता, लेकिन मालिकका भी लाखोंका नुकसान होता। सरकार भी मालिकोंकी, पुलिस और पलटन भी पूँजीपतियोंकी। सबने मजूरोंको एक ओरसे दबाया। कितने ही गोलीसे मरते, कितनोंहीको जेहलखाना भेजा जाता और कितने ही भूखके मारे तड़पते; लेकिन यह एक दिनकी आफत तो नहीं थी, कि मजूर सिर नवा देते। 'बुढ़ियाके मरनेका डर नहीं था, डर था जमके परक जानेका'। हारते, तकलीफ सहते भी मजूरोंकी बहुतसी माँगोंको पूँजीपति माननेके लिए मजबूर थे। यह अठारह सौ ईसवीसे कुछ पहिले और कुछ पीछेकी बात है। इसके बाद ही आजसे सवासौ वर्ष पहले (५ मई १८१८ ई०) मरकस बाबाका जनम जर्मनीमें हुआ। राइनलैंड इलाकेके ट्रेवेज नगरमें उनके पिता एक यहूदी वकील थे। मारकस यह खान्दानका नाम था ! बाबाका नाम था कारल।

दुखराम—पूरा नाम कारल मारकस हुआ न भैया ?

भैया—हाँ लेकिन दुनियामें मारकस नाम हीको सब जानते हैं।

दुखराम—और यहूदी क्या है ?

भैया—यहूदी एक जाति है, जिनमें बड़े-बड़े पूँजीपति भी हैं, बड़े-बड़े पंडित भी हैं, लेकिन सबसे अधिक मजूर हैं। ये दुनिया में हर जगह बिखरे हुए हैं। १९५१ बरस पहले कुछ यहूदियोंने चुगली करके ईसा मसीहको फाँसी पर चढ़वा दिया, इसी वास्ते ईसामसीहके माननेवाले किरिस्तान लोग यहूदियोंसे घिनाते हैं। मरकस बाबाके पिता वकील थे। जब मरकस बाबा छ ही बरसके थे, तभी उनके पिता यहूदी धरम छोड़ कर ईसाई हो गए थे। मरकस बाबा लड़कपन हीसे बुद्धिके बड़े तेज थे।

दुखराम—तेज न होते, तो जोंकोंके चार हजार बरसके जालको तोड़ पाते ?

भैया—मरकस बाबा अपने सहरके इसकूलमें पढ़े। कभी-कभी अपने पिताके मीत एक तालुकदारसे भी सतसंग होता। तालुकदार बिद्वान थे और विद्याका आदर करते थे। इसकूलकी पढ़ाई खतम करके सत्रह बरसकी उमरमें वह बोन सहरके विस्सविद्यालयमें वकालत पढ़ने लगे। लेकिन एक साल बाद मरकस बाबाका मन उचट गया। तब वह जर्मनीके सबसे बड़े सहर बर्लिनके विस्सविद्यालयमें चले गये। वकालत पढ़ना छोड़ दिया, अब वह पढ़ने लगे इतिहास, कविता और दरसन।

दुखराम—दरसन क्या है भैया !

सन्तोखी—दरसन भी नहीं जानते ? रोज हम लोग दरसन-परसन करते हैं।

दुखराम—तो इस दरसन-परसनमें पढ़ना क्या है ? यह कोई दूसरा ही दरसन होगा। सखी-समाजवालोंको जैसे भगवान दरसन देते हैं, वैसा दरसन तो नहीं है भैया !

भैया—हाँ, कुछ वैसा ही है। है तो यह अँधेरी कोठरीमें काली बिल्लीका पकड़ना, बलुक खाली अँधेरी कोठरी में काली बिल्लीका पकड़ना। लेकिन इसको लोग समझते हैं कि वहीं पहुँचकर विद्याका ओर होता है।

दुखराम—यहाँ भी तो जोंकोंकी माया नहीं है भैया ?

भैया—बहुत भारी माया है। दरसनवाले कहते हैं, कि यह दुनिया सब माया है।

दुखराम—उनके सामने जब थाली परोसकर रख दी जाती है, तो वह अपना हाथ उधर फैलाते हैं कि नहीं ?

भैया—फैलाते हैं, खाते हैं, मौज करते हैं।

दुखराम—बस-बस हो गया भैया! यह भारी धोखा है। जोकोंका बड़ा भारी जाल है। जोंकोंका छप्पन परकार तो छिनाएगा नहीं। उनका सराब और परियोंका नाच चलता ही रहेगा। वह लोगोंका खून पी-पीकर सालमें करोड़-करोड़ आदमी मारते रहेंगे। उनके भोग-विलासमें यह दरसन कोई दखल नहीं देगा। वह बस यही चाहता है, कि जोंकोंके जुलुमको लोग माया समझें। दुनियाको नरक बनानेका सारा कसूर जोंकोंका है, लेकिन वह लोगोंको बतलाना चाहते हैं, कि यह सब माया है।

भैया—तुम्हारा कहना ठीक है दुक्खू भाई! लोगोंको भूल-भुलैयामें डालने के लिए हिन्दुस्तानमें भी दरसनवाले ग्यानी पैदा हुए, यूरुपमें भी पैदा हुए। मरकस बाबाने जवानीमें दरसन पढ़ा, तो अच्छा ही किया। जब मरकस बाबा उन्नैस सालके थे, तभी कांट और फिखटे जैसे चोटीके पंडितोंका दरसन उन्हें थोथी कल्पना मालूम होने लगी। फिर मरकस बाबाको एक और दरसनके पंडित हेगलकी किताब पढ़नेको मिली। हेगलकी यह बात मरकस बाबाको बहुत पसन्द आई, कि दुनिया जो यह चित्तर-विचित्तर दिखाई दे रही है, वह इसीलिए कि वह हर छन बदल रही है। दुनियाकी कोई चीज छोटीसे छोटी या बड़ीसे बड़ी ऐसी नहीं जो न बदले। हमारे यहां भी हेगलसे चौबीस सौ बरस पहले बुद्ध महात्माने यही कहा था।

दुखराम—चौबीस सौ बरस पहले! और बुद्ध महात्मा भी तो धनी-गरीब का भेद मिटाना चाहते थे। वह भगवानको मानते थे कि नहीं भैया!

भैया—नहीं, बिलकुल नहीं। वे कहते थे कि 'है' कहकर जिसे हम पुकारते हैं वह सभी चीजें छिन-छिन बदलती हैं। जो बदलती नहीं, ऐसी दुनियामें कोई चीज नहीं है।

दुखराम—बुद्ध महात्मासे जो सन्तोखी भाई पूछते कि भगवान हैं कि नहीं, तो क्या जवाब देते ?

भैया—पहले सन्तोखी भाईसे पूँछते कि भगवान बदलते हैं कि नहीं, माने बिल्कुल मर जाते हैं कि नहीं और फिर उनकी जगह कोई दूसरा बिल्कुल नया भगवान पेदा होता है कि नहीं ? पहले बुद्ध महात्मा सन्तोखी भाईसे यह सवाल करते।

दुखराम—सन्तोखी भाई ! बताओ तुम क्या जवाब देते।

सन्तोखी—जो भगवानको मानता है, वह उन्हें जनम-मरनसे परे मानता है।

भैया—तो ऐसी चीजके बारेमें बुद्ध महात्मा कहते, कि वह अफीमचीकी पिनक है। ऐसी चीज दुनियामें कोई नहीं हो सकती ?

दुखराम—तो सब चीज बदलती रहती है, दुनियामें न बदलनेवाली चीज कोई नहीं है, यही बात मरकस बाबाको पसन्द आई न भैया ?

भैया—हाँ बरलिनसे फिर मरकस बाबा जेना सहरके विस्सविद्यालयमें चले गए और तेईस बरसकी उमरमें विद्या-पारगत होनेके लिए उनको डाक्टरकी पदवी मिली।

दुखराम—दवाई देनेवाले डाक्टर भैया ?

भैया—ग्यानके डाक्टर दुक्खू भाई ! मरकस बाबाने ग्यान तो सब पढ़ लिया, लेकिन दुनियामें देखा, सब जगह नरककी आग धाँय-धाँय जल रही है। उनकी कलममें बज्जरकी ताकत थी। उनकी नजर इतनी पैनी थी कि गहरीसे गहरी जगह में घुस जाती थी। विसविद्यालयसे पढ़कर निकलनेके बाद मरकस बाबा एक अखबारके सम्पादक हो गये।

दुखराम—सम्पादक क्या है भैया ?

भैया—अखबारके सब लेखोंके परखने और रास्ता दिखलानेके लिए मुक्ख लेख लिखनेकी जिसपर जिम्मेवारी हो, उसे ही सम्पादक कहते हैं। इसी सम्पादक रहते समय मरकस बाबाको मजूरोंकी दुख-तकलीफ जाननेका और मौका मिला। फिर दो-साल तक उन्होंने उसके कारन ढूँढ़ने और दवाईका पता लगाने के लिए खूब सोचा, खूब पढ़ा, खूब गुना। जब मरकस बाबा पच्चीस बरस

(१८३५) के थे तभी अपने एक दोस्तको खत लिखा था—"बटोरने और व्यौपार करनेका जो ढंग दुनियामें चल रहा है, मानुख जातिको गुलाम बनाने और खून चूसनेका जो ढंग चल रहा है, वह सारे समाजकी जड़को भीतर ही भीतर जल्दी-जल्दी कुतुर रहा है; जितनी जल्दी-जल्दी आदमियोंकी तादाद बढ़ रही है, उससे भी जल्दी-जल्दी वह कुतुर रहा है। इस घावको पुराना (जोंकोंवाला) ढंग भर नहीं सकता, क्योंकि उसके पास भरनेकी कोई तागत ही नहीं। वह (जोंकोंका ढंग) तो सिरिफ भोग करना और अपने जीना, बस इतना ही जानता है।" मरकस बाबाने उसी साल अपने पिताके दोस्त तालुकदारकी लड़की, जेनीसे ब्याह किया।

दुखराम—जोंककी लड़कीसे ब्रियाह किया ?

भैया—जोंक आदमीसे पैदा हुई है। और जोंकोंमें भी कोई-कोई आदमी पैदा हो सकता है कि नहीं ?

दुखराम—हो सकता है भैया।

भैया—जेनी उसी तरहकी आदमी थी। जोंकोके घरमें उसने जनम लिया। तेइस-चौबिस बरस तक जोंकोंके सुख और भोग में पली, लेकिन बाकी सारा जीवन उसने कितनी तपेस्सा की, कितना कष्ट सहा, उसको सुनकर रोआँ खड़ा हो जाता है। पच्चीस बरसके ही मरकस बाबा हो पाये थे, कि जर्मन सरकार उनके विचारोंको जानकर घबराने लगी। जानते हो न दुनिया भरकी सरकारें जोंकोंकी सरकार हैं। जोंकोंके स्वारथको बचाना ही उनका सबसे पहला काम है। जर्मन सरकारने मरकस बाबाको जेहलमें डाल देना चाहा। लेकिन बाबा और जेनी दोनों उनके हाथमें नहीं आये, वे फ्रांसकी राजधानी पेरिसमें चले गये।

दुखराम—चाबस (शाबस) ! बाबा जर्मन जोंकोंके पंजेसे बच गये।

भैया—लेकिन जर्मन जोंकोंकी सरकारने फ्रांसकी जोंकोंकी सरकारपर दबाव डालना सुरू किया, और डेढ़-दो साल बाद फ्रांसकी सरकारने उन्हें अपने देससे निकल जानेका हुकुम दिया। बाबाको वहाँसे (१८४५ में) बेल्जियमके सहर ब्रूसेल्समें चला जाना पड़ा। दो बरस बेल्जियममें रहे। बड़ी गरीबीकी जिन्दगी

बिताई। जेनीको सब काम अपने हाथ करना पड़ता, बाबा खाली जोंकोंसे कमेरोंकी मुक्ती कैसे हो इसीपर सोचते और लिखते रहे। १८४३ में "न्याव वालों की सभा" (जिसे पहले ही से विदेसमें भागे जर्मन मजूरोंमें कायम किया था) की बड़ी सभा लन्दनमें हुई, उस सभामें मरकस बाबा और जिनगी भरके साथी ऐङ्गल बाबा भी बुलाये गये। मरकस बाबासे वहीं सभावालोंने कहा, कि हम लोगोंका एक ढिंढोरा-पत्तर (घोषणापत्र) लिख दीजिए, जिससे जोंकोंको भी पता लग जाय, कि कमेरे क्या करना चाहते हैं; और दुनिया भरके कमेरोंको भी पता लगे, कि दुनियाके इस नरकको ढहानेके लिए उनको क्या करना है, जोंकोंको देहसे छुड़ानेके लिए कौनसा रास्ता पकड़ना है। मरकस बाबाने बत्तिस सालकी उमरमें यह ढिंढोरा पत्तर लिखा, जो हिन्दीमें भी 'कमूनिस्ट घोषणा' के नामसे छप गया है। बीस पचीस पन्नेकी इस छोटी-सी पोथीमें जो तागत है, वह दुनियाकी किसी बड़ी-सी-बड़ी किताबमें भी नहीं देखी गई। दुनियाके कमेरोंकी आँख खोलनेमें इस ढिंढोरा-पत्तर जितना काम किसीने नहीं किया। किताब खतम करते हुए बाबाने कहा "कमेरो! अपने पैरकी बेड़ियोंको छोड़कर तुम्हारे पास गवाने के लिए रखा ही क्या है? (जोंकों-को खतम कर देनेपर) यह सारा संसार तुम्हारा है। सभी देसोंके कमेरो! एक हो जाओ।"

दुखराम—बाह रे बाबा, आज तू मिलता, तो अपने आँसुओंसे तेरे पैर पोछता।

भैया—अगले साल (१८४८) फ्रासमें बड़े जोंकराजाके तखतको उलट दिया गया। दुनियाके मुकुटधारी काँपने लगे। फ्रांसके लोगोंने पंचायती राज कायम किया। मरकस बाबाको सरकारके मुखियाने (१ मार्च १८४८ को) बड़े आदरभावसे आनेके लिए बिनती की। बाबा पेरिस सहरमें आये। जर्मनी में भी कमेरोंने जोंकोंके खिलाफ बगावत की। उसके लिए एङ्गल बाबा और दूसरे कई साथियोंको बाबाने जर्मनी भेजा और अपने भी राइनलैण्ड इलाकेमें पहुँच गये। वहाँसे कमेरोंको रास्ता दिखलानेके लिए एक अखबार निकाला। जोंकोंकी सरकार दब गई थी, इसलिए मरकस बाबाकी ओर उसने हाथ नहीं बढ़ाया।

डेढ़ बरस अखबार निकालनेमें बाबाकी और जेनीमाईके पास जो कुछ भी कौड़ी-पैसा था, सब चला गया। जर्मन जोंकोंकी सरकारका फिर कुछ हौसला होने लगा, इसलिए बाबा और जेनी पेरिस चले आये। लेकिन पेरिसके कमेरोंने जोंकोके स्वभावको ठीकसे पहचाना नहीं। उन्होंने जोंकोको अँगूठेसे दबाया। खून निकल जानेसे वह सुटुककर पतली हो गई। कमेरोंने समझा अब यह कुछ नहीं कर सकती, इसलिए उन्हें उठाकर फेंक दिया।

दुखराम—जोंकोंका जीव बड़ा कड़ा होता है भैया! उनको जब तक गत्तर-गत्तर काट चीथकर न फेंका जाय, तब-तक वह मरती नहीं।

भैया—पेरिसमें फिर जोंकोका जोर बढ़ गया और १८४९ में मरकस बाबाको फ्राससे निकल जानेका हुक्म हुआ। बाबा और जेनी कमेरोंकी भलाईके लिए सब दुख सहनेके लिए तैयार थे। घर छूटा, देस छुड़ाया गया और जिस देसमें भी जाते वहाँकी जोंकें उनके पीछे पड़ जातीं। अब वह लन्दन चले गये। १८३९ से १८८३ तकके लिए (चौतीस बरसोंके लिए) लन्दन ही मरकस बाबाका घर बना।

दुखराम—लन्दन तो सबसे बड़ी-बड़ी जोंकोकी राजधानी है, वहाँ मरकस बाबाको कैसे जगह मिली?

भैया—जोंक सरकारोंकी आपसमें भी झगड़ा है, यह तो सैंतीस साल पहले-वाली लड़ाई और पिछली लड़ाईसे तुम्हे मालूम है। इसलिए भी अपने मुहई जर्मनी और फ्रान्सकी जोंकोके दुसमन मरकसको अपने यहाँ रहने देनेमें उन्हें कोई हरक्कत नहीं मालूम हुई, और सारे अँगरेजोंके गुलाम देसोंका इतना अधिक धन आता था, कि अपने यहाँके मजूरोंको वह कुछ दे-दिवाकर सन्तुष्ट कर देते थे। मरकस बाबाने बड़ी-बड़ी पोथियाँ लिखीं। दुनिया भरके कमेरोंपर उनकी नजर रहती थी।

दुखराम—हिन्दुस्तानके रहनेवाले हम कमेरोंके बारेमें बाबाने कुछ सोचा और लिखा?

भैया—हाँ दुक्खू भैया! बाबाके सामने आजसे ९१ साल पहले भी हिन्दु-स्तानका कोई रोग छिपा नहीं था। बाबाने उस वक्त लिखा था—'काहे अँगरेज

हिन्दुस्तानके मालिक बन गये ? मुगल सूबेदारोंने मुगलाई राज-संगठनको तोड़ा। सूबेदारोंकी तागतको मराठोंने तोड़ा। मराठोंकी तागतको (पानीपतकी लड़ाईमें) अफगानोंने तोड़ा और जब यह सभी सबके खिलाफ लड़ रहे थे, तो अँगरेज चढ़ दौड़े और उन्होंने सबको दबा दिया। (क्यों दबा सके ?) यह देस सिर्फ हिन्दू, मुसलमानोंमें ही बँटा नहीं है, बल्कि खोम-खोम और जाति-जातिमें बँटा है। यहाँके समाजका ढाँचा इस तरह कसकर बाँधकर रखा गया है, कि आदमी-आदमीके बीच बिखराव और बेमेलपन फैला है। जो देस, जो समाज ऐसा हो, वह हारनेके लिए, गुलाम होनेके लिए नहीं बना तो किस लिए बना। चाहे हिन्दुस्तानका पुराना इतिहास हम न भी जानते हों, तो भी इस बातमें तो कोई दो मत नहीं है, कि इस छन भी हिन्दुस्तान अँगरेजोंकी गुलामीमें जकड़बन्द है। और उस जकड़बन्दीका काम करती है हिन्दुस्तानी फौज जिसका खर्च भी हिन्दुस्तान ही देता है। ऐसा भारत गुलाम होनेसे कैसे बच सकता है ?'

दुखराम—भैया ! बाबाने सचमुच हम लोगोंके रोगको पहिचाना।

भैया—बाबाने एक और भी बात लिखी है। उन्होंने हिन्दुस्तानके पुराने जमानेमें गाँवका जो पंचायती इन्तिजाम था, उसके बारेमें कहा 'ये सुन्दर (गाँवके) प्रजातन्त्र सिर्फ पड़ोसी गाँवसे अपने गाँवकी सीमाकी रक्षाके लिए मुस्तैदी दिखा सकते थे, लेकिन अपने राजाओंकी मनमानीको रोकनेकी उनमें जरा भी ताकत नहीं थी।'

दुखराम—क्यों भैया ! गाँवका पंचायती राज क्या बुरा था।

भैया—पंचायती राजको बुरा कोई नहीं कहता। बाबाने भी वही कहा। जो कनैलाकी कोई जमीन या तालपोखरीका हक भदया छीनने लगे, तो कनैलावाले कितना मनसे लड़ेंगे ?

दुखराम—भैया ! गाँवका बच्चा-बच्चा लाठी लेकर दौड़ पड़ेगा। भला कोई घर बैठा रह सकता है ? न जानें कितनी बार कनैला नरेहतासे लड़ा, उसने उमरपुरका दाँत खट्टा किया, भदयाको सिवानामें घुसने नहीं दिया।

भैया—बाबा यही कहते हैं, कि जब देसमें इतना बिखराव हो जाता है कि लोगोंको सारा देस तो भूल जाता है, याद रहता है सिर्फ अपना गाँव; तो

गाँवकी सीमाकी रच्छा भले ही हो जाय, लेकिन देसकी सीमाकी रच्छा नहीं हो सकती। क्योंकि लोग अपनेको उतना ही मनसे देसका बासी नहीं समझते, जितना मनसे कि गाँवका बासी समझते हैं। इसीलिए हिन्दुस्तानकी सीमाकी रच्छाकी जिम्मेवारी सिर्फ राजाओंको रह गई। राजाओंका जुलुम और मनमानापन लाखों गाँवोंके पंचायती राज्योमें बँटे हिन्दुस्तानी लोगोके रोकनेकी चीज नहीं रह गया। गाँवकी पंचायतोंने कारीगरोंको हजारों बरस पुराने बसूलों और रुखानियोंसे चिपके रहने दिया, किसानोंको हँसुओं-फालोंसे एक कदम भी आगे नहीं बढ़ने दिया जबकि दूसरे मुलुकवाले अपने जुल्मी राजाओंकी गरदन कुल्हाड़ेसे काट रहे थे, उस वक्त सब जुलुम, सब अन्याय बरदास करते हिन्दुस्तानी लोग कहते थे—"कोउ नृप होइ हमैं का हानी"। इससे वह यही दिखलाते थे, कि हमारा हाथ-पाँव बँधा हुआ है, हम कुछ नहीं कर सकते। हमारे इस गाँव-गाँवके बिखराव, जाति-जातिके बिखराव, धरम-धरमके बिखरावने हमे बिलकुल कमजोर बना दिया। हम हिल-डोल नहीं सकते। हम समय देखकर अपनेको बदल नहीं सकते। हम अचल मुरदा बने रहना चाहते थे। लेकिन जो कोई दूसरा न छेड़ता तब न? मुसलमानोंने राज किया, उससे पहिले सकों और यूनानियोंने भी राज किया था, लेकिन हिन्दुस्तानके समाजके पुराने ढाँचों, गाँव-गाँवके अलग-बिलग संगठनों और जाति-पाँतिको कोई नहीं तोड़ सका। लेकिन वह काम अँगरेजोंने किया। उन्होंने मुरदेको खूब झकझोरा। वह बिल्कुल मुरदा नहीं था। उन्होंने हजारों बरससे चले आये हमारे चरखोंको तोड़ डाला, पुराने करघेको बिदा किया। यह सब कैसे किया? अपने यहाँके मिलके बने सस्ते कपड़ोंको भेजकर। बाबा ने लिखा—"अँगरेजोंने कपासकी जनम भूमिमें कपड़ेकी बाढ़ ला दी। १८१८में उन्होंने जितना कपड़ा भेजा था, उससे ५२ गुना कपड़ा १८ बरस बाद १८३६ में अँगरेजोंने हिन्दुस्तान भेजा। १८३७ में मुस्किलसे दस लाख गज बिलायती मलमल हिन्दुस्तानमें आया था, लेकिन दस ही बरस बाद १८४७ में ६ करोड़ ४० लाख गजसे ऊपर मलमल हिन्दुस्तान आया। लेकिन इसी बीचमें ढाका सहर उजड़ गया। वह डेढ़ लाखकी

जगह सिर्फ २० हजारकी बस्ती रह गया। इस तरह अपनी कारीगरीके लिए दुनिया भरमें मसहूर हिन्दुस्तान के सहर बरबाद हो गये।"

दुखराम—जोंकोंने बड़ा जुलम किया भैया ?

भैया—बाबाने भी लिखा था—"यह सब देखकर आदमीका दिल बियाकुल हो जाता है। हिन्दुस्तान जो अनगिनत पंचायती गाँवमें सान्तीके साथ जिन्दगी बिता रहा था, उसके सारे सगठनको जोंकोने तितर-बितर कर दिया, लोगोंको कसटोंके समुन्दरमें फेंक दिया। पीढ़ियोंसे चले आते जीविका कमानेके रास्ते बन्द कर दिये। यह ठीक है, कि गाँवोंका पुराना पंचायती संगठन बहुत सुन्दर था, वह देखनेमें (दुधमुँहे बच्चेकी तरह) बहुत ही भोला-भाला था। लेकिन यह भी याद रखना चाहिये, कि पूरबी देसोंमें (जोंकोंको) मनमानी करनेमें सबसे बड़ी मदद इसी भोले-भालेपनने दी। इसने आदमीके दिमागको नन्हीं-नन्हीं कोठरियोंमें बन्द कर किया। गप्पो और झूठे बिस्वासोंको चुपचाप माननेके लिए वहाँके लोगोंको तैयार किया, उन्हें पुराने रवाजोंका गुलाम बनाया। हमें यह भी नहीं भूलने चाहिये, कि एक छोटी-ही जमीनकी टुकड़ीमें ही जब सारी ममता बटुर गई हो, तो बिसाल देसका बिधंस क्यों नहीं होता ? इसी छोटी ममताने लोगोंको कितना जुलुम सहनेके लिए मजबूर किया। बड़े-बड़े सहरोंमें भयंकर हत्या करवाई, (जिसमें लाखों बालक-बूढ़े, नर-नारी गाजर-मूलीकी तरह काट डाले गये) हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए, कि यह अपमान-भरा जीवन, मुरदे कीड़े-मकोड़ेका जीवन ही, बिलकुल जड़ जीवन ही था, जिसको देखकर जंगलियो, अत्याचारियों, सत्यानासियोंको वैसा करनेकी हिम्मत हुई। हमें यह न भूलना चाहिए, कि भारतकी यह (गाँव-गाँवमें) बिखरी छोटी-छोटी जमात भी सैकड़ो जातोंमें बँटी थी, गुलामीके रोगमें फँसी थी। जहाँ मानुखका काम है ऊपर उठकर जो भी रास्तेमें बाधाएँ आएँ उनको परास्त करना, वहाँ हिन्दुस्तानियोंको परिस्थितियोंका गुलाम बनना पड़ा। उसीके कारण मानुख समाजको जहाँ बहती गंगाकी धाराकी तरह बराबर बढ़ते रहना चाहिए था, वहाँ वह अचल बनकर जमानेके हाथकी कठपुतली बन गया। मानुख अन्धे जमानेका दास हो गया। जिस मानुखको जमानाका राजा बनना

था, वह इतना पतित हुआ कि बानर हनुमान और कपिला गायके सामने घुटने टेकने लगा।"

सन्तोखी—क्यों भैया! बाबाको हनुमानजीकी पूजा और गोमूत पीनेकी बात मालूम थी?

दुखराम—खूब मालूम थी सन्तोखी भाई! और बाबाने हम मूढ़ोंके गाल-पर खूब चपत लगाया। लेकिन यह चपत ऐसे माँ-बापका था, जिसका हृदय भीतर ही भीतर रो रहा हो।

भैया—बाबाने और कहा "हिन्दुस्तानमें अँगरेज जो समाजमें उलट-पुलट कर रहे हैं, उसके पीछे उनका एक बहुत ही नीचा स्वारथ छिपा हुआ है। लेकिन हम पूछेंगे, कि क्या एसियावासियोंके समाजको बिना उलटे-पुलटे मानुख जाति अपने पहुँचनेकी जगह पहुँच सकती है? अगर नहीं पहुँच सकती तो अँगरेजोंने चाहे जितना भी पाप किया, उन्होंने अनजाने ही इस हित-कारी उलट-पुलटको करनेमें सहायता की; फिर चाहे (हिन्दुस्तानमें) टूट-टूटकर गिरती हुई पुरानी जिन्दगीको देखकर हमारा दिल कितना ही बिकल क्यों न हो जाय, उसके खिलाफ हमारे दिलमें कितनी ही आग क्यों न लग जाय; लेकिन उसने उलट-पुलट करके हिन्दुस्तानका नया इतिहास बनानेमें मदद की है।"

दुखराम—बात तो भैया! बाबाने सच्ची-सच्ची कह डाली, चाहे किसीके गले उतरे या न उतरे।

भैया—बाबाने एक ओर जुगोसे चले आये हिन्दुस्तानको लाखों गाँवोंमें छिन्न-भिन्न देखकर उसे बुरा कहा; गाँई संगठन और उलट-पुलटको आगेकी भलाईके लिए जरूरी बतलाया। साथ ही यह भी कहा—"अंगरेजोंने तलवारसे हिन्दुस्तानके ऊपर जो एकता जबर्दस्ती लाद दी है, उसे बिजलीके तार और भी मजबूत और बहुत दिन तक रहनेवाली बना रहे हैं। अंगरेज सरजन्ट जो हिन्दुस्तानी सेनाको परेड सिखला रहे हैं, उसका संगठन कर रहे हैं; वही हिन्दुस्तानी सेना विदेसियोंके हमलेसे ही देसको नहीं बचाएगी, बल्कि वह देसको छुटकारा दिलानेका काम भी करेगी। अखबार और छापाखाना नया-

हिन्दुस्तान बनानेके बड़े ही जबर्दस्त हथियार हैं। जो हिन्दुस्तानी अंगरेजोंसे पच्छिमी विद्या सीख रहे हैं, वह राज चलानेके काम और पच्छिमके साइंसमें भी चतुर हो रहे हैं। यह भी हित करनेवाला है। भापके इंजनने हिन्दुस्तानसे यूरपके साथ आने-जानेमें और सहायता की है। हिन्दुस्तानके मुक्खि-मुक्खि बन्दरगाह इंगलैण्डके बन्दरगाहोंसे जुड़ गए हैं, जिसके कारन अब हिन्दुस्तान अलग-बिलग नहीं रह सकता और वह जड़ताईको जडमूलसे उखाड फेंकेगा। वह दिन दूर नहीं है, जब भापसे चलनेवाली रेल और जहाज मिलकर इंग्लैण्ड-को आठ दिनके रास्ते पर ले आ देंगे। उस समय हिन्दुस्तान भी पच्छिमी देसोंका पड़ोसी देस बन जायगा। बिलायतकी राज करनेवाली जमातने हिन्दु-स्तानमें जो कुछ तरक्कीका काम किया है, वह अनजाने और सिरिफ अपने स्वारथसे किया। विलायती सरदार हिन्दुस्तानको जीतना चाहते थे, बिलायती थैलीसाह (बनिये) उसे लूटना चाहते थे और मिल-साह (पूँजीपति) गलाकट्टी कर रहे थे।...अब मिल-साह सारे भारतमें रेलोंका जाल बिछाना चाहते हैं, और वह ऐसा करके रहेंगे।...मैं जानता हूँ कि अँगरेज मिलसाह (पूँजीपति) हिन्दुस्तानमें रेल सिरिफ इसीलिए बिछाना चाहते हैं कि बहुत थोड़े खर्चमें हिन्दुस्तानके कपास और दूसरे कच्चे मालको अपने कारखानोंमें ले आएँ; लेकिन अँगरेज ऐसे देसमें कल-मसीनको ले जा रहे हैं, जहाँ कोयला और लोहा मौजूद है। फिर कोयला लोहाके धंधेको आगे बढ़नेसे कौन रोक सकता है?...हिन्दुस्तानियोंमें ऐसे बहुग लोग हैं, जो कल-मसीनके इलिमको समझ सकते हैं, वह पूँजी भी जमा कर सकते हैं, उनमें बड़ा दिमाग भी है; यह इसीसे मालूम है कि गिनती (हिसाब) जैसे इलिममें वे बहुत चतुर होते हैं। उनकी बुद्धि बड़ी तेज है।"

दुखराम—बाबाने देख लिया था, कि हिन्दुस्तानी लोगोंकी आंखें जरूर खुलेंगी और वह अपनी विद्याको अपनी भलाई, अपनी मुकतीके लिए इस्तेमाल करेंगे।

भैया—बाबाने यह भी सोच लिया था, कि हिन्दुस्तानको आजाद करने, उसके आगे बढ़नेमें बिलायतके कमेरोंकी भी सहायता जरूरी होगी।

दुखराम—बिलायतके कमेरोंमें भी क्या बाबाके माननेवाले लोग हैं?

मैया—बाबाने उनकी भी आँख खोल दी है दुक्खू भाई ! बिलायतमें एक लाख तो बाबाके पार्टीके खास लोग हैं। वहाँकी जोकें उस समय बहुत घबरा रही हैं कि लड़ाई खतम होते कहीं उनका भी तखता न उलट जाय। बाबाने ६१ बरस पहले लिखा था—"जब तक खुद बिलायतमें वहाँके कमेरे अपने जोंक-राजको हटाकर अपना राज न कायम कर लें या खुद हिन्दुस्तानी ही इतने मजबूत न हो जायँ, कि अंग्रेजोंके जूएको उतार फेंकें (तब तक हिन्दुस्तानके लिए वह सुन्दर दिन नहीं आ सकता)। चाहे कुछ भी हो थोड़े या अधिक दूरके समयमें वह दिन जरूर आएगा, जब विसाल मनोहर हिन्दुस्तान देसका नया जनम होगा। वह देस जिसके नरम सुभाववाले निवासियोंमें आजकी गुलामीमें भी एक तरहकी साँति और अभिमान है। आलसीसे दिखाई देने पर भी जिन्होंने अपनी बहादुरीसे अंगरेजोंको चकित कर दिया। जिनका देस हमारी भाखाओंका, हमारे धरमोंका मूल स्रोत रहा; जिसके जाट अपनी बहादुरीमें पुराने जर्मनों जैसे हैं, जिसके बाम्हन ग्यानमें पुराने यूनानियों जैसे हैं, उस देसका जरूर उद्धार हो कर रहेगा।'

सन्तोखी—बाबा क्या हिन्दुस्तानमें आये थे भैया !

मैया—हिन्दुस्तान नहीं आये थे लेकिन सैकड़ों बरसोंसे अँगरेज लोग हिन्दुस्तानके बारेमें लिख-लिख कर जो ढेर किये थे, उस सबको बाबाने पढ़ा, हिन्दुस्तानसे जानेवाले आदमियोंसे बात चीत की; उसीसे उनको सब बातें मालूम हुईं। हम कहते थे, कि बाबाको असली रोग और दवाका पता लगा। उन्होंने समझा कि रोग है यही जोंकें, जिनमें सबसे बड़ी हैं यह पूँजीपति, मिलमालिक, कारखानेवाले जो ।।।) का २०) बनाते हैं और दुनिया भर राज करते हैं। बिलायतके मजूरोंने इन जोंकोंसे लड़ाई ठानी। जब पेट काटा जाय, बेकसूर आदमी निकाल बाहर किये जायँ, तो भला वह कैसे चुप रहें ? जोंकोंका अपार धन, उनकी पलटन, पुलिस, धरम और पुरोहित सब कमेरोंको पीस देना चाहते थे; लेकिन वे तीस चालीस बरससे बराबर लड़ते रहे। तोंद पचकती देख जोंकोंको कितनी बातें माननी पड़ीं और कमेरोंका बल घटनेकी जगह और बढ़ता गया। बाबाने समझा जोंकोंकी असली दवा यह कल-कारखानेके मजूर हैं। जो

वह हजारों लाखों गाँवोंमें बिखरे रहते, तो जोंकोंका मुकाबिला नहीं कर सकते। अपने कारखानोंको चलानेके लिए जोंकोंने उन्हें सहरोंमें एक जगह जमा कर दिया। यह बड़ी तागत है। जोंकों ही ने मजूरों को अपने स्वारथके लिए इकट्ठा किया और वही जोंकोंको तबाह करेंगे।

दुखराम—हाँ भैया! चटकल-पटकलमें लाखों मजूर काम करते हैं। जब मालिक कोई जुलुम करने लगते हैं, तो सब एका करते हैं। दस-दस बीस-बीस-दिन काम छोड़ने पर मजूरोंको तो तकलीफ बहुत होती है, लेकिन मालिकोंको झुकना पड़ता है।

भैया—झुकना क्यों न पड़े, जो मजूरोंका एक रुपया जाता है, तो जोंकोंका १६ रुपया। लेकिन बाबाने कहा कि मजूरी बढ़वाने और छोटे-मोटे जुलुमको हटवानेसे काम नहीं चलेगा, दुनिया भरके किसानों मजूरों—सभी कमेरोंको एका करके जोंकोंका राज खतम करना होगा। पुलिस-पलटन अदालत-कचहरी, कल-कारखाना सबको जोंकोंके हाथसे छीन लेना होगा। हवा-पानीकी तरह धरती-धन सब कुछ को सबका साझेका करना होगा; तब जाकरके दुनियाका यह नरक खतम होगा।

सन्तोखी—हाँ भैया! बाबाने बड़े कामकी बात बतलाई।

भैया—अब सुनो बाबाका बाकी जीवन चरित्तर। ३१ सालकी उमरमें बाबा कहाँ-कहाँकी जोंक-सरकारोंसे बचते लन्दन पहुँचे। और वहीं ६५ बरसकी उमरमें बाबाका देह छूटा। बाबाने अमरीका, यूरप सब जगहके मजूरोंको जोंकोंसे लड़नेमें मदद दी, रास्ता बतलानेके लिए किताबें लिखीं। कोलोनके कमूनिसटोंके ऊपर मुकदमा चल रहा था।

दुखराम—कमूनिस्ट कौन हैं भैया।

भैया—बाबाके चेला लोगोंको, बाबाके पार्टीवालोंको कमूनिस्ट कहते हैं। दुनिया भरकी जोंकें कमूनिस्टोंसे बहुत डरती हैं। कमूनिस्टोंने कमेरोंकी लड़ाइयाँ खूब बहादुरीसे लड़ी हैं, अपना सरबस होम दिया है। रूससे जोंकोंका राज उन्होंने ही खतम किया।

दुखराम—तो भैया ! हमारे देसमें भी ऐसे कमूनिस्ट होने चाहिएँ। बाबाके चेला हम लोगोंको रास्ता नहीं बतलाएँगे, तो हम कैसे लड़ पाएँगे।

भैया—हमारे यहाँ भी बाबाके चेला हैं दुक्खू भाई ! लेकिन ४० करोड़की आबादी में कुछ हजार कमूनिस्ट तो बहुत कम होते हैं न ? सरकारने अबभी दो-तीन हजार कमूनिस्टोंको जेलमें बन्द करके रखा है और जोक और पुलिस दोनो उन्हें फूटी आँखसे भी नहीं देखना चाहती; लेकिन वह रकतबीजकी तरह बढ़ते रहेंगे। सहर-दिहात सबमें छा जायँगे। बाबाका पथ कौन कमेरा है, जिसको पसन्द न होगा ?

दुखराम—हाँ भैया ! वह अभागा ही होगा। बाबाने सब दुख-तकलीफ सहकर हमारे ही फायदाके लिए न काम किया ?

भैया—बाबाने कमूनिस्टोंके मुकदमेके लिए किताब लिखी, लेकिन छापनेके लिए कागज नहीं था। उनके पास एक कोट बच रहा था, उसे भी उन्होंने बन्धक रख दिया।

दुखराम—तो बाबा बिना कोट हीके रह गए ? सुनते हैं, बिलायतमें हाड़ चीरनेवाला जाड़ा पड़ता है।

भैया—बाबा कष्ट सहनेको तैयार थे। और जेनी माईकी तकलीफको सोचो दुक्खू भाई ! एक तालुकदारकी लड़की, बड़ी लाड़-प्यारमें पली, वह भी बाबाके साथ गली-गली मारी-मारी फिरती रही; लेकिन उसने एक दिन भी अफसोस नहीं किया। बाबा इतने पंडित थे, कि हजार दो हजार कमा सकते थे और अपने बाल-बच्चोंको आरामसे रख सकते थे; लेकिन बाबाने कमेरोंकी सेवाके लिए अपना जीवन दे दिया था। बाबाके दो लड़के चार लड़कियाँ हुईं; लेकिन दोनों लड़के और एक लड़की ज्यादा दिन नहीं जी सके। बीमार पड़ते तो दवाई और पथका पाना मुसकिल होता। बाबाने कमेरोंके लिए गरीबीकी जिन्दगी बिताई, जोंकें उनको फूटी आँखों नहीं देखना चाहती थीं। गरीबीके कारन बाबाके तीनों बच्चे मर गये; लेकिन बाबाने सोचा, हजारों बरसोंसे जोंकें कमेरोंके करोड़ों बच्चोंको मार चुकी हैं, उन्हीं बच्चोंमें मेरे भी तीनों बच्चे गये।

सन्तोखी—बाबा जैसी तपेस्सा कौन करेगा भैया ? दूसरे तपेस्सा करने वाले तो जोंकोंकी जड़में पानी डालते हैं, जोंकोंको और मजबूत करते हैं।

दुखराम—बाबाने भी जोंकोंकी जड़में पानी डाला, लेकिन खूब खौलाकर गरम-गरम पानी।

भैया—बाबाके साथी एङ्गल बाबाने भी बड़ी तपेस्सा की। उन्होंने ब्याह नहीं किया, और कमा-कमाकर हर साल साढ़े तीन सौ गिन्नी मरकस बाबाको देते गए। जो एङ्गल बाबाने यह तपस्सा न की होती, तो बाबाके ऊपर और आफत आती। बड़े बाबाने एङ्गल बाबाको एक चिट्ठीमें लिखा था—'तुम्हारे बिना मै कभी अपने कामको पूरा न कर सका होता। सिर्फ मेरे लिए तुमने अपनी जबरजस्त बुद्धिको बेकार जाने दिया और गलाघोंटू व्यौपारी जिनगी अपनायी।'

सन्तोखी—क्या एङ्गल बाबा व्यौपारी थे भैया ?

भैया—हाँ, उनके बापका कारखाना था, उसीको एङ्गल बाबाने सँभाला लेकिन वह कितना ऊब गये थे, यह उनकी इस चिट्ठीसे मालूम हो जाता है—"मैं किसी चीजको उतना नहीं चाहता, जितना कि इस व्यौपारीकी जिनगीसे भाग निकलनेको।" बाबाके जीवनमें ही (१८ मार्च १८७१ में) पेरिसके कमेरोंने वहाँसे जोंकोंका राज कुछ महीनोंके लिए उठा दिया। कमेरोंकी ताकत अभी उतनी मजबूत नहीं थी, इसलिए जोंकोंने फिर हजारों मजूरोंको कतल करके अपना राज जमा लिया। लेकिन पेरिसके कमेरोंने जितना अच्छी तरहसे अपना राज चलाया, उससे यह पता लग गया, कि कमेरे जोंकों को हटा सकते हैं और अच्छी तरह राज चला सकते हैं। पेरिसके कमेरोंने क्या गलती की थी, इसे बाबाने लिख दिया था। फिर ४६ वर्ष बाद जब रूसके कमेरोंने जोंकोंका राज उलटा, तो उस बखत बाबाकी वही सिच्छा बड़े काम आई। ४१ साल तक कमेरोंकी लड़ाई लड़ते बाबाने आखिर ६५ सालकी उमरमें (१४ मार्च १८८३ को) देह छोड़ा। लन्दनके हाईगेटके कबरिस्तानमें अब भी बाबाकी समाधि है। कौन होगा जो बाबाकी समाधि पर फूल चढ़ानेकी लालसा न रखता हो ? बाबाके मरनेपर एङ्गल बाबाने लिखा था—'मानुख जातके पास जितने दिमाग हैं, उनमें

सबसे बड़ा दिमाग आज खो गया। कमेरा-दलकी लड़ाई चलती रहेगी, लेकिन वह दिमाग चल बसा, जिसकी ओर फ्रांस, रूस, अमेरिका, और जर्मनीके कमेरे गाढ़के समय आँख दौड़ाते थे और वह दिमाग सदा बहुत साफ दो-टूक सलाह देता था।'

दुखराम—धन्न है भैया! मरकस बाबा और धन्न है सती जेनी माई।

भैया—सती जेनीकी तपेस्साकी बहुत सी बातें हैं, जिनको सुननेपर आँसू रोकना मुसकिल है। अब दुक्खू भाई, बाबाकी मोटी-मोटी सिच्छा सुनो।

दुखराम—हाँ भैया! जरूर सुनाओ।

भैया—बाबाने पहली बात यह बतलाई कि रोटी, कपड़ा, घर आदमीको सदासे जरूरी रहे हैं, इनको पैदा करना मानुखका सबसे पहला काम रहा है। मानुख इनके पैदा करनेके लिए नये-नये हथियार, नये-नये ढंग सोचता रहा है, जिससे रोटी-कपड़ा-घरके पैदा करनेका ढंग बदलता रहा है। वह पहले सिकार करके जीता था, फिर खेती करने लगा, खेतीसे फिर कारीगरीकी ओर बढ़ा, कारीगरीसे व्यौपार होने लगा, व्यौपारसे कारखानेके ढंगपर चला आया। पैदा करनेका ढंग जैसे-जैसे बदलता गया, वैसे-वैसे मानुखकी जमात भी बदलती रही और पहिली जमातबन्दी टूटती गई। सिकार और फल जमा करके जीविका करते समय माईका राज और सबका एक परिवार चलता था। लेकिन जब खेती आई, ताँबा आया, तब वह पुराना ढाँचा नहीं चल सकता था। रोटी-कपड़ा वगैरह पैदा करनेके ढंगके बदलनेके साथही मानुख-समाजके ढाँचेको बदलनेसे रोका नहीं जा सकता। और जब ढाँचा बदलता है, तो उसका कानून आचार-विचार सब बदलता है, आदमीका मन तक बदल जाता है। बाबाने एक जगह लिखा है कि रोटी-कपड़ा इत्तादिके पैदा करनेका ढंग बदल गया। और जहाँ मानुख पुराने ढर्रे को छोड़ना नहीं चाहता, पुराने ही तरहका मालिक-मिल्कियतका ख्याल रखता है, वहाँ तो दोनोका संग्राम छिड़ जायगा।

दुखराम—भैया! थोड़ा समझा के कहो।

भैया—देखो, जब कपड़ा चरखा और करघासे बनता था, घर-घरमें लोग चरखा चलाते थे और गाँवका जुलाहा कपड़ा बुन देता था; उसी तरह बढ़ई,

लोहार भी अपना-अपना काम करते थे। तब गाँव अपने कामकी करीब-करीब सभी चीजोंको पैदा कर लेता था, सबको चीज भी मिल जाती थी, सबको काम भी मिल जाता था। यह उस समयकी बात है, जब रोटी-कपड़ाके पैदा करनेका ढंग सिरिफ हाथसे किया जाता था। इसके बाद भापकी कल-मशीन बनी। कल-मशीनने इतना सस्ता कपड़ा और चीज तैयार किया, कि हाथकी कारीगरी चौपट हो गई।

दुखराम—यह तो देखा है भैया! हमारे देसके सब जुलाहे करघा छोड-छोड-के चटकल-पटकलमें भाग गए।

भैया—तो अब पौनी-परजा मालिक-जजमान ओगैरहवाला गाँवका ढाँचा टूटने लगा कि नहीं?

दुखराम—बहुत टूट गया भैया! और टूटनेके लिए लोग हाय-हाय करते हैं, कलजुगको दोख देते हैं। लेकिन जान पड़ता है भैया! यह किसीका दोख नहीं है। पाथर, ताँबा, लोहा, कल-मसीन जैसे-जैसे नई चीज, नया ढंग आदमी-के हाथमें आता गया, वैसे ही मानुख-जातिका ढाँचा भी बदलता गया। टिटिहिरी-के पैर रोपनेसे आसमान ऊपर नहीं टँगा रहेगा।

भैया—इसी तरहका एक और भी संकट आया है। कल-मसीनसे अन्न भी बेसी पैदा किया जा सकता है। रूस और अमेरिकामें नई-नई खाद और मोटरका हल लगाकर बिगहा पीछे चालिस-चालिस पचास-पचास मन अनाज पैदा करते हैं और एक-एक खेतमें नहीं समूचे देसमें। इसी तरह चीनी, कपड़ा, लालटेन, दुनियाकी खाने-पहनने और रहनेकी सभी चीजें कल-कारखानोंमें इतनी पैदा की जा सकती हैं, कि सारी धरतीके दो अरब लोग एक सालकी उपजसे दो-दो साल तक खूब आरामसे रहें। लेकिन हो क्या रहा है? दुनियामें गरीबी बढ़ रही है, लोग और ज्यादा नंगे-भूखे रह रहे हैं।

दुखराम—इसका कारण तो जोंकें ही हैं भइया?

भैया—हाँ, जोंकें ही हैं दुक्खू भाई! लेकिन उसको इस तरह समझो। अब एक-एक बढ़ई लोहार अपना-अपना हथौड़ा बसूला लेकर अलग-अलग काम तो नहीं कर सकता। कारखानोंके कारण अब सभी काम साझेमें एक दूसरेसे मिलकर

करना होता है। यह छोटी-सी सुई जो बनकर आती है, वह भी सैकड़ों हाथोंसे तैयार होती है। काम साझेमें—सबको मिलकर करना होता है लेकिन चीजोंकी मालिक है जोंक। जोंक कहती है, यह हमारी चीज है इसलिए हम २०) की चीज बनानेवाले मजूरको ।।।) देंगे, किसानको उसके कपासका १) देंगे। और बाकी दामको वह अपने पास रखना चाहता है। लेकिन सुईवाली जोंक नफेमें सुई अपने पास नहीं रखना चाहती। वह चाहती है कि उसका सब माल बिक जाय। लेकिन बिकनेके लिए पैसा चाहिए। किसानको उसने १) दिया, मजूरको ।।।) दिया, कमेरोंके हाथमें कुल मिलाकर दो रुपया गया। अब बताओ २०) की चीज वह कैसे खरीदें।

दुखराम—तो भैया! यही न हुआ कि जोंकें हमारे पास पैसा भी नहीं आने देतीं और बेसी माल पैदा करके खरीदनेको कहती हैं।

भैया—हाँ, इसीलिए तो जोंकोंका दिवाला निकलता रहता है। जब माल बेसी हो जाता है और खरीदनेवालोंके पास पैसा नहीं रहता, तब भारी सस्ती लग जाती है। याद है न बीस-इकीस बरस पहलेकी बात?

दुखराम—मत कहो भैया! उस वक्त तो अनाज इतना सस्ता लग गया था, कि बेचकर जमींदारकी मालगुजारी भी हम बेबाक नहीं कर सकते थे। कितनोंकी जमीन नीलाम हो गई। बड़ी सांसत हुई।

भैया—एक ओर लोग सस्ती होने पर भी पैसे बिना कपड़ा नहीं खरीद सकते थे और दूसरी तरफ कपड़ा गोदाममें सड़ रहा था। जब पहिले हीका कपड़ा गँजा हुआ है, तो नया कपड़ा क्यों बनाया जायगा? जोंकोंने उस मन्दीके दिनोंमें करोड़ों मजदूरोंको कामसे निकाल दिया। कारखाने बन्द हो गये।

सन्तोखी—तब तो भैया! इन करोड़ों मजूरोंके पास भी पैसा नहीं रहा कि मालको खरीदें। इससे तो माल गोदाम हीमें सड़ेगा न, कौन उसे खरीदेगा?

भैया—इसीको कहते हैं कबीर साहबकी उलटबाँसी 'पानीमें मीन पियासी।' एक ओर उसी अमरीकामें बेरोजगार होनेसे करोड़ों मजूर भूखे मर रहे थे, दूसरी

और अमरीकाकी जोंकोकी सरकारने १९३३ में पचास लाख सूअर खरीदकर मरवाकर फेंकवा दिये—भूखोंको खानेके लिये नहीं दिया।

दुखराम—आततायी ! जोकोंको क्या दाया-माया होगी ?

भैया—डेनमार्क देसमें हर हफ्ता १५०० गाएँ मारकर उनका मांस जमीन-में गाड़ दिया जाता था। अरजनतीन देसमें लाखो भेड़ोंको मारकर नस्ट कर दिया गया ? अमेरिकामें लाखों मन गेहूँको आगमें झोंक दिया, जहाजों भरी नारंगियाँ समुन्दरमें फेक दी गईं।

सन्तोखी—भैया ! क्या दुनिया बौरा गई।

भैया—दुनियाकी बात मत कहो, सन्तोखी भाई ! दुनिया तो भूखी मर रही है। यह जोंकोंका कसाईपन है। वह सोचते थे कि दो रुपया मन गेहूँ है, जो पचास लाख मन गेहूँ और बजारमें चला आया, तो वह और सस्ता हो जायगा ? फिर नफा कहाँसे मिलेगा; इसलिए पचास लाख मन गेहूँ या पचास लाख सुअरोंको बरबाद कर दिया गया, जिसमें कि बाजारमें बाकी जो चीजें वह भेजेंगे, उसका दाम ज्यादा मिलेगा।

सन्तोखी—हाँ भैया ! बाजारमें माल कम और गाहक ज्यादा हो, तो दाम चढ़ जाता है।

भैया—यही दाम चढ़ानेके लिए जोंकोंने आदमीके मुँहका आहार, तनका कपड़ा सब चीज बरबाद दिया।

दुखराम—और नये गाहक ढूँढ़नेके लिए जर्मन जोंकोंने सैंतीस साल पहिले लड़ाई छेड़ी।

भैया—और पिछली लड़ाई भी जोंकोंने उसी मतलबसे छेड़ी है दुक्खू भाई ! बाबाने कहा था, कि जैसे दुनिया भरकी चीजें सब मिलकर पैदा करते हैं, उसी तरह सबको मिलकर उन चीजोंका मालिक बनना चाहिए, तभी दुनियामें सुख-सान्ती होगी।

दुखराम—मिलकर मालिक बनना कैसे होगा भैया ?

भैया—जैसे दुक्खू भाई ! तुम्हारे घरमें पचास परानी हैं, कोई खेती देखता है, कोई गाय-भैंस देखता है, कोई रसोई बनाता है, मतलब कि परिवारका हर आदमी

रोटी-कपड़ा आदिके लिए कोई न कोई काम करता है। घरमें तो कायदा है न, कि सब लोगोंके खाना-कपड़ा इत्तादिका काम किया जाय। अब तुम ऐसा कायदा चलाओ—नहीं, हम तो सबके कामकी मजूरी देंगे और दो रुपयाके कामकी चार आनासे वेसी नहीं। अब इसका फल क्या होगा ? जितना काम लोगोंने किया है, उसका आठवाँ ही हिस्सा मजूरीमें उनके पास होगा, वह सब चीजको खरीद नहीं सकेंगे। अब वही जोंकोंवाली बलाय आएगी कि नहीं ?

दुखराम—हाँ भैया! आठ भागमें सात भागको खरीदनेके लिए किसीके पास पैसा ही नहीं होगा, तब वह चीज सड़ेगी कि नहीं। लेकिन ऐसा परिवार कहाँ होगा।

भैया—हाँ, यह जोंकें ही कर सकती हैं। मरकस बाबा कहते हैं, कि यह नफाकी बात उठा देनी चाहिए और लोग एक परिवारकी तरह साथ ही चीज पैदा करें और साथ ही भोगें।

दुखराम—तब जोंकें कहाँ रहेंगी भैया ?

भैया—इसलिए तो बाबा कहते हैं, कि जोंकोंका काम खतम हो गया, उन्होंने राजाओंकी तागतको नस्ट करके कल-कारखानोंका रास्ता दिखला दिया; अब उनका एक दिन भी जीना करोड़ों आदमियोंको भूखों मारने और लड़ाइयोंमें कतल होनेके लिए होगा।

दुखराम—यह बात बहुत पक्की है भैया!

भैया—दूसरी बात बाबाने बताई, कि मानुख जातिमें जबसे जोंकें पैदा हुईं, तभीसे जोंकों और कमेरोंका झगड़ा सुरू हुआ और यह तब तक बन्द नहीं होगा, जब तक कि जोंकें खतम न हो जाएँगी। जोंकें अहिंसा और दयाका ढोंग भले ही करें, लेकिन वह अहिंसा-दया पर कभी विस्वास नहीं करतीं। सौमें पंचानबे कमेरे (मजूर) हैं और पाँच जोंकें हैं। उन्होंने पंचानबे आदमियोंको पुलिस-पलटन-जेलके बल पर दबाकर रक्खा है। एड़ीसे चोटी तक जोंकें हथियारसे लैस हैं, उनका सारा राज-पाट हिंसा, खून, लूट, झूठ और धोखापर है। वे किसी साधू-महात्माकी बचनमें आकर गलेमें कण्ठी बाँध लेंगी यह सोचना पागलपन है। जोंकोंको और बड़े हथियारसे और बड़े संगठनसे और बड़े त्यागके कल-बलसे

पछाड़ना होगा, उनका हथियार छीनना होगा और पूरी तरह मीस-मास देना होगा।

दुखराम—देखता हूँ भैया! मरकस बाबाने जो भी कहा है, वह एक-एक बात मेरे दिलमें घुसती चली जा रही है। बाबाने धोखेवाली बात नहीं कही है। सुनते हैं महात्मा गाँधी तालुकदारों-जमींदारों, सेठों-साहूकारोंको कंठी पहिनाना चाहते थे और कितने लोग तो कहते फिरते, कि गाँधी महात्माने सेर-बकरीको एक जगह पानी पिला दिया। लेकिन मुझे यह बात तो धोखेकी मालूम होती है। बच्चा जब नहीं सोता है, तो माँ लोरी गाती है, जिससे वह सो जाय। मुझे तो यह लोरी ही जैसी मालूम होती है।

भैया—गाँधी महात्माके रास्तेके बारेमें मैं फिर कहूँगा दुक्खू भाई! और गाँधी बाबाने कोई बात नहीं कही। महात्मा-बुद्ध, ईसामसीह और भी सैकड़ों महापुरुष कण्ठी बाँधकर सेरको भेड़ बनानेकी कोसिस करते रहे लेकिन कोई सफल नहीं हुआ। जोंकोंको कहीं कण्ठ भी है, कि उसमें कण्ठी बाँधी जायगी? घोड़ा घाससे यारी करेगा तो जिन्दा रहेगा? जोंकोको खतम कर देना बस यही एक रास्ता है।

अध्याय ५

वह देस जहाँ जोंकें नहीं हैं

दुखराम—सन्तोखी भाई! देख रहे हो न कैसी-कैसी बात सुननेमें आ रही है। हम लोग समझे थे, कि धनी-गरीब भगवानने बनाया है; अब मालूम हो रहा है कि यह सब जोंकोंका जाल है। इस जाल-फरेबसे जोंकोंको ही फायदा है। बढ़िया खाना खाते और बढ़िया कपड़ा पहनते हैं, और हम लोग जो ढेला फोड़-फोड़कर मर जाते, भर पेट अन्न भी नहीं मिलता।

सन्तोखी—हम लोग छोटी-छोटी दुकान खोलकर जो दिन-रात चिन्तामें रहते हैं, यह भी तो जोंकोंकी ही ताबेदारी है। दिन-रात फिकरमें हम मरते हैं और सब नफा जोंकोंके पास चला जाता है। जो चारकी धोती चौदह रुपयापर

दूकानदार बेंचता है, तो गिरस्त समझता है कि सब हम लूट रहे हैं। सब गाली हम लोग सुनते हैं और जिसके पास पौने चौदह रुपया चला जाता है उसको काई नहीं पूछता।

दुखराम--वह तो कलकत्ता बम्बईमें बैठे हुए हैं; उनसे कौन पूछने जायगा। लेकिन मजूर उनकी भी खबर ले रहे हैं। अब मोटी तोंद ज्यादा दिन नहीं चलेगी। अच्छा, भैया रजबली आ गये।

भैया—दुक्खू भाई! कमेरोंकी जीतका रास्ता बहुत टेढ़ा-मेढ़ा है, उसको समझना-समझाना और भी मुस्किल है। मै जो कुछ कहता हूँ, जो सोलह आनामें आठ आना भी तुम्हारी समझमें आ जाय, तो बड़ी बात है।

दुखराम—आठ आना नहीं भैया, में तो पन्द्रह आना समझ रहा हूँ। बात तो सब याद नहीं रहेगी, लेकिन एक-एक चीज दिलमें बैठती जा रही है।

भैया—याद होनेकी जरूरत नहीं है, बस दिलमें बैठना चाहिये। मरकस बाबाने बतला दिया था, कि पूँजीपतिके राजमें हर दसवें साल भाव गिर जाना, मन्दी पड़ना, करोड़ों मजूरोंका बेकार होकर भूखो मरना, करोड़ो किसानोंका अनाजके सस्ता होनेसे उजड़ जाना, और सबके ऊपर संसार भरके लड़ाईमें झोंक देना यह बातें रोकी नहीं जा सकतीं। इन सबसे बचनेका उपाय यही है, कि जोंकोंकी सरकारको हटाकर कमेरोंकी सरकार बैठाई जाय, और देस भर को एक परिवार बना दिया जाय। बाबाने जो रास्ता दिखलाया था, उसीसे चलकर पेरिसके कमेरोंने जोंकोंको उलट दिया। लेकिन पेरिसके मजूरोंने यह नहीं समझा, कि किसानोंको भी वही दुख तकलीफ है; उन्हें भी हमें अपने साथ मिलाना है। किसान ज्यादा भोले-भाले होते हैं, गाँवमें एक कोनेमें रहते हैं, दुनिया जहानका उन्हे पता नहीं रहता। अलग-थिलग रहने से उनका एका करना भी मुस्किल होता है। उनको पचास तरहसे भड़काया जा सकता है। जोंकोंने इसी तरह भड़काया। मजूर बड़ी बहादुरीसे लड़े, लेकिन जोंकोंने सारे फ्रांस भरकी पल्टनको उनके ऊपर झोंक दिया। उसी समय (१८७०-७१) जर्मन जोंकोंने फ्रांसीसी जोंकोंकी सरकारको हरा दिया था, लाखों सिपाहियोंको कैद कर लिया था, लेकिन जैसे ही मालूम हुआ,

पेरिसमें मजूरोंने अपना राज कायम कर दिया, तो वह घबरा गई। जर्मन जोंकोंने फ्रांसके सभी कैदी सिपाहियोंको छोड़ दिया, जिसमें कि वह पेरिसमें जाकर मजूरोंके राजको बरबाद कर दें।

दुखराम—एक दूसरेके खूनकी प्यासी जोंकें आपसमें मिल गईं, जैसे ही उन्हें कमेरों का डर मालूम होने लगा?

भैया—सैंतीस साल पहले जो महाभारत जर्मनों ने छेड़ा था, पता है न, वह जर्मन जोंकोके फायदाके ही लिए। इस वक्त तक मरकस बाबाके एक परतापी चेला लेनिन पैदा हो गए थे।

दुखराम—लेनिन कौन थे भैया—कहाँके थे?

भैया—लेनिनका जनम रूसमें हुआ था। मजूरों किसानोंको उन्होने मरकस बाबाका रास्ता बतलाया। मजूरोंके ऊपर होनेवाले जुलुमके लिए वह जोंकोंसे लड़ते रहे। जोंकोंकी सरकार और पुलिसने उनके बड़े भाई को फाँसी चढ़ाया और उनको भी काला-पानी भेज दिया। लेनिन जहाँ भी रहते, वहाँसे कमेरों को रास्ता बतलाते रहते। जेहलखाना और काला-पानीमें रखकर भी जोंकें उन्हें रोक नहीं सकती थीं। ४६ वर्ष पहिले (१९०५) लेनिन अगुआ बने और कमेरों ने जोंकोंके खिलाफ तलवार उठाई। उस वक्त इनकी ताकत उतनी मजबूत नहीं थी, इसलिए जोंकोंने दबा दिया। हजारोंको गोलीसे उड़ा दिया गया, उनसे भी ज्यादा जेलोंमें ठूँस दिए गये। जोकें जीत गईं, कमेरे हार गए। लेकिन जोंकोंका एक बारका हारना सदाके लिए उनका खतम हो जाना है, कमेरोंका एकबार हारनेसे कुछ नहीं होगा, वह तो धूल झाड़कर फिर-फिर लड़ते रहेंगे। कमेरे लड़ते हैं रोटी-कपड़ेके लिए, रोटी कपड़ेका जब दुख मिटेगा तभी न वह लड़ाई करना छोड़ेंगे?

दुखराम—जोंकोंके राजमें रोटी-कपड़ा सबको कहाँसे मिल सकता?

भैया—लेनिन महात्माको रूसकी जोंकें जो पकड़ पातीं, तो फाँसी चढ़ा देतीं, इसलिए वह रूससे बाहर चले गए; लेकिन उनके बहुतसे साथी देस के भीतर रहकर कमेरोंमें काम करते थे। लेनिन उनको रास्ता बतलानेके लिए

किताबें लिखते थे और लोग जोखिम उठाकर उन किताबोंको रूसके भीतर ले जाते थे।

दुखराम—जोखिम क्या भैगा!

भैया—पकड़े जाते तो फाँसी-डामलकी ही सजा होती।

दुखराम—किताब कौन इतने खतरेकी चीज थी, भैया!

भैया—मरकस बाबा और उनके चेला लोगोंकी किताबोंसे जोकें तोप बन्दूकसे भी ज्यादा डरतीं। वह समझती हैं, गोला-गंठा तो गरीबोंके लड़कोंके ही पास रहता है जोंकोंके लड़के थोड़े ही पन्द्रह रुपयेके सिपाही बनते हैं? इसलिए जोंकें समझती हैं, कि जिस दिन गरीबों और उनके लड़कोंको जोंकोंके पापका पता लग जायगा, उस दिन फिर खैरियत नहीं। जब लेनिन महात्मा रूससे बाहर कभी लंडन, कभी फ्रांस, कभी स्वीजरलैण्ड इत्यादि देसोंमें मारे-मारे फिर रहे थे, उनके साथ उनकी इस्त्री कुरुपसकाया (क्रुप्सकाया) भी दुख झेल रही थीं। उसी वक्त १९१४ में जर्मन जोंकोंने अपना माल बेचनेका कहीं रास्ता न देखकर दूसरी मोटी-मोटी जोंकोंपर धावा बोल दिया। इंगलैण्ड, फ्रांस और रूस और पीछे अमेरिका एक ओर हुए, जर्मनी-आस्ट्रिया एक ओर हुए। जर्मन जोंकें कमजोर रहीं, और उनके दुसमन जीत गए। लेकिन हमें जोंकोंके हारने-जीतनेकी बात नहीं समझाना है। समझाना यह है कि कैसे रूसमें लेनिन महात्मा और उनके कमेरे साथियोंने जोंकोंका टाट उलट दिया।

दुखराम—हाँ भैया! यह हमारे बहुत कामकी बात है।

भैया—रूसकी जोंकें जर्मन जोंकोंसे भिड़ रही थीं। नफा नुकसान तो जोंकोंका था, लेकिन लड़नेवाली जोंकें थोड़े ही होती हैं। जैसे भड़भूजा भाड़में पत्ती झोंकता है, उसी तरह रूसी जोंकें अपने देसके कमेरों और उनके लड़कोंको जर्मन-तोपोंके मुँहमें झोंकने लगीं। लेकिन जर्मन ज्यादा मजबूत थे। वह रूसियोंको हराने लगे। रूसी जोंकें घबराने लगीं, उन्होंने और कमेरोंको और उनके बच्चोंको लड़ाईमें भेजा। कितनोंको तो बन्दूक भी नहीं दिया।

सन्तोखी—बन्दूक बिना लड़ते कैसे भैया?

भैया—जोंकोंने कहा कि, वहीं जाके, जो सिपाही मरें उनकी बन्दूकें ले

लो। जोंकोंके वह अपने लड़के नहीं न थे, गरीबोंके लड़कोंको भाड़में झोंकने से क्यों हिचकिचाते! गरीबोंके बच्चे समझने लगे, जोंकें उनके साथ चाल चल रही हैं। उधर लेनिन महात्मा भी किसानों, मजूरों और उनके लड़के सिपाहियों की आँख खोलने लगे—जोकों-जोंकोंकी लड़ाईमें नाहक गरीबोंका बध कराया जा रहा है। लेनिन महात्माने कहा कि जवानों! तुम्हारे दुसमन बाहर नहीं तुम्हारे घरकी जोंकें हैं। बन्दूकें खूब हाथमें आ गईं, बन्दूकोंका मोहड़ा फेर दो और घरकी जोंकोंको खतम कर दो।

दुखराम—मरकस बाबाके चेला लेनिन महात्मा भी कम नहीं थे!

भैया—लेनिन महात्मा मरकस बाबाके बड़े लायक चेला थे दुक्खू भाई! हाँ, तो मजूर-किसान उठ खड़े हुए। उन्हींके लड़के सिपाही थे, सबको वह तेईस बरससे समझा रहे थे। अब (नवम्बर सन् १९१७ में) उनको बात समझमें आ गई। उस वखत पेतरोग्रात सहर रूसकी राजधानी रही। उसीका नाम पीछेसे बदल कर लेनिनग्राद हो गया। लेनिन महात्माने पेतरोग्रातमें कमेरोंकी सरकार कायम की। पेतरोग्रातमें लाखों मजूर कारखानोंमें काम करते थे। वह लेनिन महात्माको खूब जानते थे और परानसे भी अधिक प्यार करते थे। जब मजूर बन्दूक लेकर अपना लाल झंडा गाड़ रहे थे, तो जोंकोंने पलटन-पर-पलटन उनके खिलाफ भेजी। लेकिन सिपाही अपने भाई-बहनोंको पहचानते थे, वह जोंकोंकी बातमें नहीं आये। वह अपनी बन्दूक लिये दिये कमेरोंके साथ मिल गये। पलटनके अफसर जोकोंके लड़के थे। लेकिन हजार सिपाहीमें दस अफसर क्या करते? अफसर सिपाही बन गये और उन्होंने कमेरोंकी पलटनपर गोली चलाई, लेकिन गोली जल्दी खतम हो गई और वह भी ठंडे हो गये। फिर जोंकोंने लड़ाईके मैदानसे पलटनें मँगवाईं, और उन्हें कमेरोंके साथ लड़नेके लिए भेजा। पचास-पचास हजार पलटन कूच करती चली आती, लेकिन जहाँ पेतरोग्रात राजधानीकी सीमामें पहुँचती, जेठकी दुपहरियामें मक्खनकी तरह पिघल-कर लोप हो जाती।

सन्तोखी—लोप गैसे हो जातीं भैया?

भैया—लोप हो जानेका मतलब है, कि सब सिपाही कमेरोंकी पलटनमें

मिल गये अफसरोंमें जिन्होंने तीन-पाँच किया, वह वहीं मार दिये गये, बाकी भाग निकले। कमेरोंके राज सँभालनेकी खबर जहाँ-जहाँ पहुँची, वहाँ-वहाँ जोंकों और कमेरोंका दो दल हो गया और सब जगह जोंकोंको निकाल बाहर किया गया। कमेरोंकी सरकारने तुरन्त कानून बना दिया, कि जितने तालुकदार-जमींदार, राजा-नवाब हैं, उनकी सारी जमींदारी आजसे सारे रूसके कमेरोंकी हुई। जितने कल-कारखाने हैं, आजसे जोंकें उनकी कुछ नहीं हैं, अब सारे कमेरे उनके मालिक हैं। जितने रेल, जहाज ओगैरह की कम्पनियाँ हैं, वह सब अब कमेरोंकी हैं; जितनी कोयलेकी खानें, तेलकी खानें, हर तरहकी खाने हैं, वह सब कमेरोंकी हैं। जितने बंक और उनके पास करोड़ों-अरबोंका खजाना है, वह कमेरोंका है। जोंकोंके जितने महल-कोठा, अटारी, बाग, बँगले हैं, वह सब कमेरोंके हैं।

दुखराम—तो मरकस बाबाने जो बात बतलाई थी, उसे लेनिन महात्माने पूरा कर दिया।

भैया—हाँ, पूरा कर दिया। पेतरोग्रात राजधानीमें आधेके करीब-करीब लोगोंके रहनेका कोई ठौर-ठिकाना नहीं था। लोग सड़ी-गन्दी गलियोंमें रहते थे। लाखों मजूर तो फटे टीन और कनस्तरकी छतो-दिवारोंवाली सूअरकी खोभार जैसी छोटी-छोटी झोपड़ियोंमें रहते थे। पाँच हाथ लम्बी, चार हाथ चौड़ी झोपड़ियोंमें दस-दस आदमियोंका परिवार रहता था। रूसका जाड़ा बहुत कड़ा तिसमें पेतरोग्रात तो और ज्यादा; सरदीके मारे वहाँ नदी, समुन्दर सब जमकर बरफ हो जाते हैं।

सन्तोखी—पत्थर जैसी बरफ ?

भैया—सन्तोखी भाई ! जो तुम जाड़ामें वहाँ पहुँच जाओ, तो साँस लेनेसे जो भाप नाकसे बाहर निकलेगी, वह पहले पानी बनकर तुम्हारी बड़ी-बड़ी मूँछोंमें समा जायगी और छन भर हीमें मालूम होगा कि तुम्हारी मूँछें सीसेके भीतर जमी हुई हैं। इतनी सरदीपर भी मजूरोंको उन्हीं टीनोंकी खोभारोंमें रहना पड़ता। उनके पास आग जलानेके लिए कोयला भी नहीं रहता।

दुखराम—जोंकोंका कदम जहाँ गया, वहाँ नरक छोड़ और क्या होगा ?

भैया—कमेरोंकी सरकारने तुरन्त हुकुम निकाला और जोंकोंके बड़े-बड़े महलों और कोठोंको कमेरोंके लिए खोल दिया। उन्होंने जोंकोंसे कह दिया कि जो कमेरोंकी सरकारके खिलाफ हैं, उनके ही ऊपर हम हाथ उठायेंगे। जो जोंकका धरम छोड़कर आदमी बननेके लिए तैयार हैं, उनको हम भाई मानेंगे और काम देंगे। जोंकोंमें जो मानुख बन गये, उनको उन्हींके घरोंकी एक कोठरी दे दी और बाकी मकानमें सूअरकी खोभारसे निकालकर कमेरोंको ला बसाया। कमेरोंका राज कायम होते ही रानियों, तालुकदारनियों और सेठानियोंकी लौड़ियाँ काम छोड़कर अलग हो गईं।

सन्तोखी—जब जमीन, मकान, बंकका रुपया और कल-कारखाना सभी छीन लिया गया, तो लौड़ियोंको कैसे रखतीं?

भैया—नौकर-चाकर भी जोंकोंको छोड़कर हट गये।

दुखराम—अब रानी भरती होंगी पानी!

भैया—बिना देह हिलाये हरामका पैसा थोड़े ही मिल सकता था? कमेरों-की सरकारने सबको काम देनेका इन्तिजाम किया। जब इङ्गलैण्ड, फ्रांस, अमेरिका, जापान और दूसरे देसोंकी जोंकोंको पता लगा, तो उनकी नींद हराम हो गई। रूस छोटा-मोटा देस नहीं है, दुनियाके छ भागमें एक भाग रूसका है उसके पूरबी किनारेसे पच्छिमी किनारे तक डाकगाड़ीसे जायँ तो १५ दिन १५ रात लगती है।

दुखराम—बम्बईसे परयाग तो भैया! एक दिन एक रात हीमें चले आते हैं, रूस बहुत भारी देस होगा।

भैया—हाँ, हिन्दुस्तान ऐसे सात देसोंकी धरती इकट्ठा जोड़ी जाय, तो रूसके बराबर होगी। इसीलिए बाहरी देसोंकी जोंकें बहुत घबराईं, लेकिन साल भर तक वह बहुत नहीं कर सकीं, जब जर्मनी हार गया, तो जीतनेवाली सारी जोंकें इतनी घबराईं, जितना कंस भी कन्हैयाके पैदा होनेसे नहीं घबराया होगा। उन्होंने अपनी फौज, गोला-बारूद सब लेकर बोलसेविकोंके ऊपर धावा बोल दिया।

दुखराम—बोलसेविक कौन हैं भैया?

भैया—रूसमें मरकस बाबाके चेलोंको बोलसेविक कहा जाता है।

दुखराम—तो बोलसेविक भी कमूनिस्तोंकी तरह हम कमेरोंके आदमी हैं।

भैया—बोलसेविक कमूनिस्त एक ही हैं। चर्चिल उस वक्त ब्रिलायतका युद्ध-मंत्री था, वह तो बोलसेविकोंको कच्चा खा जाना चाहता था।

दुखराम—यही चर्चिल न भैया! जो लड़ाईके समय ब्रिलायतका महामत्री था।

भैया—हाँ, वही जो चाहता था, कि परलय तक हिन्दुस्तानकी छातीपर कोदो दरें। उसने भी अपनी पलटन और गोला-बारूद रूसमें उतारी। फ्रांसने भी अपनी पलटन भेजी। अमेरिकाने भी। जापानने भी। चौदह बादसाहोंने अपनी-अपनी पलटन कमेरोंकी सरकारको बरबाद कर डालनेके लिए रूस भेजी। क्यों भेजा? क्या रूसके कमेरे किसीकी एक अंगुल भी जमीन लेना चाहते थे?

दुखराम—दुनिया भरकी जोंकोंने समझा, कि जो धरतीके छ भागमेंसे एक भागकी जोंकोंको खतमकर कमेरो ने अपना राज कायम कर लिया, तो बाकी पाँच भागके कमेरोंका भी मन बिगड़ जायगा, फिर बकरीकी माँ कै दिन खैर मनायेगी?

भैया—बड़े संकटकी बेला थी। दुनिया भरकी जोकें गला फाड़-फाड़कर चिल्ला रही थीं, अखबारोंमें छाप रही थीं, कि बोलसेविक अधरमी हैं, बच्चोंको मार डालते हैं, बूढ़ोंको भी नहीं छोड़ते। उन्होने सभी औरतोंको बेसवा बना दिया, मसजिदों-मदिरोंको तोड़ दिया, हराम-हलालकी बात उठा दी इत्यादि हजारों झूठ फैलाये जाने लगे।

दुखराम—हिन्दुस्तानमें भी भैया वह यही बात करेंगे। जोकें समझती हैं कि कमेरे मूरख-अनपढ़ होते हैं, उन्हें झूठ-साँच कहकर मरकस बाबाके रास्तेके खिलाफ कर देंगे। भैया! हम लोगोंको बहुत सजग रहना होगा। तुम भगवानकी बातको दबा देते रहे, अब उसका फायदा मुझे मालूम हो रहा है। भगवान और धरमसे हमें पहिले नहीं झगड़ना है। पहिले हमे जोंकोंसे निपट लेना है। कमेरे भाई बहुत दिनोंसे जालमें फँसे हैं, हम लोग धरम और भगवानके खिलाफ बोलनेमें ही ताकत लगा देंगे, तो जोंकें उन्हें बहकाने लगेंगी।

भैया—हाँ दुक्खू भाई ! सबकी जड़ यही जोंकें हैं, जड़ काटना अच्छा है कि पत्ता नोचना अच्छा ?

दुखराम—जड़ काटना अच्छा है भैया !

भैया—लेकिन जोकें सभी कमेरोंकी आँखोंमें धूल नहीं झोंक सकतीं, बिलायतके मजूरोंको जब मालूम हुआ कि हमारे देसकी जोंकें रूसके कमेरा राजको सत्यानास करनेके लिए तोप-बन्दूक, गोला-बारूद भेज रही हैं, तो उन्होंने जहाज-पर माल लादनेसे इनकार कर दिया। खलासियों-मल्लाहोंने जहाज छोड़ दिया। फ्रांसकी पलटनें लड़नेके लिए रूस पहुँचीं और सभी कमेरोंने जान जोखिममे डालकर फ्रांसीसी सिपाहियोंके पास पहुँच सब बात कही, तो पलटनें ब्रिगड चलीं। अँगरेजी पलटनोमें भी यही बात दिखाई देने लगी। रूसी कमेरे अब जोंकोके लिए नहीं अपने लिए लड़ रहे थे, इसलिए जानपर खेलना उनके लिए खेल था। बाहरकी जोक-सरकारोंने समझ लिया, कि अपनी पलटनको जो वहां लड़नेके लिए भेजा, तो बोलसेविकोंकी बीमारी हमारे देसमें चली आयेगी। उन्होंने अपनी पलटनें लौटा लीं। लेकिन हाथपर हाथ धरकर बैठते कैसे ? रूसी जोंकोके कितने ही जरनैल और बच्चे कमेरोके राजसे जहाँ-तहाँ लड़ रहे थे। बड़े-बड़े महंत भी तो जोंक ही हैं न ? उन्होंने धरमके नामपर कितने ही किसानोको बहकाया। बिलायत और दूसरे मुल्कोकी जोंक-सरकारोंने सोचा कि रूसी जोक जरनैलों और उनके आदमियोंको ही सिखण्डी बनाकर ट्रट्रीकी आडमें सिकार करें। चर्चिल और दूसरे भी देसोंके जोंकराजोंके मंत्रियोंने जोक जरनैलोंको रुपये-पैसे, गोला-बारूद, हवाई जहाज आदि से खूब मदद की जोकें आखिर रूसमें रह न सकीं; लेकिन चलते-चलते भी उन्होंने रूसको भयानक नरक बना दिया, सहर और गाँव तबाह कर दिये। जोंक-जरनैलोंने औरतें और बूढ़ोंपर दिल खोल कर हाथ साफ किया।

दुखराम—वह तालुकदारों, राजा-नबाबों, सेठ-साहूकारोंके लड़के थे न ? वह सोच रहे होंगे कि अब हमें महल और अप्सराएँ फिर कहाँ मिलेंगी ?

भैया—हाँ, और यह बात सभी जगह दुहराई जायगी। जोंकें जल्दी हार नहीं मानेंगी। जोंक-जरनैलोंने खेती बरबाद कर दी, अनाज जला दिया। बाहरवे

किसी मुलुकसे कमेरोंकी सरकार कोई चीज न मँगा ले, इसके लिए बिलायत और दूसरे मुल्कोंके जहाज पहरा देते थे और जहाँ कोई जहाज कमेरोंके लिए आता या जाता दिखाई देता उसे डुबा देते। जितने लड़ाईमें नहीं मरे थे, उससे कई गुना ज्यादा आदमी-बच्चे-औरतें भूखके मारे मर गये—एक करोड़से ज्यादा आदमी मरे।

दुखराम—जब बिना लड़ाईके बंगालमें साठ लाख आदमी बलि चढ़ गये, तो वहाँके बारेमें क्या पूछना है।

भैया—पाँच बरस तक (१९१७-२२) रूसके कमेरोंने अपने यहाँकी जोंकों और बाहरवाली जोंकोंके साथ लोहा लिया। लाखोंने हँस-हँस कर जान दी, अन्त में जयमाला कमेरोंके गलेमें पड़ी। लाल झंडा अचल हो गया और लाल पलटनके नामसे जोंकें घबड़ाने लगीं।

दुखराम—लाल झंडा और लाल पलटन क्या है भैया?

भैया—लाल झण्डा तुमने देखा नहीं है दुक्खू भाई! कलकत्ताके मजूर भी जब कोई अपना जलसा या सभा करते हैं, तो लाल झण्डा ही लेकर चलते हैं।

दुखराम—देखा तो था भैया, लेकिन मैंने समझा था महाबीरी झण्डा है।

भैया—तुम्हारी चटकलके मुसलमान मजूर उस झण्डेके साथ-साथ थे कि नहीं?

दुखराम—थे भैया! जुम्मन काका मुकरू भैया बहुतसे थे। और अब मुझे समझमें आता है उस झण्डेपर महाबीरजीकी मूरत नहीं थी।

भैया—कमेरोंका झण्डा लाल चौकोर होता है। रूसके झण्डे पर हँसिया और हथौड़ाका चीन्ह बना रहता है। हँसिया है किसानोंका हथियार और हथौड़ा है मजूरोंका। झण्डेका लाल रंग कमेरोंका खून है।

दुखराम—अब मालूम हुआ लाल झण्डेका मतलब। हमें भी अपने झण्डे-को खूनसे लाल करना होगा। भैया, यह लाल रंग कमेरोंका अपना लाल रंग है न?

भैया—हाँ, अपना रंग है, इसी वास्ते कमेरोंकी पलटनका नाम है लाल पलटन।

दुखराम—उस दिन भैया! तुमने अखबारमें पढ़कर सुनाया, कि लाल पलटनके सामनेसे भागते-भागते जर्मन जोंकोंकी फौजें अपने घरमें घुस गईं।

भैया—हाँ, लाल फौज उनके घरमें घुसकर जोंकों और उनकी सेनाका संहार करती रही है। रूसमें १८२ कौमें बसती हैं।

दुखराम—तो वहाँ एक खोम नहीं है।

भैया—एक खोम नहीं है, लेकिन कमेरोंका राज्य है न, इसलिए सभी १८२ खोमें मेलसे रहती हैं। बाहरकी जोंकोंने बाकी खोमोंको बहकानेमें कोई कोसिस नहीं बाकी रखी। किसीको मुसलमान कहके बहकाया, किसीको किरिस्तान कहकर, किसीको यहूदी कहकर, किसीको बौद्ध कहकर अलग करना चाहा, लेकिन कमेरे-कमेरे सब एक हो गये। लेनिन महात्माकी पारटीने लड़ाईसे पहिले ही बात पक्की कर दी थी, कि रूसमें १८२ खौमें हैं, १८२ भाषा है, चार-चार धरम हैं, काले लोग भी हैं गोरे लोग भी हैं; लेकिन कोई छोटा-बड़ा नहीं है, सब बराबर हैं। जमीन-मकान, कल-कारखाना, रेल-खान सब १८२ खोमोंके हैं। जो किसी खोम को दबाया जाय, तो वह जब चाहे तब अपना देश अलग कर सकती है।

दुखराम—दिल साफ था भैया! छल-कपटकी कोई बात नहीं थी।

भैया—इसीलिए दुक्खू भाई १८२ कौममेंसे किसी ने अलग होने का नाम नहीं लिया। बल्कि पाँच खोम बाहरसे आकर फिर मिल गईं।

दुखराम—बड़ा भारी परिवार है भैया!

भैया—बीस करोड़का परिवार है और सब एक दूसरे के वास्ते परान देते हैं। लड़ाई-झगड़ा करना खून चूसनेवाली जोंकों का काम है। कमेरोंको तो खूब मेहनत करके अधिक अन्न उपजाना, अधिक कपड़ा पैदा करना, अच्छा घर बनाना, सबके पढ़ने-लिखने का, दवाई-दरपनका इन्तिजाम करना है।

दुखराम—जिसमें सब खुसी रहें, कहीं नरकका निसान न रह जाय। दुनिया भरकी जोकों के मुँह पर कालिख पुत गया न भैया ?

भैया—कालिख तो पुत गया, और उनका दिल भी थरथर काँपने लगा। वे समझने लगीं, कि जब तक रूसमें कमेरोंका राज रहेगा, तब तक हमारी जान हर वक्त खतरे में है। लेकिन महात्मा पर उन्होंने गोली चलवाई, घाव तो भारी था, लेकिन उस वक्त वह बच गए, तो भी वह दिनपर दिन कमजोर होते गए, और कमेरों के राज के कायम होने से सात बरस बाद (जनवरी १९२४) में मर गये।

दुखराम—हत्यारे पापी !

भैया—लेकिन दुक्खू भाई ! मरकस बाबाका रास्ता इतना कच्चा नहीं है, कि एक नेताके मार देनेसे वह खतम हो जाएगा। लेनिन महात्माने रूसके कमेरोंको सिच्छा दी थी कि एक-एक कमेरा नर या नारी को राज चलानेका ढंग सीखना होगा। कमेरे लेनिन महात्माकी एक-एक बात पर जान देनेके लिए तैयार थे। रूसकी जोकोंके तो अब कोई आसा नहीं रह गई थी, इसलिए बाहरी देशोंकी जोकोंने दूसरा रास्ता लेना चाहा। रूसके कमेरों की बातको सुन-कर हुँगरी देशमें भी कमेरों का राज कायम हुआ। लेकिन इग्लैण्ड, फ्रांस और अमेरिकाकी जोकोंने उसे दबा दिया। इटलीमें भी जब कमेरोंने जोर लगाया, तो राजा-तालुकदार, सेठ-महाजन काँपने लगे। उन्होंने एक गुण्डेकी पीठ ठोंकी, जिसका नाम मुसोलिनी था और राजकी लगाम उसके हाथमें दे दी। मुसोलिनी ने कमेरोंका पच्छ लेनेवाले एक-एक आदमीको चुन-चुनकर मारा। बिलायती जोकें खूब खुश हुईं, उनके बड़े-बड़े मंत्री तक मुसोलनीको बधाई देने इटली गये। मुसोलनीने लाखों कमेरों और कमुनिस्तोंके खूनकी होली खेली, लेकिन दुनियाकी जोंकोंने मुसोलिनीकी महापुरुष और क्या कह-कह कर तारीफ की। जर्मनीके भी कमेरे जोंकोंके पीछे पड़े। इसको देख कर भीतर और बाहरकी जोंकें खूब घबराईं। वह चारों ओर आँख फाड़-फाड़कर सहारा ढूँढ़ने लगीं। जब जर्मनीमें भी मुसोलिनी की तरहका एक दूसरा गुन्डा हिटलर पैदा हो गया, तो जोंकों का दिल ठडा हुआ। बिलायतकी जोंकों ने हिटलरकी हिम्मतको खूब

बढ़ाया। हिटलर कहता था दुनिया भरके सबसे बड़े दुसमन यही बोलसेविक हैं।

दुखराम—दुनिया भरके दुश्मन नहीं, जोंकों के दुसमन हैं।

भैया—लेकिन दुक्खू भाई! सच्ची बात वह कैसे कहता? जरमनी के करोड़पति पूँजीपतियों ने हिटलर के लिए थैली खोल दी, तालुकदार पहले कुछ सन्देह करते थे।

सन्तोखी—तालुकदार क्यों सन्देह करने लगे? पूँजीपति और तालुकदार तो एक ही तरहकी जोंकें हैं।

भैया—बिलायतमें जैसे बड़े-बड़े जमींदार बड़े-बड़े पूँजीपति कारखानेदार भी हैं, जर्मनी में अभी उतना नहीं हो पाया था। जर्मनीमें नवाब-तालुकदार अपनी अकड़में रहते थे और उनमेंसे बहुत कम कारखानेदार बनना चाहते थे। कारखानेदार पूँजीपति हिटलरकी पीठपर थे, इससे वह समझने लगे कि कहीं पूँजीपतियोका पलरा भारी न हो जाय। पूँजीपतियोंके पास जो करोड़ोके कारखाने थे, उनके पास रुपये का बल था; तो जर्मनीके तालुकदार-नवाबोके हाथमें सारी सेना थी। जर्मन फौजके बड़े-बड़े अफसरोंमें सभी और छोटोंमें से भी अधिक तालुकदार घरानेके लड़के थे। इधर पूँजीपतियों और तालुकदारों-में अभी गठबन्धन नहीं हो पाया था उधर कमकरोंकी ताकत बढ़ रही थी। बाहर की जोंकोंने भी समझाया, तालुकदारोंने भी झख मारा, और कमेरोंके भारी खतरेको देखकर जर्मनीके प्रेसीडेन्ट एक बड़े तालुकदार हिन्डन बर्गने हिटलरके हाथमें राज दे दिया। अब गुन्डा-राज पूरीतौर से अपना रूप दिखलाने लगा। कमेरोंकी सभाओं और जमात-बन्दीको खूनी हाथों से बन्द कर दिया गया। गोली और फाँसीसे मारे जानेवालोंकी गिनती नहीं हो सकती थी। हजारों हजार मरद मेहरारू नरकसे भी बुरे जेलों में डाल दिये गये, जहाँ उनमें से अधिक भूखे रहकर या पागल होकर मर गये।

दुखराम—तो हिटलर सबसे बड़ा खूनी निकला भैया! और एक दिन एक सफेद टोपीवाले बाबू हिटलरको देवता बना रहे थे।

भैया—वह क्या, दुनिया भरकी जोंकें हिटलरको देवता बना रही थीं। यह तो अँगरेज, फ्रांसीसी और अमेरिकावाली जोंकोंपर जब हिटलरने हल्ला बोल

दिया, तब उसे गाली देने लगे। लेकिन हिटलर को मजबूत करनेमें सबसे बड़ा हाथ विलायतकी जोंकोंका था। उन्होंने उसे दिल खोलकर धन और वरदान दिया।

सन्तोखी—तो भैया, सिउजीसे बरदान पाकर भसमासुर उन्हींके सिरपर हाथ रखने चला?

भैया—हाँ संतोखी भाई! हिटलर ने जर्मनीके लोगों का कान भरना शुरू किया कि भगवानने नीली आँखों और भूरे बालोंवाली जातिको ही दुनिया में राज करनेके लिए पैदा किया। ऐसी जाति जर्मनीसे बाहर कहीं नहीं। जर्मन ही वह आर्य जाति है, जिसे भगवानने दुनियाका राजा बनाया।

सन्तोखी—तो हिटलर अपने को अरिया कहता है भैया।

भैया—हाँ, वह अपनेको अरिया कहता है और (सतिया) (स्वस्तिक) का चीन्ह अपने झंडे पर लगाता है।

सन्तोखी—अब पता लगा, उस दिन महासय भड़ामसिंह उपदेसक बड़े जोर-जोरसे कह रहे थे, कि जर्मनीने भी अरिया धरमको मान लिया।

भैया—लेकिन महासय भड़ामसिंहको यह मालूम नहीं है कि हिटलर हिन्दुस्तानियोंको काला पसु जैसा मानता था, उसने अपनी किताबमें लिखा कि हिन्दुस्तानी लोग सिरिफ गुलाम रहनेके लिए पैदा भये हैं। वह तो फ्रांस और इंग्लैंड जैसे गोरे-गोरे लोगोंको भी बरनसंकर कहता था।

दुखराम—बड़े-बड़े बहे जायँ गदहा कहै कितना पानी भड़ामसिंह अरिया समाजी हैं और हिटलर अरिया है। छिः! छिः!! भडामसिंहने समझा होगा कि हिटलर और जर्मनीके अरिया बनानेकी बात कहनेसे सारा हिन्दुस्तान अरिया समाजी बन जायगा।

भैया—हिटलरने जर्मनीके लोगोंकी आँखोंमें धूल झोकनेके लिए यह झूठी-झूठी बात गढ़ी थी। पहली लड़ाईमें जर्मन हार गये थे, हिटलरने हजारों स्वयंसेवकोंको भूरी उरदी पहनाकर सड़कोंपर परेड कराना सुरू किया। जोकों और उनके पिट्ठुओंने सोचा, कि राजा विलियम तो दुम दबाकर भाग गया, क्या जाने अब

हिटलरके हाथसे जर्मनीका भाग फिर पलटे। इसमें कमेरोंके नेताओंने विसवास-घात करके उसको मदद दी।

दुखराम—कमेरोंके नेताओंने कैसे धोखा दिया भैया ?

भैया—इसमें हमेसा खतरा रहता है दुक्खू भाई ! मरकसबाबा और लेनिन महात्मा दोनों कह गये हैं, कि कमेरोंको अपने नेताओंकी सदा परख करते रहना चाहिए। जोंकोंके पास करोड़ोंका धन है, वह लाखोंकी घूसरिसवत दे सकती हैं। इसलिए जो कमेरे सजग नहीं रहेंगे, तो बेईमान नेता उनको धोखा दे देंगे। बिलायतमें ऐसा ही हो रहा। मजूर-नेताओंको हिन्दुस्तानके कमेरोंका ख्याल होना चाहिए था, क्यों कि हिन्दुस्तान और बिलायत दोनों जगहके कमेरे एक ही नाव पर बैठे हुए थे। जो बिलायतके कमेरोंने अपने यहाँ जोंकोंका राज खतम किया, तो उनके पिट्ठू हिन्दुस्तानमें राज नहीं कर सकते। जो हिन्दुस्तानपर जोंकोंका राज मजबूत रहा तो बिलायतके कमेरे आजाद नहीं हो सकते। चौदह ही बरस पहले हमने असपेन देसमें देखा कि जब वहाँके कमेरे जोंकोंका राज खतम करने लगे, तो असपेनकी गोरी जोंकोंने मराको (अफरीका) की काली फौज लेकर असपेनी कमेरोंपर धावा बोल दिया और जोंकोंका राज फिर कायम किया।

सन्तोखी—तो भैया ! तुम समझते हो, कि जो कभी बिलायतके कमेरे अपने यहाँसे जोंकोंका राज नही हासिल करते तो बिलायती जोंकें यहाँसे हिन्दुस्तानी फौजको अपने भाइयोंके साथ लड़नेके लिए ले जाती ?

भैया—कमेरे जोंकोके भाई बन्द नहीं हैं। जहाँ वे अपना महल, कल-कारखाना करोड़ों रुपया हाथसे निकलते देखेंगी, तो जानते हो वे चुप बैठी नहीं रहेंगी। वह कोई बात उठा न रक्खेंगी।

दुखराम—हाँ भैया ! जोंकोंको न कोई लाज-सरम न दया-माया; उनके लिए तो टका ही भगवान है।

भैया—जर्मनीके कमेरोंके नेताओंमें कुछने तो अपनेको जोंकोंके हाथमें बेच डाला, और कुछ हिजड़े थे। वह मरकस बाबाके नामकी माला जपते थे, इसलिए बहुतसे कमेरे धोखेमें पड़ गये। एक बार कमेरोंके हाथमें राज आ गया, तो उनको चाहिए था कि जोंकोंका सब कुछ छीन लेते, उन्हें पीस-पास कर

रख देते, लेकिन नकली सियारोने कहना सुरू किया कि जल्दी मत करो, बहुत खून-खराब्री होगी। धीरे-धीरे सब हो जायगा। जर्मनीमें कमूनिस्त भी थे, लेकिन कमेरोंके दूसरे नेताओंने कमेरोंके भीतर फूट डाल दी थी। सब एक नहीं हुये। लोग कितने बरस तक इन्तजार करते!

दुखराम—और बीचमें जोंकें चुप नहीं रही होंगी भैया!

भैया—चुप कैसे रहतीं? उनके मरने-जीनेका सवाल था। उधर हिटलरने जोंकोंके पैसेसे अपना बल बढ़ाया, इङ्गलैण्ड की जोंकोंसे खूब मदद मिली। अन्त में तालुकदारोंने भी राज उसके हाथोंमें दे दिया। राज हाथमें आते ही उसने अपनी सेना और हथियार बढ़ाना सुरू किया। उसने कहा—मक्खन खानेसे बन्दूक रखना अच्छा है। फ्रांसकी जोंकें कुछ घबराईं क्योंकि पिछली लड़ाईमें जर्मनीने उनका बहुत नुकसान किया था, लेकिन बिलायतकी जोंकोंका हाथ बराबर हिटलरकी पीठपर रहा। उनको यह ख्याल नहीं था कि कहीं हिटलर हमारे ऊपर न दौड़ आये। हिटलरने राज सँभालते ही कमेरोको बेदरदी से दबा दिया लेकिन बिलायतकी जोंकोंकी नजर रूस के कमेरोंपर थी। उन्होंने समझा था कि जर्मनीमें सात-आठ करोड़ आदमी रहते हैं, जो हिटलरने सबको तैयार करके रूस पर हमला कर दिया, तो बोलसेविकोंका राज नस्ट हो जानेसे दुनिया भरकी जोंकें चैनकी बन्सी बजायेंगी। लेकिन रूसके कमेरों का नेता इस्तालिन वीर गाफिल नहीं था।

दुखराम—इस्तालिन वीर कौन है भैया!

भैया—लेनिन महात्माका सबसे लायक चेला। लेनिन महात्माके मरनेपर उसीको रूसके कमेरोंने अपना अगुआ माना। इस्तालिनका मतलब है, लोहा फौलाद।

दुखराम—तो इस्तालिन वीर फौलाद ही जैसा होगा भैया!

भैया—उसका मनसूबा फौलाद ही जैसा है दुक्खू भाई! और उसके ऐसा दूर देखनेवाला तो आज दुनियामें कोई नहीं है! उसने रूसके कमेरोंसे कहा, दुनियाकी जोंकें चार बरस तक आपसमें लड़कर बहुत कमजोर हो गई, उन्होंने कमेरोंके राजको खतम करना चाहा, लेकिन वह उसे कर न सकीं। तो भी जैसे

ही मौका मिलेगा वैसे ही वह कमेरोंके राजका गला घोटनेके लिए एक होकर दौड़ पड़ेंगी।

सन्तोखी—फिर इस्तालिन वीरने क्या इतिजाम किया भैया ?

भैया—रोटी-कपड़ा और पढ़ने-लिखनेके साथ-साथ अपने देसको कल-कारखानासे इतना मजबूत कर दिया, जिसमें जोंकोके हमला करनेपर बाहरका मुँह ताकना न पड़े। पहिले तो राज हाथमें लेते ही लेनिन महात्माने और कामोके साथ यह काम जरूरी समझा कि रूसमें जितने नर-नारी हैं उनमें कोई अनपढ़ न रह जाय। लेकिन पढ़ाई कौन भाखामें हो ? दूसरेकी भाखामें पढ़ाई हो तो भाखा ही सीखनेमें बहुत दिन लग जायँगे। लेनिन महात्माने कहा कि हमारे यहाँ १८२ खौम हैं। सौमें नब्बे, पचानवे अनपढ़ हैं; लेकिन कोई खौम गूँगी नहीं है।

दुखराम—एकाध आदमी गूँगा हो सकता है, सारीकी सारी खोम गूँगी कैसे होगी ?

भैया—हाँ, उन्होने कहा कि एकसौ बयासी खोमोकी सबकी अपनी बोली है। बस जो बोली जो बोलता है, उसे उसी बोलीकी किताब पढ़ाना चाहिए। कमेरा राजसे पहले पाँच-छ खोमोंको छोड़कर किसीकी बोलीमें कोई किताब नहीं लिखी गई, न उनका कोई अच्छर था। पंडितोंने हरेक अवाजके लिए अच्छर चुना और फिर इसके बाद किताब लिख-लिखकर छापने लगे।

दुखराम—अपनी भाखा हो, तब क्या सीखने में देर लगेगी भैया ! दूसरेकी भाखामें पढ़ाई करनेका नर्तीजा देख रहे हो न, हम चार दरजा हिन्दी पढ़े हैं ? लेकिन घरमेंतो हिन्दी बोलते नहीं; हमारी अपनी बोली है, उसीको बोलते हैं। और बड़ी मीठी बोली है भैया ! हम लोग जो बोली बोलते हैं, इसका नाम क्या है भैया ?

भैया—आजमगढ़, गाजीपुर, बनारस, मिरजापुर, जौनपुर, ये सब पुराने जमानेमें कासी-देस कहा जाता था। इसलिए हमारे यहाँकी भासाको कासिका कहना चाहिए।

दुखराम—हमारे यहाँ भी भैया, कासिका बोलीमें पढ़ाई होने लगे, तो क्या

कोई अनपढ़ रह जायगा ? खाली अच्छर सीखना है। और अच्छर तो आदमी तीन दिनमें सीख सकता है। लेनिन महतिमाने ठीक कहा भैया ! कि कोइ खोम गूँगी नहीं है। लेकिन हम लोगोंको गूँगा बना दिया गया। हँसते, रोते, बोलते, गाते हैं हम अपनी कासिकामें और हमको पढ़ाई जाती है अरबी-फारसी भाखा।

भैया—हिन्दी पढ़ना खराब नहीं है दुक्खू भाई ! लेकिन सुरूहीसे अपनी भाखाको छुड़ाके हिन्दी पढ़ानेका यही नतीजा होता है; कि लड़के मिडिल पास कर जाते हैं, लेकिन तो भी न सुद्ध हिन्दी लिख सकते हैं न हिन्दीकी बड़ी-बड़ी किताबें समझ सकते हैं। आठ बरस पढ़ना अकारथ ही गया न ?

सन्तोखी—अपनी भाखामें पढ़ाई होगी तभी भैया, कोई मरद-औरत अनपढ़ नहीं रहेगा और सब किताब, अखबार पढ़ समझ लेंगे।

भैया—लेनिन महात्माने सोचा कि अब हमारा राज जोंकोंका राज नहीं है कमेरा लोगोंको अपना राज चलाना है और जो कमेरा मरद-औरत अनपढ़ रहेंगे, तो राज-काज कैसे चलायेंगे ? इसलिए उन्होंने पंडितोंको इस कामके लिए बैठा दिया। उन्होंने रोमन अच्छरका क-ख बनाया और किताबें छाप-छापकर स्कूलोंमें भेजना सुरू किया। लेनिन महात्मा और इस्तालिन वीरका कहना सुनते ही समूचे देसके लोग विद्दारथी बन गये। सत्तर सालके बूढ़े-बूढ़ियो तकने अपने पोतोंके साथ बैठकर अच्छर सीखा।

दुखराम—अपनी बोलीमें जो पढ़नेका इंतिजाम नहीं हुआ होता, तो बूढ़े-बूढ़ियों को छोड़ जवानोंको भी पढ़नेकी हिम्मत न होती। हमारे यहाँ देखो न अपनी भाखाको तो कोई पूछता ही नहीं, हिन्दी पढ़ाई जाती है, लेकिन वह भी नाम करनेके लिए, नहीं तो बड़ी-बडी पढ़ाई तो अँगरेजीमें होती है।

भैया—और अँगरेजी चौदह बरस पढ़नेके बाद भी बहुत थोड़े ही आदमी लिख बोल सकते हैं ?

दुखराम—हमको तो मालूम होता है, जोंकें हमें पढ़ने देना नहीं चाहतीं। अपनी भाखामें पढ़ाई हुई तो सब मरद-औरत पढ़ जाएँगे, तब वह दुनिया जहानकी बात जानने लगेंगे फिर उनकी आँखोंमें धूल कौन झोंकेगा ? हम लोग तो भैया, अपने ही देसमें पराए हो गए हैं। न थानामें हमारी बोली, न

कचहरीमें, न इसकूलमें, न इस्टेसनमें। बेसी तो अँगरेजी ही है फिर जो हिन्दी-उर्दू है, उसमें जो चार आना भी हम लोग समझ जायँ, तो धन भाग है। रूसमें तो ऐसा नहीं होगा भैया!

भैया—वहाँ चार आना नहीं सोलहो आने समझ जाते हैं दुक्खू भाई! जौन इलाकामें जो बोली लोग बोलते हैं, वहाँ उसी बोलीमें इसकूल लगता है। थाना, डाकखाना, कचहरी, इस्टेसन सब जगह वही बोली चलती है। अखबार भी उसी बोलीमें छपते हैं, सिनेमा भी उसी बोलीमें चलता है। जो कोई दूसरी बोली भी सीखना चाहता है, उसके सीखनेका इंतिजाम है। १८२ भाखा बोलनेवाले सभी कमेरे तो अब सगे भाई हैं। इसलिए वह एक दूसरेसे बात भी करना चाहते हैं, इसके लिए रूसी भाखा को पढ़ना चाहिए, उसका भी इंतिजाम है।

दुखराम—उसी तरह जो हमारे यहाँ हिन्दी पढ़ना हो, तो कोई हरज नहीं। हम लोग सब कुछ अपनी कासिका भाखामें पढ़ें, ऊपरसे हिन्दी भी कुछ सीख लें, तो अच्छा ही है; दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता जानेपर बात-चीतमें सुभीता होगा।

भैया—अपनी बोलीमें पढ़ानेका यह फायदा हुआ, कि आठ ही नौ बरस के भीतर वहाँ एक भी आदमी अनपढ़ नहीं रह गया।

दुखराम—हिन्दुस्तानसे सात गुना बड़ा देस है न भैया? और बीस करोड़ आदमी बसते हैं। तो सारे रूसमें सब कोई मूरख बेपढ़ नहीं है न?

भैया—इस बातको तो कई बरस हो गये।

दुखराम—यह बहुत बड़ा काम है भैया, अन्धेको आँख देना है।

भैया—जोंकें लोगोंको अन्धा रखना चाहती हैं। जितने कल-कारखाने लड़ाईके वक्त टूट गये थे, जितनी रेलकी सड़कें और खानें बिगड़ गई थीं इस्तालिन वीरने सबको फिरसे तैयार करनेको कहा। रूसके सारे मर्द-औरत सभी मिसतिरी-इन्जिनियर जुट गये और कमेरा-राज कायम हुए दस साल भी नहीं बीता, कि कल-कारखाना, रेल-खान सब पहिले इतना माल पैदा करने लगे। खेत भी फिरसे आबाद हो गये, और उतना ही अनाज पैदा होने लगा। अब इस्तालिन वीरने कहा, कि पैर बढ़ाके चलनेसे काम नहीं चलेगा,

अब सारे देसको दौड़ना होगा, जिसमें हमारे देसमें सब जगह हजारों नये बड़े-बड़े कारखाने खुलें; तेल, कोयला, लोहा इतना पैदा हो, कि कोई जोंकोंका देस हमारा मुकाबला न कर सके। गाँव-गाँवमें बिजली और पानीका नल लग जाय। और खेतमें दिनमें दस बिस्वा (कट्ठा) जोतनेवाले हल नहीं तीस बीघा जोतनेवाले मोटरके हल चलें। सिंचाईके लिए जहाँ नदीसे नहर निकल सके वहाँ नहर निकालें, जहाँ धरतीमें पाइप गाड़नेसे पानी निकले, वहाँ पाइप गाड़कर सींचनेका इन्जाम किया जाय।

दुखराम—लकड़ीके हलकी जगह मोटरका हल! और वह इतना बेसी खेत जोतता है भैया?

भैया—मोटरके हलमें सात-सात फार होते हैं और फार एक-एक हाथ गहरी जुताई करता है। तुम्हारे खेतमें जितनी जंगली घास कुसकास जमती है, उसकी जड़ खोदकर देखें कि वह धरतीमें कितने नीचे तक गई है, फिर फालको उतना ही बड़ा लगा दें। एक बार खेत जोत देनेपर सब घास जड़ मूलसे निकल जाएगी, और तीन बरस तक खेतमें कोई जंगली घास नहीं निकलेगी। गहरी जुताईका यह भी फायदा है कि सीड़ बनी रहती है, गेहूँ-चने-की जड़ धरतीमें नीचे तक पैठती है, और बरसा-बुन्दी कम भी हो, तो भी नीचेकी सीड़से काम चल जाता है। नई-नई तरहकी खाद तैयार करनेके लिये भी इस्तालिन वीरने हजारों कारखाने खुलवाये। उन्होंने किसानोंको समझाया, कि हजारों टुकड़ोंमें बँटे गाँवके खेतोंमें मोटरका हल नहीं चल सकता।

दुखराम—३० बीघा रोज जोतनेका मोटरवाला हल छोटे-छोटे कोलेमें कैसे चलेगा भैया?

भैया—इसीलिए इस्तालिन वीरने किसानोंसे कहा—गाँव भरका खेत इकट्ठा कर दो, मेंड़ें तोड़ दो, गाँव भरके लोग एक परिवारकी तरह मिलकर साझेमें खेती करें।

सन्तोखी—किसीके पास कम और किसीके पास बेसी खेत होता है भैया!

भैया—इस्तालिन वीरने कहा, कि जो साझेकी खेतीमें नहीं सामिल होते, उनको खेत अलग दे दो और गाँवके जितने लोग इकट्ठा खेती करना चाहते

हों, उनके खेतोंको एक जगह कर दो, और परतीसे खेत बनानेका हक उन्हींको हो। जियादा खेतवाले किसान कुछ समय अलग जोतते-बोते रहें, लेकिन उनके पास चार अंगुल खुरचनेवाला सतजुगसे चला आया हल था। उनके पास खाद और सिंचाईका उतना इंतिजाम नहीं था, जबकि उनकी बगलके बड़े-बड़े खेतोंमें मोटरके हल-चल रहे थे, पाइपसे सिंचाई होती थी, कल खेत काटती और दाँवती थी। उन्होने देखा कि बेसी खेत रहनेपर भी हम उतना नहीं पैदा कर पाते, जितनी साझीवाले किसानको मिलता है; फिर वे किसान भी आकर पंचायतके पैरो पड़े।

दुखराम—रूसमें सब काम पचायतसे होता है भैया?

भैया—रूसमें लोग अपने देसको अब रूस नहीं कहते, अब उसे सोवियत-संघ कहके पुकारा जाता है। सोवियतका मतलब वही जो हमारी भाखामें पचायतका। वहाँ एकसौ बयासी खोमें बसती हैं, उनमेंसे एक है रूसी खोम; इसीलिए इस्तालिन बीरने कहा कि हमें कई तरह खोमोवाले देसको किसी एक खोमके नामसे नहीं पुकारना चाहिये। दुक्खू भाई! हम आसानीसे समझानेके लिए रूस-रूस कहते रहे, नहीं तो अब उसका नाम है साम्यवादी समाज वाले पंचायती-प्रजातन्त्र-संघ।

दुखराम—सामवादी क्या है भैया?

भैया—मरकस बाबाने जो सिच्छा दी है न, कि देस भरके कमेरोंका एक साझा परिवार हो, और देस भरकी धन-धरतीका मालिक कोई एक आदमी नहीं बल्कि वही बड़ा परिवार। इसी सिच्छापर जो चले उसे सामवादी कहते हैं।

दुखराम—पंचायती तो हम समझ गये लेकिन परजाततर क्या?

भैया—जहाँ राजाका काम न हो, पर प्रजा ही अपना राज चलाती हो, उसको प्रजातन्त्र कहते हैं।

सन्तोखी—और संघ तो जमातको कहते हैं न भैया?

भैया—हाँ, वहाँ साम्यवादी पंचायती प्रजातन्त्र एक-एक खोमका अलग-अलग है, और सब प्रजातन्त्र एक जमात बन गया। इसीलिए संघ कहा गया।

दुखराम—तो वहाँ पक्का पंचायती राज है।

भैया—गाँव, जिला, देस और सारे १८२ खोमोके, मुलुकका, इंतिजाम पंचायतें करती हैं। मरद हो चाहे औरत, सहर हो चाहे गाँव, अठारह बरस-से बेसी जिसकी उमर है, वह बोट देकर पंचायत (सोवियत) चुनता है। गाँव-के पंचायतमें पच्चीस-तीस या चालिस मेम्बर चुने जाते हैं। फिर इन मेम्बरों की पाँच-छ; छोटी पंचायतें बना ली जाती हैं। इन छोटी पंचायतोंमें किसी-का काम होता है आपसी झगडोंका फैसला करना और पुलिसका इंतिजाम देखना, किसीका काम होता है असपताल और बीमारोंका ध्यान रखना, किसीका काम होता है इसकूल, सिनेमा पुस्तकालय आदिका परबन्ध करना। किसीका काम होता है खेतीबारीका इन्तिजाम करना।

दुखराम—तो भैया ! सोवियतवालोंने इस कहानीको झूठ कर दिया "साझेके सुई संगडासे उठे"। भैया ! मुझे तो मालूम होता है, कि जोकोंने जान बूझकर ऐसी-ऐसी कहावतें गढ़कर कमेरोके भीतर फैला दी। कमेरोंमें एकके पास उतना धन और नौकर-चाकर हैं नहीं, कि उसके बलपर कोई बडा काम उठावें, साझेका काम करनेसे उनका बल बढ़ता, उसीको तोड़नेके लिए जोंकोंने कहावत गढ़ी छोटी-सी सुई भी साझेकी होनेपर बड़े-बड़े बाँससे उठानेकी तदबीर सोची जाती है।

भैया—हाँ दुक्खू भाई ! कमेरोंको पैर फूँक-फूँक कर रखना है। हजारों बरसोंसे जोकें राज कर रही हैं। उन्होंने हर जगह अपना जाल बिछा रखा है।

दुखराम—भैया ठीक कह रहे हो। मैंने ही न जाने कितनी बार दुहराया होगा और मैं समझता था कि यह कोई विधि-ब्रह्माका बचन है; लेकिन अब न मालूम हो रहा है, कि जोंकोने इसे गढ़कर हमारे भीतर फैला दिया जिससे मिल-कर हम कोई काम कर न सकें।

भैया—जुलाहा अकेले ही न कपड़ा बुनता था, और चटकल-पटकलमें कितने सौ जुलाहे एक साथ काम करते हैं देखो साझेवाला काम कितना जोरसे चल रहा है और अकेले काम करनेवाले जुलाहे उजड़ गये।

दुखराम—तो भैया ! सोवियत देसके किसानों और उनके गाँवोंकी सकल ही बिलकुल बदल गई होगी ?

भैया—पहिली बात तो यह है, कि वहाँ अब छोटे-छोटे खेत नहीं रह गये

हैं। तीन-तीन सौ चार-चार सौ बीघाके खेत हैं, जिनको जोतनेके लिए पाँच लाखसे ज्यादा मोटरहल और डेढ़ लाखसे ज्यादा काटने दाँवनेवाली कल हैं।

दुखराम—और यह मोटर और कल कहाँसे आती हैं भैया?

भैया—१६२८ ई०से पहिले रूसमें एक भी मोटरहल नहीं बनता था, जोको-के राजके समय कोई मोटर कारखाना नहीं था। लेकिन इस्तालिन वीरने कहा, कि हमें सब चीजें अपने यहाँ बनानी होंगी, नहीं तो किसी वक्त बाहरकी जोंकें गला दबाकर हमें मार डालेंगी। आज खाली एक गोरकी सहरके कारखानेमें हर साल एक लाख मोटरें बनती हैं। मोटरलारी, मोटरहल, हवाई जहाज, सब सोवियतके कारखानोंमें बनते हैं। हर बारह-बारह चौदह-चोदह गाँवपर एक-एक मसीन-मोटरहलका इस्टेसन, उसे बड़ा गाँव समझो दुक्खू भाई! उस गाँवमें जितने लोग हैं सब मोटर मसीन चलाना, उनकी मरम्मत करना, बस यही काम करते हैं। गाँवकी पंचायत अपने गाँवका लेखा करती है; कितना बीघा खेत एक हाथ गहरा खोदना है, कितना बीघा पौन हाथ और कितनी बार जोतना है। इसका हिसाब करके मोटर इस्टेसनमें जाते हैं। जोताई आदिकी दर बँधी हुई है, दोनो ओरसे कागज-पत्तरपर दसखत हो जाती हैं, फिर मोटरहलवाले आकर खेत जोत-बो देते हैं। छोटे-मोटे कामके लिए एकाध मोटरहल गाँवमें भी होता है।

दुखराम—तो गाँव भरकी साझे में खेती होती है। और काम कैसे बाँटा जाता है?

भैया—हर कामका नाप बँधा हुआ है। जैसे समझ लो एक आदमीको एक दिनमें दस बिस्वा जोतना चाहिए, जो किसीने पन्द्रह जोत दिया, तो एक ही दिनके कामके लिए उसे डेढ़ दिन समझा जायगा; जो कोई पाँच बिस्वा ही जोत सका, उसका आधा ही दिन होगा। हर आदमीके कामका बहीखाता होता है, जिसमें रोज रोजका काम लिखा जाता है।

दुखराम—तो बड़ा हिसाब किताब रखना पड़ता होगा?

भैया—सैकड़ों आदमियोंका काम, हिसाब किताब नहीं रखा जायगा, तो गड़बड़ी नहीं मचेगी? मान लो किसी घरमें सौ औरत और एकसौ पचास मरद

काम करनेवाले हैं। दस-दस आदमीकी एक एक टोली बन जाय, टोली अपना मुखिया बनायेगी। फिर दस-दस या पन्द्रह-पन्द्रह टोलीकी एक बड़ी जमात होगी, जिसको वहाँ ब्रिगेड कहते हैं। ब्रिगेड अपनेमेंसे सबसे लायक औरत या मरदको अपना मुखिया चुनता है, जिसको ब्रिगेडियर कहते हैं। टोलीका मुखिया अपनी टोलीके साथ काम करता है, लेकिन ब्रिगेडियरको बहुत काम देखना-भालना होता है, आजके काममें कितना हुआ, कितना नहीं हुआ, इसका हिसाब देखना और तन्देही करनी पड़ती है; इसलिए उसे और आदमियोंके साथ अपने हाथ जोतने-बोनेका काम नहीं करना पड़ता। लेकिन ब्रिगेडियर लोग उन्हीं कुदाल-फावड़ा चलानेवाले लोगोंमेंसे बनते हैं।

संतोखी—खाद, पानी, अच्छी जुताई, अच्छा बीजका इन्तिजाम होनेसे वहाँ पैदावार भी ज्यादा होगी ?

भैया—देखते नहीं गाँवको, गोएड़ेके खेतमें फसल कितनी पैदा होती है ?

दुखराम—सुतर जाय तो मकईमें तीत-तीन मोटी बाल लगती हैं भैया।

भैया—वहाँ भगवानके भरोसेपर खेती नहीं करते। कहते हैं जब आसमान-से पानी नहीं बरसा तो धरतीमें तो पानी है ही। पाइप लगाकर धरती के भीतर के पानीसे खेत सींच डालते है। और फसल कितनी होती है, यह इसीसे समझ सकते हो कि एक-एक बीघा (⅔ एकड़) में बीस-बीस मन तक चीनी उन्होंने पैदा किया है।

दुखराम—एक-एक बीघामें बीस-बीस मन चीनी ! हमने तो बीस मन गेहूँ भी पैदा होते नहीं देखा ! वहाँकी ऊख बहुत मोटी होगी ?

भैया—वह बहुत ठंडा मुल्क है दुक्खू भाई ! वहाँ ऊख नहीं पैदा होती। हमारे यहाँ जैसे सकरकंद होता है, वैसे ही वहां एक चीज पैदा होती है, जिसको चुकंदर कहते हैं। वह बहुत मीठा होता है, उसीसे चीनी बनाई जाती है। ऊखकी चीनी जैसी वह भी मीठी, दानेदार और सफेद होती है। और कपास बीघामें बारह-तेरह मन खूब बारीक रेसावाला बिनौला निकालकर पैदा होता है। तीस-तीस मन बीघा धान पैदा कर लेते हैं और जानते हो न दुक्खू भाई! खाली हाथसे कुदाल चलानेसे ही काम नहीं चलता। जब

कुदालके साथ दिमाग भी लगता है, तो धरती सोना उगलने लगती है। वहाँ ऐसा-ऐसा गेहूँ निकला है, कि एक बार बोनेपर तीन-तीन साल तक फसल काटते हैं। धानका बीज ऐसे तैयार किये हैं, कि अगहनी धान कातिकहीमें कट जाता है।

दुखराम—भैया ! जो ऐसा बीज हमको मिलता, तो हमारी दस बीघाकी धानकी कियारी भी दोफसला हो जाती। चढ़ते कातिकमें धान कट जाते, तो खेत जोत-जातकर कातिकके अन्तमें गेहूँ बो सकते हैं।

भैया—जोंकोंका राज बिना हटाये यह नहीं हो सकता दुक्खू भाई ! वहाँ जिस फसलको तीन-चार हफ्ता पहले काटना चाहते हैं, उसके बीजको भिगोकर बड़े-बड़े गोदामोंमें फैलाकर रखते हैं और जानकार पंडित गरमी-सरदी नापते रहते हैं। दो दिन वैसा करके फिर बीजको सुखा लेते हैं। हिन्दुस्तानमें कहाँ उतने-उतने बड़े गोदाम, सरदी-गरमी नापनेकी कल और लाखों रुपयेकी दूसरी चीजें हैं, यहाँ भी सरकारने जो बड़े-बड़े खेतीके कालेज खोले हैं, उनमें आध-आध सेर बीज तैयार करके देखा गया है, कि रूसी विदियमानोंका कहना गलत नहीं है। लेकिन जोंकें अगर करोड़ों रुपया लगाकर देहातमें वैसा इंतजाम करने लगें, तो उनकी तोंद ही पचक जायगी।

दुखराम—ठीक कहा भैया ! बिना जोंकोंके हटाये हमारा दुख दूर नहीं हो सकता। जहाँ इतना अन्न, धन पैदा होता है, वहाँके लोग तो बड़े खुसहाल होंगे ?

भैया—खुसहाल ? वहाँ किसीकी हड्डी निकली दिखलाई नहीं पड़ती। आज जो अपने गाँवमें तुम आधे लड़कोंको हाड़-हाड़ निकले, फटी लँगोटी पहिने देखते हो, इसका वहाँ कोई पता नहीं। पहर भर रातसे आधीरात तक जो मरद-औरत-को यहाँ खटना पड़ता है, वह भी वहाँ नहीं है। ब्रिगेडियरको इस फसलमें कितना काम करना है, यह पंचायत बता देती है और देखती रहती है। ब्रिगे-डियर हर टोलीको हफ्ते हफ्तेका काम बाँट देता है और देखता रहता है, कि काम ठीक-ठीक चल रहा है कि नहीं ? टोली भी अपने कामका हिसाब मिलाती रहती है। टोली-टोलीमें होड़ लगी रहती है। एक टोली जब पाँच दिनमें सोहनी खतम करना चाहती है, तो दूसरी चार ही दिनमें खतम कर चाहती (चाहती)

लेना चाहती है। फिर एक गाँवके दूसरे गाँवसे, एक परगनेसे दूसरे परगनेकी होड़ रहती है कि कौन अपने कामको अच्छी तरह और जल्दीसे खतम करता है।

दुखराम—गाँव गाँव और परगने परगनेमें होड़ (लागडाट) लगती है, हमारे यहाँ तो कुस्तीमें, कभी-कभी दौड़ने और कूदनेमें होड़ लगती है।

भैया—वहाँ जिलाकी ओरसे लाल झंडा रखा जाता है, कि जो परगना सबसे पहिले काम करे, सबसे अधिक फसल पैदा करे, उसको लाल झंडा दिया जाय। इसी तरह गाँवके लिए भी लाल झंडा रहता है! मर्द-औरत सब जी तोड़कर काम करते हैं, कि झंडा उनके गाँवमें आये। झंडा जब किसी गाँवको मिलता है, तो मेला लग जाता है, आस-पासके गाँवोंसे हजारों मर्द-औरत अपने-अपने गाँवोंकी लारियोंपर चढ़कर आते हैं!

दुखराम—तो वहाँ गाँव-गाँवमें लारियाँ हैं भैया?

भैया—न अब वहाँ बैलवाले हल रह गये और न गाड़ियाँ। हर गाँवमें आठ-आठ सात-सात बड़ी-बड़ी लारियाँ रहती हैं। काम भी आदमीको ७ घन्टेसे बेसी नहीं करना पड़ता। और काम करनेमें आनन्द आता है दुक्खू भाई! लोग तरह तरहका गाना गाते हुए काम करते हैं। खानेका वक्त हुआ तो किसी पेड़के नीचे खाना लेकर लारी आ गई। सब लोग बैठ गये रोटी-तरकारी, भात, मास-मछली, दूध-दही सब तैयार है। परोसनेवाले परोस रहे हैं, औरत-मर्द सब बैठ-कर भोजन कर रहे हैं। एक ओर रेडियो बाजा लगा दिया दुनिया भरकी खबर और मीठे-मीठे गीत हो रहे हैं!

दुखराम—रेडिहा बाजा क्या है? क्या यह कोई फोनोगिलाफ है?

भैया—जानते हो न दुक्खू भाई। पत्थर हड्डीके हथियारों और तीर-धनुषके जुगसे मानुख-जाति अब बहुत आगे चली आई है। यह मानुखके दिमा-गकी करामात है, लेकिन, अफसोस है कि इस करामातका फायदा जोंकोहीको मिल रहा है। रेडियो बाजा होता तो है एक चौकोर बाकस, लेकिन उसमें बिला-यत, अमेरिका, रूस, कलकत्ता, बम्बई, दिल्ली सब जगह-का गाना और खबर चली आती है।

दुखराम—क्या वह तारकी तरहसे है भैया?

भैया—तार नहीं लगा रहता दुक्खू भाई। जो यहाँ कनैलामें रेडियोबाजा आज आ जाय, तो यहीं बैठे-बैठे सब तुम्हें सुनाई देने लगेगा।

दुखराम—बड़े अचरजकी बात है भैया! सोमारु राउत सुनेंगे तो कहेंगे कि इसमें जरूर कोई जादू है।

भैया—जादू नहीं है दुक्खू भाई! देखो हम तीन हाथ परसे बोल रहे हैं। हमारे मुँहसे जो आवाज निकल रही है, वह तुम्हारे कान तक पहुँच रही है न?

दुखराम—हाँ पहुँच रही है, मैं सुन रहा हूँ।

भैया—जो मैं सौ हाथसे बात करूँ, तो तुम्हें आवाज सुनाई देगी कि नहीं?

दुखराम—बहुत कम, और शायद नहीं भी सुनाई दे।

भैया—अवाज तो तुम्हारे कानमें आती है दुक्खू भाई, लेकिन कान कुछ ऊँचा सुनता है, माने कान अच्छी तरह पकड़ नहीं पाता, कानकी ताकत कमजोर हो जाती है। कानकी ताकत और बढ़ा दी जाय, या आवाजको और तेज कर दिया जाय, तब तुम सुनने लगोगे दुक्खू भाई! कलकत्ता, दिल्ली या मास्को, लदनसे जो आवाज निकलती है, वह हवा पर तैरती हमारे गाँवमें भी पहुचती है, लेकिन वह इतनी मन्द हो जाती है, कि हमारा कान उसे पकड़ नहीं पाता। रेडियो बाजाका यही काम है, कि जो आवाज दुनिया भरसे चलके हमारे यहाँ आई है, उसे पहले पकड़े और फिर तेज करके फोनोगिलाफ बाजाकी तरह निकाले। और कोई जादू-वादू नहीं है। रूसमें किसान जब खाना खाने बैठते हैं, तो उस वक्त रेडियो बाजा गाना सुनाता है, देस-देस की खबरें सुनाता है और अब तो वह ऐसी तदवीर कर रहे हैं, कि आवाज ही नहीं रूप भी दिखलाई पड़ने लगे और लोग बैठे-बैठे मास्को और लन्दनका नाच और नाटक देखें।

दुखराम—क्या भैया! ऐसा भी होने लगेगा?

भैया—देखते नहीं दुक्खू भाई। दस हाथपर खड़े रहते हो और तुम्हारा मुँह दरपनमें दिखाई पड़ता है। इसी तरह रूपवाला बाजा भी तैयार हो गया है, लेकिन अभी रूप उतना साफ नहीं आता। कुछ दिनोंमें वह भी ठीक हो जायगा।

दुखराम—होगा भैया! लेकिन हम लोगोंको तो रेडियो बाजा भी देखने-को

नहीं मिलता। कब जोंकोंका नास होगा ? और वहाँ भैया ! सब मेहरारू काम करती हैं ?

भैया—बड़े-छोटे सब घरकी मेहरारू, यही न पूछ रहे हो दुक्खू भाई ? लेकिन हमने बतलाया कि वहाँ कोई बड़ा-छोटा नहीं, कोई जात-पाँत नहीं, सब बराबर हैं, भाई-भाई हैं। जोंकोंके राजमें मक्खन जैसे मुलायम हाथकी तारीफ की जाती है, सोवियतमें घट्टा पड़े कड़े हाथोंकी तारीफ होती है। जोंकोके मुल्कमें कामचोर-देहचोरकी इज्जत की जाती है, सोवियतमें मेहनती मजूर-किसान काम करनेवाले लोगोंकी इज्जत होती है, बीमार, बूढ़े, बच्चेको वहाँ काम करना नहीं पड़ता। नहीं तो जो कोई रानी बनकर बैठे उसे दूसरे दिन भूखा मरना पड़ेगा।

दुखराम—तो रानी फूलमती कुँअरिके लिए तो आफत हो जायगी, भैया ?

भैया—इसीलिए न राजा-रानी, सेठ सेठानी, महंथ-महंथिन, मोलवी-मोल-वियानी सब एक ओरसे मरकस बाबाकी सिच्छाको बुरा कहते हैं, रूसको गाली देते हैं। लेकिन दुक्खू भाई ! वहाँ जो काम करना पड़ता है, वह तकलीफका काम नहीं होता। गाँव भरकी औरतोंको काम करना पड़ता है, लेकिन बच्चा पैदा होनेसे महीना पहलेहीसे उन्हें छुट्टी मिल जाती और बच्चा होनेके बाद भी डेढ़-दो महीने छुट्टी रहती है। उस बखत भी दूध-दवाई, डाक्टर-दाई सबका खरच पंचायतकी ओरसे मिलता है। औरतें खेत काटनेके लिए आती हैं, तो बच्चोका तम्बू पहिले ही पड़ जाता है और दाइयाँ बच्चों-को सँभाल लेती हैं। वहाँ बच्चोंके लिये खिलौना रहता है, पालना रहता है, दाइयाँ कहानी सुनाती हैं।

दुखराम—तो वहाँ बच्चोंको पीटा नहीं जाता ?

भैया—बच्चोंके पीटनेका काम नहीं, क्योंकि जब माँ-बाप काम करते हैं, तो बच्चे दाइयोंके पास रहते हैं। जब काम नहीं रहता, तब बच्चोंको ले आते हैं। उनके साथ खेलते हैं, कहानी सुनाते हैं, लाड़-प्यार करते हैं।

दुखराम—सपना जैसा मालूम होता है भैया !

भैया—सरगको किसीने नहीं देखा, लेकिन हम हजारों सालसे सरगके नामपर ठगे जा रहे हैं। लेकिन मैं जिस सोवियत की बात कर रहा हूँ, वह सरग जैसी

सपनेकी चीज नहीं। जोंकें हमारा रास्ता न रोकें, तो पाँचवें दिन उस देस में पहुँच सकते हैं और अबतो हमारे पड़ोसका चीन भी वैसाही हो गया।

दुखराम—हवाई जहाज, सुनते हैं, दो घंटेमें कलकत्तेसे चला आता है।

भैया—हवाई जहाज से नहीं दुक्खू भाई, दो दिनमें रेलसे पेशावरी और वहाँसे काबुल होते तीसरे दिन कमेरोंके राजमें पहुँच जाएँगे। किराया भी ४०)से बेसी नहीं लगेगा।

दुखराम—तब तो भैया, बहुत नजदीक है।

भैया—नजदीक है, लेकिन जोंकोंने हजार तरहकी पहरा चौकी बैठाई हैं, जिसमें बाहरके कमेरे रूसको आँखोंसे न देख सकें, न वहाँकी बात ठीक तौरसे समझ सकें। वहाँके लोग बहुत खुशहाल हैं दुक्खू भाई! गाँव-गाँवमें इस्कूल है, असपताल, पुसतकालय है, सिनेमाघर है।

दुखराम—सिनेमाघर भी है गाँव-गाँवमें भैया?

भैया—हाँ! काम सब पंचायती होता है, इसलिए हर गाँवमें एक इतना बड़ा घर होता है, जिसमें वहाँके सारे नर-नारी बैठ सकें। उसी घरमें सभा होती है। जो बड़े गाँव हैं, उनमें तो रोज सिनेमाका तमासा होता है, लेकिन छोटे गाँवोंमें सिनेमा मोटरसे घूमता रहता है। आज कनैलामें आया, और दो तरहका तमासा यहाँ दिखलाया फिर तीसरे दिन यहाँसे भदया चला गया, वहाँ भी दो तमासा दिखलाया। इसी तरह वह आगे बढ़ता गया, दूसरे हफ्ते दूसरी सिनेमा-मोटर आई और वह भी उसी तरह दो-दो तमासा दिखाती चली गई। गाँवमें पंचायतकी ओरसे दूकान होती है, जिसमें पचासों तरहकी चीजें बिकती हैं, और नफाका सवाल नहीं, क्योंकि दूकान गाँव भरकी है। गाँव भरके लोग मिलकर खेती करते। जूता, मोजा, सिलाईके भी कारखाने गाँवोंमें होते हैं। जिसने भी जितना काम किया, सबका काम बही-खाता पर लिखा हुआ है और कितना पैदा किया वह भी सामने है। मान लो दस लाख रुपयाका सामान गाँवमें पैदा किया और दो लाख दिन गाँव भरके लोगोने मिलकर काम किया, तो इसका मतलब एक दिनके कामका ५)। लेकिन ५ लाखमेंसे पहिले साझेका खर्च, अस्पताल, दाईघर, पुस्तकालय, नाटकमंडली आदिके लिए दो लाख या जितना हो, निकाल

दिया जायगा। अब एक रोजके काम की ४) पैदावार हुई। गाँवमें जिसने जितने दिन काम किया उसीके अनुसार पंचायत उन्हें पैसा दे देगी। उससे आदमी घर भरके लिए कपड़ा बनवायेगा, जूता खरीदेगा या फोनोगिलाफ बाजा खरीदेगा, मेला-तमासा देखेगा, खाना खायेगा।

दुखराम—गाँव भरका चूल्हा एक नहीं हो गया है ?

भैया—कहीं कहीं हो गया है, लेकिन बहुत जगह नहीं हुआ है। सहरोंमें ऐसा हुआ है।

सन्तोखी—सहरोंकी भी एकाध बात बतलाएँ भैया !

भैया—सहरोंमें जानते हो न सन्तोखी भाई, सब मकान-जमीन बड़ी-बड़ी जोंकोंकी होती हैं। राज सँभालते ही कमेरों की सरकारने जोंकोंकी जायदातको छीन लिया। सहरोंके सब घर कमेरोंकी सरकारके हैं। जो झोपड़ियाँ और गन्दी गलियाँ पहिले थीं, उन सबको तोड़कर पाँच-पाँच छ-छ तल्लाके बड़े-बड़े मकान बन गये। जोंकोंके राज के समय राजधानीमें तेरह लाख आदमी बसते थे, जिनमें आधे सुअरकी खोभागेंमें रहते थे, आज उस लेनिनगराद की आबादी दुगुनासे भी अधिक तीस लाख है, लेकिल अब उन खोभारोंका पता नहीं है। अब सबके लिए अच्छे अच्छे मकान, चौड़ी सड़कें, जगह-जगह लड़कोंके खेलनेके लिए बगीचे तथा खेलके मैदान हैं। मकानकी मरम्मत, बिजली-पानीका इन्तजाम लोगोंकी चुनी हुई छोटी-छोटी पंचायतें करती हैं। महल्ले-महल्लेके रसोई घर हैं, जिसमें हजार दो हजारसे दस-दस बारह-बारह हजार आदमियोंका खाना बनता है। सिरिफ दाल-भात उबाल कर रख नहीं दिया जाता, बल्कि पचास-पचास साठ-साठ तरहके भोजन बनते हैं। जिन औरत-मर्दों को रसोई बनानेका काम है, वह रसोई-घरमें जाते हैं। सबेरेका जलपान और दोपहरका भोजन करा दिया बस छुट्टी, तिपहरीका जलपान और रातका भोजन बनानेका इन्तजाम आकर दूसरी टोली करेगी।

दुखराम—औरतोंको तो वहाँ और भी आराम है भैया ? हमारे यहाँ तो बेचारी पहर भर रात रहते ही चक्की पीसने लगती है, चौका-बासन करना, खाना बनाके खिलाना, बीचमें लड़का रोने लगा, तो उसे दो थप्पड़ लगाना, चावल

कूटना, दाल दरना, फिर चौका-बासन करना, गोएठेके धूएँ से आँखें फोड़ते खाना बनाना, खिलाते-पिलाते आधी रात हो जाती है। बेचारियोंको फिर पहर भर रात हीसे जागना पड़ता है। वहाँ तो इतना काम नहीं पड़ता भैया।

भैया—वहाँ इतना काम कहाँ ? बतलाया नहीं, सबेरे ६ बजे ड्यूटी पर गई तो बारह एक बजे तक उनकी छुट्टी। आटा पीसना चावल कूटना तो कल-मसीनका काम है। बरतन धोनेके लिए भी बहुत जगह कल लगी हुई है। मसीनी घूम रही है, एक ओरसे बर्त्तन डालते हैं, एक साबुन लगा देती है, बुरुसवाली मसीन मल देती है, दूसरी मसीन गरम पानीसे धो देती है, फिर साफ बर्त्तन दूसरी ओरसे बाहर चला आता है। औरतने जाकर छ-सात घन्टे रसोई घरमें काम कर दिया। अब उसे अपने लड़केको लाड़-प्यार करना, मित्रोंसे बात-चीत करना, किताब पढ़ना या कोई और मन बहलाव छोड़कर दूसरा काम करना। घरके लोग चाहे रसोई-घरके बड़े-बड़े मकानोमें जाकर खाना खा सकते हैं और चाहें तो गरमागरम भोजन अपने घरमें लाकर खा सकते हैं।

सन्तोखी—दुकान-उकान तो वहाँ भी होगी भैया ?

भैया—दुकान बहुत है सन्तोखी भाई, और इतनी बड़ी-बड़ी कि जिसमें हजार-हजार आदमी गाहकोंको सौदा बेचते हैं। लेकिन सब दूकानें पंचायती हैं, कमेरोंके पंचायती राजकी, चाहे छोटी-सी सिगरेटकी दुकान हो चाहे बड़ीसी बड़ी दूकान हो, जो लोग बेंच रहे हैं, वह किसी साहु-महाजनके नफाके लिए नहीं कर रहे हैं। सब लोगोकी ड्यूटी है। घंटेसे काम करना पड़ता है वही छ-सात घंटा। फिर अपना मौज करें। बीमार होनेपर डाक्टर मुफ्त, दवा मुफ्त, पथ मुफ्त, और तनख्वाह भी नहीं कटती। बूढ़ा होनेपर सबको पेन्सन।

सन्तोखी—तब काहेको वहाँ किसीको चिंता होगी।

भैया—चिन्ता बिलकुल नहीं ! लड़के-लड़कियोंको पढ़नेके लिए फीस नहीं देनी पड़ती, और सात बरस तक सबको पढ़ना होता है। दोपहरका खाना लड़कों को स्कूलसे मिलता है और डाक्टर जैसा खाना बतलाए वैसा खाना। तीन बच्चोंके बाद जितने बच्चे पैदा होंगे, उनका सब खर्च कमेरा-सरकार देती है। सात रुपया रोजसे कम किसीकी मजूरी नहीं। जो घरमें मरद-औरत दो ही कमानेवाले हों,

तो भी चौदह रुपया रोज या सवा चार सौ रुपया महीना तो जरूर ही आएगा। बताओ उनको क्या चिन्ता हो सकती है ?

सन्तोखी—तभी तो भैया ! रूसवाले इतनी बहादुरीसे लड़े ? उन्होंने अपने हाथसे धरतीपर सरग रचा, जर्मन जोकोके रूसमें बैठनेका मतलब क्या होता, इसे वह अच्छी तरह समझते थे।

भैया—इस्तालिन वीरने कह कर नहीं दिखा करके दिखाया। सत्ताइस बरस से रूसके कमेरोंका अगुआ है इस्तालिन वीर। मरकस बाबाने जोकोके जाल-फरेब को देखनेके लिए आँख दी और लड़नेका ढग बतलाया। लेकिन महात्माने कमेरोंको लडनेके लिए तैयार किया, फिर पाँच बरस तक लड़ाई लड़ी और दुनियाके छठे भागसे जोंकोंका नाम मिटा दिया। इस्तालिन वीरने सरगको धरती पर उतारा। गाँवोंको बदल दिया। कारखानोंसे देसको भर दिया। लोगोंको दिखला दिया, कि जोकोके हटानेसे दुनिया नरकसे सरग बन जाती है। लेकिन, इस्तालिन वीरने यह भी आगेसे सोच लिया था, कि जोकोसे हमें लड़ना पड़ेगा। इसीलिए अपने हथियारको मजबूत किया, हर नौजवानके लिए फौजमें दो-तीन बरस रहना लाजिम कर दिया। सब विद्या सिखाई गई। करोड़ोंकी पलटन तैयार हो गई। मरद ही नहीं औरतो तकने भी हथियार चलाना सीखा, हवाई जहाज उड़ाने लगीं। बच्चे बचपन हीसे सौ-सौ, डेढ़-डेढ़ सौ हाथ ऊँचे मीनारोंपरसे छतरीके सहारे कूद करके निडर होने लगे, जिसमें कि हवाई जहाजसे कूदनेमें उन्हें भय न मालूम हो। मोटरके हलोंको ऐसा बनाया कि ऊपरके थोड़ेसे हिस्से को हटाकर दूसरा रख देनेसे टंक बन जाता था।

दुखराम—टंक क्या है भैया ?

भैया—टंक आज-कलकी लड़ाईका बहुत जबर्जस्त हथियार है, जिसपर बन्दूककी गोली क्या तोपका गोला भी असर नहीं करता। उसके पहिएमें रबड़-की टायर नहीं, मोटी जंजीर होती है। चारों ओर तीन अंगुल मोटे फौलादकी चद्दर लगी रहती है, भीतर ही तोप रहती है। वह ऊँची-नीची सब जमीनपर चला जाता है बड़े-बड़े पक्के मकानोंको तोड़ते हुए तो ऐसे घुसता जाता है,

जैसे सूखे पत्तोंके ढेरमें हाथी। इस्तालिन वीरने लड़ाईके लिए कमेरोंको पहले हीसे तैयार कर लिया था।

सन्तोखी—इस्तालिन बीरका तो बहुत बड़ा दिमाग है भैया!

भैया—कमेरोंके लड़कोंमें बहुतसे ही बड़े-बड़े दिमाग पैदा होते हैं, लेकिन उनको काम करनेका मौका ही नहीं मिलता। जब सारी दुनियाको पछाड़नेवाली हिटलरी फौजको लाल फौजने तसह-नसह किया, उसे भगाकर जर्मनीके भीतर जाकर उसका सत्यानास कर दिया, तो सारी दुनियामें लाल फौजके महासेनापति वीर यूसुफ इस्तालिनका नाम लिया जाने लगा, सब उनकी बुद्धि और बहादुरीका लोहा मानते हैं। लेकिन इस्तालिन बीर मजूरी करके खानेवाले एक चमारका लड़का है, और गोरे नहीं काले चमारका लड़का है। इस्तालिनने चौदह बरसकी उमरसे ही जोंकोंकी जड़ काटनेका काम सुरू किया। चौदह-चौदह बार उसे कालेपानी की सजा हुई, तो भी वह जेलसे निकल भागता रहा और भेस बदलकर कमेरोंमें काम करता रहा। कमेरोंने रूसकी जोंकोंसे पाँच साल लड़ाई लड़ी। उसके जीतनेमें लेनिन महात्माके बाद जो सबसे बड़ा दिमाग था, वह इसी चमारके लड़केका।

दुखराम—हमारे यहाँ भी भैया! हम कितनोंको चमार कहकर अछूत कहकर पशु बनाकर रखे हैं और उनके साथ जरा भी दया-मायाकी बात कहनेपर पंडित लोग पोथी लेकर मारने दौड़ते हैं। जो जोंकें, न रहें, तो इनमें भी न जाने कितने-कितने बीर-बहादुर निकलेंगे, कितने दिमागवाले दिखाई पड़ेंगे।

अध्याय ६

भसमासुर भूतनाथपर चढ़ दौड़ा था

भैया—उस दिन दुक्खू भाई, तुमने ठीक कहा था। सचमुच ही हिटलरने वही किया, जो भसमासुरने भूतनाथके साथ किया। बिलायत की जोंकोंने हिटलरको अपना लाड़ला बेटा बनाया था। जब (३० जनवरी १९३३ को) जर्मनीका राज जोंकोंके इस गुण्डेके हाथमें आ गया, तो बिलायतकी जोंके फूली न

समाती थीं। उन्होंने सोचा हमने हिटलरको इतना मजबूत कर दिया कि वह रूसके बोलसेविकोंपर टूट पड़े और हमारा यह सबसे बड़ा दुसमन बरबाद हो जाय। पिछली लड़ाईमें जर्मनीने जो खूनी जंग छेड़ा था, उसको देखकर अंगरेज, फ्रांसीसी और उनके दूसरे मित्रोंने जर्मनीसे ऐसी-ऐसी सरतें मनवाई थीं, जिसमें वह फिर सिर उठाने लायक न रह जाय। हिटलर एक ओर अपने देसवालोंसे कहता था कि हमें पंगु नहीं रहना चाहिए; दूसरी ओर बाहरी देसों-की जोंकोंको खुस करनेके लिए वह बोलसेविकोंके सत्यानास करने की बात करता था। जर्मनी और फ्रांसके सरहदपर राइन नामकी एक नदी है। जर्मनीने यह सर्त मानी थी, कि वह राइनके इलाकेमें कोई फौज नहीं रक्खेगा और यह भी लोगोंको जबरजस्ती फौजी विद्या सिखाकर अपनी सेनाको नहीं बढ़ायेगा। हिटलरने कमेरोंको अपनी तरफ खींचनेके लिए झूठ बोलना सुरू किया, कि हम भी अपनी खोमका सामवाद (जोंक बिना राज) चाहते हैं, कुछ लोग आसा रखते थे कि हिटलर कमेरों की भलाईके लिए कुछ करेगा, लेकिन हिटलर तो जोंकोंके हाथकी कठपुतली था, उसने तो कमेरोंपर ही खूब जुलुम किया। इसपर झूठी आसावाले लोग तिलमिलाने लगे, फिर तो राज सँभाले डेढ़ बरस भी नहीं हुआ, कि उसने ३० जून १९३४ को हजारों अपने ही साथियोंको बड़ी बेदरदीसे कतल करवा डाला। इनमें उसके ऐसे भी साथी थे जिनकी मदतके बिना वह इतना बढ़ न सकता था। बिलायतकी जोंकें और भी खुस हुईं।

सन्तोखी—क्यों न खुस होतीं, उन्होंने सोचा होगा, कि हिटलरके आस-पास जो थोड़े-बहुत जोंकोंके बिरोधी रह गये थे, वह भी खतम हो गये।

भैया—हिटलरने दो साल और तैयारी की और मार्च १९३५ में जबरजस्ती सेना बढ़ानेवाली सर्त्त भी तोड़ दी। पड़ोसी फ्रांस बहुत घबराया। बिलायती जोकें कहने लगीं, कि जो हिटलर फौज न बढ़ायेगा, तो बोलसेविकोंसे लड़ेगा कैसे? हिटलरने अब बड़े जोर-सोर से सेना और हथियार बढ़ाना सुरू किया। साल भर और बीता ७ मार्च १९३६ को राइनके इलाके में उसने एक बहुत बड़ी फौज भेज दी। फ्रांस बहुत फड़फड़ाया। लेकिन बिलायती जोंकें समझने लगीं कि बोलसेविकोंसे लड़नेके लिए हिटलरको ऐसा करना ही चाहिए। दुनिया

के लोग आँख मलमलकर देखने लगे। उन्हें साफ मालूम होने लगा कि अब फिर दूसरा महाभारत होगा। बूढ़े बाल्डविन बिलायतकी जोंकोंके बड़े सरदार वहाँके महामन्त्री थे। बुढ़ापेके कारण उन्होंने गद्दी छोड़ी और उनकी जगहपर जोंकोंका सरदार नेविल चेम्बरलेन ३१ अगस्त १९३७ को बिलायतका महामन्त्री बना। जोंकोंका सरदार होनेके लिए जितने गुनोंकी जरूरत है, वह सब इस आदमीमें थे। और उसके साथी भी उसीकी तरह एकसे एक छँटे थैलीसाह थे। साइमन, होर, और हेलीफॉक्स (जो पहिले हिन्दुस्तानका बड़ा लाट इरविन था) सभी एक ही हाँड़ीके नहलाये हुए थे, "कोउ बड़ छोट कहत बड़ दोसू।"

सन्तोखी—इरविन वाइसराय! ऐसे ही ऐसे न हिन्दुस्तानमें बड़ा लाट बनकर आते रहे।

भैया—और क्या जोकें बेवकूफ थोड़े ही हैं छँटे आदमियोंको वह हिन्दुस्तान भेजती रहीं। चेम्बरलेन और उसकी गुरुका यही मन्त्र था "थैली माता थैली पिता, थैली बंधू थैली सखा"। चेम्बरलेनने हिटलर को और बढ़ावा दिया। वह समझ गया कि बिलायतकी जोंके हमारे रास्तेमें कोई बाधा न डालेंगी। उसने १२ मार्च १९३८ को आस्ट्रिया के राजपर कब्जा कर लिया। बिलायतकी कुछ जोंकें घबराईं, लेकिन उनके सरदारोंकी चंडाल-चौकड़ी तो आसा बाँधे हुए थी कि हिटलर बोलसेविकोंके नास करनेकी बड़ी भारी तैयारी कर रहा है। हिटलरने पाँच बरसोंमें अपने सारे कारखानोंको लड़ाईका सामान तैयार करनेमें लगा दिया, और नौजवानोंको फौजमें भरती कर लिया। उसके टंक, तोप, हवाई-जहाज और लाखोंकी पलटन का तमाशा देखनेके लिए बिलायतकी भी जोंकें जर्मनी जातीं थीं, और बहुत खुस होती थीं। छ महीने और बीते। सितम्बर १९३८ में हिटलरने अपने पूरबके पड़ोसी चेकोस्लोवाकियापर लाल-लाल आँख की। चेम्बरलेन बिलायतसे दो-दो बार उड़कर हिटलरके दरबारमें गया। अन्तमें १९ सितम्बरको उसने, दलादिए (फ्रांस) आदि जोंक सरदारोंने चेकोस्लोवाकियाकी बलि दे दी। पहले हिटलरने थोड़ा-सा हिस्सा लिया, फिर १५ मार्च १९३९ कोसारे चेकोस्लोवाकिया को हड़प गया।

सन्तोखी—दूसरे-दूसरे मुल्कोंको हिटलर हड़पता जा रहा था, तो क्यों बिलायती जोंकोंको भय नहीं हुआ; आखिर यह देस भी तो जोंकों हीके थे।

भैया—चेम्बरलेन जैसे जोक-सरदारों का ख्याल था, कि चेकोस्लोवाकियासे ही रूस नजदीक है, इसलिए बोलसेविकोंको नास करनेके लिए हिटलरको वह मिलना ही चाहिए। चर्चिल जैसी कुछ जोंकें घबड़ा रही थीं, क्योंकि वह समझती थीं, कि जर्मनीकी तागत बहुत बढ़ जानेपर जो कहीं उसने हमारी ओर मुँह मोड़ा, तो कैसे जान बचेगी।

सन्तोखी—यह बात चेम्बरलेन और उसकी चंडाल-चौकड़ीकी समझमें क्यों नहीं आई?

भैया—स्वारथी अन्धा होता है। चंडाल-चौकड़ी करोड़पतियों की गुट थी। चेम्बरलेनका बाप अपने समयमें बिलायतका एक मंत्री था। उसका अपना एक लोहेका कारखाना था। १९०० ई० में दक्खिनी अफ्रीकामें लड़ाई हो रही थी। चेम्बरलेन मंत्री भी था, उसने कारखानेकी चीजोंका दाम दुगना-तिगुना कर दिया। फौजके लिए उसीके यहाँसे सामान खरीदा जाता। उसने दोनो हाथसे खूब लूटा। उस वक्त बिलायत में कहावत थी, "जितना ही अँगरेज राज बढ़ता है, उतना ही चेम्बरलेनका ठेका बढ़ता है।" यह तो बाप चेम्बरलेनकी बात हुई। बेटे चेम्बरलेनकी भी सुनिए। उसके हथियार के एक कारखाने (वर्मिंघम स्माल आर्म्स) को १९३५ में दो-सौ गिन्नी नफा हुआ था, लेकिन उसी कम्पनीने १९३८ में साढ़े चार लाख गिन्नी नफा लूटा—इस वक्त चेम्बरलेन बिलायतका महामन्त्री था।

सन्तोखी—सरम होनी चाहिये थी भैया! अपने ही सरकारका मुखिया और सरकारी खजानेसे इतना-इतना रुपया अपने रोजगारको दिलवाना।

भैया—जोंकों के समाजमें ऐसी बातको सरम नहीं कहा जाता इसे कहते हैं ईमानदारीका ब्यौपार! चेकोस्लोवाकियापर हिटलरने जब दाँत गड़ाया था, उस वक्त चंडाल-चौकड़ीको थोड़ा डर तो लगा, लेकिन चेम्बरलेन, वाल्डविन, होर, साइमन बरसोंसे रुपया बटोरनेमें लगे हुए थे। तोप, बन्दूक, टंक, हवाई-जहाज बनाने के लिए करोड़ों रुपया चाहिए और यह रुपये जोंकोंकी ही तोंद काटनेसे

आते, इसलिए वह उसके लिए क्यों तैयार होते ? उधर हिटलरके पास पलटन और हथियार अनगिनत थे, जब कि बिलायती सूमड़ों ने मुट्ठी बाँध ली थी, और अपने कारखानोंसे चौगुने दामपर खरीदे थोड़ेसे हथियार दिखलानेके लिए रख छोड़े थे। हिटलर जानता था, कि यह लोग बंदर घुड़की देने से और अधिक कुछ नहीं कर सकते। अब हिटलरने यूरपके एक बड़े भागपर कब्जा कर लिया था। जर्मनी, आस्ट्रिया, चेकोस्लोवाकिया सभी देशों के हथियारों के कारखाने उसके लिए काम कर रहे थे। बीस बरससे सिर झुकाए हुए जर्मनोंको यह सब जादू जैसा दिखाई पड़ने लगा। हिटलरने जर्मन अरिया जातिको सारी दुनियापर राज करनेके लिए भगवानकी ओरसे भेजा गया कहा था, और साथ ही यह भी कि हर जाति में नेता भी भगवान ही भेजते हैं। हिटलर सारी मानुख-जातिपर राज करने के लिए भेजा गया था। जर्मन जातिको इसका गर्व होने लगा। हिटलरने मक्खनकी जगह बन्दूक बनवानेकी बात कहकहकर जर्मनों को आलू खानेके लिए मजबूर किया। उसने दिलासा दिया था, कि जब संसार भरपर जर्मन जातिका झंडा गड़ जायगा, तब दुनियाके सभी लोगोंका धरम जर्मन जाति-के आराम और भोगके लिए काम करना होगा। हिटलर उतावला हो रहा था संसार विजयके लिए। अब उसके सामने दो रास्ते थे—एक तो अपने पहले कहे मुताबिक बोलसेविकोंके ऊपर दौड़े और दूसरा रास्ता था बाहरी जोकोंके ऊपर झपटनेका। फ्रांस, इंग्लैंड सब जगहकी जोकोंने पैसा बचा-बचाकर रखा था। फौजके मदमें जो रुपया मंजूर भी किया था, उसे भी चौगुने दामपर रद्दी-सद्दी हथियार देकर ले लिया था। जोकोंके पास न हथियार था न पलटन जो हिटलर-की फौजका सामना कर सकतीं। लेकिन बोलिसेविकोंके यहाँ आँख में धूल झोंकनेकी कोई बात नहीं थी, वह समझते थे कि दुनियाकी जोकें हमें खा जानेके लिए तैयार बैठी हैं। हमारी तभी रच्छा हो सकती है, जब हमारे पास अच्छे-अच्छे हथियार और पलटन हों। उन्होंने बीस बरससे बराबर इसके लिए तैयारी की थी। जिस वक्त जर्मनीको निहत्था बना दिया गया था, और वह नाम मात्रके लिए थोड़ीसी पलटन रख सकता था और जर्मन जरनैल टके-टकेपर मारे-मारे फिरते थे; उस वक्त बोलसेविकोंने उन्हें अपने यहाँ नौकर रखा और लड़ाईकी

विद्या सिखानेके लिए कहा। यह जनरैल कई-कई साल रूसमें रह चुके थे। उन्होंने वहाँकी लाल फौजको बहुत नजदीकसे देखा था। हिटलरको मालूम था, कि लाल फौजकी ओर बढ़ना अक्लमंदी नहीं है।

दुखराम—बेचारी जोकें ताकती ही रह गईं।

भैया—पोलैंड, जर्मनी और रूसके बीचमें पड़ता है। पोलैंडने बीस सालसे अपने यहाँ तालुकदारोंका खूनी राज कायम कर रखा था और किसानों और मजूरोंको हर तरहसे पीसना ही अपना काम समझा था। हिटलरने दो-चार मरतबे इन तालुकदारोंको चाय पीने के लिए बुलाया, फिर क्या था, इनका मिजाज आसमानपर चढ़ गया। यह भी तीसमारखाँ बन गए। जब हिटलरने चेकोस्लोवाकिया पर कब्जा किया, तो इन तालुकदारोंने भी बढ़कर एक परगना पर झपट्टा मारा। हिटलर मुस्कुरा रहा होगा, मेंढक मच्छर को निगलने के लिए मुँह बा रहा है; उसे यह मालूम नहीं कि उसकी पिछली टाँगे साँप के मुँहमें हैं!

दुखराम—तो हिटलर पोलैंड लेनेका निहचय कर चुका था क्या?

भैया—हिटलर जानता था कि अब आगेका कदम ऐसा होगा कि बिलायत और फ्रासकी जोकें चुप नहीं बैठ सकेंगी। वह फ्रासपर हमलाकर सकता था लेकिन फ्रासकी पलटनके बारेमें बहुत लम्बी-चौड़ी बातें कही जाती थीं। अँग्रेज कहते थे, कि दुनियामें तो दो ही पलटन हैं—धरतीकी पलटन फ्रांसके पास और समुन्दरकी पलटन हमारे पास।

दुखराम—और धरती की सबसे बड़ी पलटन हिटलरसे कितने साल तक लड़ी भैया!

भैया—तीन हफ्ता।

दुखराम—तीन साल भी नहीं, तीन महीना भी नहीं, तीन हफ्ता! और लाल पलटनके बारे में क्या कहते थे।

भैया—वह लड़नेवाली पलटन नहीं है, वह खाली तमासा देखनेके लिए है। लेकिन आखिरमें बिलायत, और फ्रास और दुनियाकी सभी जोंकोंको लाल-पलटनका लोहा मानना पड़ा। बिलायती जोंकोंके सरदार चर्चिलने कहा कि लाल

पलटन न होती तो हमारा कहीं ठौर-ठिकाना न रहता। लेकिन हिटलर ऐसा नहीं समझता था। वह सोचने लगा कि बाकी दो रास्ते हैं—पोलैंडकी ओर दौड़ा जाय तो पच्छिमकी जोकें गला फाड़ती भले ही रहें, लेकिन वह मदद कुछ भी नहीं कर सकतीं। फ्रांस, बेल्जियम या हालैंडकी ओर बढ़नेपर इन जोंकोंको कुछ करनेका मौका मिलेगा।

दुखराम—कॉत (दाव) बैठा रहा था।

भैया—लेकिन पासा डालनेसे पहिले उसे कुछ और भी सोचना था। बोल-सेविकोंने सुरूसे ही दूसरी सरकारों को समझाया था, कि दुनिया की सांती के लिए सबको मिलकर कोसिस करनी चाहिए। लेकिन जोंकोंको सान्ती से क्या मतलब ? जब तक अपने घरमें नहीं लगती, तब तक आग बेसन्तर होती है; लेकिन जब हिटलरका खतरा साफ दिखाई देने लगा, तब फ्रास और इग्लैंडने रूसको अपनी ओर मिलाना चाहा। रूसने सोचा, कि जोंकोंका गुन्डा ज्यादा खराब होता है, इसलिए इस गुन्डे हिटलरको खतम करनेके लिए कुछ किया जा सके तो अच्छा है। फ्रांस और इगलैन्डने अपने अफसर मास्को भेजे। लेकिन वह हिटलरसे लड़नेके लिए बात करने नहीं गए थे, बल्कि चाहते थे कि हिटलर उतावला होकर रूसपर दौड़ पड़े। लेकिन कमेरोंके नेता कच्चे गुइयाँ नहीं थे। इस्तालिन वीरने कह दिया, कि हम दूसरेकी आगमें जलनेके लिए तैयार नहीं हैं। जोंकोंके मुखिया मास्कोसे खाली हाथ लौट आए। उधर हिटलरने २३ अगस्त १९३९ को अपने विदेस मन्त्रीको मास्को भेजकर बोलसेविकों से कहा कि न हम तुमपर हमला करें न तुम हमारे ऊपर करो। कागजपर दोनों ओर की दस्तखत हुई। ११ दिन बाद ३ सितंबर १९३९ को हिटलरने पोलैंड पर हमला कर दिया। बिलायत और फ्रासकी जोंकों के लिए कोई चारा नहीं था। उन्होंने भी हिटलरके खिलाफ लड़ाई छेड़ दी, लेकिन पोलैंडके तालुकदारों-को कोई मदद नहीं पहुँचा सके। कुछ ही दिनोंमें सारे पौलैण्डको हिटलरने ले लिया। लेकिन पोलैंडने २१ साल पहिले रूस के कुछ जमीनको दबा लिया था। जब हिटलरकी फौज ने उधर बढ़ना चाहा, तो लाल फौजने आगे बढ़कर अपने पुराने इलाके को ले लिया। हिटलर मुँह ताकता रह गया। बिलायती जोंकें

बकने लगीं, कि बोलसेविकोंने तो पोलैंडकी जमीन ले ली और घायल पोलैण्ड की बेबसीको देखकर ऐसी कायरता दिखलाई। लेकिन इन जोकों को यह कहनेमें जरा सरम न आई, कि उन्हींके सरदार लार्ड कर्जनने रूसकी सीमा जहाँ तक ठीक की थी, लालसेनाने उतना ही लिया। हिटलरको इस तरह बढ़ते हुए देख बोल-सेविकोंको अपनी सीमाकी रक्षाका पूरा ख्याल करना ही था। रूसकी पुरानी राजधानी और मास्को के बाद सबसे बड़ा सहर लेनिनग्राद खतरेमें था, फिनलैण्ड-की सीमा उससे १४ ही मीलपर थी। फिनलैण्ड भी तालुकदारों के हाथमें था, जिन्होंने ४० हजार कमेरोंके खूनसे अपने हाथको रंगा था और जो हिटलरके छुटभैया बननेके लिए बराबर तैयार थे। सोवियतने फिनलैण्डसे कहा, कि इस सीमाको थोड़ा और पीछे हटाओ हम तुम्हारी बगल हीमें तुम्हें तिगुनी जमीन बदलेमें देते हैं। लेकिन वह इसके लिए क्यों तैयार होने लगे? वह भी तो समझते थे, कि जब तक पड़ोसमें कमेरों का राज है, तब तक हमारी गद्दीकी खैरियत नहीं। फिनलैण्डने जब किसी तरह बात नहीं मानी और सरहदकी लाल फौजपर गोली भी चला दी, तब कोई रास्ता नहीं था। लाल फौजकी फिनलैण्डके तालुकदारोंसे लड़ाई छिड़ गई। उस वक्त चेम्बरलेनको फिर जोश आया।

दुखराम—हिटलरसे लड़नेके लिए?

भैया—हिटलरसे नहीं, रूससे लड़नेके लिए। लाखसे ऊपर पलटन फ्रांस और इंगलैण्डसे भेजी जानेवाली थी, लेकिन बीच हीमें फिनलैण्डका दिमाग ठंढा हो गया और उसने सोवियतकी बात मान ली। कमेरोंका राज कायम होनेपर चार जातियाँ और बिछुड़ गई थीं, जिनमें एस्तोनियाँ, लतविया, लिथुआनियाँ इन तीनो देसोंकी जोंकोंने अपने मतलबके लिए अपने देसको अलग किया था। वहाँ-के कमेरोंने देखा, कि उनकी सीमाके उस पार कैसा सरग तैयार हो रहा है। तीनों देसों के कमेरोंने अपने यहाँकी जोंकोंको बिदा किया और वोट देकर तय किया कि हम भी सोवियत राजमें सामिल होंगे, और वे १९४० में सोवियतमें सामिल हो गए। दक्खिन-पच्छिममें बेसराबियाका इलाका था, जिसे रूमानियाँकी जोंकों-ने दखल कर लिया था। सोवियतने रूमानियाँसे अपनी जमीन लौटानेके लिए कहा, रूमानियाँकी जोंकें पसंद तो नहीं करतीं थीं, लेकिन करें क्या? बेसराबिया-

को छोड़ना पड़ा। सोवियतमें अब सब मिलाकर सोलह बड़े-बड़े पंचायती राज हैं।

दुखराम—नाम क्या-क्या है भैया।

भैया—(१) रूस, (२) उक्रइन, (३) बेलोरूसिया, (४) करेलोफीन, (५) एस्तोनिया, (६) लतविया, (७) लिथुवानिया, (८) मल्दाविया, (९) जार्जिया, (१०) आरमेनिता, (११) आजुरबाईजान, (१२) तुर्कमानिस्तान, (१३) उज्बेकिस्तान, (१४) ताजिकिस्तान, (१५) किरगिजिस्तान, (१६) कजाकस्तान।

दुखराम—यह तो बड़े-बड़े परजाततर है और कितने ही छोटे-छोटे भी होंगे ?

भैया—हाँ, लेकिन उनका नाम देनेसे क्या फायदा ? कभी नकसा मिलेगा तो तुम्हें दिखला देंगे।

दुखराम—हिटलरने आगे क्या किया भैया !

भैया—हिटलर चुप तो नहीं बैठा सकता था। वह जानता था कि जब तक फ्रांस और इग्लैंड को नहीं पछाड़ते तब तक दुनियाके आधे भागको हम अपनी जोंकोंको चूसनेके लिए नहीं दे सकते।

सन्तोखी—तो हिटलर भी जोंको हीके लिए सब कुछ कर रहा था ?

भैया—जोंकोंका ही तो वह आखिरी नायक था। इग्लैंड और फ्रासकी पूंजीपति जोंकोंने सौ बरस पहिले अपने यहाँ के तालुकदारों (सामंतों) को पछाड़ने के लिए जनताकी गुहार उठाई थी। काम बन जानेपर उन्होंने जनताको चूसने के सिवाय और कोई काम नहीं किया। लेकिन यह काम वह परदा डालकर करते आए थे और वोट और चुनावका नाटक करते थे।

सन्तोखी—नाटक क्यों भैया ?

भैया—जानते हो न, जोंकोंके राजमें वोटकी बिक्री होती है। कोई करोड़पति संसद एसम्बलीके लिए खड़ा होगा, वह वोटरोंको रुपया बाँटता फिरेगा। अपने दलालोंको रुपया देकर वोट लेनेकी कोसिस करेगा। उसके सामने कोई किसान-मजूर कैसे खड़ा हो सकेगा ?

दुखराम—उसकी जमा-पूंजी तो मोटरके तेलमें ही बिक जायगी।

भैया—इसीलिए मैंने कहा कि जोंकोंके राजमें ईमानदारीसे वोट नहीं दिया जा सकता। लेकिन, कभी-कभी इस वोटसे जोंकें घबराती भी हैं। जर्मनीमें हिटलरने कहा—नेताको भगवान चुनते हैं, इसलिये उसको किसी पाखंडकी जरूरत नहीं, लेकिन तब भी अपनी गीत सुनानेके लिए वह कभी-कभी वोटका नाटक खेलता था। उसके गुंडे देखा करते थे कि कोई आदमी वोट देनेसे जी तो नहीं चुराता या गड़बड़ तो नहीं करता। जहाँ पता चला कि बेचारेपर आफत।

सन्तोखी—गुंडोंको भी भैया, जोंकें ही पैदा करती हैं?

भैया—हिटलरने डेनमार्क और नारवे जीता। फिर बेल्जियम और हालैंड को खतम किया और तीन ही हफ्तेमें फ्रांसकी जबरजस्त सेनाने भी हथियार रख दिया।

दुखराम—जबरजस्त सेना होनेपर इतनी जल्दी हथियार क्यों रख दिया भैया।

भैया—सुना है, हिन्दुस्तानके किसी राजाका अफसर अँगरेजोंसे मिल गया और उसने किलेमें बारूदकी जगह भूसी भरवा दी थी।

दुखराम—इसी तरहका विसवासघात फ्रांसमें हुआ क्या?

भैया—फ्रांसका राज दो सौ जोंक परिवारोंके हाथमें था। यही वहाँके करोड़पति थे। फ्रांसमें तीन बार कमेरोंने अपना जोर दिखलाया और आखरी बार तो कई महीने पेरिसमें राज भी किया। फ्रांसकी जोंकोंको डर था कि फिर कहीं कमेरे उठ खड़े न हों, इसलिए भीतर ही भीतर वह जरमन जोंकोंसे मिल गए। फ्रांसीसी बहुत बहादुर जाति है। वहाँ सिपाही डरना नहीं जानते लेकिन उनके हथियार निकम्मे थे और जरनैल तो और भी निकम्मे थे। जो तीन हफ्ते में हिटलरने फ्रांसको हरा दिया, इसमें हिटलरी फौजकी बहादुरी उतना कारन नहीं थी, जितना कि फ्रांसकी जोंकोंका विसवासघात। फ्रांसके खतम होनेके बाद तो अब जर्मन गुंडोंको दौड़ लगानेकी जरूरत थी। मसोलिनी पहले ही गिद्धकी तरह ताक लगाए हुए था। अभी वह इंग्लैंड और फ्रांसके जंगी जहाजोंसे डरता था, लेकिन अब पीछे रहनेका मतलब था, लूटमें हिस्सा न पाना, इसलिए वह भी हिटलरके साथ मिल गया। हंगरी, रूमानियाँ और बोल्गारियाने

बिना लड़े ही हिटलरकी गुलामी मान ली। यूगोसलाविया और यूनानको उसने पीस दिया। लड़ाई अफ्रीकामें चली आई। अब सोवियतसे बाहरका सारा यूरप हिटलरके हाथमें था। सभी मुल्कोंके कल-कारखाने उसके लिए काम करते थे।

सन्तोखी—तो यूरपमें कोई नहीं बच रहा था?

भैया—बच रहा था इंग्लैण्ड, क्योंकि वह यूरपसे बाहर समुन्दरके बीचका टापू था। हिटलरके पास उतने जंगी जहाज नहीं थे। अपने हवाई जहाजोंको वह भेजकर लन्दन और दूसरे सहरोंको तहस-नहस करता है।

सन्तोखी—फ्रांसकी जोकें तो हिटलरके जूते चाटने लगीं, लेकिन चेम्बर-लेनका क्या हुआ?

भैया—जानते हो न जोंकोंमें भी बेसी धनी और कम धनीका फरक होता है। दोनों एक दूसरेसे घिना करते हैं। हाँ, जोंकोंके धनपर कमेरे दाँत गड़ाने लगते हैं, तब सभी जोंकें एक हो जाती हैं। हिटलर और इंग्लैंडके बीचमें एक पतलीसी खाड़ी रह गई थी। बिलायतकी जोंकें घबरा गईं। फ्रांसकी दसा क्या हुई, इसको उन्होंने अभी-अभी देखा था। उन्होंने समझा सांतिके समय जिस जोंकसे काम चल सकता है, लड़ाईके समय उसीसे काम नहीं चलता। चेम्बर-लेनका पाप एक-एक करके गिनाया जाने लगा। बेचारेको गद्दी छोड़नी पड़ी और चर्चिल उसकी जगह महामंत्री बना।

दुखराम—चर्चिल भी तो जोंक था भैया!

भैया—बड़ी जोंक और हिन्दुस्तानके लिए तो वह काला साँप था। लेकिन इसके बारेमें हम फिर किसी दिन कहेंगे। इतनी बात जरूर है, कि हिटलरको बहुत आगे बढ़ते देखकर चर्चिल पहिलेसे ही बोलने लगा था—हमें लड़नेके लिए तैयार होना चाहिए। जोंकोंमें वही आदमी था, जो इंग्लैंडको कुछ आसा दिला सकता था। वह पिछली लड़ाईमें भी लड़ाईका मन्त्री था?

दुखराम—उसीने न कमेरोंके राजको खतम करनेके लिए पलटन भेजी थी?

भैया—और वह बीस बरस तक सोवियतको गाली देता रहा। लेकिन बिलायती पारलियामेंट सभामें जोंकोंका ही जोर था। इसलिए उसको महामंत्री बना दिया गया।

अध्याय ७

पागल सियार गाँवकी ओर

भैया—दुक्खू भाई ! बहुत नाम कहनेसे समझनेमें गड़बड़ मच जाती है। यूरपके छोटे-मोटे कितने ही देशोंका नाम मैंने गिना दिया है। कहनेसे नकसा दिखानेमें बात जल्दी समझमें आती। देखो जो कहीं नकसा मिल गया, तो मैं ले आकर दिखाऊँगा। लेकिन एक नाँव और सुन लो। अमेरिका नाम सुना है ?

दुखराम—हाँ भैया ! नाम सुना है सोमारू काका कहते थे, कि परागराजमें अमेरिकाकी पलटन आई थी। लेकिन भैया ! अमेरिका अँगरेजोंकी इतनी मदद क्यों करता था ?

भैया—कमाके खानेवालोंमें सच्ची दोस्ती हो सकती है, लेकिन लुटेरोंमें कभी नहीं हो सकती। जब हिटलर इतना बढ़ने लगा, तो अमेरिकाको भी भय लगने लगा। उसने समझा जो फ्रांस और इंगलैण्डको चित करके आधी दुनिया-पर हिटलर का कबजा हो गया और फिर दलबलके साथ हमारे ऊपर झपटा, तो तेरह करोड़ आबादीका अमेरिका उसके सामने कितने दिनों तक टिकेगा ? ईसीलिए अमेरिका पहिले हीसे इङ्गलैण्ड और फ्रांसको हथियार बेंच रहा था।

सन्तोखी—बेंचनेमें तो नफा ही है न भैया ?

भैया—और खतरा भी। जो कहीं हिटलर जीत जाता, तब तो पहिले हीसे उसे नाराज कर लिया न ? अमेरिकाके परधान रूजवेल्टने कई बार हिटलरको जली-कटी भी सुनाई।

दुखराम—दोनोंकी भेंट हुई थी क्या भैया ?

भैया—दोनोंके भेंट होनेका क्या काम है दुक्खू भाई ! रेडियो बाजा एक की बात दूसरी जगह पहुँचानेको तैयार ही है। अब सुनो, हिटलर क्या सोच रहा था ? सारे फ्रांस और सारे यूरपके ले लेनेके बाद अब वह सोचने लगा कि इङ्गलैण्डकी ओर बढ़ें या क्या करें। अमेरिका इङ्गलैण्डकी ओरसे लड़ाईमें कूदनेके लिए तैयार दिखाई पड़ता था। उसने सोचा जो मैं इङ्गलैण्ड और अमेरिकासे भिड़ गया तो समुन्दर पार करने के लिए उतने जगी जहाज नहीं

हैं, अमेरिकाकी तागत बहुत बड़ी है। उसके पास इतने बड़े-बड़े कारखानें हैं, कि वह पतंगकी तरह चुटकी बजाते-बजाते हवाई जहाज बनाता जायगा। जर्मनों-से करीब-करीब दूनी अमेरिकाकी आबादी है। वहाँ तक पहुँचना मुस्किल है। जो कहीं लड़ाई जियादा दिन चली, लड़ते-लड़ते जर्मनी बहुत थौस (निरबल) गया। और इधर बोलसेविक चुप-चाप अपनी फौज बढ़ाते रहे, हथियार पर सान लगाते रहे, फिर तो सब कुछ कर-धरके भी हमें मरना ही होगा। बात यह थी कि बोलसेविकोंकी कोई ऐसी नीयत नहीं थी। हाँ, वह हिटलरकी बातपर कभी विसवास नहीं कर सकते थे।

दुखराम—जब जोंकोंपर ही विसवास नहीं कर सकते थे, तब जोंकोंके गुंडे-पर कैसे करते ?

भैया—यूरप जीतनेसे हिटलरका दिमाग बढ़ गया।। उसने सोचा—फ्रांस बेल्जियम, जर्मनी, आस्ट्रिया, चेकोस्लोवाकियाके बड़े-बड़े गोला-बारूद बनाने-वाले कारखाने हमारे लिए हथियार बना रहे हैं। हमारे सामने फ्रांस तीन हफ्ते नहीं ठहर सका। अब हमारी ताकत इतनी है कि बोलसेविकोंको पीस सकते हैं। उसके जरनैलोंमेंसे कुछने समझाया, कि लाल-पलटन के बारेमें ऐसा सोचना अच्छा नहीं है। लेकिन उसने जरनैलोंकी बात नहीं मानी।

दुखराम—क्यों मानेगा ? भगवानने दुनियापर राज करनेके लिए जरनैलों-को भेजा था या हिटलरको ?

भैया—हिटलर यह भी ख्याल करता था, कि चारों खूंट तक विजयपताका गाड़े बिना मेरे लिए खैरियत नहीं। जो इतने दिनों तक मक्खनकी जगह आलू खाते आये हैं, वह मुझे ही खाने लगेंगे। और इङ्गलैण्ड, अमेरिकाके हरानेमें कमजोर हो जानेपर हम फिर बोलसेविकोंका कुछ नहीं कर सकेंगे।

दुखराम—और बोलसेविकोंके हरानेकी आसामें जर्मनीवाले पचीसों साल तक न आलू खानेके लिए तैयार होंगे और न यही आसा थी कि हिटलर अमिरतकी घरिया पीकर आया है।

भैया—हिटलरके लिए कागजपर दसखत करना कोई चीज नहीं। वह कह ही चुका था, कागजपर दसखतकी जाती है फाड़नेके लिए।

दुखराम—जोंकोंका यही धरम है।

भैया—आखिर २८ जून १९४१ को हिटलरने कमेरोंकी धरतीपर हमला कर दिया। हिटलरने जितनी तैयारी की थी, अभी लाल सेना उतनी तैयार न थी। लाल सेनाको पीछे हटना पड़ा, और कभी-कभी तो दस-दस बारह-बारह मील एक दिनमें पीछे हटना पड़ना। लाल सेना बहुत बहादुरीसे लड़ी। कितनी ही बार ऐसा देखा गया, कि लालसेनाने किले को तब तक नहीं छोड़ा, जब तक कि एक भी सिपाही जिन्दा रहा। लेकिन उसे अपार हानि उठानी पड़ी।

सन्तोखी—उस वक्त तो भैया! मैंने भी सुना था कि रूस कुछ ही दिनोंमें खतम हो जाएगा।

भैया—हिटलरने खुद कहा था, कि मै तीन मासमें रूसको पीस दूँगा। रूसके ऊपर हमला होते ही चर्चिलके जानमें जान आई। चेम्बरलेन बेचारा तब तक मर गया था, नहीं तो न जानै उसे क्या होता। चर्चिल को अभी तक पूरी आसा नहीं थी। लेकिन अब उसे विसवास होने लगा, कि रूसके कारण इङ्गलैण्ड बच जायगा। हिटलरने अपने दाहिने हाथ हेसको विलायत भेजा। हेस जिस बड़ी जोंकके घरके पास उतरना चाहता था, वहाँसे दूर किसी जगहमें उसे हवाई जहाजसे उतरना पड़ा। लोगोंने पकड़ लिया। बात पहिले हीसे खुल गई। तब भी विलायतकी जोंकोंको उसने बहुत समझानेकी कोसिस की—हिटलर इङ्गलैण्डसे दोस्ती करना चाहता है, वह सिर्फ बोलसेविकोंको खतम करना चाहता है। वह पक्का वचन देनेको तैयार है, कि हम कभी इङ्गलैण्ड और उसके राज-की ओर आँख नहीं लगायेंगे। लेकिन आप लोग हिटलरसे दोसती कर लें। उसने बहुत समझानेकी कोसिस की कि बोलसेविक ही हम सबके सबसे बड़े दुस-मन हैं। हिटलरके इस काममें सबको मदद देनी चाहिए।

दुखराम—तो विलायती जोंकोंने हिटलरकी बात क्यों नहीं मानी भैया? वह तो उन्हींकी भलाईकी बात कह रहा था।

भैया—हिटलरकी बातपर कैसे विसवास कर लेते? चर्चिल जानता था कि जो रूस भी खतम हो गया, तो हम अकेले हिटलरसे कभी नहीं बच सकते। उस वक्त अकेले लड़ना अपने ही हाथों अपने गलेमें फाँसी लगाना होगा।

सन्तोखी—यह तो ठीक है, लेकिन बिलायती जोंकें बोलसेविकोंको भी तो अपना दुसमन समझती थीं।

भैया—रूसपर हमला होते ही चर्चिलने रेडियोबाजामें तुरन्त कहा, कि इङ्गलैण्ड तन-मनसे रूसके साथ है। साथ ही उसने कहा था, कि बीस बरसमें मैंने बोलसेविकोंके खिलाफ जो कुछ कहा है, उसमेंसे एक अच्छर भी लौटानेके लिए तैयार नहीं। यह सब कहते हुए भी चर्चिल इतना जानता था, कि बोलसेविक हिटलरकी तरह दूसरे देसोंमें अपनी फौज भेजकर वहाँके सहरोंको उजाड़कर बच्चों-बूढ़ोंको मारकर रूसका राज कायम करने नहीं जायँगे। इसीलिए चर्चिलने उस बखत हिटलरके छुटभैया हेसको बातको ठुकरा दिया और इस्तालिनसे हाथ मिलाया।

सन्तोखी—और हिटलरकी फौज जोरसे आगे बढ़ती गई।

भैया—जोरसे बढ़ती गई। और मैं कहूँ सन्तोखी भाई! मुझे एक छनके लिए भी कभी मनमें नहीं आया, कि हिटलर लाल सेनाको हरा सकेगा; किन्तु जितनी तेजीसे वह मास्को और लेनिनग्रादकी ओर बढ़ रहा था, उससे दिल घबरा रहा था। मास्कोके बीस मील नजदीक पहुँचकर जब लाल पलटनकी मार पड़ी और जिस बखत जोंक गुंडोंको पीछे हटना पड़ा, तो लोगोंको पता लगने लगा, कि लाल पलटनने पहिलेसे अपने लड़नेका ढंग सोच लिया था।

सन्तोखी—लेकिन भैया! लाल पलटन इतना पीछे क्यों हटती गई? पहिले ही क्यों नहीं पूरी तागतसे लड़ी?

भैया—सन्तोखी भाई! जो कोई आदमी जोरसे बेल फेंक रहा हो और तुम सीधे अपनी हथेलीपर ओड़ने (रोकने) जाओ, तो पत्थरकी तरह चोट लगेगी; लेकिन तुम दोनों हथेलीके बीचमें उसको आने दो और जैसे ही हाथको छुए वैसे ही हाथको बित्ता दो बित्ता पीछे हटा लो, तो फिर बेलका सारा जोर खतम हो जायगा। इसी तरह लाल पलटनने सोचा कि हिटलर अपनी सारी तागतसे हमला कर रहा है। कहाँ ज्यादा हमला करना है और कहाँ कम यह बात भी वही जानता है, इसलिए इस बखत सरबसकी बाजी लगाकर लड़नेमें हमारा नुकसान ज्यादा होगा। वह हिटलरकी चोटको सहते हुए पीछे हट गई। लेकिन

कहाँ पहुँचकर फिर पीछे नहीं हटना है, यह भी वह जानती थी। हिटलरने गाल बजाया था, कि रूसको तीन महीनेमें खतम कर दूँगा। मास्को पहुँचनेका दिन तक घर दिया था और सिपाहियोंमें बाँटनेके लिए ढेरके ढेर तमगे भी ढाल लिए गए थे। लेकिन मास्कोके नजदीक पहुँचते जैसे ही लाल पलटन अपना पंजा बाहर निकालकर झपटी, कि हिटलरको लाखके करीब बढ़िया जवानवाली अपनी मजबूत पलटनको मरवाकर पचासों मील पीछे हट जाना पड़ा। लेनिनग्रादसे दस मीलपर हिटलरी पलटन पहुँच गई। और नौ सौ दिन तक घेरा डालकर बैठी रही, लेकिन मजाल था कि एक कदम आगे बढ़े। इन दोनों बातोंने बतला दिया, कि लाल पलटनका पीछे हटना हारे हुए जोधाका भागना नहीं था।

दुखराम—तो यह उसकी दाव-पेंच न थी भैया ?

भैया—हाँ, दाव-पेंच थी। इस तरह हिटलरको जब सीधे मास्कोपर चढ़ाई करनेकी उम्मेद न रही, तो वह आगेसे घेर लेनेके लिए बोरोनेजपर कचकचाके पड़ा, लेकिन लाल पलटनने उसका दाँत तोड़ दिया और वहाँ से भी हिटलरी गुंडोंको पीछे हटना पड़ा। यह तीसरी जगह थी, जिसने बतला दिया कि लाल फौजके तरकसमें अभी बहुत तीर हैं।

दुखराम—सचमुच ही भैया ! हिटलर और उसकी सेना गुंडोंकी सेना है, नहीं तो इस तरह बचन देकर तोड़ते।

भैया—बचन तोड़नेकी ही बात नहीं है दुक्खू भाई ! हिटलरने जो जुलुम रूसमें किया है, वैसा कभी नहीं सुना गया। वीरका काम है लड़नेवालेसे लड़ना न कि बरस-बरसके बच्चोको मारते जाना ?

दुखराम—क्यों भैया ! हिटलरने बच्चोंको भी मरवाया ?

भैया—एक दो नहीं पचासों हजार। कितनोंको बिखवाली हवा देकर मारा, कितनोंको खून निकाल-निकालकर मारा।

सन्तोखी—क्या खून भी पीते हैं भैया ?

भैया—वह पीने ही जैसा था। लड़ाईमें जो बहुत घायल होते हैं, उनको ताजा खुन पिचकारीसे देना पड़ता है। सब जगह आजकल खून जमा करनेका

इंतिजाम है। जवान हट्टे-कट्टे आदमीके शरीरसे खून लिया जाता है। दस सेर खूनमेंसे छटाँक दो छटाँक खून लेनेसे आदमी नहीं मरता। मैं भी दो-तीन बार खून दे आया हूँ।

दुखराम—तो भैया! तुम्हें तकलीफ नहीं हुई?

भैया—तुमने कभी दवाईकी सुई ली है दुक्खू भाई!

दुखराम—हाँ भैया! एक बेर तिल्ली (बरबट, पिलही) बढ़ गई थी, उसीके लिए चार-पाँच सूई ली थी।

भैया—तो सुई देनेमें तकलीफ हुई थी कि नहीं?

दुखराम—क्या तकलीफ होगी, जरा-सा छुन-सा काँटा-सा लगा, और फिर सूईके पीछे पिचकारीमें भरी दवाको नसमें डाल दिया।

भैया—उसी तरह सूई चुभाकर पिचकारीमें खून निकालनेसे कोई तकलीफ नहीं होती, लेकिन जो ज्यादा खून निकाल लिया जाय तो आदमी मर जाता है।

दुखराम—तो राक्षसोंने ज्यादा-ज्यादा खून निकालकर बच्चोंको मार डाला?

भैया—हजारों बच्चोंको खून निकालके मारा, हजारों बच्चोंको गोली दाग के मार दिया, हजारों बेकसूर बूढ़ोंको मारा। औरतोंको तो लाखोंकी तादादमें मारा। हाथ बाँधकर लोगोंको सहरके बाहर ले जाते और हुक्म देते कि खाईं खोदो। खाईं खोदनेपर, फिर तड-तड गोली चला देते, और सब उसी खाईंमें गिर जाते।

सन्तोखी—आदमीका दिल कैसे इतना राच्छस जैसा हो सकता है?

भैया—मैं भी सन्तोखी भाई! इन बातोंपर विसवास नहीं करना चाहता था। जानते हो न, लड़ाइमें झूठ-साँच भी बहुत चलता है; लेकिन जब लाल फौजने हिटलरी गुन्डोंको पीछे ढकेलना शुरू किया और कमेरोंके सहर और गाँव फिर आबाद होने लगे, तो उन खाइयोंको खोदा गया। पिघली हुई बरफके नीचे सैकड़ों लासें निकलीं। उनका फोटो लिया गया। मैंने उन फोटुओंको बम्बईमें देखा, तो सच कहता हूँ दिल खौलने लगा। नन्हे-नन्हे बच्चे, दो बरस, तीन बरस, चार बरसके एक नहीं, दो-दो नहीं, पाँच-पाँच, सात-सात सौ मरकर सूखे पड़े हुए थे। औरतोंको पेट फाड़कर बेइज्जती करके मारा गया। सैकड़ों बेकसूर

आदमियों को फाँसीपर झुलाकर महीने महीने तक सहरके चौरस्तेपर लटका के छोड़ दिया गया।

दुखराम—तो इन राच्छसों को गुन्डा ही कहने से काम नहीं चलेगा, और कोई नाम ढूँढ़ना चाहिए।

भैया—उनका जुलुम भी ऐसा है दुक्खू भाई, कि जुलुम कहनेसे वह पूरा समझमें नहीं आ सकता। लेकिन जब गुन्डोंने इस तरह जुलुम करना शुरू किया, एक-एक सहर में चालिस-चालिस पचास-पचास हजार निहत्थे आदमियों-को मार डाला; तो सोवियत-निवासियोंने भी जानपर खेलना सुरू किया। बारह बरसके लड़कोंसे सौ बरसके बूढ़ो तकने जान हथेलीपर रखकर गुन्डोंके साथ मुकाबिला करनेका निहचय किया। जो इलाका जर्मनीके भी हाथ में चला गया था, वहाँके कितने ही नरनारी जंगलोंमें भाग गये। उन्हें तो अपने इलाकेका कोना-कोना मालूम था, गाँवकी गली-गली अँगुलीपर थी। वह रातको जिस वक्त भी मौका मिलता, जर्मन पलटनियों पर छापा मारने लगे। छापा मारके सिपाहियों के बन्दूक मसीनगन सब छीन लेते थे। कुछ ही समय में सारा इलाका छापामारोंसे भर गया और जर्मनोंको अपनी छावनियोंसे बाहर निकलने की हिम्मत न रही।

दुखराम—छापामार क्या भैया ?

भैया—अपने दुसमनोसे बदला लेने के लिए वह बहादुर लोग दिन या रातको, इक्के-दुक्के या गफलतमें पाकर हमला करते, इसीको छापा मारना कहते हैं। इसीलिए इन बहादुरों को छापामार कहते हैं।

सन्तोखी—हाँ भैया ! जब बराबरका जोर नहीं हो और एकके पास बड़े-बड़े हथियार और दूसरे के पास मुसकिलसे कहीं एकाध बन्दूक हो, फिर यह छोड़ दूसरा रास्ता क्या था ?

भैया—हाँ सन्तोखी भाई ! जर्मनोंके पास हजार-हजार पन्द्रह-पन्द्रहसौ मनके टक थे अनगिनत हवाई जहाज थे, बड़ी-बड़ी तोपें थीं, मिनट-मिनट में हजार गोली चलानेवाली मसीनगनें थीं। उधर लाल पलटन पीछे हट गई थी, और वहाँ रह गये थे गावों-सहरोंके निहत्थे नर-नारी। किन्हीं-किन्हीं गाँवोंमें तो

बन्दूकें भी न थीं, क्योंकि जर्मन गाँवमें पहुँचते ही बन्दूक छीन लेते थे, बादमें खाने पीने की चीजें, रुपया-पैसा छीनते थे। लेकिन सोवियतके कमेरे जानते थे, कि हमारे सरगमें यह राच्छस घुस आए हैं। इनको सान्तिसे नहीं बैठने देना होगा। कभी-कभी तो बिना एक भी बन्दूकके छापामारोंने अपना काम सुरू किया। जंगलमेंसे आकर कहीं अँधेरेमें छिपे रहते। जोखिम तो था, लेकिन गाँवके लोग जंगलमें छिपे छापेमारोंके पास खाना पहुँचाते थे, गुन्डे कहाँ-कहाँ हैं, इसकी खबर देते थे। गुन्डे सिपाही चौबीस घन्टा तो सजग नहीं रह सकते और न चौबीसों घन्टा एक जगह एक हातेमें बन्द रह सकते थे। छापेमार अचानक उनके ऊपर कुल्हाड़ा, कुदाल; भाला कोई चीज लेकर टूट पड़ते। चार गुन्डोंको मारा, तो चार बन्दूक और गोली-गन्ठा मिला।

सन्तोखी—फिर तो सूद-मूर लेकर इसी तरह बढ़ता चला जायगा।

भैया—हाँ, दो बन्दूक छीनी, फिर दो बन्दूक लेकर छापे मारे और चार नई बन्दूकें हाथमें आईं। इस तरह सैकड़ों, हजारों बन्दूकें, मसीनगनें हाथके बम, पिस्तौल और बहुत से हथियार छापामारोंके हाथमें चले आए। टैंक और बड़ी तोप भी कभी-कभी पकड़ लेते थे, लेकिन उनको जंगलमें ले जाकर छिपाना आसान नहीं था। बाकी हथियारोंको छापेमार खूब चलाते थे।

दुखराम—खूब जवाब दिया भैया! रूसके कमेरोंने और खूब बहादुरी दिखलाई।

भैया—दुनिया चकित है दुक्खू भाई! उनकी बहादुरीसे। जर्मन सिपाहियों हीको वह नहीं मारते बल्कि रास्तेकी सड़कों, पुलों, रेलोंको तोड़ देते थे, जिसकी वजहसे जर्मनोंको सामान पहुँचाना मुश्किल होता था। उनके सामनेसे लाल पलटन लड़ रही थी, और पीछेसे लड रहे थे लाखों छापामार और छापामारिनें। इतने बहादुर लड़नेवाले साथी अँगरेजोंको मिले, तब उनका भी हौसला बढ़ा।

सन्तोखी—भैया, रूसके कमेरोंकी बहादुरी और उनको मरकस बाबाके रास्ते-पर चलनेकी बात देखकर तो मैं समझता हूँ, कि दुनिया भरके कमेरे उनके साथ

प्रेम करते हैं। सगे भाईकी तरह समूची दुनियाके कमेरोंका दुख-सुख एक सा है, और हैं भी वे सगे भाई। लेकिन अँगरेज जोंकें जो अबकी बच गईं, यह अच्छा नहीं हुआ।

भैया—जब पहले जोकोंकी लड़ाई थी, तो सन्तोखी भाई, मैं तुमसे क्या कहता था?

सन्तोखी—यही कि तालुकदारोंके झगड़ेमें हमको मरने की जरूरत क्या? भले दोनों लड़ मरें।

भैया—हाँ, तो उस वक्त लड़ाई जोकों-जोंकोंकी थी, विलायती जोकें दो सौ बरसोंसे हमारा खून चूस रही हैं, उन्होंने हमारी छातीपर कितना कोदो दला उस सबको देखकर हम क्यों इन जोंकोंकी मदद करने जाते। लेकिन जब गुन्डा हिटलर कमेरोंके राजपर चढ़ दौड़ा, तो बिलकुल रंग बदल गया। पानीकी नाली बह रही हो, तुम उसमेंसे अँजली भरकर पियोगे, प्यास बुझाओगे; लेकिन, उस नालीमें जैसे लाल जहरकी पुड़िया डाल दी जाय, तो उस पानीका गुन बदल गया न?

दुखराम—हाँ भैया, हिटलरने जिस दिन हमारे कमेरे भाइयोंपर हमला किया, बच्चोंको खून निकालकर मारा, निहत्थोंको उनके हाथ कबर खुदवाकर गोली चलवाई, तो दुनियामें कौन कमेरा—किसान-मजूर—होगा जिसकी आँखसे आग न निकलने लगे और हिटलरको कच्चा खा जाने के लिए तैयार न हो?

भैया—ठीक कहा दुक्खू भाई! हिटलरने जिस दिन सोवियतके कमेरों-पर हमला किया, उसी दिन दुनिया भरके मजूरों-किसानोंपर हमला कर दिया। हिटलर जोंकोंका सबसे बड़ा खूनी राज कायम करना चाहता था, उसने अपने यहाँ के किसानों-मजूरोंको पीसा। पहिले हीसे हम यह सब जानते थे और हिट-लरको फूटी आँखों भी देखना नहीं चाहते थे, लेकिन जब तक उसकी लड़ाई सिर्फ जोंकोंसे रही, तब तक एक जोंकको छोड़कर दूसरी जोंकको हम कैसे पसन्द करते? लेकिन अब बात वैसी नहीं थी। जो हिटलर रूसको जीत लेता, तो दुनियासे मजूर-किसान-राज खतम हो जाता। हजारो बरसोंसे बड़े-बड़े महात्माओं

और त्यागियोंने सपना देखा था, कि एक ऐसा मानुख-समाज हो, जिसमें जोंकों-का नाम न रहेगा। उनका सपना ठीक था, लेकिन वह ठीक रास्ता नहीं जान सके।

दुखराम—रास्ता तो मैया मरकस बाबा हीने बतलाया।

मैया—हाँ, मरकस बाबा हीने बतलाया। फिर पेरिसमें लाखों मजूरोंने प्राण दिया कमेरा राज्य कायम करनेके लिए; फिर रूसमें करोड़ों कमेरोंने लड़ाई और भूखसे जान दी, तब जाकर दुनियामें पहले पहल एक मजबूत कमेरा-राज कायम हुआ। पचीस बरसमें उसने दुनियाके छठे हिस्सेको बहुत कुछ सरग-सा बना दिया। उसको देखकर दुनिया भरके कमेरों की हिम्मत बढ़ी कि हम भी किसी दिन जोंकोंको निकालकर बाहर करेंगे। जो रूससे कमेरा-राज खतम हो जाता, तो दुक्खू भाई! यह सारी दुनियाके कमेरोंका नुकसान होता कि सिर्फ रूस ही वालो का?

दुखराम—सारी दुनियाके कमेरोंका मैया! मैं तो जानता हूँ कि खूँटेके बलसे बछरू (बछड़ा) कूदता है। जब हमने रूसके कमेरा-राजके बारेमें सुना, तो उसीसे हमारी भी हिम्मत बढ़ी, और हम भी लाल झण्डा लेकर कूदने लगे।

मैया—एक सड़ी मछली सारा तालाब गन्दा कर देती है, दुनियामें एक भी जोंक बच जाय, तो भी कमेरोंके लिए खतरा है। और एक बार मानुखजातिमें जोंकें इतनी भारी हारके बाद जो फिर पहिलेकी तरहसे सारी दुनियापर छा गईं, तो लाल झण्डा फहराना सैकड़ों बरसोंकी बात हो जायगी। दुनिया जोंकोंके लिए अकण्टक हो जायगी।

मैया—इसलिए दुक्खू भाई, जिस दिन हिटलरने सोवियतपर धावा बोला, उसी दिन मैंने अपने दोस्तोंसे कह दिया, कि अब जोकों जोंकोंकी लड़ाई नहीं रही। हिटलरके हरानेका मतलब है, कि जोंकोंके सबसे बड़े गुन्डेको खतम करना; ऐसे गुन्डेको खतम करना जिसकी ओर सारी दुनियाकी जोंकें आसा लगाये बैठी हैं। सोवियतकी जीत दुनिया भरके कमेरोंकी जीत है।

सन्तोखी—यह बात साफ मालूम हो रही है मैया!

भैया—हिटलरने जब मासको लेनिनग्राडका रास्ता बन्द देखा, तो वह दक्खिन-से बढ़ा और बढ़ते-बढ़ते बोल्गा-गंगाके किनारे बसे तालिनग्राद सहर तक पहुँच गया। इस्तालिन वीरने अपने लाल जरनैलोंको हुकुम दिया, कि अब एक कदम भी पीछे नहीं हटना है। और वह एक कदम भी पीछे नहीं हटे। यहीं-पर हिटलरको सबसे बड़ी हार खानी पड़ी। उसके दो लाख सिपाही मारे गये और एक लाख सिपाहियोंको लाल पलटनने कैद किया। हिटलरको जो वहाँ हार नहीं हुई होती, तो वह बाकू होते बाकूकी तेलकी खानोंको लेते ईरान में पहुँचता और फिर उसके बाद हिन्दुस्तान ही रह जाता था।

दुखराम—तब तो भैया इस्तालिनग्रादकी लड़ाई रूसके ही कमेरोंके लिए खतरेकी चीज नहीं थी, बल्कि हिन्दुस्तानके लिए भी खतरा हो गया था।

भैया—फिर हिटलरी गुंडे हिन्दुस्तान भी आते। यहाँ भी वे लाखों औरतों की इज्जत लूटते, बच्चों-औरतोंके खूनसे अपने हाथ रँगते और सैकड़ों सहर और गाँव जलाकर छार कर डालते। लेकिन लाल पलटन हिटलरका दाँत खट्टा करने के लिए तैयार थी। स्तालिनग्रादपर मार खाकर जो हिटलर पीछेकी ओर भगा, तो भागता ही गया; फिर उसका पैर कहीं नहीं ठहरा। हिटलर एक हजार मील तक सोवियतकी धरतीमें घुस आया था, लेकिन अब पिटाई सुरू हुई। पागल सियार गाँव की ओर आया, जब लाठी पड़ने लगी, तो अपनी माँदकी ओर भगा। सोवियतकी अंगुल-अंगुल धरतीसे पापी निकाले गए। अब वह अपनी धरतीपर भगकर गये लेकिन लाल फौजने इन पागल सियारोंको माँदमें बैठकर भी जीने नहीं दिया। उसने ते किया था कि पागल सियारोंमेंसे एकको भी नहीं छोड़ेंगे।

दुखराम—और भैया, इन गुंडोंने जो बच्चोंको मारा औरतोंको इज्जत बिगाड़ कर गोली मारी इसका भी बदला खूब लेना चाहिए था। इन गुंडोंको कुत्तेकी मौत मरना चाहिए था।

भैया—लाल पलटन बदला लेती नहीं है दुक्खू भाई, लेकिन पागल बनकर नहीं। स्तालिन वीरने कह दिया कि जर्मनीके कमेरोंको वहाँकी जनताको हम अपना दुसमन नहीं मानते। राच्छस आततायी हैं हिटलरी गुंडे, हम इन्हीं गुंडों-

को उनके कियेका मजा चखायेंगे। फिर जर्मनीकी जनता गुंडोंके हाथसे छुट्टी पायेगी।

सन्तोखी—तब तो भैया, जर्मनीमें भी अब जोंकोंकी खैरियत नही। वहाँ भी हिटलरी गुंडोंके खतम होनेके बाद कमेरोंकाही राज कायम होना था लेकिन बिलायत और अमेरिकाकी जोंकें इसको क्या पसन्द करने लगीं ?

भैया—जोंकें क्यो पसन्द करने लगीं ? लेकिन इस्तालिन वीरने कह दिया कि वहाँ कैसा राज कायम हो, इसे वहाँ हीके लोगोंपर छोड़ देना चाहिए। लाल पलटन अपने मनका राज कायम करनेकी कोसिस नहीं करेगी और न इंग्लैंड-अमेरिकाको ऐसी कोसिस करनी चाहिए।

सन्तोखी—लेकिन भैया, बाहरकी जोकोंने जो मदद नहीं किया और उधर जर्मनीकी बड़ी-बड़ी जोंकें और उनके नायक हिटलरी गुंडे खतम हो गये, तो वहाँ कमेरोका राज छोड़ दूसरा कौन राज कायम हो सकता था ?

भैया—लेकिन संतोखी भाई इंग्लैंड और अमेरिकाकी जोंकें चुप तो नहीं रह सकतीं। सोवियत और लाल पलटनको देखने हीसे उनका प्राण निकल रहा था, जो सात करोड़के जरमनीमें भी कमेरा राज कायम हो गया, तो दुनियामें जोंकें कै दिन टिकेंगी ?

दुखराम—तो क्यों नहीं भैया, कि जोंकों ने हिटलरसे सुलह कर ली ?

भैया—सुलह नहीं कर सकती थीं सन्तोखी भाई। जिस दिन चर्चिल सुलह की बात भी जीभ पर लाता, उस दिन ही बिलायतके जोंकोंकी खैरियत नहीं थी। बिलायतके लोगोंने सैंतीस साल पहिलेकी लड़ाईमें भी अपने लाखों बेटोंको मरवाया, उस वक्त भी बिलायती जोंकोंने उसके सामने बड़ी लम्बी-लम्बी बातें कहीं थीं जिनसे मालूम होता था, कि अब कमेरोंकी जिन्दगी सरगकी जिन्दगी हो जायगी। लेकिन जब वह लड़ाई खतम हुई, उसके बादके इक्कीस सालोंमें उनकी जिन्दगी और अधिक नरक बन गई। तीस-तीस चालिस-चालिस लाख तक आदमी बेरोजगार हो गए, उन्हें भूखे मरना पड़ता और बाल्डविन चेम्बरलेन जैसी जैसी जोंकोंने हजारोकी जगह लाखों का नफा कमाया। जब तक हिटलर

खतम नहीं हो जाता, तब तक बिलायती जोंकोंको पैंतरा बदलनेके लिए कोई जगह नहीं थी।

सन्तोखी—लेकिन हिटलर के खतम होनेके बाद वह रूससे क्यों ना लड़ीं ?

भैया—तुम यही ख्याल करके कह रहे हो न सन्तोखी भाई ! कि जोंकें नहीं चाहेंगी कि जरमनी जैसे बड़े मुल्कमें कमेरोंका राज हो, जिससे सारी दुनिया की जोंकोंके आगे अँधेरा छा जाय। लेकिन इस लड़ाईका फल क्या हुआ, इसके बारेमें हम किसी दूसरे दिन बतलायेंगे। अब तुमको यह जानना चाहिए कि क्या बात थी कि हिटलरी फौजके सामने फ्रासकी जैसी जबरदस्त सेना तीन हफ्ते भी नहीं ठहर सकी। हिटलर तीन महीनेमें रूस ले लेनेकी बात कहकर गाल बजाता ही रहा, लेकिन वह रूसकी धरती छोड़कर अपने घर में भी नहीं लड़ सका ?

सन्तोखी—भैया, गुन्डे बहुत दिन तक कहाँ डट सकते थे ? उनके सिरपर काल नाच रहा था।

भैया—ठीक है और इसका कारण यही हुआ कि पागल कुत्ता रूसकी ओर दौड़ा। मैंने बतलाया न कि सोवियतके कमेरे कितने तैयार थे। लाल सिपाही तनखाहके लिए नहीं लडता था।

दुखराम—तनखाहके लिए लड़ते हैं जोंकोंके सिपाही। जोंकें तनखाह छोड़कर कोई ऐसी चीज उनके सामने नहीं रखतीं, जिसके लिए वह जी जान-से लड़ें।

भैया—रूस में कमेरे अपने ही अपनी पंचायत चुनते हैं और यही पंचायत राज चलाती है। गाँवमें भी १८ बरससे बेसीके मर्द-औरत वोट देकर पंचायत चुनते हैं, जिलेकी भी पंचायत वही चुनते हैं, अपने-अपने प्रजातंत्रकी भी पंचायत उन्हींको चुनना होता है। फिर हिन्दुस्तान ऐसे सात देसोंके बराबर सारे सोवियत देशकी सबसे बड़ी पंचायत वही चुनते हैं।

दुखराम—तो नीचेसे ऊपर तक सब पंचायती ही काम है भैया !

भैया—हाँ, सब पंचायत है। सबसे बड़ी पंचायत (महासोवियत) के लिए

तीन लाख आदमीपर एक आदमी चुना जाता है। उस पंचायतके दो हिस्से या घर हैं, एक घरके लिए हर तीन लाखपर एक आदमी चुना जाता है, दूसरे घरके लिए हर खोमका बराबर आदमी चुना जाता है, चाहे कोई खोम पचास ही हजार आदमियोंकी हो। रूसी खोमकी आबादी बारह करोड़के करीब है और हिन्दुस्तानके पड़ोसमें रहनेवाली ताजिक खोम चौदह ही लाख है, लेकिन दोनों पचीस ही पचीस पंच चुनते हैं; इसीलिए कि जिसमें ज्यादा आदमी रहनेवाली खोमके ही पंच न अधिक चुन लिए जायँ। यही बड़ी पंचायत सारे सोवियत देसके मन्त्रियोंको चुनती है। इस्तालिन वीरने सोवियत को जितना धनवान, बलवान बना दिया है, उसके कारन सोवियतका बच्चा-बच्चा उसे प्रानसे भी अधिक प्यारा समझता है। लेकिन इस लड़ाईके पहिले इस्तालिन वीरने कोई सरकारी दर्जा नहीं लिया था। जब लड़ाईका खतरा बहुत बढ़ गया, तो बड़ी पंचायतने इस्तालिनको ही अपना महामंत्री और महासेनापति बनाया।

दुखराम—और इस्तालिन वीरने वह करामात दिखाई, कि सोवियत क्या दुनियाभरके कमेरे कभी उसका उपकार नहीं भूलेंगे।

भैया—सोवियतने अपने को फौलाद जैसा मजबूत बनानेका काम बहुत पहलेसे सुरू कर दिया था। जनरैल, जानते हो, पलटनका सबसे बड़ा अफसर होता है, उसके ऊपर मार्सल होता है। जोकोंके राजमें पचास बरसकी उमर से पहिले कोई जनरैल बननेका सपना भी नहीं देख सकता। लेकिन सोवियतमें बत्तिस-बत्तिस, तैंतिस-तैंतिस बरसके जनरैल हैं। पैंतिस-छत्तिसके तो वहाँ मार्सल हैं। कुछ साल पहिले जो यह बात सुने होते, तो बिलायतकी जोकें जानते हे क्या कहतीं?

दुखराम—क्या कहतीं भैया?

भैया—कहतीं, कि जिनको अभी माँका दूध पीना चाहिए, उन छोकरोंको जनरैल बना दिया।

दुखराम—तो जोंकोंके यहाँ बूढ़ों हीका मान ज्यादा है?

भैया—सोवियतमें भी बूढ़ोंका मान करते हैं, लेकिन जवानोंपर उनका विसवास ज्यादा है। जानते हो न लड़ाईके हथियार और लड़ाई के दाँव-पेचं

रोज नई बातें निकलती आती हैं। नई बातोंको नया दिमाग जितनी चल्दी पकड़ सकता है, उतना जल्दी बूढ़ा दिमाग नहीं पकड़ सकता।

दुखराम—हाँ भैया! तीर धनुसके जमानेके जनरैल जो आजकी लड़ाईमें जनरैल बना दिए जायँ तो उनके दिमागमें तीर-धनुस ही ज्यादा रहेगा, उनकी पैंतराबाजी भी उसी जुगकी होगी। जुमराती दादाको देखते नहीं, नब्बे बरससे इधरकी कोई बात ही नहीं करते। लड़के साबुन लगाते हैं, तो उसपर भी गाली देते हैं। बहुओंके साबुन लगानेकी बात सुनते हैं, तो कह देते हैं—बस बस बेसवा हो गई। बूढ़ोंका दिमाग ऐसा ही होता है न? मैं तो समझता हूँ भैया! फ्रांसके इतना जल्दी हारनेके भी कारण ऐसे ही बूढ़े जनरैल रहे होंगे।

भैया—यह बात बिल्कुल ठीक है दुक्खू भाई! बिलायतके जनरैलोंकी भी वही हालत थी। पाँच हिस्सामें चार हिस्सा हिटलरकी फौज लाल सेनासे लड़नेमें लगी हुई थी। लेकिन पाँचवे हिस्से की पलटनसे भी लड़नेमें यह बूढ़ जनरैल चींटीकी चालसे बढ़ते थे। अफरीकामें यही देखा, इटलीमें यही देखते रहे और फ्रांसमें भी अँगरेजोंकी पलटन यही करती रही। एक तो इनके जरनैल पचास-साठ बरसके बूढ़े होते थे, ऊपरसे तालुकदारों और करोड़पतियोंके बेटे।

दुखराम—एक तो करैला दूसरे नीमपर चढ़ा, लेकिन जोंकोंका इसमें भी मतलब होगा कुछ भैया!

भैया—कुछ नहीं, बहुत मतलब है। एक तो बिलायतके तालुकदारों-जमीदारोंमें बापकी मिल्कियतका मालिक सिर्फ बड़ा लड़का होता है, छोटे लड़कोंको कोई नहीं पूछता; उनके लिए भी खाने-चबानेका कोई इन्तजाम होना चाहिए। दूसरे जोंकें भी समझती हैं, कि सिपाही तो कमेरोके बेटे हैं, जो अफसर भी कमेरोंके बेटे हो गये, तो पलटन हमारे हाथमें न रहेगी। पलटन हीके बलपर न जोंकें कमेरोंका खून चूस रही हैं? इसी वास्ते तालुकदारों और जोंकोंके ही लड़कोंको अफसर बनाया जाता है। जो कहीं मामूली आदमी किसी तरह घुसकर छोटा लफ्टेन्ट हो गया, तो बिना बड़े अफसरोंके सिफारिसके तरक्की होती नहीं और बेचारेको कप्तान और मेजर तक ही जिन्दगी बिता देनी पड़ती

है। दूसरी ओर सिफारिसके बलपर तालुकदारोंके नालायक लड़के भी खट-खट ऊपर चढ़ते चले जाते हैं।

दुखराम—तब तो भैया पलटनमें भी जोकोंने 'छीया छीया' कर दिया?

भैया—ऊपर भीतर, अगल-बगल सब जगह जोंकोंकी लास सड़ रही है। नाक बिना लोग परख नहीं पाते। यही भाग्य समझो कि लाल पलटन लड़नेके लिए चली आई, नहीं तो ये नवाबजादे कहींके नहीं रहते। ऊँगरेज कमेरों के लड़के लड़नेमें किसीसे कम नहीं। लेकिन सोवियतका कुछ दूसरा ढग है। वहाँ जवानोंपर पूरा विसवास किया जाता है। वहाँ तालुकदार, नवाब जोंकें रह ही नहीं गई हैं, कि उनके लड़के पलटनमें आवें और सिफारिसके बलपर जनरैल बन जायँ। वहाँ सिपाहीसे लेकर जरनैल-मार्सल तक सभी कमेरोंकी सन्तान हैं। तरक्की होनेमें कोई देर नहीं लगती, जो आदमी लायक है। कोयले की खानका मजूर वोरोसिलोफ मारसल बन गया। सोवियतमें लड़कोंके पढ़ने-लिखनेका इन्तजाम ही ऐसा है, जिसमें जिस कामके लायक काब्लियत है, वह वहाँ पहुँच जाते हैं।

सन्तोखी—क्या बात है भैया?

भैया—मैंने पहले बतलाया है न, कि वहाँ हर लड़के-लड़कीको जबरदस्ती पढ़ाया जाता है। मास्कोंमें नौ बरसकी जबरदस्ती पढ़ाई है और बाकी सारी सोवियत भूमिमें सात बरसकी—सातवें बरससे पढ़ाई सुरू होती है और चौदहवें-में खतम होती है।

सन्तोखी—हिन्दुस्तानसे सातगुना बड़ा सोवियत देश है न भैया? तो क्या वहाँ सब जगह एक-एक गाँवमें मदरसा है?

भैया—हाँ, जैसे हवा, पानी वैसे ही वहाँ पढ़ाई समझी जाती है। फिर लड़के तो मदरसामें सात बरसके होकर जाते हैं लेकिन उनकी पढ़ाई पैदा होते ही होने लगती है।

दुखराम—पैदा होते कैसे लड़का पढ़ेगा भैया?

भैया—हमने कहा था न, कि वहाँ बच्चोंके रखनेके लिए दाईघर बने हुए हैं। माँ जब काम करने जाती है, तो बच्चेको दाईघरमें दे आती है। दाइयाँ

बेपढ़ औरतें नहीं हैं, वह भी पढ़ी-लिखी रहती हैं और यह भी सीखे रहती हैं, कि बच्चोंको कैसे रखना चाहिए। पालनेवाला बच्चा पालनेमें झूलता है, आँख से जिस चीजके देखने, कानसे गाना सुनने या तरह तरहके खिलौनोंको देकर उनको बहलाया ही नहीं जाता, बिल्क हर तरह की चीजका ग्यान कराया जाता है। जब लड़के कुछ बोलने और बात समझने लगते हैं, तब उन्हें ग्यान बढ़ानेवाली छोटी-छोटी कहानियाँ सुनाई जाती हैं। लड़कोंके खेलनेके लिए हरेक दाई घरमें सैकड़ों खिलौने होते हैं मोटर होती हैं जो चाभी देनेसे चलती हैं। रेल और हवाईजहाज होते हैं, वह भी चलते हैं। कुछ बड़ा होनेपर लड़कों की अपनी रेलवेलाइन हैं, जिसमें इञ्जन चलानेवाला भी लड़का है, गार्ड भी लड़का ही है और तीन-तीन चार-चार मील तक वह अपनी रेल चलाकर लौटा लाते हैं।

दुखराम—भैया ! इतने छोटे-छोटे बेबूझ लड़कोंको इंजन थमा दिया जाता है, तो खतरा नहीं होता ?

भैया—खतरे की बात उनको पहले बतला दी जाती है। और उनका इञ्जन भी पाँच-छ मीलसे बेसी घन्टेमें नहीं चल सकता। लड़के तो देखते ही हो कि पहिले खड़े होते हैं, तो गिरते भी हैं, तो क्या पैर टूटनेके डरसे उनको खेलने न दिया जाया। कितने माँ बाप लड़कों को पेड़पर चढ़ने नहीं देते, पानीमें तैरने नहीं देते, लेकिन यह ठीक नहीं है। आदमीका बच्चा पान-फूल बनाकर रखनेके लिए नहीं है। जवान होनेपर न जाने वह कहाँ-कहाँ जाएगा, कहीं जंगलमें जान बचानेके लिए उसे पेड़पर चढ़ना होगा, नाव डूबनेपर तैरना पड़ेगा।

दुखराम—तो सन्तोखी भाई, तुम भी सामूको पान-फूल बनाकर रखते हो न ?

सन्तोखी—हाँ भैया, हमें भी यह बात ठीक नहीं मालूम होती, हाथ-पैर तो चारपाईसे गिरकर भी टूट सकता है।

भैया—लड़कोको बहुत तरहका खिलौना मिलता है, फिर कागज-पेंसिल मिलती है, वह अपने मनकी तसवीर खींचते हैं, गानेका खेल खेलाया जाता

है। तरह-तरहके गानोंको सीखते हैं, नकलका खेल खेलते हैं, लेक्चर (व्याख्यान) देते हैं, गिन्ती सीखते हैं और मुँहजबानी हिसाब लगाते हैं। फिर लड़कों के अपने सिनेमा होते हैं।

सन्तोखी—अपने सिनेमा क्या भैया ?

भैया—चार-छ बरसके लड़के सयानोंके सिनेमाको देखकर क्या समझ पाएँगे ? इसलिए उनके सिनेमामें कुत्ते, बिल्ली, भालू, गदहा इत्तादि आते हैं। और वह तरह-तरहकी हँसानेवाली बात कहते हैं, गाना गाते हैं, हँसी-हँसीमें ही जोंकों और कमेरोंके झगड़ेकी बात चली आती है। छ बरस तक उनको अच्छर नहीं सिखलाया जाता। अपने जो कहीं लुक-छिपकर किसी बड़े लड़केसे अच्छर सीख लें तो दूसरी बात है। दाई-घरमें रहते बखत ही गजबकी जेहनवाले बच्चे छाँट लिए जाते हैं। चार-चार साल तक उनकी खींचीं तसवीरें और उनकी तरक्कीको देखकर पारखी पहचान लेते हैं, कि यह लड़का आगे चलकर गजबका तसवीर बनानेवाला होगा।

सन्तोखी—हाँ भैया ! लड़के चीन्हा बहुत खींचना चाहते हैं, लेकिन हम लोग डाँट देते हैं कि कागज-पेन्सिल खराब करेगा।

भैया—वहाँ डाटते नहीं हैं, उन्हें रङ्ग-बिरङ्गी पेंसिल और कागज देते हैं। दाई घरमें एक उमरके लड़के एक कोठरीमें, तीन बरसवाले तीसरी कोठरी में। जो तुम किसी-दाई-घरमें पहुँच जाओ सन्तोखी भाई, तो बहुत हँसोगे। चार-चार बरसके दस-बारह लड़के कागज पेन्सिल लिये तसवीर खींच रहे हैं। कोई बिल्ली बना रहा है, कोई कुत्ता। कोई साँप बना रहा है, कोई चिड़िया। बीचमें एक दूसरेकी तसवीरकी ओर झाँक भी लेते हैं, फिर अपनी तसवीर बनानेमें लग जाते हैं। दाई छड़ी लेकर तसवीर नहीं बनवाती। सबने "अम्मा ! मुझे कागज-पेन्सिल दो, मुझे कागज-पेन्सिल दो" कहकर कागज-पेन्सिल लाए हैं और सब अपने मनसे तसवीर बना रहे हैं। अम्मा यह चालाकी जरूर करती हैं, कि उनके समझने लायक चीन्हेवाली कुत्ता बिल्लीके छपे कागजको जब तब फेंक देती है। बच्चे कितने ही बार समझते हैं, कि पड़ा हुआ कागज है और उसे आँखसे देखकर कागजपर उतारनेकी कोसिस करते हैं। वह जितने कागजको रद्दी करते हैं,

सबको फेंका नहीं जाता, एक-एक लड़केके कागजको नाम लिखकर जमा किया जाता है। तीन-चार बरसके बाद कौन लड़का गजबका तसबीर बनानेवाला होगा, यह समझना आसान हो जाता है। तसबीरकी ही तरह गाने, नकल करने लेक्चर देने, हिसाब लगानेमें गजबकी जेहनवाले लड़कोको भी छाँट लिया जाता है। लड़कोंके झगड़ेका फैसला लड़कोंकी पंचायत करती है और वह अपने ही अपना नेता भी चुनते हैं। दाई-घरमें रहते ही उन गजबकी जेहनके लड़कोंको पहचान लिया जाता है, जो कभी हजारों-लाखों आदमियोंके नेता बनेंगे।

दुखराम—भैया! हमारे यहाँ तो गरीब घरमें, चमार और अछूत कहे जानेवाले माँ-बापके घरमें, न जाने कितने गजबकी जेहनवाले बच्चे पैदा होते हैं, लेकिन कूड़े परके फूलकी तरह वहीं पैदा होकर बिना फूले ही कुम्हला जाते हैं।

भैया—यही समझो दुक्खू भाई, कि २० करोड़ आदमियोंमें एक भी गजब की जेहनवाला बच्चा न मुरझाने पायेगा, न जेहनवाला मुरझाने पायेगा, न कम जेहनवाला। गजबकी जेहनवाले लड़कोंके पढ़नेका अलग इन्तजाम होता है। घुड़-दौड़में दौड़नेवाले घोड़ेको बैलके साथ नाधने में नुकसान है। यह बत्तीस बरसके जो जरनैल थे, वह कमेरा राज्य कायम होते समय चार-पाँच बरसके रहें होंगे। उनको भी नई सिच्छा पानेका मौका मिला, और पीछेके लड़कोंको तो और भी।

सन्तोखी—जो ऐसा इन्तिजाम हमारे देसमें हो, तो हमारी ३५ करोड़की आबादीमें न जाने कितने गजबके तसबीर बनानेवाले, गजबके गानेवाले, गजबके नाटक खेलने, गजबके हिसाब लगाने वाले, गजबके नेता मिलेंगे?

भैया—यह है सन्तोखी भाई, जो लाल पलटन जरनैल लड़नेका इतना जबरजस्त दाँव-पेंच जानते हैं। जब दुसमन और दुनिया जानती थी कि लाल पलटन हारके भाग रही है, उस बखत वह दुसमनपर जाल फैलाकर चुपचाप बैठे हुए थे। जोंकोंकी पलटनमें छोटा लपटेन या थानेदार भी मामूली सिपाहीसे रे छोड़कर दूसरी तरहसे बात नहीं करेगा, लेकिन लाल पलटनका सबसे बड़ा अफसर जरनैल और मामूली सिपाही दोनों सगे भाई जैसे हैं। जब उरदी

डिउटीपर हैं तब वह सिपाही और वह जनरैल, बाकी बखतमें दोनों एक चार-पाईपर बैठेंगे, साथ खेलेंगे, कूदेंगे-नाचेंगे, हँसी-मजाक करेंगे। उस बखत देखने-वालेको पता ही न चलेगा, कि यह जननैल है और यह सिपाही।

दुखराम—जोंकों तुम्हारा सत्यानास हो।

भैया—स्तालिन बीरने अपने जननैलोंको एक बार कहा था, कि वह अफ-सर ठीक अफसर नहीं हो सकता, जो सिपाहीसे ऐसा काम कराना चाहता है; जिसे वह खुद नहीं कर सकता। अमेरिकाका एक अखबारवाला सोवियतकी लड़ाई देखने गया था। मैदानके पास पहुँचा, तो वहाँ मोटरका कोई ठीक रास्ता नहीं था। मोटर रुक गई। उसी बखत एक आदमी आया उसने फावड़ेसे काटकर रास्ता ठीक कर दिया। अमेरिकन अखबारवालेने आदमीकी उरदीको देखा, तो मालूम हुआ वह मेजर है। उसको बड़ा अचरज हुआ।

दुखराम—भला जोंकोंके मुलुकमें कपतान और मेजर फावड़ेपर थूक भी सकते हैं।

अध्याय ८

लाल चीन

गाँवकी चौपालमें आज फिर तीनों सयानोंकी बात चल पड़ी।

संतोखी—भैया, आज तो चीनकी बात बताओ। खबर कागजमें बहुत झूठ साँच सुनते हैं।

दुखराम—भैया, ई चीन औ महाचीन एकई है कि दो? और चीना लोग वहीं के रहवइयाँ हैं न? कलकत्तेमें तो उनका एक मुहल्ला ई है।

भैया—महाचीन औ चीन एकई है। हमारे देशके लोग पहलेइसे चीन को जानते हैं। वहाँके लोगोंमें बौध धर्म बहुत चलता है। हमारे देशको ऊ लोग अपना एक बड़ा तीरथ मानते हैं। दू हजार बरससे चीन और भारतमें भाईचारा चला, सो अब तक चलता ही जा रहा है।

दुखराम—दू हजार बरस से? तब तो बहुत दिनका सम्बन्ध है।

भैया—चीनसे बड़े-बड़े जातरी लोग हिन्दुस्तानमें आते रहे। हमारे देशमें ऐसी पोथी नहीं है, जैसी पोथी चीनके साधुओंने हिन्दुस्तानको देखके अपनी भाखामें लिखा।

संतोखी—तो चीनी भाखामें हमारे देशके बारेमें लिखा है?

भैया—हमारे देशकी हजारों पोथी चीनी भाखामें उल्था करके आज भी मिलती है। उनमें बहुत थोड़ी ही पोथी अब हमारे देशमें बँची है।

संतोखी—तब तो भैया चीनी लोगोका बड़ा उपकार मानना चाहिये।

दुखराम—महाचीन कहनेसे तो मालूम होता है, कि कोई भौत बड़ा देश होगा।

भैया—भौत बड़ा देश है। हमारे देशसे चौगुनासे कम नहीं है। औ वहाँ सैंतालीस करोड़ आदमी बसते हैं।

संतोखी—औ हमारे इहाँ पैंतीस करोड़, माने हमारे इहाँसे बारह करोड़-से बेसी बेकत परानी चीनमें हैं।

दुखराम—सुनते हैं भैया, कि चीन भी अब मरकस बाबाके रहता पर चलता है।

भैया—हाँ, बाईस बरस तक चीनके कमेरोंको जोंकोंसे लड़ना पड़ा। लाखो मरद मेहरारू, लड़का-बच्चा लड़ाईमें मारे गये और भूख-अकालसे जितने मरे, सो अलग।

संतोखी—जब रूसमें मरकस बाबाका पंथ चला, तब दुनिया भरकी जोंकोने उसके दबानेके कोसिस की, मुदा उनका कुछ नही चला, खाली लाखों परानियोंकी जान गई। चीन तो बेकतपरानीमें रूससे भी बेसी है।

भैया—रूस में बीस करोड़ आदमी बसते हैं, औ चीनमें सैंतालीस करोड़, दूनासे भी बेसी।

दुखराम—तो भैया, जोंकोसे लड़नेमें बाईस बरस काहे लगा?

भैया—जोकें भी वहाँ भौत थीं। औ दुनियाँकी सबसे बड़ी जोंकें चीनी जोंकोंके पीठ पर थीं।

संतोखी—अमिरिका तो जरूर पीठ पर रहा होगा?

भैया—ई जो बड़ी लड़ाई थी, उससे पहले तो अँग्रेज औ दूसरे मुल्कोंकी जोंकोंने पीठ ठोंका, हथियारसे मदद किया, अपने-अपने देशके जरनैल औ बड़े-बड़े लड़ाईके पंडितोंको भेजा। लड़ाईके बाद तो सबसे बेसी मदत अमिरिकाने दिया। उसका सोलह अरब रुपया इस मददमें गया।

संतोखी—इतना रुपया लगाते बखत मोह नहीं लगा ?

भैया—जोंके बड़ा-बड़ा जुआ खेलती हैं, जुआड़ी लालचके फेरमें पड़के दाँव पै जानते हो न रुपया लगानेमें आगापीछा नहीं करता। औ अमिरिकाने इतने रुपयेमें बेसी बढ़िया-बढ़िया लड़ाईके हतियार दिये !

संतोखी—तो मरकस-बाबाके चेलोंके पास तो इतने हतियार थे नहीं, औ पलटन ?

दुखराम—भागनेमें तो भौत नुकसान हुआ होगा ?

भैया—लाखों मरद; मेहरारू, बूढ़े-बच्चे मारे गये। रास्तेमें बड़ी तकलीफ हुई। जोंकोंकी पलटन चारों ओरसे घेरना चाहती थी। विदेसी जोंकोंने लड़ाईके उड़नखटोला दिये थे, जिनसे बम-गोला गिराते थे, सब कुछ नुकसान सहकर के अन्तमें जैमाला उन्हींके गलेमें पड़ी ?

भैया—दुक्खू भाई, मरकस बाबाने कहा था कि जनता पर विजय कोई नहीं पा सकता, कमेरोंका बल कोई नहीं तोड़ सकता। कमूनिस्त उसी जनता और कमेरों के लिये अपना परान देते हैं।

संतोखी—हाँ भैया, ई तौ मालूम है। इतने बेसवारथके आदमी कहीं-नहीं मिलेंगे। बड़े-बड़े पढ़वैया से लेके मजूर तक जोभी मरकस बाबाके चेलोंमें नाम लिखाता है, वह सब कुछ तकलीफ सहने, फांसी पर झूल जानेके लिये भी तैयार रहता है।

भैया—मरकस बाबाके चेले रकत-बीज हैं रकत-बीज। संतोखी भाई, रकत-बीज की कहानी तुमने सुनी है ? उसको ऐसा बरदान था, कि जो धरतीपर एक बूँद गिरेगा, तो उससे सौ बीर-बंका उसी तरहके और पैदा होंगे। बस वही बात है।

दुखराम—मुझको एक परतोख याद आता है। हमारे यहाँ बरसातमें सूरन

(जमींकन्द) पैदा होता है। एक सालका सूरन खोद लिया जाय, तो छटाक दो छटाकका ही होगा। मुदा हम लोग उसे एक सालमें नहीं खोदते, तीन-चार साल रहने देते हैं। गरमीमें उस जगह खोदें, तो मालूम होता है, कि वहाँ सूरन-ऊरन कुछ लगा ही नहीं था, सब अलोप हो जाता है, मुदा रोहिनीका छींटा परते ही फिर वह जम आता है। चितरा, स्वाती तक तो खूब बड़ा-बड़ा हरा-हरा पौधा दिखाई पड़ता है। फिर गरमीमें वह अलोप हो जाता है। मुदा साले साल ऊ बढ़ता ई रहता है। पहिले सालकी बरसात के बाद खोदने पर जो दो छटाकका निकलता, तो दूसरे साल पाव-डेढ़ पावका, तीसरे साल सेर-डेढ़ सेरका औ कोई-कोई तो अन्तमें तीन-तीन सेरका निकलता है। सूरन हर साल गलनेको गल जाता है मुदा फिर दूना तिगुना होके अगले साल निकलता है। जान पड़ता है, मरकस बाबाके पथ, उनके चेलों—कमूनिस्तोंकी भी यही बात है। एक बेर उनको अलोप देखके जोंके बड़ी खुसी मनाने लगतीं हैं, ढिउका दिया जलातीं हैं, ई खुसिहाली भौत दिन नहीं चलती।

भैया—ई कोई जादू-मंतर नहीं है दुक्खू भाई। लोग रोटी कपड़ाके मुहताज हैं। दुनियामें जिन्दगी उनको भार मालूम देती है। जब ओ सोचते हैं, कि मरकस बाबाका रहता छोड़ कोई दूसरा रहता नहीं है, तो हजार बिपता झेलने पर भी फिर धूर झाड़के उसी रहते पै चले आते हैं।

दुक्खराम—हाँ भैया, पेटकी भूख ऐसी ही होती है, उसे कैसे कोई भूल सकता है? सालमें छः महीना जब लड़का-परानीको आधा-पेट खानेके लिये भी अन्न नहीं जुरता; छोटे-छोटे बच्चोंका मुँह झुराया, आखें भीतर गड़ी, पेट सुटका, हाथ-पैर हड्डी-हड्डी देखाता है, तो साचैं कहूँ भैया, आदमी पागल हो जाता है। सोचता है—क्या करूँ कैसे करूँ कि इनके मुँह में दो दाना अन्न पड़े।

भैया—ठीक है दुक्खू भाई, कमूनिस्त तो परलोकका भी लालच नहीं देते, खाली यही पेटकी जो तकलीफ है, उसीका रहता बताते हैं। और उनका रहता बिलकुल ठीक है, ई बात भी जानने समझानेवाले ईमानदार आदमी मानते हैं। आज देखो हमारा देस दाने-दानेके लिये मोहताज है। इस साल तीन अरब

रुपया का अनाज बाहर से मँगाया गया जिसमें से आधा तो करज पर अमिरिका से लिया गया।

संतोखी—अमिरिका तो बड़ा भारी जोंक देस है भैया ! अपने देशको उसके हाथमें बंधक रखना क्या अच्छा है ?

भैया—मुदा, बिना बंधक रखे अमेरिका आनज थोड़े ई देता। हमारे देश-की जोंकें चाहें चीन औ रूससे अनाज सस्ता ही मिलै, औ बिना बंधक औ कड़ी सरतके मिलै, तो भी जोकें चाहती हैं कि अमिरिकनके ही हातमें अपने देशको दे'दें।

दुखराम—'चोर-चोर मौसियाउर भाई' ठीक ही कहा है।

भैया—हमारे देशकी जोंकें पागल हो गई हैं पागल। उनको कंसकी तरह सब जगह कन्हैया ही कन्हैया दिखाई देते हैं। वह समझती हैं, कि अमिरिकाके साथके गठबधन होनेसे हमारी रच्छा होगी, हिन्दुस्तानके कमेरे उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकेंगे।

संतोखी—मुदा चीनकी जोंकोंने तो अमिरिकासे गठबंधन किया था, वहाँ काहे नहीं अमिरिकाने उनको बचा लिया ?

भैया—जोकोंका जिव बड़ा कठोर होता है, वा अन्त तक मरना नहीं चाहतीं। चीनी जोंकोंका सरदार चांकैसक भागकर फारमूसा (तैवान) के टापूमें अपने भाड़ेके आदमियोंके साथ जाके बैठा है। अमिरिका उसको घी मलीदा खिला रहा है औ दोनोंको अब भी भरोसा है, कि चीनमें जाके फिर जोंकोंका राज ल्यायेंगे।

संतोखी—ई खाली मन का लड्डू है। एकबार जोंकों का राज जो मिटा, तो फिर लोग उसको आने नहीं देंगे।

भैया—जोकोंके राजके हटते ही संतोखी भाई, आदमी समझने लगता है, कि परान कैसे संकटसे बचा। हमारे देशमें जैसे अन्नका आज अकाल है, दो बरस पहले यही दशा चीनकी भी थी। वहाँ भी अमिरिकासे ढो-ढो कर अनाज जाता था। औ अमिरिकासे जो कुछ आता, उसमें से बेसी तो चांकैसकके भाईबन्द चोर बजरिहा दूना चौगुना पर बेचके पैसा बनाके रख लेते थे। अनाज

ही नहीं, पलटनके लिये आया हथियार भी वह कमूनिस्तोंके हातमें बेच डालते थे।

संतोखी—हाँ भैया, जोंकोंका तो टका ही धरम है टका ही करम है, वो काहे न ऐसा करेंगी। उनको पैसा मिलै, तो अपने बाप-मतारीको बेंच डालें। तो चीनमें कमूनिस्तोंको हथियार इसी तरह मिला ?

भैया—नहीं, कमूनिस्तोंके पास इतना पैसा कहाँ था, मुदा अमेरिकाका भेजा हुवा हथियार अन्तमें गया उन्हींके हातमें।

दुखराम—बिना दाम दिये ? सो कैसे भैया ?

भैया—जानते हो न दुक्खू भाई, लड़ाईमें लड़नेवाले सौ में से नब्बे किसानोंके ही पूत होते हैं। कमेरोंके पूत ही अपना परान देके जोंकोंकी रच्छा करते हैं। जब जोंकों-जोंकोंकी लड़ाई होती रही तब तो उनको भेद नहीं मालूम हुवा, मुदा जब जोंकों औ कमेरोंमें रन छिड़ जाता है, तो उनको बहुत दिनों तक धोखेमें नहीं रखा जा सकता। गुसाईं जीकी चौपाई जानते हो न ? 'उभय भाँति जानेसि निज मरना, तब ताकेसि रघुनायक सरना।' जब कमेरोंके पूत देखने लगे कि जिन्दगी भर उनका खून चूसनेवाली जोंकें हमें उरदी-पेटी पहनाके, हथियार देके अपने भाइयोंके सामने भेजके मरवाना चाहती हैं, तो उनके मनमें आता है, कि मरना है, तो अपने भाइयोंके लिये मरें, जोंकोंके लिये काहे मरैं।

संतोखी—औ कमूनिस्तों के पास भाड़ेकी पलटन तो नहीं है।

भैया—अपने लिये लड़ना औ परायेके लिये सो भी दुसमनके लिये लड़ना एक नहीं है, ई तौ बराबर अपने गाँवमें भी देखते रहते हो। अपने हक-पदके लिये आदमी सरबस दाँवपर लगा देता है। जोंकोंकी ओरसे भेजी जानेवाली हजारों नहीं लाखों पलटन अमिरिकाके दिये बढ़िया-बढ़िया हथियारोंके साथ जाके कमूनिस्तोंकी फौजमें मिल गई।

दुखराम—लाल फौजमें ना !

भैया—हाँ, कमूनिस्तोंकी फौजको लाल कहते हैं, तुम जानते ही हो।

संतोखी—जोंकें बड़ी सवारथी होती हैं भैया। अपने सवारथके आगे उनको

कुछ नहीं सूझता। तभी तो अपनी रच्छाके लिये मिला हथियार भी कमूनिस्तों-को बेच देतीं, औ अपने देशके लिये अन्न और जो कुछ मिलता रहा, उसको भी बेंचके पैसा लेतीं।

भैया—ठीक कहा संतोखी भाई देशमें अन्नका अकाल था, लोग भूखों मर रहे थे। अमिरिकासे करोड़ों मन अनाज औ खानेकी चीजें आती थीं, उनमें से भी आधा चोर-बजारमें चला जाता। चोर-बजारी इतनी बढ़ी थी कि अन्तमें अमि-रिकाने अनाज बाँटनेके लिये अपने बहुतसे आदमी चीन भेजे। मुदा अमि-रिकाके आदमी अपने हातपे बाँटनेके लिये सब जगह जा नहीं सकते थे। और सब जगह, चाकैसकके भाई-बन्ध औ दूसरे घूस रिसवत-खानेवाले सब कुछ चुरा-के बेचनेके लिये तैयार थे। छीछालेदर हो गई। लोग एक ओर भूखके मारे तराहि-तराहि करते, और दूसरी ओर देखते कि ऐसे ठगों, लुटेरों घूस रिसवत खानेवालों औ चोर बजरिहोंके मारे कोई रहता नहीं। सब जगह जोकोंकी सड़ती लास दिखाई देती थी।

संतोखी—भैया, ई तो मालूम होता है, कि कुछ-कुछ हमारे ही देशकी दशा चीनमें भी हो गई थी, फिर चीन कैसे इस साल हमको तीन करोड़ मन अनाज दे रहा है?

भैया—तीन करोड़में दस-लाख टन ही नहीं, अऊ तो बीस लाख टन अनाज देनेके लिये तैयार था। तुमको अचरज होगा कि दो ही बरस पहले हमारी तरह दाना-दानाके मोताज चीनके पास इतना अन्न कहाँसे आ गया? जानते हो न, एक अकतूबर १९४९ में ही चीनपर पूरी तौरसे कमेरोंकी सरकारका राज कायम हुवा। इतने थोड़े समयमें अपने यहाँका उन्होंने अन्नका अकाल हटा दिया, और अब छै-छै आठ-आठ करोड़ मन अनाज बाहर भी भेजनेको तैयार हैं। यह सब जादू-मंतरसे नहीं हुआ। जोकोंके चरन जहाँ पहुँच जायँ, वहाँ सोना भी माटी हो जाता है, और कमेरोंका चरन जहाँ पहुँच जाय, वहाँ माटी भी सोना हो जाती है। गेहूँ, चाउर सोना ही है, संतोखी भाई।

संतोखी—सोनासे बढ़के भैया, सोना खाँधे आदमी भूखसे मर जायगा, सोना खाके पेटकी आग थोड़े ही बुझेगी। मुदा, सुनते हैं एक ही बरिसमें उन्होंने

अपना अनाजका टोटा पूरा कर लिया। ई तो जादू मंतर जस ही मालूम होता है। सैंतालिस करोड़ आदमी मुल्कमारीमें जीते थे, इतने आदमियोंके लिए कैसे पूरा अन्न उपजा सके?

दुखराम—भैया, जो चीनके कमेरोंने अनाजका दुख अपने यहाँसे दूर कर दिया, तो हमारे देशमें क्या वैसा नहीं हो सकता?

भैया—चीनने जो कुछ कर दिखाया है सो सब हमारे यहाँ हो सकता है, मुदा जिस देसमें चोरबजारिया, घूस-रिसवत खानेवालों पर कोई रोक-थाम नहीं हो सकती, राजकाज सब उन्हींके हाथोंमें है, वहाँ कैसे कुछ हो सकता है? सब जानते हैं काँगरेसने गला फाड़-फाड़के परतिगों की थी, कि अपना राज होते ही जिमींदारी-तालुकदारी, जगिरदारी नहीं रहने देंगे। मुदा, जब राज हाथमें आया तो जानते हो न खून पानीसे गाढ़ा होता है, अपने भाई-बन्धों की चिन्ता करने लगे। जिमींदारी उठा देंगे तो हमारे बेटा-दमादों, साले-समुरोंमें भी तो बहुतसे छोटे-बड़े जिमींदार है, यही सोचके नाकर नूकर करने लगे, बहाना बनाने लगे। कानून बनानेमें ही बरसों लगा दिये, जो कानून बनाया भी वो भी हाईकोर्टने बे-कानून बतला दिया।

दुखराम—सो क्यों भैया?

भैया—एक कानून होता है और दूसरा महाकानून होता है, दुखखू भाई! जो कोई ऐसा कानून बने, जो महाकानूनके खिलाफ हो, तो बेकानून हो जाता है।

दुखराम—तो जिमींदारी हटानेके कानूनसे पहिले महाकानून बन चुका होगा. तभी न ऐसा हुआ?

भैया—हाँ महाकानून (संविधान) बन चुका है, औ बनानेवालोंमें जोकोंके ही आदमी बेसी थे। उनको बहुत डर था, कि कहीं मरकस बाबाके चेले आके, हम लोगोंने जो चोरबजारी, घूस-रिसवत और बेईमानी-सैतानीसे लाखों-करोड़ रुपयेकी धन-सम्पति बटोरी है, उसे कानून बनाके छीन न ले। इसलिये उन्होंने महाकानूनमें ऐसी बात रखी, जिसमें चाहे जैसे धन-सम्पति किसीने बटोरी हो, उसको छीना न जा सके।

संतोखी—तो इसीसे जिमिंदारी कानून बेकानून हो गया ? और सुनते हैं, क उसमें भी जिमिंदारीकी जिसमें बेसी हानि न हो, ऐसा रसता निकाला ाया था।

भैया—हाँ जिमिंदारी उठाना नहीं—यह तो जिमिंदारी खरीदनेका कानून । कमेरोंको करोड़ों-अरबों रुपया कमा-कमाके जिमिंदारोंको देना होगा, तब जाके जिस खेतको वह जोतते हैं, वह उनका होगा। चीनमें मरकस बाबाके चेलों- ा राजकी बागडोर संभालते ही कानून बनाके ढिंढोरा पिटवा दिया कि खेत सका जो उसे जोतता है। जब किसान जानता है, कि हम अपने खेतमें अपने और देश भाइयोंके खाने के लिए अनाज पैदा करते हैं, तो वह क्यों नहीं जान ड़ाके काम करेगा।

दुखराम—हाँ भैया, अपने कामको सभी लोग खूब मन लगाके करते हैं, ाहेसे कि उसका नफा-नुकसान अपना होता है।

भैया—औ यह भी कानूनमें कह दिया कि किसीके पास बहुत बेसी खेत हीं रहेगा, जिसके पास बेसी-बेसी खेत है, उसे बिना खेत या कम खेतवाले मेरोंमें बाँट दिया जायगा। उन्होने बरसों तक कागजी घोड़ा नहीं दौड़ाया। स गाँवकी पंचायतें बनाके तड़ाक-फड़ाक इस कामको कर दिया।

संतोखी—अन्नका अकाल था, करोड़ों आदमियोंके सिर पर मौत नाच रही ो, फिर कमेरोंकी सरकार कैसे कागजी घोड़ा दौड़ाती ?

भैया—हाँ संतोखी भाई, जिस कामके किये बिना चलनेवाला नहीं है, सको करना ही है, उसमें घिसिर-फिसिर क्या ? लेकिन चीनमें जोंकोंको पीसने लिये तो सरकार नहीं बनी थी, इसीलिए उन्होंने बेलाग होके जनताकी भलाई ा जो भी काम हुआ, उसे तड़ाक-फड़ाक कर डाला। हमारे इहाँ तो अंग्रेज गये, दा सरकार चलानेके लिये जो इंतिजाम अंग्रेजोंने किया था, औ पहिलेसे भी ादा बिना देने वाले रूप में। पहिले के नोकरसाह बड़ी-बड़ी तनखाह लेते , अपने ऊपरके हाकिमोंके सामने पूँछ हिलाते और नीचे वालोंको आँख खाते थे। अब ई सब जुलुम औ बेईमानी पहिलेसे कई गुना बेसी हो गई,

ऊपरसे काम भी बहुत ढीला हो गया है। एक दिनका काम एक महीनेमें होना मुसकिल है। घूस-रिसवतका तो पूछो ई मत। फिर कैसे बेड़ा पार होगा।

दुखराम—तो चीनमें उन्होंने बड़ा काम किया भैया?

भैया—सबसे बड़ा काम यह किया, कि जो सैकड़ों बरस का कूड़ा-करकट और गंदगी चीनमें जोकोने जमाकर रक्खी थी, उसे उन्होंने एक बुढ़िया आँधीमें उड़ाकर साफ कर दिया। हमारे इहाँ सब कूड़ा-करकट उड़ाने नहीं, बचाके रखनेकी कोसिस की जाती है। जहाँ देखो तहाँ निकम्मे लोगोंकी पलटन दुगना-तिगुना कर दी गई है। चीनमें जिमिदारी हटाके बेसी जमीनको लोगोंमें बाँटके किसानोंको एक ओर तैयार कर दिया गया कि वह खूब अन्न उपजावें। दूसरी ओर जोंकोके सरदार चांकैसेक और उसको पलटनसे लड़नेके लिए जो धीरे-धीरे पचास-साठ लाख लाल फौज तैयार हो गई थी, उसको भी काम में लगा दिया गया।

दुखराम—कौन काममें भैया? पलटनका काम लड़ना ही है न?

भैया—जोंकोंके इहाँ पलटनका काम लड़ना है। बलुक लड़ाई न होती हो, तो जोंकें रार करके किसीसे लड़ाई छेड़नेकी कोसिस करती हैं। जब लड़ाईका समय नहीं होता, तो पलटनका काम है, छावनीमें बैठके कवायत परेड करना, महीनेमें अपनी तनखाह ले लेना। मुदा, कमेरोंकी पलटनका ढंग दूसरा ही है। लड़ाई हो औ अपने देस पर संकट हो, तो वह खूब लड़ना जानती है, कवायत-परेड भूलने न पावे इसका भी विचार वहाँ किया जाता है, मुदा, कमेरोंकी पलटन समझती है, कि चुपचाप बैठके अपने जांगरको (देह की मसक्कत) ऐसे ही बेकार खोना और जनताके कसालेकी कमाई बैठे-बैठे खाना ठीक नहीं है। चीनमें जब चांकैसेक भाग गया और देशमें उसके गोइन्दोंसे ही निपटना रह गया, तो बहुत-सी पलटन खाली हो गई। पलटनने बन्दूक खड़ी कर दी और फावड़ा हाथोंमें ले लिया। पचास-पचास साठ-साठ लाखकी पलटन जब दिनको न दिन, रातको न रात जान, फावड़ा लेकर काममें डट जाये तो वह कितना काम करेगी, इसके बारेमें क्या पूछते हो। पलटनने नदियोंमें बड़े-बड़े बाँध बनाये, पहाड़ों को घेरकर पानी के समुन्दर तैयार कर दिये। हजारों मील लम्बी नहरें

बना दी, जंगल और परती जमीनको काट-कूटके करोड़ों बीघा नये खेत तैयार करके किसानों को दे दिये।

दुखराम—हमारे इहाँ क्या यह नहीं होगा, भैया ?

भैया—जोंकोंके राज में नहीं, यह तो कमेरोके राजमें ही होता है। पलटन के बड़े-बड़े इन्जीनियर होते हैं, बड़े-बड़े इलिमदार लोग होते हैं। उनकी बिद्दा अब बाँध, ताल और नहर बनानेमें लगी। बाँधों और समुन्दर जैसे तालोंके बना देनेसे बाढ़का डर कम हो गया, किसानोंको राम-भरोसे खेती करनेकी जरूरत नहीं रही, उनको सिंचाईके लिए पानी सब जगह मिलने लगा। ऊपरसे खेतीकी बिद्दाके इलिमदार लोग जल्दी-जल्दी तैयार किये गये, और उन्होने नये ढङ्गसे खेती करनेका रस्ता गाँव-गाँव में बताया। सरकारने अच्छे बीजका इन्तिजाम किया, किसानोंने खाद गोबरको चूल्हेमें जलानेकी जगह खेतमें डाला, इस तरह डेढ़ बरससे पहले ही चीनमें अन्नका दुख मिट गया।

सन्तोखी—भैया, सुनते हैं पाँच बरस तक गरीबोंकी छाती पर कोदो दलने वाले फिर वही कांगरिसवाले रामनाम ओढ़के हम लोगोंका वोट माँगने आ रहे हैं।

भैया—हाँ, बड़ा रामनाम (चुनाव घोषणा) अबकी तैयार हुआ है। कहा जा रहा है कि अबकी पाँच सालके लिए जो हमको राज-काज मिल गया, तो गरीबोंका सब दुख दूर कर देंगे।

सन्तोखी—भाई-भतीजे-भानजे औ सात पीढ़ी तकके रिश्तेदारों का घर तो भर दिया। अभी कुछ कोर-कसर होगी ?

दुखराम—मुदा कितना ही रामनामा पहनके आवें, हम उनको खूब पहिचानते हैं। अब फिर-फिर सियार गूलर तर नहीं जायेंगे। "एक बार डँहकावै तो लाखों बीर कहावै।" एक बेर धोखा दे दिया, सो दे दिया।

भैया—सो तो देखा जायगा, मुदा मालूम हुआ न की चीनवालोने कैसे अपने इहाँ जोंकों का टाट उलट दिया, बाईस बरस तक लड़ते रहे और एक दिनके लिए भी हियाव नही छोड़ा। लड़ाई जीतके भी चुपचाप बैठे नहीं रहे। जीतके साथ ही उन्होंने अपने इहाँके चोरबजरिहों और घूस-रिसवत खानेवालोंको

जड़-मूलसे खतम कर दिया। जमीदारी-तालुकदारी उठा दी, सूदखोरों का मुँह काला कर दिया। औ खाली अपनोंको ही नहीं चीनके कमूनिस्तोंने कमेरोंके लिये जीने मरनेवालों सब पार्टियों और दलोंका एक गोल बना लिया।

सन्तोखी—सब दलोंका एक गोल भी बना लिया? हमारे इहाँके कमूनिस्त ऐसा क्यों नहीं करते?

भैया—हमारे इहाँके कमूनिस्तोंने कुछ गलती की, औ गलती किससे नहीं होती। हुसियार आदमी वह है जो गलती करके सीखता है। अब हमारे इहाँके भी कमूनिस्त कमेरोंके लिये जीने-मरनेवाली सभी पार्टियों औ दलोंका एक गोल बना रहे हैं।

संतोखी—भैया, हमारे गाँवो बाजारोंमें तो आज-कल कमूनिस्त कहीं देखनेमें नहीं आते, मुदा स्कूलके पाठसालाके माहटर-गुरु लोगोंके मुँहसे सुनो चाहे डाकिया और सिपाही लोगोंकी बात सुनो, सभी जगह लोगोंका नाको दम है। तनखा-से खरची नहीं चलती। दौरी-दुकान रखनेवाले हमारे जैसे छोटे-छोटे बनियाँ अपना मूर खा-खाके किसी तरह लडका-बालोंको पोस रहे हैं। सब लोग कमूनिस्तों-का नाम लेते ही आसरा लगाये हैं, कि क्या जानें चीनकी तरह हमारा भी दिन लौटे। चीनको सुनते हैं कोरियामें भी लड़ना पड़ा।

भैया—आजकल दुनिया भरकी जोंकोंको रच्छाका बीड़ा अमिरिकाने ले लिया है। अमिरिका समझता है, कि चीन और रूस जैसे दुनियाके सबसे बड़े दो देसोंमें तो कमेरोंका राज कायम हो गया, जोंकोंका राज उठ गया औ यूरप-के पूरबवाले चार-पाँच देसोंमें भी मरकस बाबाकी ही बात चलती है। वह समझता है, जो राज अब भी जोंकोंके हाथमें है, उनको मजबूत न करेंगे, तो हमारे इहाँका जोंक-राज भी एक दिन खतम हो जायगा। वह तो बहुत चाहता है, कि किसी तरहका झगड़ा पैदा करके दुनियामें इसी बखत तीसरा महाभारत छेड़ दिया जाय तो अच्छा।

सन्तोखी—बहुत जलदीमें है, देर होनेसे डरता है।

भैया—हाँ, रमायनमें सुने हो न। रामकी सेनाका पराकरम देखके रावण-का बेटा मेघनाथ डर गया। वह लड़ाईका मैदान छोड़के गुफा में जाके मंतर

सिद्ध करने लगा। भभीखनने पता लगा लिया, औ रामजीसे कहा कि 'जो इस बखत बिघन नहीं किया गया औ मेघनाथने मंतर सिद्ध कर लिया, तो फिर उसको जीता नहीं जा सकता। परितोख तो ठीक नहीं है। रावन और उसका बेटा जोंकोंमें ही हो सकते हैं, मुदा इहाँ उस बातको छोड़ दो, अमिरिका जानता है कि पहिले तो बीस करोड़ और हिन्दुस्तानसे सातगुना बड़ा रूस ही था, जिसके मारे दुनियाकी जोंकोंकी खैरियत नहीं थी, अब तो हिन्दुस्तानसे चौगुने औ साठ करोड़ आदमीवाला चीन भी उसी ओर है। चीनने जब एक सालके भीतर अपने यहाँका अन्नका दुख हटा दिया, तो अमिरिका और कांपने लगा। वह जानता है, कि चीनमें जलदी-जलदी नये कारखानें खुल रहे हैं—सूती कारखाना, ऊनी कारखाना, चमड़ेका कारखाना, लोहेका कारखाना, कल-मसीनका कारखाना, रेल-इंजिन, मोटर बनानेका कारखाना, हजारों तरहके कारखाने बन रहे हैं। रूस औ दूसरे कमेरोंके देशके हजारों बड़े-बड़े इलिमदार चीनमें आके मदत कर रहे हैं। जो उसे दस ही बरस और काम करनेको मिला, तो चीन भी रूस जितना ही मजबूत हो जायगा। फिर तेरह करोड़ आदमियोंका अमिरिका अपनी जोंकोंके लिये भाड़ेकी पलटनसे कैसे चीन औ रूसके सामने खड़ा हो सकेगा?

सन्तोखी—चीन, रूस ही क्यों भैया पैंतीस करोड़का हमारा हिन्दुस्तान भी अपने भाई चीनके साथ रहेगा। वह कभी अमिरिकाकी जोंकोंके आगमें नहीं कूदेगा।

भैया—हमारे देसकी जोकें तो सन्तोखी भाई, अमिरिकाकी जोंकोंकी आगमें देसको झोंकना चाहती हैं। जैसे भी हो वह देसकी भुखमरी दूर नहीं होने देंगी।

भैया—सो तो होगा ही, जो हम अभीसे सजग नहीं हुए। देसको अपने पैर पर खड़ा करनेके लिये चीनका दिखाया रासता ही हमें लेना होगा। अमिरिका चीनको बरबाद करना चाहता था, जब चांकैसेकसे काम नहीं चला, तो कोरियामें उसने झगड़ा उठा दिया और अपनी पल्टन वहाँ उतार दी। कोरियाके तो गाँव-शहर सब पर अमेरिकाने उड़न खटोलोंसे बम गोला गिरा गिराके

उनको तहस-नहस कर दिया। आधे कोरियामें जोंकोंका राज था और आधेमें कमेरोंका। अमेरिकाने कमेरोंके भागको भी जोंकोंके राजमें मिलाके चाहा कि चीनके सिवाने पर पहुँच जाँय, तब चीनके सपूत समरमें कूद पड़े।

संतोखी—अभी भी अमेरिकाकी जोंकोंका मन चीनसे भरा नहीं है।

सन्तोखी—वह तो चाहती थीं कि हिन्दुस्तानको भी चीनसे भिड़ा दें। जानते हो न, महादेव बाबा कैलासमें रहते हैं। कैलास मानसरोवर भोट (तिब्बत) देसमें है औ भोट देश, डेढ़ हजार बरससे चीनके साथ रहा है, चीनके भीतर बसनेवाली पाँच जातियोंमें भोटके लोग भी हैं। जब चाँकैसेककी पलटन पीठ दिखाके मैदानसे भाग गई औ वहाँके कमेरोंकी सरकारने तिब्बतके राज चलाने वालोंसे कहा, कि तुम भी हमारे पाँच जात वाले परिवारमें आके मिल जावो, तो तिब्बतकी जिमिदार-जागिरदार जोंकोंने इसे पसन्द नहीं किया औ चारों ओर हात-पैर मारने लगीं। अंग्रेजों औ अमेरिकाके गोइंदे तिब्बतमें पहूँच कर आगमें घी डालने लगे। मुदा अपने थोड़े सिपाहियोंके बल पर वह चीनकी लाल सेनासे लड नहीं सकती थीं। अमेरिका औ अंग्रेजोकी सरकारोंने हिन्दुस्तान को बहुत साम-दाम दिखाया। कहा—रुपया-पैसा औ गोलाबारूद अमेरिका देगा, हिन्दुस्तान अपनी पलटन दे दे, तो तिब्बतको कमूनिस्तोंके हातमें जानेसे बचा लिया जाय। हिन्दुस्तानकी सरकार जानती थी, कि इस दलदलमें फँसनेका नतीजा बहुत बुरा होगा। हिमालयके पार उस देसमें अपने लाखों आदमियोंको लेजाके कटवाना बड़ा मँहगा सौदा था। नफेकी कोई उमेद न थी, नहीं तो क्या जाने हिन्दुस्तानी जोंकोंने दबाव डालके वैसा करवाया होता।

सन्तोखी—तो अमेरिकाकी जोंकोंका काम हमारी सरकारने नहीं किया।

भैया—इससे अमेरिकाकी जोंकें नराज हो गईं।

दुखराम—अपने देसको बचानेके लिये अपने पैरों पर खड़ा होना होगा जैसा चीनने किया। औ अब तो महादेव बाबाके घरमें कमेरोंका राज लाल पताका आ गया। कहो संतोखी भाई, महादेव बाबाने जब मरकस बाबाका रहता मान लिया तब तो अब किसीको नाकर-नूकर नहीं करना चाहिये।

संतोखी—दुक्खू भाई, हम तो पहिले महादेव बाबा औ रामजीकी बहुत

पूजा करते थे। मुदा जबसे भैयाकी बात सुनी और तुम बात मारने लगे, तबसे ऊ कुल सरधा-भगती न जाने कहाँ बिलाय गयी। अब तो हमारे पड़ोस तक कमेरोका राज चला आया। भैया, बनारस से अब कितनी देरका रहता है ?

भैया—बनारससे जो सोझे उत्तरकी ओर उड़ा जाय, तो घंटा-डेढ़-घंटामें उड़न खटोला वहाँ पहुँच जाये। हमारा सिवाना औ चीनका सिवाना एक ही है, दोनोमें एक अँगुलका भी फरक नहीं है। भोट देस अब कमेरोंका हो गया औ एक लाखसे बेसी भोटिया लोग हिन्दुस्तानके भीतर बसते हैं, जो बहुत गरीब हैं।

संतोखी—तब तो भैया, अपने भाइयोकी खुसहाली सुन-सुनके इनका मन भी ललचायेगा।

भैया—इसलिये हमारे राज चलानेवालोंने वहाँ पुलिस-थाना बैठा दिया है, जिसमें उस पार की बीमारी इस पार न आने पावे। मुदा, जब तक अपने देसकी भुखमरी, गरीबी, बेरोजगारी नहीं हटती, तब तक कौन उसे रोक सकता है ? चीन हमारा दो हजार बरसका पुराना भाई है। उसने रहता दिखा दिया, जितना जल्दी पुरानेका मोह छोड़ के हम उसी रहताको पकड़ें, उतना ही अच्छा।

अध्याय ६

सान्तीका रहता

बरखाका एक महीना बीत गया, मुदा एक दो बार मामूली छींटाके पानी-का कहीं पता नहीं था। गाँवके किसान व्याकुल थे। महगीके दिनमें घरके भीतरका अनाज खेतमें डाल आये थे, अंकुर जम आया था, मुदा पानी बिना जहाँ-तहाँ खेती सूख रही थी। आज रात भर खूब बरखा हुई, सूखे रूख बिरछ हरे दिखाई पड़ रहे थे, झुलसे पौधोंमें भी जान आ गई थी।

बादल आज दिनमें भी चारों ओर घिरे थे। आज भैया दुखराम औ संतोखी तीनों सयानें पेड़के नीचे नहीं, दुखरामके ओसारेमें बैठे थे। बात

चलानेके लिये संतोखी ने कहा—भैया अच्छी तरह कमाना धरतीसे। अन्न पैदा करना, कपास पैदा करना और जो कुछ कामकी चीज है, सबको बनाके तैयार करना, पेट-भर अपने खाना, अपने बाल-बच्चोंको खिलाना और गाँव पुरके लोगोंको भी भूखा न देखना, ऐसी जिन्दगी ही तो हम लोगोंको चाहिये।

भैया—मुदा जब ले जोकें हैं तब ले शान्तिसे दिन कटना नहीं हो सकता संतोखी भाई। दुनियाके किसान मजूर, कमेरे लोगोंको इसीमें आनंद है, कि सातीसे कमाया-खाया जाय, मुदा जोकें जो सातिसे रहने दें तब न।

दुखराम—हाँ भैया, जोकें खून चूसनेवाली हैं न? उनको सांति काहे पसंद आयेगी? वो तो ढूँढ़-ढूँढ़के रार करना चाहती हैं। आजकल दुनिया सातिके पाछे ही दो गोलमें बट गई है।

संतोखी—कौन-कौन दो गोल भैया?

भैया—यह भी कहने की बात है? एक ओर जोंकोंका सिरताज अमिरिका है, औ हर जगह ताल ठोंक रहा है। लड़ाईके बाद अपने देशकी जोंकोंको हटानेके लिये जहाँ-जहाँ कमेरोंने कोसिस की, सभी जगह अमिरिका अपना डालर औ हथियार लेके पहुँचा।

संतोखी—कोरियामें तो भैया अपनी पलटन भी उसने उतार दी थी।

भैया—हाँ संतोखी भाई, मुदा अमिरिका अपनेको बड़ा चालाक कहता है न। वो चाहता है, कि अपने आदमीको न मरवावें। ई कोई दया-मयाके खयालसे नहीं ऊ जानता है कि जो अपने देसके आदमी मरवायेंगे, तो अमिरिका की जनतामें गुस्सा पैदा होगा, फिर काम मुश्किल हो जायगा।

दुखराम—हाँ भैया, जोंके तो कहीं पर भी सौ में पाँच दससे बेसी नहीं होतीं, नब्बे पंचानबे तो कमेरे ही होते हैं।

संतोखी—हाँ चाहे हात-पैर चलानेवाले कमेरे, चाहे कलम-घिसाई करने वाले कमेरे, चाहे हमारे जैसे चार पैसा का नून-तेल बेचनेवाले, सब कमेरे ही हैं। आज किसी तरह लड़के-बालोंका पेट चला, तो कल का ठिकाना नहीं।

भैया—अमिरिकाकी जोंकें दुनियामें घूस-रिसवत देने, चाहे लड़ाईके लिये तैयारी करनेके वास्ते अरबों डालर बो रही हैं, फेंक रही हैं, कहना चाहिये।

सारे दुनियाके हाट-बाजारमें अमिरिका का माल बिक रहा है, जोंकोंको बहुत मुनाफा है। धन-सम्पत्ति जो कुछ है, उसमें दू-आना जोंकें चौदह आना की मालिक हैं। मजूरों को तो खाली गुलामी भर करना और किसी तरह पेट चलाना है। जोंकोंका क्या लगता है, तो जोंकें जो गरीबों की कमाईमें से अरबों डालर अपनी रक्षाके लिये फेंक दिया जाय।

संतोखी—तो काहे कमेरोंके आँखमें पट्टर बंधा हुआ है, उनको सूझता नहीं।

भैया—कैसे सूझै, सौ दो सौ बरिस नहीं हजारों बरिससे ये ही समझाया गया है, कि धनी गरीब भगवान बनाते हैं, अपने भाग पर भरोसा करना चाहिये, किसीके धनको देखके लोभ नहीं करना चाहिये।

दुखराम—धन इन चोरों, डकैतोंका है, कि धन कमेरे पैदा करते हैं?

भैया—धन कमेरे ही पैदा करते हैं, मुदा पोथी-पतरा भगत-भगवानके नामसे दुनियाके सभी कमेरों की आँखों पर पट्टी बाँध दी गई है।

संतोखी—मरकस बाबाने तो आँख का पट्टर खोल दिया। मरकस बाबाके चेले अमिरिकामें नहीं पहुँचे क्या?

भैया—चेले तो पहुँचे हैं, औ अमिरिकामें कोई बेपढ़ नहीं है। मुदा पढ़ुआ होनेका जोंकोंने बेसी फायदा उठाया है। वो खूब सस्ता अखबार और पोथी छापके निकालतीं हैं, जिनमें लोगोंकी आँखोंमें धूल झोंकनेकी बात रहती है।

संतोखी—तो पढ़ने लिखनेसे ग्यान नहीं होता क्या?

भैया—पढ़ने-लिखनेसे ग्यान होता है, मुदा ई दुधारी तलवार है। पोथी गियान भी देती है औ आँखो पर पट्टी भी बांधती है। बामनोकी पोथी देखते हो न, कितनी बड़ी-बड़ी है, औ रिखी-मुनि छोड़के दूसरोंकी बात बतलाई नहीं जाती। मुदा, उसमें खून चूसने वालोंके मुनाफेकी बात छोड़के और क्या है? सौ में से पन्द्रह आदमीको उन्होंने अछोप-अछूत बना दिया, जिनके छूनेमें भी पाप लगता है। सबसे निरघिन काम उनसे लिया जाता है। जो काम कोई नहीं करता, सो काम मन मारके अछोप लोग करते हैं। बड़ी जात वालोंका पैखाना उठाते हैं। मरे डांगरको उठाके न ले जांय, तो बाबू लोगोंका गाँव सड़ने

लगे। ई सब करने पर भी सबसे गरीब ये ही लोग हैं। सौ में पैंसठ-सत्तर आदमी के लिये पोथीमें लिखा है कि खाली बामन-छत्री-लालाकी सेवा करना उनका धरम है।

दुखराम—हाँ भैया, हमारी अहिरकी जातमें जब थोड़ेसे लोग पढ़ लिख गये, तो इन्हें पहिले सनक सवार हुई, कि जो हम लोग भी जनेऊ पहिन लें तो बड़ी जात वालोंमें हो जायेंगे। अहिर छोड़के उन्होंने दुसरा-दुसरा बढ़िया-बढ़िया नाम भी रख लिया। मुदा, बाम्हनोंकी पोथीमें तो हमारे भागका फैसला पहिलेई कर दिया गया है।

भैया—दुक्खू भाई, पांकसे धोनेसे पांक नहीं छूटती। बाम्हनोकी पोथीमें जितना चालाकी है, उतना किसी धरमकी पोथीमें नहीं है।

सन्तोखी—बाकी भैया हैं तो सभी फंदे वाली ही धरम-पोथियां? ईसाई धरमकी पोथी हो चाहे मुसलमान धरमकी पोथी, किसी धरमकी पोथी हो, सबमें कमेरोंके गलेमें फन्दा डालनेका जतन किया गया है।

भैया—ठीक कह रहे हो, मुदा एक ही बोली बोलने वाले एक ही देसमें रहने वाले एक ही रंग-रूपके लोगोंको हजार जातमें बांटना औ उनमें भी ऊंच-नीच बनाके एक दूसरेके साथ झगड़ा लगाये रखना, ऐसी चालाकी कहीं नहीं पाओगे। जैसे-जैसे बाम्हनोकी पोथी तैयार हुई, उसी तरह आज भी जोंकोंके देशोंमें हर साल हजारों पोथियाँ छपती हैं। इनका काम खाली लोगोंकी आँखोंमें धूल झोंकना है। मुदा जब बेटे-पोते मरने लगते हैं, लड़ाईमें फतिंगेकी तरह उन्हें झुलसा-झुलसाके मारा जाता है और घर-घरमें रोना-कांदना मच जाता है, तब लोग सोचने लगते हैं। फिर कुछ लोग बतलाने लगते हैं, कि लड़ाई रोपने वाली हमारे देशकी जोकें हैं। तब उनको डर पैदा हो जाता है। सुना है न सन्तोखी भाई, पहले महाभारतमें जब रूसके लाखों जवान जोंकोंकी लगाई आगमें मर गये, तो वहाँके लोग उपाय ढूंढ़ने लगे। फेर मरकस बाबाके चेले लेनिन महतिमाने मंतर दे दिया—अपनी बन्दूकें घरके दुस्मनों याने जोंकोंकी ओर फेर दो। कमेरोंके बेटोंके पास पैसा कहाँ? औ पैसा भी जमा करें, तो कानूनके खिलाफ, बंदूक रक्खें कैसे? ईतो जोंकोने

लड़ाईके लिए मुफ़्तमें बन्दूकें दे दीं और उनको ठीकसे चलाना भी सिखा दिया। देसके लाखों जवानोंके मरनेसे सबका मन बिगड़ गया था ऐसा मौका कहाँ मिलता, औ कमेरोंके लड़कोंने अपनी बन्दूकोंको सचमुच ही अपने देसकी जोंकोंकी ओर कर दिया। औ आजसे ६८ बरस पहिले दुनियाके छठे भागमें जोंकोंका टाट उलट गया, कमेरोंका राज खड़ा हो गया।

सन्तोखी—इसीलिये भैया, अमिरिकाकी भी जोकें डरती होंगी। सोचती होंगीं, जो अमिरिकाके घर-घरके लड़के मरवाये गये, तो इहाँ भी कहीं रूसवाली बात न हो जाय। इसीलिये अमिरिकाकी जोकें चाहती हैं, कि रुपया औ हतियार हमारा लगे औ मरनेवाले हों दूसरे।

दुखराम—तो कोरियामें काहे अपने आदमियोंको ले जाके मरवाया अमिरिकाने ?

भैया—गलती कर बैठा, चोचता था, कि डालरसे खरीदे गुलाम देसोंकी जोकें सिपाही देंगी औ अमिरिकाका काम थोड़ेसे सिपाहियों औ बहुतसे रुपया-हतियारोंसे चल जायगा। मुदा अमिरिकाके गुलाम देस वैसे तो जीहजूरी और चापलूसीमें बहुत आगे बढ़े थे, मुदा गुसाईं जी कह गये हैं न—"सरबसि खाई भोग करि जाना। समर भूमि भा दुरलभ प्राना।"

सन्तोखी—अंगरेजोंने अमिरिकाकी बहुत मक्खन-रोटी खाई, उन्होंने कितने जवान कोरियाकी आग में झोंके ?

भैया—मक्खन रोटी खाने वालोंमें अंगरेज ही नहीं थे, फ्रान्स, इटाली, और न जाने और बहुतसे कितने देसोंने खूब परमुंड़े फलाहार किया। मुदा, जब कोरियामें अपने देसके जवान भेजनेकी बात आई, तो किसीने पाँच सौ, किसीने हजार आदमी भेजके कुल भीर अमिरिकाके ऊपर डाल दी। बारा-तेरा महीनोंकी लड़ाईमें अमिरिकाके अस्सी हजारसे बेसी जवान कट गये, चाहे-अंग-भंग होके बेकार हो गये। अमिरिकाने समझा था, कि हमारे अणुबां बमके धमकाने औ उड़नखटोलोंसे दस-बीस हजार बमगोला गिरा देनेसे कोरियावाले हतियार धर देंगे। मुदा 'इहाँ कुम्हड बतिया कोऊ नाहीं।" एक बेर तो कोरियाके जवानोंने ढकेलते-ढकेलते अमिरिकाको समुन्दरके तीर

पहुँचा दिया था औ मालुम होता था कि अब इन जोकोंको बोरिया-बंधना बाँध-के समुन्दर पार भागना पड़ेगा।

दुखराम—तो कैसे भागना रुक गया भैया ?

भैया—अमिरिकाने पहिले अपने थोड़े ही आदमी भेजे और दूसरे गुलाम देसोंके भी बेसी आदमी अभी नहीं गये थे। अमिरिकाने देखा कि जो अब हात संकोचा तो सब रोब-दाब मट्टीमें मिल जायगा। तब उसने यहाँके जवानो-को आँख मूंदके झोंकना शुरू किया। बेचारे आधे कोरियाके कमेरे कैसे सामना करते। लोगोंने समझाया, कि पुराने सिवाने पर चलके लड़ाई बन्द कर दो, मुदा अमिरिकाने चाहा कि कोरियामें कमेरा-राजका चीन्ह न रहने पावे। जब अमिरिकाकी पलटन आगे बढ़ते-बढ़ते चीनके सिवाने पर पहुँच गई, तो चीनके कमेरोंको डर मालुम होने लगा। जानते हो न अमिरिकाने कोरि-या से जो कमेरोंका राज खतम करना चाहा, उसका एक भेद यह भी था, कि इस तरह चीनके कलेजेके पास चलके बन्दूक तानेंगे। औ समूचे कोरियामें अपनी पलटनकी छावनीं—अड्डा बनाके फिर चीन पर हल्ला बोल देंगे।

सन्तोखी—हाँ, दरवाजे पै सतरूको देखके गाफिल रहना अच्छा नहीं है भैया।

भैया—तो भी चीन सरकारने लड़ाईके लिये कदम नहीं बढ़ाया। हाँ, अपने यहाँके कमेरोंको छुट्टी देदी, कि जो चाहे सो कोरियाके भाइयोंकी मददके लिये चला जाय। फिर चीनके भी जवान कोरियाकी मदद करनेके लिये आए औ अमिरिकाकी पलटनको पहिलेके सिवानाके पार लंघा आये। अब अमिरिका औ उसके पिछलग्गू देशोंकी जोकें समझने लगीं कि लड़ाईका फैसला जलदी नहीं होगा। अमिरिका हुकुम पर हुकुम लिखके भेजता मुदा उसके पिट्ठू देस खाली जबानी जमा खरच करके बहादुरी दिखाते। आदमी भेजनेकी बेरा अंगरेज कहते हैं, कि हम मलाया-सिंहापुरमें कमुनिस्तोंसे लड़ रहे हैं, बड़ा भीरमें। फ्रान्स कहता है कि हम हिन्दी-चीन और कम्बोजामें कमनिस्तोंको रोके हुए हैं।

दुखराम—तो सब कोई न कोई बहाना ढूंढ़के कहती हैं, 'लड़ो भतीजो पाछु दो पुतो।"

सन्तोखी—इसीलिये तो भैया, अमिरिकाको लड़ाईबन्दीकी बात माननी पड़ी।

भैया—दुनिया भरकी जोंकें समझती हैं, कि इन दो-चार बरसोंमें जो कमेरोंकी सरकारोंके साथ लड़ाई करके उनको नास नहीं कर पाये, तो फिर मौका नहीं मिलेगा। अमिरिका तो लड़ाई करनेके लिये पागल हो गया है। उसने अपनी जानमें लड़ाई छेड़ भी दी। कोरियामें सीधे अपनी पलटन पहुँचा दी। उसके जनरैल और गोला बारूद तो सारी दुनियामें लड़ाई करानेका जतन कर रहे हैं। अमिरिका; जानते हो न, दो समुन्दरोंके पार चीन और रूस दोनोंसे बहुत दूर है। अँगरेजोंके टापूकी तरह बीचमें दस बीस कोस-की खाड़ी नहीं, बड़े-बड़े समुन्दर रास्तेमें पड़ते हैं 'लंका अस दीप समुन्दर अस खाड़ी' कहके रावन अपनेको अपरबल समझता था, मुदा हिनुस्तान औ लंका-के बीचकी खाड़ी हनुमान जीके लांघनेके मान की थी। अटलांटिक औ पसि-फिक जैसे महासमुन्दरको लांघना किसी हनुमानके लिये आसान नहीं है। तो भी अमिरिका कहता है, कि हमारा सिवाना दोनों महासमुन्दर नहीं है।

सन्तोखी—तो भैया, अपना सिवाना कहाँ मानता है?

भैया—चीन औ रूसके अपने सिवानेको सिवानेसे मिला मानता है!

सन्तोखी—ई तो बड़ी बेहयाई है भैया।

भैया—जोंकें तो लाज-सरम धोके पी गई हैं। अमिरिकाने यही कहके कोरियामें अपनी पलटन रक्खी, चीनमें चाकैसेकको मदद की। हिन्दी-चीन-में चीनके सिवाने पर वह लड़ाईमें फ्रान्सीसियोंको हर तरहकी मदद दे रहा है। अपने जहाज, हवाई जहाज, गोला-बारूद, पैसा-कौड़ी, जनरल सब भेज रहा है। हिन्दुस्तानको भी चाहता है कि वह अमिरिकाका हुकुम मानके भोट देना औ चीनकी नाकाबन्दी करे। पाकिस्तानको रूस औ चीनके सिवाने पर कम्मी में बैठाके अपना मतलब सिद्ध करना चाहता है।

सन्तोखी—भैया, सुनते हैं कि पाकिस्तान अमिरिकाके बल पर कूद रहा है।

भैया—अँगरेज तो सिखंडी है, 'सभै नचावें राम गुसाईं' असली नचाने वाला और खरच-बरच देने वाला अमिरिका है।

दुखराम—तब भैया जवाहरलाल काहे अमिरिकाकी बातमें पड़ते हैं।

भैया—जवाहरलाल हों चाहे कोई हो, जब तक ऊ जोंकोंके फंदेसे बाहर नहीं निकलते, तब तक चाहे जितना गाल बजालें, मुदा 'करिहैं सोइ जो राम रचि राखा' राम मानें जोंकोके हातमें देसकी गरदन है। औ कर क्या सकते हैं। जिमिदारों, तालुकदारोंको खतम करो, सभी बड़ी-बड़ी जोंकोंको लाल भवानीके सामने बलि चढ़ावो, देसके सभी कमेरों और उनके साथी समाजियों-को काम पर लगा दो, तब हमारे देसमें रोटी, कपड़ेका दुख दूर होगा, तब लोग अपना बल बौसाय दिखायेंगे, तभी अमिरिकाका मुँह नहीं देखना पड़ेगा।

सन्तोखी—मुदा हमने तो अपने सेठके लड़केको कहते सुना, कि पाकिस्तान औ हिन्दुस्तानकी लड़ाई होने वाली है।

भैया—सेठ क्यों नही कहेंगे झूठ कहनेमें क्या लगता है? जो झूठ बोलनेमें नफा हो, तो कौन सेठ साचकी कंठी तोडनेके लिये तैयार नहीं है। जानते हो न कि कोरियाकी लड़ाई होतेही सेठोंने चीजोंका दाम बढ़ा दिया।

सन्तोखी—हाँ भैया, हमीं सवाया दाम देके सौदा ले आये। औ, अब सेठ-के लड़केने रुपया पीछे दो आना और बढ़ा दिया।

भैया—पाकिस्तान औ हिन्दुस्तानकी लड़ाईके नाम पर ना?

दुखराम—तो भैया, लड़ाई सेठोंके लिये कलपविरिच्छ है।

भैया—लड़ाई होते ही सेठोंकी पाँचों अँगुली घीमें हो जाती है। सौदा चाहे बरस भर पहिलेका खरीदा या तैयार किया हुआ हो, मुदा वह झट से दाम सवाया-डेयढ़ा कर देते हैं। हमारे यहांके सेठोंको जो मुनाफा हुआ, वह अमि-रिकाकी जोंकोंके मुनाफाके सामने कुछ नहीं है। जो कोरियाकी लड़ाई न छिड़ी होती, तो अमिरिकाके लोहा, इसपात, गोला, बारूदके कितनेही कारखानें दिवा-लिया हो जाते। लड़ाईके बाद जितना लड़ाईका समान वहाँ बना था, वह माल गोदाममें इतना भर गया था, कि आगे जगह नहीं थी। मालगोदामका गोला-बारूद जब मारकाटके लिये जाय, तब न दूसरे मालके रखनेकी जगा हो?

दुखराम—इसीलिये भैया, जोंकें सांतिसे डरती हैं औ रात-दिन लड़ाईका जप करती हैं।

भैया—टाट उलटनेकी बात है दुक्खू भाई। औ लड़ाई हो जानेपर करोड़ों का मुनाफा घरमें आता है। मुदा पाकिस्तान औ हिन्दुस्तान दोनों तो आजकल अमिरिकाके दाहिने बायें हातमें हैं। तित्तर तब लड़ेंगे जब मालिक उनको लड़ने के लिये छोड़ेंगे।

सन्तोखी—तो काहे पाकिस्तान औ हिन्दुस्तानके बड़े-बड़े लोग लड़ाई की बात करते हैं।

भैया—पाकिस्तान का एक टुकड़ा पच्छिम में है औ एक टुकड़ा पूरबमें बंगाल है। पाकिस्तानमें सबसे बेसो रहने वाला इलाका पूरब वाला है। मुदा घी-मलीदा खाने वालोंमें गरीब बंगालियोंको कोई पूछता नहीं। बड़ी-बड़ी गद्दी बाहरसे भाग कर आये। लोगोंके हातमें हैं। पञ्जाबी मुसलमान इसे देखके जलते हैं।

सन्तोखी—इसीलिये तो पञ्जाबी पाकिस्तानी जनरैलों और बड़े-बड़े आदमियों को पकड़के जेहलमें नहीं डाला गया?

भैया—लेकिन, चांडाल-चौकड़ी पाकिस्तानियोंकी छाती पर कोदो कब तक दलेगी। पाकिस्तानी बंगालमें जाके देखो, बड़ी-बड़ी तनखा पानेवाले हाकिम सब पजाबी मिलेंगे। पलटन देखो तो सब पंजाबियोंकी है। पंजाबी कहीं ऐस-जैसमें विघन न डालें, इसलिये पाकिस्तानी बंगालकी जागिरदारी दे दी गई। बंगाली अलग जल रहे हैं। पठानोंको जिस तरह पीसा जा रहा है, उससे पठान नराज हैं, उनकी नराजी दूर करनेके लिये कास्मीर पर लूट-मार करनेके लिये पठानोंको भेज दिया। बस धोखा-धड़ीसे काम निकालते, मालिक चाहते हैं, कि पाकिस्तानी जनताकी आंख खुलने न पाये। उनके मनमें है, कि जो कहीं जनताके हाथमें फैसला करनेको दे दिया गया, तो हमारे जैसों का कहीं ठौर-ठिकाना नहीं लगेगा।

सन्तोखी—हाँ भैया।

भैया—अपने पैर में कौन अपनेही कुलाड़ी मारता है। बंगालकी जनताने

इन मालिकोंको खूब दिखा दिया, जब साढ़े तीन सौमें दस भी उनके आदमी नहीं चुने गये।

दुखराम—हाँ भैया।

भैया—पाकिस्तानके बाद फिर पच्छिम चलो, तो रूसके सिवाने पर ईरान और तुर्कीके मुलुक हैं। दोनों में अमेरिका पहुँचा हुआ है। अपने सिवाने की रक्षा करनेके बहाने दोनों को करोड़ों रुपयाका हतियार दे रहा है। अपने जनरल भेजके वहाँ की पलटनको अपनी मुट्ठी में कर रक्खा है औ जोकोंको कमेरों के खून की होली खेलने की छूट दे रखी है। तुर्की से पच्छिम ग्रीस देस है। जर्मन फसिहोंको लड़ के निकालने में वहाँ के कमेरोंने अपने हजारों बेटोंको बलि चढ़ाया। फसिहोंके राज के खतम होने पर कमेरोंने अपना राज बनाना चाहा, तो जोंकों की मदद के लिये अँगरेजों औ अमिरीकाने पलटन भेज दी। हमारे दो जिलेके बराबर का ग्रीस देस चार-पाँच बरस तक जान हथेली पर रखके अपने देस और परदेसकी जोंकोंकी भाड़े की पलटनसे लड़ता रहा। उसके पच्छिम जुगोसलावियामें मरकस बाबाके चेलों ने बड़ी बहादुरी दिखलाई और वहाँ कमेरों का राज भी कायम कर लिया। मुदा जोकोने वहाँ भी अपना जाल फैलाया। और पच्छिम में इतली, फ्रांस, पच्छिमी जर्मनी, नार्वे, स्वीडन, जितने देस कमेरोंके राजके सिवाने पर हैं, सब जगा अमिरिका लड़ाई की तैयारी कर रहा है। लड़ाईका फल इन देसों के लोगोंने खूब भोगा है। वहाँके कमेरे नहीं चाहते, कि फिर तीसरा महाभारत हो। मुदा अमिरिका की जोंके वहाँ की जोंकोंकी पीठ ठोंक रही हैं।

सन्तोखी—जर्मनीकी जोंकोके गुन्डे सरदार हिटलर की पीठ भी अँगरेज औ फ्रांसीसी जोंकोंने ठोंकी थी, मुदा पीछे उनको पछताना पड़ा, जब वरदान पाके भस्मासुर ने भूतनाथके ओर ही हाथ बढ़ाया।

भैया—गरजमें आदमी बावला हो जाता है। जोंकें देखती हैं, कि हर जगह कमेरे अब उनको रखना नहीं चाहते। जो लड़ाई होगी तो सबसे बेसी मरेंगे कमेरे के, सबसे बढ़ कर दुर्गति होगी कमेरों की। इसीलिये कमेरे सांती चाहते हैं। जोंकोंके राज में लड़ाई की तैयारी अंधाधुन्ध को जा रही है औ

कमेरेके राजमें सान्ती की परितिग्गा कराई जा रही है। करोड़ो आदमी सान्तीके परितिग्गा पत्र पर दसखत कर रहे हैं।

दुखराम—कहीं इस सान्तीसे फायदा तो नहीं उठायेगी ?

भैया—सो, उससे गाफिल कमेरे नहीं हो सकते। मुदा वो जहाँ तक हो सके सान्ती रखने का जतन कर रहे हैं।

सन्तोखी—सात समुन्दर पारसे आके दरवाजे पर अमिरिकाकी जोंके ताल ठोक रही हैं, इस पर भी कमेरोंकी सरकारें धीरजसे काम ले रही हैं। जो इन्होंने सबुर न किया होता, तो अब तक तिसरा महाभारत छिड़ गया होता ?

भैया—मुदा सान्ती का हतियार लड़ाईके हतियारसे भी बढ़के है।

सन्तोखी—भैया ई तौ गाँधी बाबा वाली बात कर रहे हो।

भैया—गाँधी बाबाने सब जगह गलती नहीं की है, सन्तोखी भाई। औ जहाँ गलती भी की, वह न समझनेके कारन। मरकस बाबाके पास न आ वो दुसरोंका गुरुमन्तर ले लिये थे, उसीके मोह-मायामें पड़के रोगकी असली दवाका पहिचान नहीं पाये। जो दुनियाके सौमें नब्बे आदमियों को दुखी नहीं देखना चाहता है, उनको सुखी रखना चाहता है, वह कभी सान्तीका रसता छोड़के लड़ाईका रसता नहीं लेगा। जोंकोंके देस कीभी जनता लड़ाई नहीं सान्ती चाहती है। वहाँभी लाखों-करोड़ो आदमी सान्ती की परतिग्गां कर रहे हैं। इसको देखके जोंकोंका कलेजा काँपने लगा है। जो कमेरे सान्तीकी परतिग्गा कर लिये, तो तोपोंमें झोंकनेके लिये उनके लड़के कैसे मिलेंगे ?

दुखराम—कमेरोंकी आँख तो खुलनी चाहिये।

भैया—कमेरोंने लड़ाईमें सवा करोड़से बेसी आदमियोंको निरघिन मौत मरते देखा। गाँवके गाँव और सहरके सहर उजड़े देखा। बेवा-अनाथोंको मारे-मारे फिरते देखा। सारे देस को भूखके मारे हाय-हाय करते देखा। जोंकोंके देस-के कमेरे, वहाँकी सौमें नब्बे जनता, फिर लड़ाई चाहेगी ? दो महाभारतोंको देख-के उनका मन भर गया।

दुखराम—औ कमेरे जहाँ राज कर रहे हैं, वहाँ तो कोई काहे लड़ाई चाहेगा ?

भैया—हाँ दुक्खू भाई, रूसके कमेरे दस साल लगके अपने देसको फिरसे बसा सके हैं। लडाईके पहिले जितना धन पैदा करते थे, उससे अब वह दूना पैदा कर रहे हैं, मुदा उनका अभी बड़ा-बड़ा मसूआ है। आमू दरियाकी दुनिया में सबसे बड़ी नहरे बना रहे हैं, पनबिजली तैयार करनेके कारखाने खड़े कर रहे हैं। रेगिस्तानके पेटमेंसे बगोदो एकड़ खेत निकालनेके लिये रात-दिन एक करके काम कर रहे हैं। वह अगले दस सालमें लोहा, कोयला, बिजली, तेल, सब चीजें आदमी पीछे अमिरिकाके भी बेसी पैदा करना चाहते हैं। गरीबी और बेरोजगारीको उन्होंने अपने देससे खतम कर दिया है, मुदा वो चाहते हैं कि सभी नर-नारी अन्न धनसे भरपूर हो, सुख आरामसे रहें औ पोथीवाले सरगका सुख जिसको कहते हैं, वह इसी धरती पर भोगनेको मिले।

दुखराम—तब भैया, ऊ काहे लड़ाई चाहेंगे? इसीलिये तो उसकाने पर भी वह लड़ाई करनेके लिये तैयार नहीं होते।

भैया—वो जानते हैं, कि लड़ाईसे फायदा खाली जोंकोंको है। दुनियाकी जोंकोंके दिन अब इनेगिने रह गये हैं। लड़ाई छेड़के वो अपनी जिन्दगी बढ़ाना चाहती हैं। चीन भी अपने यहाँ जोंकोंके राजको उठाके देसको अन्न-धनसे भरपूर करना चाहता है। वहाँके सब मरद-मेहरी—पलटनिया जवान तक अपने घरको बनानेमें लगे हुए हैं। डेढ़ही सालमें उन्होंने अपने यहाँसे अन्नका अकाल हटा दिया और तीन करोड़ मनके करीब अनाज हमारे देसको भी उस साल दिया। अभी उनको अपने देसमें सब जगह रेलकी सड़कोंका जाल बिछाना है, सिंचाईके लिये नहरे खोदनी हैं, हर जगह कल-कारखाने खड़े करने हैं। एक-एक बेकत—परानीको पटुआ बनाना है। वह काहे लडाई चाहेंगे?

सन्तोखी—तो जोंके जब जानती हैं, कि कमेरों की सरकारें लड़ाई से भागना चाहती हैं, तो खदेड़के क्यों नहीं उनको लड़नेके लिये तैयार करती?

भैया—जोंके यहभी जानती हैं, कि खदेड़ने पर जो कमेरे खड़े हो गये, तो लेनेके देने पड़ेंगे। कमेरों की सरकारें अतिको बरदास्त नहीं कर सकतीं। औ कमेरों जैसे बीर-बंके दुनियामें और कहीं नहीं हैं।

सन्तोखी—तो जोंकोंके लिये अब दोही रास्ता रह गया है : कमेरोंको फुसला-के उनके लड़कोंको तोपोंका चारा बनाना, औ रुपया दिखाके लोगोंको खरीदना ?

भैया—हाँ, इसमें क्या सन्देह है। हमारे देसमें आजकल अमिरिकाकी जोंकोंने हजारों पढुवा लोगोंको खरीद लिया है। हिन्दीमें औ दूसरी देसी भासाओं में सैकड़ों पोथियाँ औ अखबार लिख-लिखके मुफ्त बँटवा रही है, जिनको बहुतसे लोग पढ़ते भी हैं।

सन्तोखी—झूठके पोथोंको कौन पढ़ेगा भैया ?

भैया—झूठका पोथा तैयार करनेके लिये उसने कई हजार हिन्दुस्तानियोंको खरीद लिया है। और भेदिया तो उसके सारे देसमें फैले हुए हैं। मतिरी लोगों की सभाओंमें जो सलाह-मसविरा होता है, उसकी बात अमेरिकाके गोइदोके पास पहुँचते देर नहीं होती।

सन्तोखी—तबतो भैया मंतरियोंमें भी कुछ अमिरिकाके हातमें बिके होंगे।

भैया—पानीकी तरह रुपया बहा रहा है, कितने लोगोंको किराया औ खरचा देके अमिरिकाकी सैर करनेके लिये भेज रहा है। जिनमें कुछ हमारे मंतरी भी हैं।

दुखराम—तो घूस-रिसवत-भेंट-नजरानाका चारों ओर जाल फैला हुआ है अमिरिकाकी ओर से। एक भभीखनने लंका ढा दिया था, हमारे देसमें तो अमिरिकाने न जाने कितने भभीखन तैयार किये हैं ?

भैया—चीनमें भी अमिरिकाने बहुत भभीखन तैयार किये थे और सोलह अरब रुपया भी पानी की तरह बहाया। मुदा जानते हो न, चीनाके भभीखनोंकी क्या दसा हुई। जब जोंकोके राजमें पिसते-पिसते नाकमें दम आ गया और उन्होंने सब कुछ अपनी आँखोंके सामने देखा, तो जनताकी नजर अमिरिका-के हातमें बिके मंतरियों, मुखियों औ लिखाड़ों की ओरसे फिर गई।

सन्तोखी—तब उन्हें मरकस बाबाके चेलों की बात सच्ची मालुम होने लगी। तब उन्होंने समझा कि मरकस बाबाका रहता छोड़ सुख औ सांतिका दूसरा कोई रहता नहीं है।

हिन्दुस्तानकी आजादी

सन्तोखी—सोहनलाल ! तुम्हारे आनेसे हम लोगोंका कुछ नुकसान भी हुआ कुछ फायदा भी। नुकसान तो यह हुआ कि भैया जो कुछ कहते हैं, वह पहिलेकी तरह सोलहो आना मेरी समझमें नहीं आता। कौन-कौनसे नाम; जिनके कहनेमें जीभ लुटपुटाती है। लेकिन कई बातें तुमने ऐसी खोदके कहवाई, जिन्हें हम सुन न पाते।

दुखराम—हाँ; सन्तोखी भाई ! थोड़ासा नुकसान तो जरूर होता है।

भैया—देसोंका नाम तो नकसा देखनेसे ही साफ-साफ समझमें आता है। हमारे लिए बनारस परयाग बिल्कुल परगट है लेकिन फ्रांस-अमेरिकावालोंके लिए वह उसी तरहके बेकार नाम हैं, जैसे हमारे लिए उनके सहरोंके नाम अच्छा अब चलो हिन्दुस्तानकी आजादीके बारेमें कुछ बात करें। रूस, चीन जैसे लाल झंडेवाले दोनों को छोड़कर सारी दुनिया नरकमें है। हिन्दुस्तान तो सबसे बड़े नरकमें है, क्योंकि इसके ऊपर बिलायती जोंकोंकी भी गुलामी है और अपनी भी। लेकिन दुक्खू भाई प्याजका पहले ऊपरका छिलका निकाला जाता है या भीतरका ?

दुखराम—पहिले भैया ऊपरका छिलका छुड़ाया जाता है, तब नीचे न छुड़ाया जायगा ?

भैया—लेकिन चाकू चलानेमें कुछ नीचेका भी छिलका कट जाता है, तो भी हमें पहिले ऊपरके ही छिलकेके हटानेमें सबसे ज्यादा जोर लगाना पड़ेगा। भीतरके छिलकोंपर भी चोट इसलिए लगाना पड़ती है, कि बिना जमींदारों और पूँजीपतियोंसे टक्कर लिए किसान-मजूर मजबूत भी नहीं होंगे, और न यही समझ पायेंगे कि हम नरकमें इन्हीं जोंकोंके कारन पड़े हैं। हिन्दुस्तानवालोंने आजसे ९८ बरस पहिले अपने देसको आजाद करनेकी कोसिस की।

सन्तोखी—१८५७ के गदरके बखतमें न भैया ?

भैया—और उसीके चार परस पहिले मरकस बाबाने लिखा था, कि अँग-

रेज सार्जेन्ट, जिन हिन्दुस्तानी सिपाहियोंको अपने कामके लिए कवायद-परेड सिखा रहे हैं, वही सिपाही अपनी आजादीके भी सिपाही बन सकते हैं।

दुखराम—तो बाबाके कहनेके ४ ही साल बाद तो उन्होंने कोसिस की। लेकिन आजादी क्यों नहीं मिली भैया ?

भैया—सिपाहियोंको यह पूरी तौरसे ग्यान न था, कि वह क्या चाहते हैं।

सोहनलाल—पता क्यों नहीं था, वह जानते थे कि हिन्दुस्तानसे अँगरेजी राजको खतम करना है।

भैया—तुम्हारे पास एक पुराना घड़ा है, तुम उसको फोड़ रहे हो, तो क्या तुम्हारा यह जानना काफी है, कि "मैं घड़ेको फोड़ रहा हूँ" या यह भी जानना चाहिए कि इसे फोड़कर मै किससे पानी पियूँगा।

दुखराम—हाँ भैया, सिर्फ घड़ा फोड़नेसे काम नहीं चलेगा, पानी पीनेका भी इन्जाम होना चाहिए।

भैया—सिपाही घडा फोड़ना चाहते थे, नये घड़ेका उन्हें ख्याल भी नहीं था। उनके नेता थे सड़े-सड़े जमीदार, राजा और नवाब, जिनको लड़ाईकी विद्याका, उस समयके हथियारोंका ग्यान नहीं था। कम्पनीने किसीकी पेन्सन जपत कर ली थी, किसीका राज छीन लिया था, कोई समझता था कि हम भी छोटे-बड़े राजा-नवाब हो जायेंगे। बस सब इकट्ठा हो गये थे। सिपाहियोंने बहादुरी की, हिन्दू मुसलमान दोनों जी-जानसे लड़े, लेकिन उनके पास आँखें नहीं थी ?

दुखराम—आँख नहीं थी ? क्या वह सब अंधे थे ?

भैया—पलटनकी आँखें अफसर होते हैं दुक्खू भाई ! सौ-सौ पचास-पचास सिपाही अपने मनसे जिधरसे चाहें, लडने लगें, तो दुसमन उन्हे जल्दी तबाह कर देगा। पाँचों उगलियाँ बाहरकी ओर खुली हैं, लेकिन हथेलीसे जुड़ी हैं। इसी तरह अलग बिखरे हुए सिपाही तभी मजबूत होते हैं जब हजारों-लाखोंको एकसे एक नत्थी कर दिया जाता है। अफसर यह काम करते हैं। दूसरा दोस यह था, कि जो राजा-नवाब उनके अगुआ बने थे, वह लड़ाईके अगुआ होने लायक

नहीं थे। सब अपना-अपना स्वारथ देखते थे। तीसरा दोस यह था कि जनता इन विदेसियोंसे लड़नेवाले अपने सिपाहियोंको अपना नहीं समझती थी।

दुखराम—क्यों भैया, वह हमारे भाई-बन्द तो थे ही ?

भैया—भाई-बन्द कह देनेसे नहीं काम चलेगा दुक्खू भाई, जब वह गाँवों और सहरोंको लूटते चलते थे, लोग उनके आनेकी खबर सुनते ही घर-दुआर की सुध छोड़ भाग निकलते थे, तो कैसे कह सकते हो कि वह भाई-बन्द थे ?

सोहनलाल—लेकिन लोगोंसे पैसा न लें तो उनका खर्च कैसे चले ?

भैया—लेकिन वह डकैत तो नहीं थे। वह अँगरेजोंको इसलिए निकालना चाहते थे, कि लोग ज्यादा सुखी रहें। लोगोंको यह बात अच्छी तरहसे मालूम होती, तो लोग तन-मन-धनसे उनकी मदद करते। इन सबसे यही मालूम होता है कि जो लड़के जान देनेवाले थे, उनको मालूम नहीं था कि वे अँगरेजोंको निकालकर क्या करेंगे, इसीलिए वह जनताको भी नहीं समझा सकते थे—क्यों तुम्हें हमारी मदद करनी चाहिए। हो सकता है जो और कुछ दिन लड़नेका मौका मिला होता तो खुद गलती करके सीखते। लेकिन कुछ बागी राजाओं-नवाबोंको छोड़कर बाकी सारी जोंके, राजा-महाराजा-नवाब अपने भाइयोंके खिलाफ अँगरेजोंकी मदद कर रही हैं। बेचारोंको सीखनेका मौका नहीं मिला। कैसे खूनकी नदी बहाकर जुल्म करके उस लड़ाईको दबा दिया गया, यह कहनेकी जरूरत नहीं। और दबा भी बीस सालके लिए।

सन्तोखी—बीस सालके बाद फिर सुतन्तर होनेका ख्याल क्यों आने लगा ?

भैया—हिन्दू समझते थे कि समुन्दर पार जानेपर धरम चला जाता है और दूसरेके हाथका खाना खा लेनेसे आदमी किरिस्तान हो जाता है इसीलिए वह कुएँके मेंढक रहे। अब एक-एक करके कुछ लोग विलायत जाने लगे, कितने ही लोग हिन्दुस्तान हीमें अँगरेजी पढ़कर किताबोंसे दुनियाके बारेमें जानने लगे। उन्होंने देखा कि आदमी भेड़ नहीं हैं, राजा भगवानकी ओरसे भेजा नहीं जाता। विलायतमें राजा हैं, लेकिन राजका काम देखती है पंचायत—पार्लामेंट। अमेरिकामें तो राजा भी नहीं है, वह पंचायती राज है। अँगरेजोंको अपना राज चलानेके लिए सस्ते क्लर्कों और नौकरोंकी जरूरत है; इसलिए

अँगरेजी पढ़ाना जरूरी था, अँगरेजीकी किताबोंके पढ़नेपर साहब बहादुर नंगे दिखाई देने लगे और दुनियाके और देसोंकी बातें पढ़कर उनके दिलमें भी आजादीका ख्याल आने लगा। कुछ होसियार अँगरेजोंने सोचा कि कहीं यह हिन्दुस्तानी हाथसे बाहर न हो जायँ। उनकी मददसे कांगरेसकी अस्थापना की।

दुखराम—क्या भैया! बिलायती जोंकोंने कांगरेसको अस्थापित किया?

भैया—हाँ, गोरे साहबोंने काले साहबोंको बढ़ावा दिया। पचीस साल तक तो कांगरेसमें इन्हीं काले साहबोंका जोर रहा। इनका काम था, सालमें एक बार किसी बड़े सहरमें इकट्ठा होना और हाथ जोड़कर अँगरेजी सरकारसे परार्थना करना—"भगवान हमें यह नौकरी दो, हमें वह नौकरी दो।" सिच्छा और बढ़ने लगी। नौकरियाँ कम पड़ने लगीं। लोगोंकी तकलीफ बढ़ गई, धीरे-धीरे गोरे भगवान से परार्थना करना बहुत से लोग बेकार समझने लगे। उनमेंसे कुछ लोगोंने बम-पिस्तौलसे एकाध अँगरेजों या काले अफसरोंको मारा। कुछको फाँसी हुई, लोगोंने सहीद कहके उनका सम्मान किया।

दुखराम—उससे कुछ फायदा हुआ कि नहीं भैया?

भैया—सबसे बड़ा फायदा यह हुआ कि हिन्दुस्तानके नौजवान निरभय होने लगे। मौत उनके लिए डर नहीं परेमकी चीज बन गई। बाकी तो मैं कही चुका हूँ कि एक्के-दुक्के अफसरोंके मारनेसे जगह खाली नहीं होती। फिर पिछला (१९१४–१८) महाभारत आया। लड़ाईने सारी दुनियामें उथल-पुथल मचा दी। रूसमें कमेरोंका राज कायम हो गया, इसका भी असर पड़ा। दच्छिनी अफ्रीकामें गाँधीजी गोरी सरकारसे लड़ चुके थे। लड़ाईके बीचमें वह हिन्दुस्तानी आ गये।

सोहनलाल—गाँधीजी जब हिन्दुस्तान आये तो देसकी सुतंतरताईके लिए यहाँ कौन-कौन काम कर रहे थे?

भैया—तीन तरहके लोग थे एक तो सपरू जैसे पुराने ढर्रेके कांगरेसी नेता जिनका काम था सरकारसे परार्थना करना, भिच्छा माँगना। वह किसी तरहका जोखिम उठानेको तैयार नहीं थे। यह खूब अंगरेजी पढ़े लिखे होते थे। चमड़ेके रंगसे मजबूर थे, नहीं तो जहाँ तक बन पड़ता था वह साहब बहादुरका ठाट-बाट

रखते थे। इनमें से चलते पुरजेके लोगोंको अँग्रेज कोई नौकरी या पदवी देकर अपनी ओर खींच लेते थे। इनका बिसवास था, कि अँगरेजोंको न्यायसे बड़ा परेम है। उन्हें जोंकोंके स्वभावका पता नहीं था, इसलिए समझते थे, कि बिलायती जोंकें किसी दिन अवढरदानी संकरकी तरह हिन्दुस्तानको निहाल कर देंगी। दूसरी ओर कुछ नौजवान थे, जो समझते थे कि बम-पिस्तौलसे दो चार सरकारी नौकरोंको मार देनेसे बिलायती जोंके हिन्दुस्तान छोड़कर चली जायेंगी। तीसरी तरहके लोग थे, जो कभी-कभी गरम-गरम लेक्चर दे देते थे और अंगरेजोंको बुरा-भला कहकर कभी-कभी जेल चले जाया करते थे। इन तीनों तरहके लोगोंमें से किसीको आम जनतासे कोई वास्ता नहीं था। वह समझते थे, कि जनता न किसी राजनीतिको समझ सकती है, न निरभय होकर बलिदान कर सकती है, हम नेता ही हिन्दुस्तानका बेड़ा पार कर सकते है। गाँधीजी जनताकी ताकतको दक्खिनी अफरीकासे कुछ-कुछ समझने लगे थे। उन्होंने हिन्दुस्तानी कुलियोंको वहाँ देखा था, कि वह कैसे लड़ाके हैं। पहिली लड़ाई खतम हो रही थी। युद्धके लिए अंग्रेजोंने भारत रच्छा कानून बना लिया था, लेकिन युद्धके बाद वह कानून चल नहीं सकता था। वह जानते थे कि लडाईके बाद दुनिया भरमें जबरजस्त उथल-पुथल होगी। रूसमें उन्होंने देख ही लिया था, कि कैसे कमेरोंने जोंकोंको मसल डाला। इसलिए अंगरेजोंने हिन्दुस्तानमें एक ऐसा कानून बनाया, जिससे उथल-पुथल मचाने वालोंको मनमानी सजा दी जाये। बोलक्कड़ लोगोंने इस कानूनका बहुत विरोध किया, लेकिन सरकार क्यों सुने? गांधीजीने इस बखत आगे कदम बढ़ाया और जनताकी तागतको इस काममें लगाया।

सोहनलाल—गाधीजीका यह बड़ा काम है न भैया?

भैया—बहुत बड़ा काम है। इतना बड़ा काम है, जिसके लिए हिन्दुस्तान उन्हें कभी नहीं भूलेगा। जनताकी तागतके सामने अंगरेजी सरकार घबराई। हजारों आदमियोंको जेलमें डाला। लोगोंके दिलसे जेलका डर बिलकुल जाता रहा। अंग्रेजोंने जो कानून बनाया था, वह रद्दीकी टोकरीमें डाल दिया गया। अब चिन्ता जेल जानेवालोंको नहीं बल्कि चिन्ता थी अंग्रेजोंको इतने लोगोंके

रखनेके लिए जेल कहाँसे आयेंगे। गाँधीजीने साल भरमें सुराज पानेकी बात कही, जोंकोंके दिलको बदल देनेकी बात कही। लेकिन कोई जादू-मन्तर थोड़े ही है कि सालमें सुराज चला आवे।

दुखराम—और जोंकोंका दिल तब न बदले जबकि उनके पास दिल हो।

भैया—गाँधीजीकी लड़ाई बन्द हो गई, लेकिन पहिले ही से कितने ही नौजवानोंने रूसके कमेरोंकी बात सुनी। मरकस बाबाकी सिच्छाको भी वह पढ़ने लगे। हिन्दुस्तानमें भी उस सिच्छाका बीज पड़ा। अंगरेजी सरकार घबराने लगी, यह बोलसेविक हिन्दुस्तानमें कैसे पहुँच गए? उन्होंने डाँगे और दूसरे कमूनिस्तोंपर १९२४में कानपुरमें मुकदमा चलाया और उन्हें कड़ी सजा दी। कमूनिस्त मजूरोंमें काम कर रहे थे। अपने हकके लिए मजूर लड़ने लगे और मजूरी बढ़ाने या किसी मजूरके निकालने पर बड़ी-बड़ी हड़तालें होने लगीं। १९२९में ४ लाख मजूरोंने कलकत्ताकी गलियोंमें घूमते हुए विलायतसे भेजे साइमन कमीसनका विरोध किया।

दुखराम—साइमन कमीसन क्या था भैया?

भैया—बिलायती जोकें बहुत चलाक थीं भाई। जब लोगोंमें ज्यादा असंतोष देखती हैं, तो पाँच-सात आदमियोंकी गुटको यह कहकर भेज देती हैं, कि ये लोग जाकर जाँच-पड़ताल करेंगे, फिर हम तुम्हारे लिये जरूर कुछ करेंगे। इसीको कमीसन कहते हैं। उस वक्त जो कमीसन आया था, उसका मुखिया था साइमन—जोंकोंका एक छँटा सरदार। इसीलिए उस कमीसनको साइमन कमीसन कहा जाता था। कमूनिस्तोंकी इस तागतको देखकर सरकार और घबराई और देस भरके कोने-कोनेसे गिरफ्तार करके, जोसी, अधिकारी, डाँगे, आदि उनतिस कमूनिस्तोंपर मेरठमें मुकदमा चलाया।

दुखराम—तो भैया मरकस बाबाकी सिच्छा फैलानेमें बिलायती जोंकें बहुत घबराई?

भैया—उतनेमें ही सन्तोस नहीं हुआ दुस्चू भाई। १९३४में तो सरकारने कानून निकाल दिया कि कमूनिस्त पार्टीमें जो भी जायेगा, उसे जेलमें भेज दिया जायगा। लेकिन मरकस बाबाकी सिच्छा न फूल-सज्जापर सोनेवालोंके लिए और

न गोश्त गनेसोंके लिए ही है। वह हवामें सिच्छा नहीं देती, नरक-सरगका लोभ भी वहाँ नहीं। जो गरीब हैं, मजूर हैं, रोज तकलीफोंको भुगत रहे हैं, उनको यह सिच्छा बहुत जल्दी समझमें आने लगती है। जनताको इस तरह मैदानमें आते देखकर बिलायती जोंकोंके पेटमें पानी कैसे पचता? जोंके घबराती थीं, बिलायती ही नहीं हिन्दुस्तानी भी। इसलिए नहीं कि गाँधीजी बोलसेविक थे और वह धनिकों का धन छीनकर पचायती बना देते। गाँधीजीका साथ करनेका मतलब जेहलखाना-जुरमाना था, इसीलिए वह घबराती थीं। लेकिन गाँधीजीके "बिलायती माल न छुओ" कहनेसे हिन्दुस्तानी मिलोंका माल खूब बिकने लगा। खूब नफा होने लगी, तो सेठ लोग भी गाँधीजीकी आरती उतारने लगे, जमीदार भी दण्डवत् करने लगे, और अब गाँधीजीने भी बार-बार कहना सुरू किया, मै सेठो-जमीदारोंका धन छीनना नहीं चाहता, मै तो इतना ही चाहता हूँ कि सेठ-जमीदार-किसान-मजूरोंके माँ-बाप बन जायँ।

दुखराम—इसीको कहते है भैया, "नँदिया (दूधके बरतन) की साखी बिलाई।"

भैया—यह सब कथा पुरानी हो गई दुक्खू भाई! बिलायती जोकोंने देखा कि कमेरोका राज रूसमें कमजोर होनेकी जगह और बढ़ता ही जा रहा है, मरकस बाबाकी सिच्छा भी दुनियामें फैलती जा रही है, हिन्दुस्तानमें भी उसे दबाया नहीं जा सकता। उधर हिन्दुस्तानी भी सुराज-सुराज कह रहे हैं, अगर कुछ नहीं करेंगे, तो सब हमारे खिलाफ हो जायँगे।

सन्तोखी—बन्धक (रेहन) से बूड़ा (बै) हो जायगा।

सोहनलाल—और हिन्दू-सभावाले भी तो लड़ाके थे।

भैया—रहने दो हिन्दू सभाकी बात।

सोहनलाल—सावरकर क्या लड़े नहीं, क्या उन्होंने अपनी जवानी अँगरेजों-के साथ लड़नेमें नहीं बिताई?

भैया—क्या उन्होंने अपने बुढ़ापेको अँगरेजोके राजको मजबूत करनेके लिए नहीं बिताया? भाई परमानन्दको भी किसी वक्त फाँसीकी सजा मिली थी, लेकिन उसका यह मतलब नहीं है, कि वह पुरानी आग बाद भी उनके भीतर रही।

सोहन भाई ! अंडमनके काले पानीमें उनकी सारी आग ठंडी हो गई। बासी खानेवाला बहादुर नहीं होता।

दुखराम—ऐसे ही हिन्दू-सभाके नेता रहे, जो गरीबोंका खून कच्चा पी जाते। सिपाही-सवार छाँट-छाँट कर गुंडे रखते और एक की डेढ़ मालगुजारी दिये बिना पिंड नहीं छूटता। कभी मोटरका चन्दा लगता, तो कभी हाथी का। ब्याह बरातके लिए हजारों रुपया वसूल करते।

भैया—बस हिन्दू-सभामें या तो इसी तरहके गरीबोंके खूनको चूसकर मोटे हुए राजा-महाराजा जिमीदार हैं, या उनके टुकड़ेसे जीनेवाले; क्या जाने दो-चार पागल भी निकल आये।

दुखराम—तो अब यह लोग जोकोंके सरदार बनकर अपनी वीरता दिखलाना चाहते हैं ?

भैया—देखो तो दुक्खू भाई ! जोकें अभी कितने-कितने तरहके नाटक खेलती हैं। धरमके नामसे उन्होंने हजारों बरसोंसे पागल कर रखा है, अब "हिन्दू धर्म डूबा" कहकर वह गांधीजीको गाली देने चले हैं।

सोहनलाल—तो भैया ! तुम चाहते हो कि हिन्दू अपना धर्म न बचावें ?

भैया—जिनको गुलामीसे इतना प्रेम है, वह भारत माताकी कितनी इज्जत करते हैं, यह खुद समझ सकते हो।

सोहनलाल—तो हिन्दू क्या बाधा डालते हैं ?

भैया—हिन्दुओंका बरताव। हिन्दुओंने दस करोड़ आदमियोंको चमार, मुसहर, डोम बनाकर उन्हें जानवरसे भी बदतर कर दिया। जब कोई उनमेंसे मन्दिरोंमें जाता है, तो कह देते हैं कि पोथीमें इसके खिलाफ लिखा है। पोथियाँ किसने बनाईं ? उन्हींने, जो कहते हैं कि जोंकें भगवानकी ओरसे भेजी गई हैं, जमीदार और सेठ किसानों-मजूरोंको चूसते हैं, तो यह भी वह धरम करते हैं। पहिले जनमका पुन्न है, इसीलिए उनको धन मिला है। लेकिन दुक्खू भाई ! तुम्हें मालुम है न कि जोंकोंके घरमें भगवान सोनेकी बरसा नहीं करते, एक आदमीको धनी बननेके लिये ही निन्नानबे आदमियोंको भूखा मरना पड़ता है।

दुखराम—हाँ भैया ! सब पोथी पत्रा जोकोंके फायदेके लिए बना है।

भैया—अभी ३० बरस पहिले (१६२५ ई०) तक नेपालके हिन्दू-राजमें आदमी खरीदे-बेचे जाते थे और पोथी-पत्रेवाले कहते फिरते थे, कि यह सब भगवानकी पोथीमें लिखा हुआ है।

दुखराम—तो भैया! नेपालमें आदमियोंका बेचना-खरीदना कैसे बन्द हुआ?

भैया—दुनियामें थू-थू होने लगी, इसीलिये। और उसी नेपाल राजकी सावरकर और भाई परमानन्द तारीफ करते नहीं थकते थे। असल बात है कि जो-जो हिन्दू-हिन्दूके नामपर चिल्लाते थे, उनमें बहुत ज्यादा अँगरेजोंके खुसामदी थे—"करन चहत निज प्रभु कर काजा"। रूसमें भी जब जोंकोंका राज था, तो इस तरहके लोग वहाँ भी बराबर झगडे उठाया करते थे।

दुखराम—रूसमें भी तो भैया १८२ जाति हैं। वहाँ कैसे रास्ता निकाला गया?

भैया—वहाँ पहिले ही मान लिया गया, कि कोई जाति दूसरी जातिकी गुलाम नहीं है, जिस जातिकी जो भूमि है, उसका कर्त्ता-धर्ता वही है। इसीलिये एक-एक जातिका एक-एक पंचायती राज बनाया गया है, जहाँके राज-काजको उसी जातिके लोग चलाते हैं। अपनी भूमिमें अपने कर्त्ता-धर्ता होनेसे उनको डर नही है, कि दूसरी जाति दबायेगी। इसीलिए एक सौ बयासी जातियोंने मिलकर बीस करोड आदमियोंका एक बड़ा पंचायती राज बनाया है। यहाँ भी उसी बातको मान लो तो सारा झगड़ा मिट जाये।

सोहनलाल—लेकिन पाकिस्तान बन जाने पर वहाँके मुसल्मान ईरान, तुर्की, अफगानिस्तानसे मेल करके हिन्दुस्तानपर हल्ला बोल दें तो फिर क्या होगा?

भैया—सोहन भाई! दुनियामें जितने मुसल्मान देस हैं, सब पाकिस्तानसे चौथाई-तिहाई ही हैं। पंजाबकी ओरके पाकिस्तानके मुसल्मानोंकी आबादी ३ करोड़ होगी जब कि ईरानकी १ करोड़ ८० लाख है, अफगानिस्तान १ करोड़, तुर्कीकी १ करोड़ ७८ लाख, मिश्रकी १ करोड़ ६० लाख; बताओ दूसरे मुस्लिम देस पाकिस्तानकी पूँछ बन जायेंगे या पाकिस्तान दूसरे देसोंका? मरकस

बाबाने तो ऐसा रास्ता बतलाया है, कि उसमें देस-जाति-धरमका अड़ंगा ही नहीं लग सकता। हम रोटी-कपड़ाके लिये लड़ते हैं, कोई धरम हमार रास्तेमें बाधा न डाले, जो बाधा डालेगा उसे ही नुकसान उठाना पड़ेगा। हिन्दूके नामपर मुसल्मानके नामपर जोंकोंको छिपाया नहीं जा सकता।

दुखराम—भैया! बरसातके मेंढकोंकी तरहसे जान पड़ता है जोकें न जाने कितने धरम निकालेंगी और कौन-कौन-सी खुराफात जोड़ेंगी। लेकिन मरकस बाबाने जो कसौटी दे दी है, उससे खरे-खोटेका पहचानना बहुत आसान है। मैं देख चुका हूँ, कितने राजा-महाराजा लोग कौसलमें वोटके लिए खड़े हुए थे और कितने पंडित और पुरोहित बड़ा-बड़ा टीका लगाकर लोगोंको समझाते फिरते थे, कि काँग्रेसवाले जो गये तो हिन्दू-धरम नहीं बचेगा, वह हिन्दू-मुसल्मान सबको एक करना चाहते हैं।

भैया—लेकिन दुक्खू भाई, काँगरेसवालोंमें जो किसीने मुसल्मानके साथ खाया होगा, तो रोटी-दाल, लेकिन इन राजा-महाराजाओंकी लीला अपरम्पार है। यह साहब बहादुरके साथ बैठ न जाने क्या-क्या खाते रहे।

दुखराम—इसीको कहते हैं "छप्पन चूहा खाइके बिलारी भई भां ..न"।

सोहनलाल—लेकिन भैया! फलाने सासतरी, फलाने राजा जैसे बड़े-बड़े दिग्गज लोग भी हिन्दू धरमकी बात करते हैं?

भैया—तुम बूढ़े-बूढ़े नामोंको देकर डराना चाहते हो। मैंने कहा नहीं कि बूढ़ोंका दिमाग मरनेसे पहिले ही मुरदा हो जाता है। ऐसे बहुत कम बूढ़े देखनेमें आते हैं, जिनका दिमाग मरते दम तक गंगाकी धाराकी भाँति बहता रहे, नहीं तो बेसी सठिया जाते हैं। फिर तुम ऐसे नामोंको भी ले रहे हो, जिनके केस अँगरेजोंकी गुलामीमें पक गये। जिन्होंने अपने पेटके लिए अँगरेजोंके हाथको मजबूत किया। पाँच रुपयेकी नौकरी करनेवाले सरकारी चपरासीसे आप कुछ आसा भी रख सकते हैं, सोहन बाबू, क्योंकि उसको पाँच रुपयेकी नौकरी दूसरी जगह भी मिल सकती है, आधा पेटको तो आधा खाना कहीं न कहीं मिलता ही है। लेकिन जिसने दो हजार-पाँच हजारके लिए अँगरेजोंकी ताबेदारी कबूल की थी, उसके भीतर उतनी हिम्मत कभी नहीं हो सकती। नौकरी छूट

जानेपर कौन इतनी मोटी तनखाह देगा ? फिर घरमें जो इतना बड़ा-बड़ा लिफाफा है वह कैसे रहेगा ? कहाँ नवाबी ठाट और नवाबी मिजाज और कहाँ अब दर-दरके भिखारी ! क्या तुम कभी ऐसे लोगोसे उम्मेद रख सकते, कि वह अंग्रेजोंके खिलाफ जायँगे ?

दुखराम—पिनसिनिहाँ, भैया. और लीचड़ (डरपोक) होते हैं । पिनसिनहाका क्या कबुरमें पैर लटकाये सभी बूढ़े लीचड़ होते हैं । जवानोंको तो जल्दबाज कह देते हैं, लेकिन जल्दबाज होनेपर भी जवान अपनी इज्जत बातपर जान दे देते हैं; लेकिन बूढ़ोंकी चले तो बेसरमीकी विद्या जवानोंको भी सिखा दें ।

अध्याय ११

पंडा, मुल्ला, सेठ

सन्तोखी—पुरोहितों और मौलवियों के बारे में बताओ भैया ?

भैया —वे खुद जोंक हैं और जोंकोंके दलाल भी । देखते नहीं जब कोई राजा कौन्सिलके लिए खड़े होते थे तो पुरोहित लोग चारों ओर चक्कर काटने लगते, भगवान और धरमकी दुहाई देते-देते कान बहरा कर देते । पुरोहितो और मौलवियोंने कभी गरीबोंका पच्छ नहीं लिया ।

सोहनलाल—भैया, तुम भी कबीर साहबकी तरह मौलवियों और पंडितोंके पीछे पड़ गये ।

भैया—पंडित सरगका एक रस्ता बताते थे, मोलवी दूसरा रस्ता, मोलवीके मतसे गायका मास खाकर सरग जाता है, पंडितके मतसे गायका गोबर खाकर । पंडित सिरपर चुटिया बाँधकर सरग पहुँचाता है, मोलवी दाढ़ीमे चुटिया बाँधनेको कहता है । फिर यह भी नहीं कि कह दें कि "मारग सोइ जाकहँ जो भावा," वह एक-दूसरेका सिर भी फोड़नेको तैयार थे । कबीर साहबको यह बुरा लगता था, वह इस खून-खराबीको पसन्द नहीं करते थे, चाहते थे हिंदू-मुसलमान एक होकर रहें । इसलिये उन्होंने कहा "सोई राम सोई रहीम" । बेचारे समझते थे

कि है कोई अलख निरंजन इस दुनियाकी सुध लेनेवाला, इसलिए नहीं चाहते थे कि दुनियाकी सुध लेनेवाले (राम-रहीम) पर विसवास करनेवाले एक-दूसरे-का गला काटें। उन्होंने सोचा था कि राम-रहीमको एक मान लेनेसे काम बन जायगा लेकिन झगड़ेका दोसी राम-रहीम नहीं था।

दुखराम—राम-रहीम दोसी नहीं था तो कौन दोसी था भैया!

भैया—जो राम-रहीम होता और उसमें उतनी तागत होती जितनी पंडितों-की पोथियों और मुल्लाकी किताबमें लिखी हुई है तो हजारों बरसोंसे अपने नामपर करोड़ों आदमिकोंको कटते-मरते देखकर वह चुपचाप बैठा न रहता। असलमें मजहबके पैदा करनेवाले भी जोंके हैं। भगवानको भी पैदा करनेवाली जोंकें हैं। मैंने पहले कहा था कि एक निठल्ले आदमीको कोई क्यों अपना सरबस देकर भूखे मरनेके लिए तैयार होता? इसीलिए उन्होंने राम-रहीमको पैदा किया, जिसने उन्हें राजा बनाया। राम-रहीम हैं, कबीर साहब यह विसवास रखते थे, फिर पंडित-मुल्लाके झगड़ेको मिटाना चाहते थे। उनको पता ही नहीं था कि जब तक दुनियाको नरक बनानेवाली जोंके हैं तब तक राम-रहीम एक कह देनेसे झगड़ा नहीं मिटेगा।

दुखराम—मैं भी एक बात कहूँ भैया!

भैया—कहो दुक्खू भाई।

दुखराम—तुमने भैया जो उस दिन कहा था न कि मजहब और भगवान को गाली देनेमें हम लोगोंको अपनी तागत नहीं लगानी चाहिए, हमें देखना है कि कैसे कमेरोंको रोटी-कपड़ा मिलेगा? मैंने अपने मुँहमें जाबा लगा लिया लेकिन जानते हो न भैया, मरकस बाबाकी बातने दिलमें ऐसी आग लगा दी है कि जोंकोंके जाल-फरेबको कहना ही पड़ता है। उसमें जब कोई भाई बीचमें भगवानकी बात कहता है तो नाहीं कहना ही पड़ता है। नाहीं कहना खराब तो नहीं है भैया!

भैया—नहीं दुक्खू भाई, साँच कहना खराब नहीं है। मैंने इतना ही कहा था कि रोटी-कपड़ेकी बात छोड़कर जो तुम देवी-देवता और ओझा-सोखाके खिलाफ कहनेमें अपनी सारी ताकत लगा दोगे, तो असली काम पड़ा रह जायगा।

दुखराम—मैं इसे अच्छी तरह समझ गया हूँ भैया ! एक दिन मैं वलीदपुरमें था। रमजान भइयवा मेरा यार है। रलजान, मैं औ सोवरन राउत तीनों बगीचामें बैठकर बात कर रहे थे उसी वक्त हरखू पंडित उधरसे जा रहे थे। सोवरनने बाबा पालागी किया, हरखू पंडित पासमें आकर मेरे बारेमें पूछा तो सोवरनने कह दिया कि दुखराम राउत हैं। हरखू पंडितका मुँह उतर गया और आँख बडी-बडीकर मेरी ओर देखने लगे। मैंने भी पालागी कहकर उनको बैठनेके लिए कहा। उन्होंने कड़ककर कहा—"जा तेरी पैलगी नहीं लेंगे। भगवानको नहीं मानता, देवी-देवताको गाली देता है।" मैंने बहुत नरमीसे कहा—"देवता ! दुरबासा रिखी ! गरीबपर काहे नराज होते हैं, मै किसी देवी-देवताको गाली नहीं देता।" हरखू पंडितने कहा—"तो तुम भगवानको मानते हो ?" मैंने कहा—"मैं तो बाबा ! भगवानको नहीं मानता लेकिन भगवानके पूजनेवालोंसे मेरा बहुत प्रेम है। इसीलिए भगवानको मैं गाली नहीं देता।" हरखू पंडितने मुँह फाड़कर कहा—"जो तू खुद नहीं मानता, तो जरूर गाली देता होगा।" मैंने कहा—"बाबा ! हमारा बच्चा है, वह हाथी-घोडा लेकर खेलता है, हम सयाने जानते हैं कि वह असली हाथी-घोडा नहीं है, लकड़ी-मट्टीका है लडकेको जो यही बात हम कहने लगें तो लड़का रोने लगेगा। बच्चेसे हमको प्रेम है, और बच्चेको काठ-मट्टीके घोड़ेसे, इसीलिए बच्चेके प्रेमका ख्याल करके हम उस खिलौनेको भी भला-बुरा नहीं कहते।" मैंने ठीक कहा न भैया !

भैया—हाँ, ठीक कहा दुक्खू भाई !

दुखराम—हरखू पंडितने कहा—तू भगवानको नहीं मानता, तो तेरी गति नहीं होगी, लेकिन तू भगवानको गाली नहीं देता तो यह अच्छा है। हरखू पंडितकी टेढ़ी भौंहें कुछ सीधी हुईं, लेकिन जब वह चलने लगे, तो उनका मुँह उसी तरह उतरा हुआ था। दूसरे दिनकी बात है मैं और रमजान खटियापर बैठे थे; उनके यहाँ गाँवके जुलाहोंको नमाज पढ़ानेके लिए एक मोलवी आते हैं। रमजानने किसी दिन कह दिया था। मोलवीको देखकर हम दोनों खड़े हो गये और उन्हें चारपाईपर बैठाया। मोलवीको किसीने कह दिया था

कि दुखराम रमजानके दरवाजेपर बैठा हुआ है, वह राम-रहीमको नहीं मानता। मोलवी साहबने कहा—"सुना है दुखराम राउत तुम करतारको नहीं मानते। हिन्दू मुसल्मान बहुत-सी बातें अलग-अलग मानते हैं। लेकिन दुनियाके बनानेवालेको सभी मानते हैं, तुम क्यों नहीं मानते? मैंने कहा—दुनिया बड़ी खराब बनी है मोलवी साहब, हजारों आदमी जी लड़ाकर काम करते, उनका पेट नहीं भरता और एक आदमी निठल्ला बैठा रहता है, वह ऐस-जैस करता है, जिस करतारने ऐसी नरक दुनिया बनाई है उसे माननेसे क्या फायदा!" मोलवीने कहा—"करतारसे दुआ माँगोगे, उसके सामने गिड़गिड़ाओगे तो वह तुम्हारी बिगड़ी बना देगा।" मैंने कहा—मैंने कसूर किया था कि हमें बिगाड़ा, और जो बिना कसूर ही इतना बिगाड़ सकता है उससे मैं किसी चीजकी उम्मेद नहीं करता।" मोलवीने कहा—"तो करतार, सरग-दोजख कुछ नहीं मानते।" मैंने कहा—"मैं नहीं मानता मोलवी साहब, लेकिन आप या दूसरा जो कोई करतारको मानता है, उसको मैं बुरा नहीं कहता। मैं इतना ही चाहता हूँ कि रोटी-कपड़ेकी दुनियामें किसीको चिन्ता नहीं रहे, बस इस काममें हम लोग सब एक रहें, क्योंकि भूख सबको एक तरह सताती है, जाड़ा-गरमी एक तरह लगती है।" मोलवी हरखू पंडितके इतना उजड्ड नहीं थे। उन्होंने मुस्कराते हुए कहा—"तो रोटी-कपड़ेके लिए काम करनेको कौन रोकता है?" मैंने कहा—"न रोके तो इससे मुझे बड़ी खुसी होगी मोलवी साहब, फिर तो मैं कहूँगा कि रोटी-कपड़ेका काम लोगोंको सौंप दें जो कि जोंकोंका राज हटा हम कमेरोंका राज कायम करना चाहते हैं।" —मोलवीने कहा—"और हम क्या करें।" मैंने कहा—"आपको बहुत बड़ा काम है, जिनगी तो चार दिनकी है न, सरगमें आदमी बे अन्त समय तक रहता है, बस सरगका काम आप सँभालो।" मोलवीने कहा—"जो हम खाली सरग हीकी बात करें, तो हमें कौन पूछेगा। हमें गंडा देना पड़ता है, तबीज देनी पड़ती है।" मैंने कहा—"गंडा भी आप दीजिये, तबीज भी आप दीजिये, लेकिन सरग जानेके लिए।" मोलवी ने कहा—"और जो किसीको लड़का-लड़की चाहिये तो।" मैंने कहा—"गंडा-तबीजको मैं नहीं पसन्द करता लेकिन मैं जानता हूँ कि जब तक वह नरककी

दुनिया रहेगी तब तक गडा-तबीजवाले देने-लेनेवालोंको कोई नहीं रोक सकता।" क्यों भैया मैंने ठीक कहा न ?

भैया—ठीक कहा तुमने दुक्खू भाई ! बेठीक होनेका तुम्हे कैसे सक हुआ।

दुखराम—सक इसीलिये हुआ भैया ! कि इसके बारेमें बात नहीं की थी। खाली मरकस बाबाने जो आँख खोल दी है, उसीके बलपर मै बोल गया।

भैया—और तुम्हारा बोलना ठीक रहा दुक्खू भाई !

दुखराम—और जोतिसके बारेमें तुम्हारी क्या राय है ?

भैया—जोतिस दो तरहका है दुक्खू भाई, एक तो वह जोतिस है जो गिनती करके बतला देता है, कि सुरुज गरहन कब होगा चंदर-गरहन कब होगा। अकासमें मंगल, बुध आदि-आदि गरह और हमारी धरती भी सुरुज के किनारे घूमती है। जितने अकासमें तारे छिटके देखते हो, उनमें आँखसे दिखाई देनेवाले पाँच ही छ तारे हैं जो सुरुजके किनारे घूमते हैं, नहीं तो बाकी सभी तारे सुरुज है।

दुखराम—तो सब तारे सुरुज हैं भैया ! फिर वह इतने छोटे क्यों मालूम होते हैं ?

भैया—हमसे बहुत दूर हैं, दो आदमी बराबर-बराबरसे हो, एक हमसे पाँच हाथपर खड़ा हो और दूसरा पाँच सौ हाथपर, तो पांच सौ हाथवाला छोटा मालूम होगा कि नहीं ?

दुखराम—हाँ, छोटा मालूम होगा भैया !

भैया—यह तारे क्या चीज हैं, यह हमसे कितना दूर हैं, वगैरह बाते पचास पचहत्तर सालसे ही हमें मालूम हुई हैं।

दुखराम—सुरुज-गरहन, चदर-गरहनकी बात लोग बहुत पहलेसे जानते थे तो तारोंके बारेमे क्यों नहीं जान सके ?

भैया—दूरकी चीज देखनेके लिए आँखको मदद करनेवाली दूरबीन उस वक्त नहीं थी, और बहुत दूर रहनेवाली चीजोंको आँख देख नहीं सकती। अधेरेमें रोशनी होनेसे कुछ तारे जरूर दिखाई पड़ते थे, जेकिन वह भी बहुत कम दिखाई पड़ते थे। लेकिन मामूली दूरबीन लगाकर देखनेसे भी पचास हजार तारे

दिखाई पड़ने लगते हैं। अढाई इञ्ची दूरबीनसे तीन लाख तारे दिखाई पडते हैं। आजकल सबसे बडी दूरबीन (सौ इञ्ची) विल्सनगिरि अमेरिकामें है, उससे डेढ़ अरब तारे देखे जाते हैं ?

दुखराम—तो दूरबीनसे आँखकी तागत बहुत बढ़ जाती है ?

भैया—हाँ, उसी तरह जैसे रेडियो बाजासे कानकी तागत बढ़ जाती है। तीन सौ बत्तीस बरस (१६१२ ई०) से पहिले दुनियामें कोई दूरबीन नहीं जानता था। अकबरके मरनेके सात बरस बाद गलेलियोंने पहिली दूर-बीन बनाई।

दुखराम—तो जो यह जोतिसी सबका आगा-पीछा बतला देते हैं, किसीको क्या होनेवाला है, सब कह देते हैं; ऐसी बातें तो वह न जाने कै हजार बरससे जान गये थे, लेकिन मामूली दूरबीन भी तीन सौ बरससे पहले नहीं बना सके। मुझे तो भैया ! यह भाग बतलानेवाला जोतिस भी जोकी हीका फरेब मालूम होता है पचास बरस बाद मुझे क्या होनेवाला है, यह पहले हीसे पक्की हो गई, तभी तो जोतिसी मेख-बिरिख कहके बता देता है। फिर जब एक-एक दिन क्या बीतनेवाला है, सभीको पहलेसे ही लिख दिया गया है, तो हाथ-पैर हिलाना बेकार है।

भैया—तुम्हारी जिन्दगी भरकी बात पहलेसे नहीं लिख दी गई, तुम्हारा लड़का कब किस नच्छत्तरमें पैदा होगा, यह भी जोतिसमें लिख दिया है। और जब नच्छत्तर मालूम हो गई तो उसकी भी कुंडली जोतिसी तैयार कर देगा और उसे एक-एक दिन क्या बीतेगा, यह भी जोतिस बतला देगा।

दुखराम—माने हमारी कुंडली तो बनी है। लड़केकी कुंडली भी बापकी कुंडलीसे तैयार हो सकती है, क्योंकि पत्र जनम जोतिससे मालूम ही हो जायगा, फिर दो पोते-पर-पोते और साठ पीढ़ी आगे तककी कुंडली और एक-एक दिन क्या बीतेगा, सब बतलाया जा सकता है, जोतिसमें सब लिखा ही हुआ है। यह तो भारी चाल है भैया ! जोकोंकी। बारह सौ बरस आगे तककी जब सब बातें पहलेसे ही पक्की हैं, तो आदमी हाथ-पैर हिलावे या न हिलावे, बात होकर रहे हीगी। तब तो आदमी अपने भाग्यका बनानेवाला नहीं रहा। नहीं-नहीं भैया !

यह हम कमेरोंके हाथ पाँवको बाँधकर जोकोंके सामने पटक देने का जाल-फरेब है, जोतिस और कुछ नहीं।

भैया—लेकिन जोंकोंने कैसा ढग निकाला दुक्खू भाई ? तुमको भी पछाड़ दिया, अपना काम भी बनाया और जोतिसीकी भी पाँचो घीमें है।

दुक्खराम—मुझे तो भैया ! आदमीकी बुद्धिपर अफसोस होता है। अच्छे-अच्छे पढ़े-लिखे लोग भी जो कुंडली और हाथ दिखानेके लिए दौड पड़ते हैं, जान पडता है, काबुलमें भी गधे होते हैं।

भैया—यह कहनेसे कोई फायदा नहीं दुक्खू भाई ! जब तक आदमीकी जिन्दगी निश्चिन्त नहीं है, आज भी उसको खाने-कपड़ेकी चिन्ता है, लड़के लड़की-के ब्याहकी भी चिन्ता है, कल उससे भी अधिक चिन्ता है, तब तक आदमीको जोतिसियोंके पास जानेसे कोई नहीं रोक सकता। इसलिए भाग बतानेवाले जोतिसीके पीछे लाठी लेकर पडनेकी जरूरत नहीं। सबकी जड़ जोंकें हैं, उनको काट दो बस सारा काम हो जायगा।

संतोखी—भैया ! महातिमा लोग भी तिरकालकी बात बताते हैं और उनके जालमें भी लोग फँस जाते हैं।

भैया—एक जाल नहीं, यहाँ पग-पगपर जाल है दुक्खू भाई ! एक भाई ने मुझे चिट्ठी लिखी है—इधर कुछ दिनोंसे मुझे यहाँ एक प्रधान मत जैन श्वेताम्बर तेरा पथी के आचार्यका सत्संग होनेके पश्चात्...आधुनिक समयमें जब कि मनुष्यने मुक्तिकी प्राप्ति भौतिक साधनों-द्वारा सम्भव मान ली है, जब कि विलासिता और ऐश्वर्यका बोल-बाला है, जब कि सभ्यताके नामपर हमने मनुष्यत्वको, देवत्वको तिलाजलि दे दी है; इन साधुओंकी तत्परता, इनका त्याग, इनका वैराग्य, इनका संयम इत्यादि देखकर मनुष्योंको चकित रह जाना पड़ता है। मैं दावेके साथ कह सकता हूँ, जितनी सच्चाई और दृढ़ताके साथ इनका पालन ये करते हैं, वह अद्वितीय है; संसारमें रहते हुए जो विरक्ति ये लोग सांसारिकोंसे रखते हैं, वह अद्वितीय है। श्री भूलाभाई देसाई और हिन्दू महासभाके सहायक-मन्त्री चकित रह गये। उन्होंने यहाँ तक कहा कि इनकी अहिंसाके सामने तो गीताकी अहिंसा भी फीकी पड़ जाती है।...हिन्दू-महासभाके

सहायक, मन्त्री तो यहाँ तक मुग्ध हो गये, कि उन्होंने स्पष्ट शब्दोंमें कह दिया, कि अगर मैंने कभी धर्म ग्रहण किया तो इसको छोड़कर दूसरा कदापि न करूँगा। इनका त्याग इतना जबर्दस्त है कि गृहस्थ लोगोंके साथ सम्पर्क तो दूर इनको अगर यह पता चल जाय, कि कोई वस्तु हमारे लिये खरीदी या तैयार की गई है, तो भिक्षामें भी उसे कदापि ग्रहण न करेंगे। संयम इतना कि साध्वियाँ पुरुषमात्र और साधू स्त्रीमात्रके स्पर्शको पाप मानते हैं। पचासों आजन्म ब्रह्मचारी आपको मिलेंगे। जिन जिन लोगोंने इनकी जाँच की है, उनकी एक मतसे यही राय रही है, कि यह पूर्वकी एक आदर्श संस्था है। मेरा भी झुकाव इस तरफ होनेके बावजूद मैं इसको उस वक्त तक नहीं मानना चाहता, जब तक आप इसकी जाँच न कर लें। (२६ जुलाई १६४४ ई०)

दुखराम—भैया संसकिरतमें किसीने लिखा है क्या, मुझे तो कुछ समझमें नहीं आया ?

भैया—नहीं आया बड़ी अच्छा है दुक्खू भाई, समझमें आया होता तो न जाने क्या कह डालते।

दुखराम—आप कहेंगे तो मैं जीभको बाँधकर रखूँगा भैया ! लेकिन सुनायें तो क्या बात है।

भैया—एक बात यह है कि खाते-पीते आदमी हैं, उनके पास पक्का मकान है, नौकर-चाकर हैं, देखा तो नहीं सायद उनकी बीबी भी हो, बच्चे भी हों उनके बदनपर सोनेका गहना और रेशमी नहीं तो अच्छी बारीक सूत की साड़ी रहता हो, खानेके लिए दूध-घी और फल-मेवा भी मिल जाता हो। कलकी चिन्ता उनको उतनी ही है, जितनी किसी करोड़पति सेठको, दूसरे दिन दिवालिया हो जानेकी।

दुखराम—भैया ! जोंकें कलकी परवाह नहीं करतीं, वह नगद धरम मानती हैं, "आज नगद कल उधार"।

भैया—तो भी दुक्खू भाई, जिसने यह खत लिखा है, वह चाहे जोंकोंका ही अंडा-बच्चा हो, लेकिन उसका दिल उतना कठोर नहीं है। बेचारा बड़ी कोसिस करता रहा है, कि जोंकोके जालसे निकले, लेकिन जोकोका जाल कहाँ-

कहाँ फैला है, इसको जानना बहुत मुस्किल है, चिड़िया हवामें उड़ना चाहती थी, उसने समझा कि निरमल अकासमें कोई डर नहीं, लेकिन बहेलियाने वहाँ भी जाल टाँग रखा है। और उसी जालमें पड़कर फड़फड़ा रही है। बेचारा भाई एक साधूको देखता है, जो दुनियाके लोगोंसे बिलकुल वैराग रखते हैं जिनके वैरागको देखकर हिन्दुस्तानके आरामसे जिन्दगी काटनेवाले कुछ बड़े-बड़े लोग।...

दुखराम—बड़ी-बड़ी जोकें।

भैया—बड़े-बड़े लोग अचरज करते हैं और एक बड़े आदमी तो ऐसे हैं कि हिन्दू धरमका बेड़ा-पार करते हैं, लेकिन अभी तक वह कोई धरम नहीं मानते। इन महातिमाको देखकर उन्हें भी धरम माननेकी साध लगी।

दुखराम—वही सावरकरवाली हिन्दू सभा न भैया, जो बड़ी-बड़ी जोंकोंकी मुट्ठीमे है।

भैया—अच्छा, ये महातिमा इतने त्यागी हैं कि जो इनके लिए कोई चीज खरीदकर भी दे तो वह भिच्छामें नहीं लेते।

दुखराम—तब तो वह महातिमा खाली हवा पीते होगे। क्योंकि दुनियामें जोंकोंकी कोई ऐसी चीज ही नहीं है, जिसे खरीदा-बेंचा न जाय।

भैया—और मैं यह भी समझता हूँ दुक्खू भाई! कि यह महातिमा ऐसे गरीबोंके घरोंमें नहीं रहते होगे, जो खून-पसीना एक करके धरतीसे अनाज पैदा करते हैं, कपास पैदाकर अपने हाथसे कपड़ा बनाते हैं; क्योंकि महातिमाके पचासो चेलों और, चेलियोंको बैठे-बैठे खाना-कपड़ा देना गरीबके बसकी बात नहीं है।

दुखराम—पचासों चेले चेलियाँ! और वह करते क्या हैं भैया?

भैया—वह तमाम जिनगी भर बरमचारी रहते हैं, न औरत मर्द को छूती है न मर्द औरतको छूता है।

दुखराम—हिंजड़ा-हिंजड़ी होगे भैया! इसमें कौन बात है।

भैया—हिंजड़ा-हिंजड़ी होंगे न भी हों तो भी दुक्खू भाई! मैं साधू-साधुनियों की लीला जानता हूँ। बरमचारी तो क्या होंगे, लोगोंकी आँखोंमें धूल झोंकते

हैं। बस यही ध्यान रखते हैं, कि बात खुलने न पाये। एक-दो आदमी बात कहते, तो मैं समझता कि पागल होंगे या जैसा तुम कह रहे हो उसी तरहके हिंजड़े होंगे, लेकिन जब पचास-पचास चेले चेलियोंके तमाम जिनगी बरहमचारी रहनेकी बात कहते हैं, तो मुझे इसमें जरा भी सक नहीं, कि यह खूब जबर्जस्त ढोंग है। ऐसे बरहमचारी-बरहमचारिनियाँ रिखीकेसमें हजारों हैं, उत्तर-कासीमें भी हैं। कितने तो गगोत्तरीके हाड़ चीरनेवाले जाड़ेमें बिल्कुल नगे दिगम्बर रहते हैं। उनमें एक है महतिमा किसान आसरम। आज बीसों बरससे वह हिमालयमें नगे रहते हैं, उनकी तपस्याके बारेमें क्या पूछते हो, हिन्दूधरमके सबसे बड़े नेता मालवीजीको अपने बीस लाखवाले मन्दिरके नींव रखनेके लिए हिन्दुस्तान भरके बड़े-बड़े महात्माओंकी खोज होने लगी। उस वक्त मालवीजीको महात्मा किसन आसरम ही ऐसे दिखाई पड़े जो कासीमें आकर दूसरे विस्व नाथ बाबाके नेंव डालने लायक हैं। उन्होंने ही विस्वनाथ की नींव डाली और महात्मा किस आसरम के बड़े बरहमचारी हैं, उन्होंने सिरिफ राजाराम बरहमचारी के गूंगे लड़केकी बहू भानदेको गीता पढ़ाया और बेचारे पहाड़ी गीत गाते फिरते हैं—

"चचन्नीको पेरा; तें क्या बुरा मानो राजरामको डेरा।
झाका बुनी खाट रे। तें भलीसीक्यो गीताको पाठ रे।
चीणे तू बॅगला भान दे! चीणे तू बॅगला तेंने कानो छोडो हरसिलको
जॅगला। गूंगानीको गोली, तें ना भालो मान दे! अबोलाके बोली।"

दुक्खराम—किसन आसरम और भानदे न जाने कितने पढ़े हुए हैं भैया।

भैया—एक आदमी और एक औरत साथमें रहें, यह कोई बुरा नहीं है, लेकिन यह बरहमचारी-बरहमचारीका ढिंढोरा क्या पीटा जाता है। मान लो दुक्खू भाई कोई मरद रहते भी हिंजड़ा बन जाता है, तो दुनियाको इससे क्या फायदा?

दुक्खराय—दुनियाको न फायदा हो, जोंकोंको तो फायदा है, वह कहती फिरेंगी कि छोड़ो दुनियाके सुख-दुखको, इसी तरह तुम भी महात्मा बन जाओ।

भैया—दुनियामें हजारों बरसोंसे ऐसे बरहमचारी होते आये हैं, इनसे

भी बढ़कर त्यागी हुए हैं, लेकिन उससे दुनियाका नरक जौ भर भी कम नहीं हुआ।

दुखराम—और इन हजार बरसोंमें जबसे कि जोंकोंका राज कायम हुआ, लोग बराबर इस तरहके जालमें फँसते रहे ?

भैया—मैं तो समझता हूँ दुक्खू भाई ! ऐसे साधुओंमें कुछ ईमानदार भी रहे होंगे, वह दिलसे धनिकोंको पसन्द नहीं करते थे, हाँ, बेसी धोखेबाज और पागल ही रहे हैं, लेकिन ईमानदारोंकी ईमानदारी और सच्चाई किस कामकी जो कि गरीबोंके गलेके फन्देको और मजबूत करती हैं ? जो इन महात्माओंमें ईमानदारी है, और इनमें सोचने-समझनेकी ताकत है, तो क्यों नहीं समझ लेते कि जो हजारों बरससे नरककी जिन्दगी बिताते हैं, उन ९९ सैकड़ा लोगोंके दुखको दूर करना है। वह ब्रह्मचर्य किस कामका, जो आदमीको खुदगरजी सिखाये वह दुनियाको चूल्हे-भाड़में पड़ने दे और अपने निरवानके पीछे दौड़ता फिरे। मैं तो महात्मा उसे कहूँगा, जो प्रतिज्ञा करले, कि जब तक करोड़ों आदमी पीढ़ीके बाद पीढ़ी नरककी जिनगी बिता रहे हैं, तब तक मेरे लिए निरवान नहीं चाहिए, मुकती नहीं चाहिए, सरग नहीं चाहिये। वैसे तो कितने ही घोड़े-घोड़ियाँ थानपर बँधे जिनगी भर बरहमचारी रह जाती हैं। लेकिन जिस दिन वह महात्मा यह बात तय कर लेंगे, उस दिन उन्हें आँटे-चावलका भाव मालुम हो जायगा, फिर सेठ-सेठानियाँ उनकी आरती नहीं उतारेंगी, फिर राजा-नवाब उनका चरना मिर्त नहीं लेंगे।

सोहनलाल—तो भैया तुमने क्या जवाब दिया चिट्ठीका, क्या महात्माका दरसन करने जाओगे ?

भैया—मैंने अपने एक दोससे कहा कि आप चलें तो मैं भी चलूँ। उन्होंने जवाब दिया—"मैं ३५ साल तक जगल-जंगलकी धूल फाँकता फिरा, न जाने कितने महात्माओंको देखा है और उनमें दो ही तरहके आदमी मिले हैं या तो छटे बदमास जादूगर, या पागल। मैं अब जिन्दगीका एक दिन भी ऐसी दौड़-धूपमें नहीं लगाना चाहता।

सोहनलाल—लेकिन भैया, तुम्हें जो उन्होंने महात्माकी जाँचके लिए

बुलाया है, जो जाँचकरके बतला नहीं दोगे, तो वह महात्माके चेले बन जायेंगे ?

भैया—सोहन भाई, मनमें बुरा मत मानना। मैं जोंकों और जोंकोके लड़कों-पर तनिक भी बिसवास नहीं करता और यह भी बतला दूँ, कि पढ़े-लिखे बाबुओंपर भी मेरा बिसवास नहीं है।

सोहनलाल—तो पढ़ना-लिखना बुरा है भैया ?

भैया—जो मैं पढ़ने-लिखनेको बुरा मानता, तो कहता कि मोटर-हवाई जहाजको छोड़कर पत्थरके हथियारोंके युगमें चले चलो। मैं चाहता हूँ इससे भी अच्छी हवाई जहाज बने, इससे भी बढ़िया रेडियो-बाजा और रेडियो-दरपन निकले। लेकिन जानते हो न आज हवाई जहाज जोंके दुनियाको गुलाम बनाने-के लिए रखती हैं। रेडियो बाजाके बलसे बिना आदमीका हवाई जहाज चला-कर हिटलर बिलायतके सहरो और गाँवोंको मार रहा है। अँगरेज जिन जवानों-को अपना कलक्टर और डिप्टी बनाते हैं, वह बहुत पढ़े-लिखे हैं गजबकी जेहन-वाले हैं। हजार-हजार पढ़ाकू जवानोंमेंसे छाँट-छाँटकर २५को लेते हैं और जानते हो न, वह क्या करते हैं ? इसीलिए मेरा इनपर बिसवास नहीं है। बिसवास ही नहीं कभी-कभी तो मैं इनके आचरनको देखकर जल-भुन जाता हूँ। मुझे वह आदमी भी नहीं मालूम होते।

सोहनलाल—और जो वह भाई कुछ-कुछ रास्ता देखने लगा था, वह फिर भूल जायेगा ?

भैया—ऐसे एक नहीं हजारों भूलते-भटकते रहें, मुझे उनकी कोई परवाह नहीं। यह लूले-लँगड़े, अपाहिज लोग क्या काम कर सकते हैं, जिनको अपनी मुक्ति, अपना भवन और अपना पेट सबसे पहिले सामने आता है।

दुखराम—जोंकोंके लड़कोंमें कोई अच्छा भी निकल सकता है भैया, लेकिन लाख-करोड़में बिरला ही कोई लाल निकलेगा, "जाके पैर न फटी बेवाई; सोका जानै पीर पराई।"

भैया—जोंकोंके खानदानने, दुक्खू भाई, हमेशा धोखा दिया। रूसमें हजारों जोंकोंके लड़के थे, जो पहिले बहुत मजूरों किसानोंके राजकी बात करते

थे, लेकिन जब मजूरों-किसानोंका राज कायम हो गया, तो वह दुसमनोंसे मिल गये। जो वह दुसमनोंसे न मिले होते, तो पाँच बरस तक लेनिन महात्मा और उनके साथियोंको लड़ना न पड़ता और न लाखों युद्ध और करोड़ों भूख-अकाल-की भेंट चढ़ते।

सोहनलाल—तो क्या हिन्दुस्तानमें हमें जोंकोके लड़कोंको पासमें भी नहीं आने देना चाहिये?

भैया—बापके कसूरके लिए बेटेको सजा जोंक ही दे सकती हैं। हिटलरने किसी सहरमें अपने एक आदमीके मारे जानेपर सौ-सौ आदमियोंको पकड़कर जहाँतहाँ फाँसीपर लटका दिया, यह उन्हींका न्याय है। हम मरकस बाबाके चेले, जोंकों और फसिहोके आदमी नहीं हैं, इसीलिए जोंकोंके कसूरके लिए उनके बेटे-पोतोंको सजा नहीं देते या कहेंगे कि तुम हमारे पास न आओ। लेकिन उनसे यह जरूर कहेंगे कि बाबू! तुम हैजा-पिलेगवाले गाँवसे आ रहे हो, अभी बीमारी नहीं दिखाई पड़ती, लेकिन मालूम नहीं किस अँतरा-कोठरीमें बीमारीका कीड़ा चला आया, इसलिये हमको भी इसका ख्याल करना पड़ेगा और तुमको भी करना पड़ेगा।

दुखराम—भैया! यह बात भी मरकस बाबाने बतलाई है क्या?

भैया—हाँ, मरकस बाबाने बतलाई है, लेनिन महात्माने बतलाई है, इस्तालिन वीरने बार-बार सजग कराया।

सोहनलाल—जोंकोंके लड़कोंके लिए तो भैया! तुमने साफ बतला दिया, लेकिन हिन्दुस्तानके बहुतसे सेठ लोग हैं, जो गाँधीजीका बचन मानते हैं, लाखोंका दान देते हैं और मौका पड़नेपर जेहल जानेसे भी नहीं हिचकिचाते, उनके साथ कैसे बरताव करना चाहिये।

भैया—सोहन भाई! मैंने कहा था, कि पहले पियाजके बाहरका छिलका तोड़ना है, तब भीतरका। सबसे पहले हमें बिलायती जोंकोंसे लोहा लेना था, लेकिन इसका मतलब यह नहीं, कि हम देसी जोंकोंके जुलुमको आँख मूँदकर सहते जायँ।

अध्याय १२

औरतकी जाति

दुखराम—"सन्तोखी भाई ! रजबल भइवा हम लोगोंकी आँख खोल रहा है, आँख। मैं तो मुँह बन्द करके भी रखना चाहता हूँ तो पेट फूलने लगता है। जहाँ भी कोई भाई मिल जाता है, तो जोंकोंका जंगल उनके सामने कहने लगता हूँ। किसी जाति, किसी धरमका कमेरा हो, बात सुनकर सबका मन हरा हो जाता है। बंधू चमार पूछता था भैया दुक्खू ! हम लोगोंकी झोपड़ी सूअरकी खोभारसे भी खराब है। कब हम लोगोंका दिन लौटेगा ? अबदुल मेहतर कहने लगा—हमने समझा था कि हिन्दूसे मुसल्मान हो जानेपर कुछ आदमी बन जायेंगे, लेकिन यहाँ भी वही बात। सबसे गंदा काम करते हैं, और जूठी-रोटीभी भैया ! महमदाबादमें कोई देनेके लिए तैयार नहीं ?"

सन्तोखी—तुमने क्या कहा दुक्खू भाई !

दुखराम—मुझे जो समझमें आया, वह उनसे कहा। लेकिन मैं एक दिन रजबली भैयाको उनके यहाँ ले जाऊँगा, तभी ठीकसे समझाते बनेगा।

सन्तोखी—आज कौन बात सुनना चाहिए दुक्खू भाई ?

दुखराम—सबके कहने लायक बात तो अब कुछ-कुछ मालूम हो गई है सन्तोखी भाई। लेकिन औरतोंको कैसे समझाया जाय, यही बात समझमें नहीं आती।

सन्तोखी—तो आज रजबली भैयासे यह पूछा जाय कि मरकस बाबाने औरतोंके लिये क्या रास्ता बताया और यह देखो सोहनलालके साथ रजबली भैया आ गये।

भैया—क्या बात हो रही है सन्तोखी भाई ?

सन्तोखी—आज भैया यही बतलाओ कि औरतोंके उद्धारके लिये मरकस बाबाने क्या कहा।

भैया—औरतोंका उद्धार बहुत जरूरी है, काहेसे कि आधी तो वही हैं और उनको सबसे बेसी तकलीफ है।

दुखराम—जोंकोंकी औरतोंको खाने-पीनेकी क्या तकलीफ है भैया ?

भैया—खाना-कपड़ा जब नहीं मिलता, तब आदमीको भूख-जाड़ा तकलीफ देती है। खाना-कपड़ा तो मिलता है, लेकिन दूसरा आदमी हाथ उठाकर देता है तब आदमी समझता है कि हमें दूसरेके सामने हाथ पसारना पड़ता है। और औरतको जिन्दगी भर हाथ पसारना पड़ता है।

सोहनलाल—मेहरी तो घरकी रानी होती है भैया !

भैया—रानीके साथ महिला कहो सोहन भाई ! महिला सबदसे ही (महिली, महिरी) मेहरी सबद भी बना है, लेकिन देखते हैं न किसी सहरकी पढ़ी-लिखी औरतको मेहरी कह दिया जाय तो जल-भुन जायेगी, और महिला कह दिया जाय, तो फूलके कुप्पा हो जायेंगी। लेकिन औरत आज दुनियामें हाथकी खरीदी सादी-लौंड़ी हैं। मरद जबतक राजी है, तबतक तो दासी भी जो चाहे कर सकती है लेकिन जैसे ही मरदकी तेउरी बदली, वैसे ही रानी सिंहासनसे धूलमें पटक दी जाती है। देखा न, सीताके साथ रामने क्या किया, मनमें आया, घरसे निकालकर बाघके मुँहमें ढकेल दिया। सीता कभी रामके लिए वैसा कर सकती थी ? या रामकी इच्छा बिना सीता उनके पाखानेमें भी एक रात बिता सकती थी। साहेब लोगोंको साथ-साथ मेम घुमाते देखकर दुक्खू भाई ! तुम समझते होगे कि साहेबकी मेमको बहुत अक्तियार है।

दुखराम—भैया ! पहिले सच ही मैं ऐसा समझता था, लेकिन एक दिन देखा हमारे चटकलका इञ्जीनियर कोड़ा लेकर अपनी मेमको पीट रहा था, बेचारी चिल्लाती थी, लेकिन पास-पड़ोसमें कोई साहेब रहता तब न जाता ? हम लोग कुली-मजूर थे, सोचा छुड़ाने जायँगे तो हम भी चार बेंत खायँगे।

भैया—औरत किसी समय परिवार भरकी मुखिया थी, महामाया थी, उस वक्त कोई उसे मार सकता था ?

दुखराम—नहीं भैया ! वह तो जब मरद पसु पालने लगा, खेती करने लगा और कमाऊ बनकर धन जमा करने लगा, तब मेहरीका मान हेठा हो गया; आदमियोंमें धनी-गरीब होने लगे, जोंकें पैदा हो गईं।

भैया—जितना ही जोंकोंका जोर बढ़ता गया दुक्खू भाई ! उतना ही मेह-

रेयोंका गला फँसता गया। बेचारियोंको देह बेंचके खानेके सिवा कोई अवलम्ब है ?

सन्तोखी—देह बेंचना ! क्या कहा भैया ?

भैया—सन्तोखी भाई ! तुम समझते हो कि देह बेचना वेस्याका काम है। इसलिए मैंने कैसे इस बातको मुँहसे निकाला। मेरी बात कुछ कड़वी लगी होगी, और मेहरिया सुने तो और बुरा मानेगी, लेकिन बताओ बेस्या किसे कहते हैं ?

सन्तोखी—जिसकी देह उस आदमीके लिए है जो पैसा दे।

भैया—रोज-रोज पैसा दे या एक दो बार।

सन्तोखी—कितने लोग भैया पैसा देके एक-दो बार वेस्याके देहके मालिक बनते हैं और हमारे राजाने तो वसंतियाको अपने घर हीमें बैठा लिया था।

भैया—वेस्या पैसा काहेको लेती है सन्तोखी भाई ?

सन्तोखी—न ले तो खायेगी क्या, पहिनेगी क्या ?

भैया—और वह कुछ बेसी पैसा लेती है सन्तोखी भाई ! काहेसे चालीस-ब्यालीस बरसमें उसकी दूकान उठ जाती है।

सन्तोखी—उसका भी कुछ ठिकाना नहीं है भैया ! दुकान है, किसी गाहकको नकार तो सकती नहीं बीमार हो जाती है, गरमी सुजाक बढ़ गई, तो नाक कटकर गिरने लगती है, हाथ-पैरकी अँगुलियाँ झड़ जाती हैं।

भैया—जो अँगुलियाँ नहीं झड़ीं, नाक नहीं कटी, तो भी तो आधी जिनगी रहते ही वह रोजगारसे बेरोजगार हो जाती है। जो उसने पहिलेसे कुछ पैसा नहीं बचाया तो बाकी आधी जिनगीमें क्या खायेगी, क्या पहनेगी ?

दुखराम—ठीक कहा भैया, जोकें न पैदा हुई होतीं तो औरतको क्यों देह बेंचना पड़ता ?

भैया—दुक्खू भाई ! वेस्या कैसे बनती हैं इसके लिये मैं एक कथा सुनाता हूँ। यह किस्सा नहीं है, सच्ची-सच्ची बात है। एक बड़ी जातिके आदमी थे, हिन्दू थे और बाम्हन-छत्रीके बीचकी जाति। उनके घरमें पूरा धन था, जमींदारी थी, खेत थे और दस-बीस हजारका सूद-बेवहार भी करते थे। गाँवमें भी अच्छा

घर था और सहरमें एक पक्का घर था। कुछ किताब पढ़ी, कुछ लेच्चर सुना, अरिया समाजकी बात उन्हें अच्छी मालूम हुई। उनके एक लड़की हुई, पहिली स्त्री मर गई, दूसरा ब्याह किया, उससे लड़का पैदा हुआ। भाई-बहनोंमें बचपन हीसे बहुत प्रेम था, वह जानते ही नहीं थे कि उनकी माँ एक नहीं है। बापने अरिया समाजके लेच्चरमें लड़कियोंके पढ़ानेकी बात सुनी थी, उन्होंने भी अपनी लड़कीको सहरको कन्या पाठशालामें पढ़ने बैठा दिया। अब वह ज्यादा सहरमें ही रहते थे, पीछे लड़का भी इसकूल जाने लगा। लड़की पढ़नेमें बड़ी तेज थी, अपने दरजेमें हमेसा अव्वल आया करती थी। बाप भी लड़कीकी पढ़ाईसे बहुत खुस था। मैभा (सौतेली) माँ भी अच्छी औरत थी, लड़कीका सुभाव भी मीठा था। लड़की अब अँगरेजी पढ़ रही थी। उसकी उमर बारह-तेरहकी हो गई थी। मैभा माँ ब्याह करनेके लिए रोज कहती, लेकिन बहुत गरीब घरकी तो लड़की थी नहीं कि बेंच-बाँच देते। अपनी बराबरी या बड़े घरमें लड़का ढूँढ़ना था, और सो भी अपनी जाति-बिरादरीके भीतर। कहीं लड़का छोटा मिलता, कहीं बूढ़ा, कहीं अपढ़ मिलता, कहीं गरीब।

भैया—आदमीका बच्चा है, जमातसे अलग कैसे रहेगा। सरकारी कानूनसे आदमी किसी तरह बच भी जाय, लेकिन बिरादरीके कानूनसे कौन बच सकता है। हाँ बच भी जाता है जो लोगोंसे पकड़ाई न दे। कितने ही टीकाधारी हैं, जो छिपकर सराब पीते हैं, कितने ही लोग जानते भी हैं, लेकिन उनके पास पैसा है। न उनका हुक्का-पानी बन्द होता है न ब्याह-सादी। विधवा-ब्याह बाम्हन, छत्री, बनियाँ कायथमें बर्जित है। जब साठ बरस बूढ़ेसे हम उमेद नहीं कर सकते, तो बारह बरसकी विधवासे कैसे आसा करेंगे कि वह जिनगी भर बरमचारिन रहेगी। जानते हो न, दुक्खू भाई क्या-क्या होता है ?

दुखराम—गुपुत सम्बन्ध हुए बिना नहीं रहेगा भैया ! जो गर्भ नहीं हुआ तो मामला ऐसे ही चलता रहता है। गरभ हुआ तो गिराकर हाँडीमें कसकर फेंक दिया जाता है और जो बस नहीं चला, तो ले जाकर बनारसमें छोड़ आते हैं। कहीं-कहीं खून भी कर डालते हैं लेकिन यह बहुत कम होता है। जातिवाले बस इतना ही चाहते हैं कि जरा-सा हलका-सा परदा रखो, सब बात नंगी न हो जाय।

भैया— इसीलिए दुक्खू भाई, हम उस अभागिनके बापको ही सारा दोस नहीं दे सकते। वह हिम्मत करता, उसको तकलीफ होती लेकिन वह दूसरोंको रास्ता दिखाता। अब जात-पात ज्यादा दिन तक नही रह सकती दुक्खू भाई! भात और पानी अपनी जातमें होना चाहिए, यही जातिका कानून है न, लेकिन आज देख रहे हो न कि भात-रोटीको कोई नहीं मानता। सहरोंमे होटल खुले हुए हैं। जाकर लोग खा लेते हैं। जातिमें जो धनी हैं, सरकारी दरजा पा गये हैं, तो उनकी तो कुछ पूछो ही नहीं, वह हिन्दूके होटलमें खा सकते हैं, मुसलमानके भी होटलमें खा सकते हैं। बिलायत जा सकते हैं। राजपूतोंके सिरताज जो राजा लोग हैं, उनको अंगरेजोंके साथ खानेमें कोई रोक-टोक नहीं है, न इसके लिए वह जातिसे निकाले जाते हैं, न उनकी ब्याह सादी रुकती है, जातिका बड़ा आदमी खानेकी छुआछूत छोड़ दे तो कोई नहीं पूछता है, गरीबको सब लोग दबाते हैं, लेकिन आजके समाजमें बड़े आदमी रास्ता निकालते हैं। होटल पिछली लड़ाईसे पहिले कहीं था? आटा चावल बेचनेवाले दूकानदारोंकी ही उस वक्त बहुत चलती थी। यह बीस बरसके भीतर ही भीतरकी बात है जो सब जगह होटल ही होटल दिखाई पड़ते हैं।

सन्तोखी—खानेकी छुआछूतको तो भैया आदमियोंने उठा दिया, बिरादरीने कान पूँछ नहीं हिलाया। और दूसरे भी अब वही बात करने लगे हैं।

भैया—बाँधमें सूई भर जानेका छेद होना चाहिए, फिर तो पानी अपने ही रास्ता निकाल लेता है।

दुखराम—सूई जाने भरको नहीं, अब तो कोल्हू जाने भरके एक नहीं हजारों छेद हो गये हैं। खानेकी छुआछूतका तो अब सवाल ही नहीं है।

भैया—ब्याहके बारेमें अभी कड़ाई है दुक्खू भाई! लेकिन रोटीकी छुआछूतकी तरह यह भी टिक न सकेगी। देसके सिरताज लोगोंने रास्ता सुरू किया है। बाम्हन राजगोपालाचारीकी बेटी गाँधी बनियेके लड़केसे ब्याही गई। जवाहरलाल नेहरूकी बड़ी बहनका ब्याह दूसरी जातिवाले पंडितके साथ हुआ। छोटी बहिनने तो बाम्हन नहीं, बनियेके लड़केसे सादी की, और जवाहरलालकी एकलौती बेटी इन्दिराने हिन्दू नहीं, पारसी लड़केसे सादी की। मुन्सी ईश्वरसरन कायस्थोंकी

नाक हैं, यू० पी० बिहार दोनों में। वह उनके चौधरी माने जाते हैं, उन्हींके छोटे लड़के सेखरने मुसल्मान लड़कीसे सादी की।

सन्तोखी—हिन्दू बनाके किया होगा न भैया? जैसे आर्य-समाजी करते हैं?

भैया—हिन्दू बनाके नहीं किया है, सन्तोखी भाई! हिन्दू लड़कीको मुसल्मान बनाके तो ब्याह बहुत समयसे होता चला आया है, लेकिन ऐसे ब्याहसे हिन्दू मुसल्मान एक सम्बन्धमें नहीं आये बल्कि और विरोध बढ़ा। मुसल्मानोंकी देखा-देखी मुसल्मान लड़कीको सुद्ध करके आरियोंने ब्याह करना सुरू किया इससे भी झगड़ा ही बढ़ा। ब्याह सम्बन्धसे पीढ़ियोंके झगड़े मिटाये जाते हैं, लेकिन यहाँ पीढ़ियोंके लिए झगड़े उठाये गये।

दुखराम—तो भैया! जिसको हिन्दू मुसल्मानमें ब्याह करना हो, उसे नाम या धरम नहीं बदलना चाहिए यही न?

भैया—नाम धरम बदलनेसे फिर वह सम्बन्ध नहीं हुआ, वह तो अँगुली को सड़ी समझकर काट देना हुआ। अब देसमें पचीसों मुसल्मान लड़कियोंने हिन्दूके साथ और हिन्दू लड़कियोंने मुसल्मानके साथ ब्याह किया। मैं उन्हें जानता हूँ। आगा पीछा करनेवाले नक्कू होते हैं, लेकिन वही रास्ता दिख-लाते हैं। पचास बरस बीतते-बीतते देखोगे कि ब्याहके मामलेको न जात-बिरादरी रोक सकेगी, न धरम। यहाँ रहनेका मौका नहीं है, मैंने सुना है कि हिन्दुओंकी पोथियोंमें जाति-धरम तोड़के हुए ब्याहोंकी बहुत-सी बातें लिखी हैं।

सन्तोखी—मलाहिनकी लड़कीके गरभसे ब्यास पैदा हुए, वेस्याके गरभसे वसिष्ठ रिखी पैदा हुए, चडाल कन्यासे परासर पैदा हुए, यह असलोक तो मै भी जानता हूँ?* भैया!

भैया—यह सब बन्धन टूटेगा सन्तोखी भाई! दादा-दादीके सामने होटलका भात खानेपर भी वह कुँआ-तालाब देखने लगते, लेकिन यह काम नाती-पोताके

---

* जातो व्यासस्तु कैवर्त्यां, श्वपाक्यां तु परासरः।
वेश्याया गर्भ संभूतो, वशिष्ठस्तु महामुनिः॥

जमानेमें सुरू हुआ जब कि दादा-दादी आँख मूँद चुके। हर पीढ़ी एक-एक कदम आगे बढ़ रही है कौन रास्तेको रोक सकता है। लेकिन देखा न, वह लड़की जो दरअसल जैसी बातकी पक्की थी, वैसी ही आचरनकी भी पक्की होती, लेकिन उसे बिरादरीने कहाँसे कहाँ तक पहुँचाया, उसे बेस्या बनाके छोड़ा। उसका पति उतना बुरा नहीं था, नहीं तो हजारों का गहना न छोड़ता। भाईके लिए तो तुम्हीं सोचो, क्या कहोगे ?

सन्तोखी—वह देवता है भैया देवता। वह तो आप कह रहे हैं कि वह अभी जिन्दा है, तभी विस्वास होता है, नहीं तो मालूम होता था, कि कोई कथा-पुरानकी बात है।

भैया—देवता है, ठीक ! बहिन जिन्दा रही तब उसने हिम्मत भी की थी, बिरादरीकी परवाह न करके साथ रखनेकी। बहिनने बात मान ली होती, तो वह वैसा ही करता भी। उसके बादकी उसकी जिन्दगी, तपस्या, गजबकी है। लेकिन उसके दिलमें जो आग जल रही थी, उसको जात-पातके सत्यानासमें लगाना चाहिए था। उसने अपनी अभागिन बहिनका बदला नहीं लिया, इसी-लिए मैं समझता हूँ कि उसने भाईके धरमका पूरी तरह पालन नहीं किया। और लड़कीके बारेमें क्या कहते हो दुक्खू भाई ?

दुखराम—औरतोंका तो मैं हाथ-पैर इतना बँधा देखता हूँ कि उनके बारेमें कुछ कहते ही नहीं बनता।

भैया—ठीक कहा दुक्खू भाई ! औरतोंको सबसे ज्यादा पीसा गया है। पन्द्रह सौ बरसों तक उन्हें आगमें जलाया जाता रहा और एक दो नहीं, सालमें दस-दस पन्द्रह-पन्द्रह लाख।

दुखराम—सचमुच भैया ! औरतें होलीकी तरह जलाई जाती थीं।

भैया—हाँ, दुक्खू भाई ! इसीको कहते थे सती होना, पति मर जाता, तो बिधवाको भी उसकी लासके साथ फूँक दिया जाता था।

सन्तोखी—लेकिन भैया ! लोग तो कहते हैं कि सती अपने मनसे होती हैं।

भैया—झूठ बोलते हैं सन्तोखी भाई ! कोई एकाध पागलपन भले ही करे लेकिन पन्द्रह सौ बरसके भीतर जो डेढ़ अरब औरतें फूँकी गई हैं; वह सब

अपने मनसे जलने गई थीं यह कहना झूठ है। आदमीको अपने परानसे बहुत प्रेम होता है। जो मरनेके लिए तैयार भी हुई होंगी, वह सोकसे पागलपन-से ही। जवान औरतके लिए रँड़ापा एक-दो दिनका सोक नहीं है, उसके लिए दुनियामें सभी जगह काँटे ही काँटे बिछ जाते हैं। उसकी जिन्दगीको और भी भारी नरक बना दिया जाता है, उसका मुँह देखनेमें असगुन होता है, ब्याह-सादी या मंगल काममें कोई उसको देखना नहीं चाहता। सब उसपर सक करते रहते हैं हिन्दू, हवा, पानी, पत्ता, खाकर रहनेवाले बिसवामित्र, पारासर ऋषिसे जिस बातकी आसा नहीं कर सकते उसकी आसा वह जवान विधवासे करते हैं, तो सचमुच ही वह पानीमें विन्हाचलको तैराना चाहते हैं।

दुखराम—सो कैसे हो सकता है भैया?

भैया—यह सब बातें विधवा समझती हैं, इसलिए जिन्दगी भर जलते रहनेक जगह कोई उसी वक्त मर जाना चाहती हो, तो अचरज नहीं। लेकिन डेढ़ अरबमें ऐसी कितनी रही होगी। और जानते हो दुक्खू भाई, राजपूतोंमें छः-सात सौ बरससे लड़कियाँ जनमते ही मार डाली जाती थीं।

दुखराम—हमारे सामने ही भैया, बेलहामें लड़कीके पैदा होते ही उसके नाक-मुँहपर नाला रख दिया जाता, और कुछ छन हीमें बेचारी मर जाती थी।

भैया—अभी ऐसी जगहे हैं जहाँ लड़कियोंको मार दिया जाता है। जो माँ-बाप अपने हाथसे अपनी बच्चीको मारते हैं, उनका दिल कैसा होगा?

दुखराम—पत्थर और लोहेसे भी कड़ा भैया! यह तो अपने ही बच्चेको चबा जाना है।

भैया—काहे ऐसा होता है? औरतका दुनियामें कितना मोल है। लड़की पैदा होते ही घर भरपर सोक छा जाता है, जान पड़ता है घरका कोई मर गया।

दुखराम—और भैया लड़का होनेपर सोहर गाया जाता है, खुसी और उछाह मनाया जाता है; लेकिन लड़की होनेपर सोहरका भला कोई नाम ले सकता है? लेकिन एक बात देखकर मुझे हैरानी होती है भैया!

भैया—कौन बात है दुक्खू भाई?

दुखराम—सोहर तो औरत ही गाती हैं, तो औरत जातिके पैदा होनेपर

उनका मुँह क्यों बन्द हो जाता है और मरद जातिके पैदा होनेपर बहुत खुस हो जाती हैं।

भैया—औरतका मोल मरदने लगाया है, औरत मरदके हाथकी कठपुतली है। हजारों बरससे औरत मरदकी गुलाम है। मालिक जो सिखाता है, गुलाम उसीको अच्छा मानता है। मरद ठीकसे बोलना नहीं जानता, तभीसे उसके मनमें ठोंक-ठोककर बैठाया जाता है कि वह मरद बच्चा है। उसी वक्तसे वह अपने बहिनोंपर रोब जमाने लगता है, औरतको जिनगी भर गुलाम रखनेकी सिच्छा यहींसे दी जाती है। पाँच बरसके लड़केको गुड़िया खेलनेको दो तो वह क्या लेगा दुक्खू भाई?

दुखराम—नहीं भैया! वह उसे फेंक देगा, कहेगा कि क्या मैं लड़की हूँ।

भैया—लड़केको हाथी घोड़ा खेलनेको मिलता है, वह गुल्ली डंडा खेलता है, पेड़पर चढ़ता है, तैरता है, कंधेपर लाठी लेकर चलता है, तीर-धनुही चलाता है। लेकिन लड़की को यही गुड़िया, वही चूल्हा-चक्की।

दुखराम—याने बचपन हीसे लड़कीको बतला दिया जाता है कि तुम्हारी जगह कहाँ है?

भैया—मरद अकेला-दुकेला जाता हो, तो क्या कोई छेड़नेकी हिम्मत कर सकता है? लेकिन जवान औरत चले तो किसी सड़कपर, देखो फिर सभी घूर-घूरकर ताकने लगते हैं। इतना ही होता, तब भी खैरियत थी, लेकिन वह तो मजाक करने लगते हैं और गन्दे गन्दे। औरतको सिर्फ सिर नवाकर चले जानेके सिवा दूसरा कोई उपाय नहीं है। अकेले-दुकेले मिले तो जबरदस्ती करनेसे भी बाज नहीं आते। औरतकी देहमें मरदके इतना बल नहीं होता, लेकिन जो कोई बलवान भी औरत हो, तो अपनी इज्जत बचानेके लिए बदमाससे लड़नेकी जगह भागना ही अच्छा समझेगी। औरत कायर होती हैं, यह बात नहीं है। बदमाससे लड़कर जीतनेपर भी वह बदनाम तो हो ही जायगी, उसके मुखपर कालिख पुत ही जायगी। औरत अपनी रच्छाके लिए खुलकर जोर नहीं लगा सकती। चुप रहनेके कारन उसे अपनेको बचाना मुस्किल होता है। औरतकी यह अवस्था किसने की?

दुखराम—मरदने भैया !

भैया—मरदने ही, लेकिन मरदोंमें भी जोंकें हैं मूलकारन, काहेसे कि उन्हों हीने धनपर मरदका हक कायम किया है। औरतको पतिकी जायदादमें सिर्फ रोटी-कपड़ा पाने भरका अधिकार है। एक ही पेटसे भाई-बहिन दोनों पैदा होते हैं, लड़का चाहे कितना ही नालायक हो उसको जायदाद मिलती है, और लड़कीको पतिके घरमें दासी बनकर रहनेके लिए भेज दिया जाता है। औरतको आज निरबलम्ब बना दिया गया है। वह अपने पैरपर खड़ी नहीं हो सकती। हजारों बरससे वह यह जुलुम सहती आई है। लेकिन यह जुलुम तभीसे सुरू हुआ जबसे जोंकें पैदा हुईं। जोंकोंकी औरतें और भी बेबस हैं। यह इसीलिए कि वह अपने हाथसे कुछ कमाती नहीं।

दुखराम—उनके मरद भी तो जोंक ही हैं, वह भी नहीं कुछ कमाते ?

भैया—वह दूसरोंको लूटते हैं दूसरोंका खून चूसते हैं, उसीको वह कमाना कहते हैं। कोई बाबू दफ्तर में जाकर ६ घन्टे काम करता है, महीनेमें ४०) ले आता है इसे कमाई करना कहेंगे। उसकी औरत दो घड़ी रात उठेगी, चक्की पीसेगी, चावल कूटेगी; चौका-बासन करेगी, खाना पकाके परोस देगी फिर बैठकर पखा करेगी। बाबू दफ्तर चले जाएँगे। औरत बचा-खुचा जूठ खायेगी। फिर चौका बासन करेगी, फिर चक्की-ओखल पकड़ेगी। लड़कोंको खिलाना, पोसना-पालना सब औरतके ऊपर है, मरदके ऊपर इसका कोई भार नहीं है। सामको खुद जलपान बनायेगी, फिर रसोई पकायेगी, फिर बेनिया डोलायेगी। मरदको दफ्तर लौटकर फिर कोई काम नहीं। औरत ६ घड़ी रात तक बराबर खटती रहेगी। फिर उसे पतिका पैर दबाना पड़ेगा। दो घड़ी रातसे आधी रात तक औरत खटती रहती है, लेकिन उसके कामकी कोई गिनती नहीं और मरद ६ घण्टे काम कर लेता है, तो समझता है कि वही कमाकर घर भरको खिला रहा है। देखो दोनोंमें कितना फरक है क्या इसको न्याय कहेंगे ?

दुखराम—है तो भैया यह पूरा अन्याय।

भैया—मरद औरतको गुलाम बनाके अपने घरमें लाता है और इसको कहते हैं, ब्याह। बाप लड़कीके लिए बर ढूँढ़ता है किस लिए ? इसीलिए कि

लड़कीको रोटी-कपड़ेका कोई अवलम्ब मिलना चाहिए। मरदको अवलम्बकी जरूरत नहीं, क्योंकि बापकी सब जायदाद उसको मिलती है, वह दूकान खोल सकता है, दफ्तरमें काम कर सकता है, उसके कमानेके सारे रास्ते खुले हुए हैं, लेकिन औरतके लिए सारे रास्ते बन्द हैं, इसलिए उसे खाना-कपड़ा देनेवाला कोई चाहिये। खाना-कपड़ा हीको पैसा कहते हैं न दुक्खू भाई!

दुखराम—हाँ भैया! पैसे हीसे न खाना कपड़ा मिलता है?

भैया—तो इसका मतलब हुआ ब्याह भी पैसेके लिए औरतका देह बेंचना है। दूसरे देह बेंचनेमें और इसमें यही अन्तर हुआ न कि यह बेच-खरीद जिन्दगी भरके लिए है। इसे प्रेमका सौदा नहीं कह सकते दुक्खू भाई! यह साफ पैसेका सौदा है।

दुखराम—तो क्या भैया! ब्याह करना ही बुरा है?

भैया—मैं ब्याह करनेको नहीं बुरा कहता दुक्खू भाई! लेकिन ब्याहके नामपर पैसेका सौदा होना औरतकी बेइज्जती समझता हूँ। ब्याहकी नींव प्रेमपर होनी चाहिए, और प्रेम दो बराबर आदमियोंमें होता है। खरीदी दासी और मालिकमें प्रेम नहीं होता। औरत तब तक बराबर नहीं हो सकती जब तककी कमानेमें माँ-बापकी जायदादमें उसका बराबर हक नहीं होता।

सन्तोखी—सुनते हैं भैया! बड़े लाटके यहाँ कानून बननेवाला है जिसमें कि औरतको जायदादमें हक मिले।

दुखराम—तुमने कहाँ सुना सन्तोखी भाई!

सन्तोखी—परसों हाटमें सभाकी नोटिस बँट रही थी।

दुखराम—नोटिसमें क्या लिखा था सन्तोखी भाई?

सन्तोखी—लिखा क्या था, लो न नोटिस देख लो—

हिन्दू अप्रदत्त उत्तराधिकार बिल विरोध सभा

धार्मिक हिन्दू जनताकी ता० .....१९४४ बार... ..... को स्थान..... ..में हिन्दू समाज नाशक उत्तराधिकार बिल एवं विवाह विषयक बिलके विरोधमें सभा होगी, जिसमें बाहरके आये हुए विद्वानों एवं स्थानिक सज्जनोंके भाषण होंगे। उक्त बिलोंसे हिन्दू समाजपर कितनी बड़ी कठिनाई तथा

सामाजिक दुर्व्यवस्था होनेवाली है, इसका पूर्णपरिचय देंगे। अतः धार्मिक सज्जनोंसे निवेदन है कि सभामें अपने इष्ट-मित्रोंके साथ अवश्य पधारें।

निवेदक—"

प्रबोध प्रेम, बनारस

दुखराम—यह तो भैया! संस्कृतमें कुछ लिखा हुआ है कुछ समझमें नहीं आता।

भैया—यही लिखा है कि सरकार औरतको जायदादमें हक देनेका कानून पास कर रही है, इसके खिलाफ सभी हिन्दुओंको विरोध करना चाहिए, नहीं तो हिन्दू धरम रसातलको चला जायगा।

दुखराम—देहमें आग लग गई भैया, यह हिन्दू धरम है कि निसाचर धरम है, जो अपने माँ-बहिनोंको हक देनेमें धरमके रसातल जानेकी बात करता है। सन्तोखी भाई! चाहे तुम नराज हो जाओ, मैं तो कहूँगा कि ऐसा हिन्दू धरम चार दिनके बाद नहीं इसी छन रसातलमें चला जाय तो मुझे बड़ी खुसी होगी।

भैया—हिन्दुस्तानमें ३२ करोड़ हिन्दू हैं, उसमें आधी १५ करोड़ औरतें हैं, कभी उन औरतोंसे भी इन धरमवालोंने पूछा, कि तुम्हें जायदात मिलनी चाहिए कि नहीं?

दुखराम—उन बेचारियोंको तो मालूम भी नहीं है, यह पीठमें छुरी भोंकना है। जो वह समझ पावें, तो मरदकी सब जायदात और कमाई ताकपर रखी रह जायगी। एक ही दिन १५ करोड़ने चूल्हा जलाना छोड़ दिया, तो सभा करने-वालोंको आटा-चावलका भाव मालूम हो जायगा।

भैया—लेकिन दुक्खू भाई! औरतें हमेसा भेड़-बकरी नहीं बनी रहेंगी। पढ़ी-लिखी औरतें जगह-जगह सभा कर रही हैं और लड़के आदमीके पेटसे निकलते हैं और लड़की क्या इमलीके खोढ़रसे निकलती है।

सन्तोखी—जहाँ-तहाँ भैया! कसाई सब औरतोंसे अँगूठेका निसान लगवा रहे हैं।

भैया—काहे वास्ते सन्तोखी भाई?

सन्तोखी—समझा रहे हैं कि जो कानून पास हो गया तो सब जायदाद लड़कियाँ ले जायेंगी और लड़के भीख माँगते फिरेंगे।

भैया—सब जायदात तो देनेकी बात नहीं सन्तोखी भाई! हजारों बरसोंसे हिन्दू मरदोंने जो उनका हक छीन लिया है, बस उतने हीके देनेकी बात है। मुसलमानोंके यहाँ लड़कीके लिए हक मिलता है, इसाईके यहाँ भी लड़कीको हक मिलता है, उनका धरम तो रसातल नहीं गया तो हिन्दू मरद इतना क्यों छटपटा रहे हैं।

दुखराम—यह हिन्दू धरम क्या है भैया! वह तो जान पड़ता है कि आदमी के देहका कोढ़ है। लेकिन यह कितने दिनों तक रोकेंगे?

भैया—तो मालूम हुआ न, औरतोंपर कितना जुलुम हो रहा है। मरकस बाबाकी शिक्षा है कि मरद और औरत गाड़ीके दो पहिये हैं, जब तक दोनों बराबर नहीं होंगे तब तक गाड़ा चल नहीं सकती। दुक्खू भाई! हम जोंकोंको खतम करनेके लिए तैयार हैं, इसलिए न कि आदमी-आदमी बराबर हों। आदमी-आदमीके बराबर होनेपर औरतोंको गुलाम नहीं रखा जा सकता। औरत-को आगमें जलाना भी हिन्दू धरम कहलाता था। औरतकी देहको रोटी-कपड़ेके लिए बेचना भी हिन्दू धरम कहला रहा है। बराबरका हक होगा, तब औरतको देह बेंचना नहीं होगा, तभी दुनियाका नरक मिटेगा।

अध्याय १३

अछूत और सोसित

दुखराम—भैया तुमने उस दिन जो औरतोंकी गुलामीके बारेमें कहा था; उसपर मैं बहुत सोचता रहा, लेकिन उसी तरहकी और कुछ बातोंमें उनसे भी सताई जमात है उन लोगोंकी जिनको बड़ी जाति अछोप, अछूत, कहते हैं।

भैया—और उन्हींको गाँधीजीने नया नाम दिया—"हरिजन।"

दुखराम—मैंने सोचा अबदुल और सुखारीको साथ लेकर बात करो तो और

अच्छा होगा। मैं उनसे मरकस बाबाकी बातें करता रहा हूँ, और अभी तो वह दुनिया कहाँ है, इसका कहीं पता नहीं है, तो भी बात सुनके ही दोनों तुमसे भेंट करनेके लिए आना चाहते थे। मैंने उनसे कहा कि रजबली भैयाको मैं तुम्हारे ही घरपर लाता हूँ, वही सामने है अब्दुल भाईकी झोंपड़ी, देखते हैं न, क्या यह आदमीका घर है ? हिन्दू भंगी होता, तो बगलमें एक सुअरकी खोमार भी होती और दोनोमें कोई फरक नहीं दिखाई पड़ता। अच्छा अब हम आ गये, अब्दुल भाईने आमके नीचे पुआल बिछा दिया। सलाम अब्दुल भाई !

अब्दुल—सलाम दुक्खू भाई ! और यह रजबली भैया तो नहीं हैं ?

दुखराम—हाँ, यही हमारे रजबली भैया हैं। सलाम सुखारी भाई !

सुखारी—सलाम दुक्खू भैया, सलाम रजबली भैया ! आओ इसी पुआल-पर बैठें।

अब्दुल—हाँ, भैया ! बैठो। जोंकोंने हमें और किस कामके लायक छोड़ा है यह तो थोड़ा-सा कोदोका पुआल कहींसे माँग-जाँचकर ले आये हैं। जाड़ेमें लड़के-बाले इसीमें घुसकर दिन काटेंगे।

सुखारी—पुआल भी मिल जाय भैया ! तो जनुक हम लोगोंको साल-दुसाला मिल गया।

दुखराम—हमारे ही हाथ साल-दुसाला बनाते हैं लेकिन भकुवा बनाकर दूसरे उसे पहनते हैं। हमने अपने रूपको नहीं पहचाना सुक्खू भाई ! कोई बाघका बच्चा था। बचपन हीमें किसी गड़रिये ने पकड लिया और भेड़-बकरीका दूध पिलाकर पोसा। जब वह बढ़कर पूरा बाघ हो गया, तब भी कोई उसका कान पकड़ता, कोई मारता, जैसे अब भी कुत्ते हीका पिल्ला है। फिर किसी दूसरे बाघने देखा उसको बड़ा अचरज हुआ और अफसोस भी हुआ। जब वह सम-झानेके लिए उसके पास गया तो सब भेड़ बकरियाँ भाग गईं, और उन्हींके साथ वह बाघका बच्चा भाग निकला। कई दिनके बाद बाघने जवान बाघको पकड़ पाया। बाघ समझाने लगा कि तुम भी हमारी तरह बाघके बच्चे हो, काहे मार खाते हो, काहे बेइज्जत होते हो ? बाघ बच्चेने कहा—कि नहीं हमको छोड़ दो नहीं तो गड़रिया मार-मारकर बेदम कर देगा। बाघ उसे पानीके पास

ले गया, परछाईं दिखाके कहा कि देखो तुम्हारा भी रूप मेरे ही ऐसा है। बाघ बच्चेने देखा तो बात उसे सच्ची मालूम हुई लेकिन तब भी उसका डर नहीं जा रहा था। बाघने कहा कि गड़रियोंके सामने मेरी तरह जरा गुर्राना और जब गड़रिया जान लेके भाग जाय तब तो मेरी बात मानोगे न? बाघ बच्चेने वैसे ही किया, गड़रिया भाग गया। बाघ बच्चा जंगलका राजा बन गया। वही बात तो है सुक्खू भाई! हम लोगोंकी। हजार आदमी मर मरकर कमाते हैं और पाँच जोंकें सब खा जाती हैं, कमानेवालोंको उन्होंने छत्तीस खोममें बाँट दिया है उस-परसे हम लोगोंको भेड़ बना दिया। लेकिन जिस दिन हम लोग अपना रूप पहचान लेंगे, उसी दिन जोंकोंका अन्त समझो।

सुखारी—दुक्खू भाई, जो तुम कहते हो वह सब हमारे घटके भीतर उतर जाती है। छोटा भइयवा सुआरथ काल्ही तो यहाँसे गया है। पलटनमें सिपाही है भैया! वहाँ अच्छा-अच्छा पहनना मिलता है दुक्खू भाई! तुमने जो दो अच्छर बताया है उसे सुआरथसे भी कहा। उसने कहा कि रूसके पलटन इतनी बीर दुनियामें कहीं नहीं है लेकिन उसको यह नहीं मालूम था कि रूसमें जोंके नहीं हैं, वहाँ कमेरोंका राज है।

दुखराम—तो तुमने कुछ बताया कि नहीं सुक्खू भाई?

सुखारी—जो कुछ समझमें आता है, वह बतलाया दुक्खू भाई! कह रहा था कि मैं पलटनमें जाकर और पता लगाऊँगा। अच्छा यह बात तो हुई अब रजबली भैया कुछ बतावें?

भैया—दुनिया भरमें सुक्खू भाई जोंकोंका राज है, जोकें कारखाना खोलती हैं, सौदा बेंचती हैं, जिसमें कोई गड़बड़ न करे इसलिए राज भी अपने हाथमें रखा है। गरीब सब जातिमें हैं सुक्खू भाई! बाँभनमें भी गरीब हैं, राजपूतमें भी गरीब हैं, भुँइहारमें भी गरीब हैं, जो गरीब हैं, उसकी जिन्दगी नरक है, धरती पर हमारा देस सबसे बड़ा नरक है काहेसे कि इतनी गरीबी चारों खूंटमें कहीं भी नहीं है और बड़ी जातियोंमें तो दो-चार खुसहाल भी होते हैं, लेकिन अछूत जातिमें तो एक ओरसे सभी गरीब ही गरीब हैं। मदरसामें पढ़ने जायँ तो सबकी तिउरी चढ़ जाती। मेहतरका लड़का हमारे लड़केके साथ बैठा करे।

चमारका लड़का हमारे लड़केके साथ पढ़े। रोजगारसे लोग पैसा पैदा करते हैं, लेकिन अब्दुल भाई! तुम मिठाईकी दूकान खोलो तो कोई आयेगा?

अब्दुल—देह तो छुआते ही नहीं हैं भैया! हमारे हाथकी मिठाई कौन खायेगा? कपड़ाकी दुकान खोलो तो वही बात। नौकरीमें तो और मुश्किल! सब बड़ी-बड़ी जातियोंके हाथमें है।

भैया—जोंकोंने वैसे तो सारी दुनियामें सब कुछ अपने हाथमें रखा लेकिन हिन्दुस्तानमें तो उन्होंने और गजब ढाया है। तीस करोड़ हिन्दुओंको ही ले लो। दस करोड़ अछूत हैं, बड़ी जातिवाले जो उन्हें आदमी कहते तो जनुक बड़ी दया करते हैं बाकी बीस करोड़में दस करोड़ औरतें हैं जिनको कहने के लिए तो अरधांगिनी नाम दिया जाता है लेकिन कहावत है—'बहुरियाका बहुत मान लेकिन हाड़ी-बरतन छूने न पाये।" दुक्खू भाई! उस दिन बात हो रही थी न जायदादमें औरतोंका भी हक होना चाहिए?

दुखराम—हाँ भैया! सन्तोखी-भाईने जो सभाकी नोटिस दिखाई थी।

सुखारी—किस बातकी नोटिस थी भैया?

भैया—आजकल बड़े लाटके यहाँ एक कानून बनानेकी बात हो रही है। औरतोंको न बापकी जायदाद में हक मिलता है न पतिकी। इसीलिए कानून बना देना चाहते हैं कि औरतोंको भी हक मिले लेकिन हिन्दू कहते हैं कि औरतोंको हक मिलनेसे हिन्दू धरम खतम हो जायगा। हिन्दू धरम बढ़ेगा कैसे? दस करोड़ आदमियोंको अछूत रखो, उनको न साथमें पढ़ने दो न उन्हें कुएँकी जगतपर चढ़ने दो, न मन्दिरके भीतर घुसने दो, एक है यह रास्ता। दस करोड़ औरतोंको हक मत दो जिससे वह मरदोंकी दासी बनी रहें हिन्दू धरमकी बढ़ोतरीका यह दूसरा रास्ता है, बीस करोड़को तो इस तरह जानवर बनाया फिर दस करोड़ हिन्दू आदमी रह जाते हैं। लेकिन उस दस करोड़ में कितने भी बाम्हन हैं, जिनका दिमाग आसमानपर रहता है वह अपने को बम्हाका बेटा कहते हैं, कुछ हैं राजपूत, फिर हैं खत्री, अगरवाल, बरनवाल, रस्तोगी, कायथ और भी पचासों जातियाँ हैं, सबकी अलग-अलग दुनिया है, मरना-जीना, सादी-ब्याह सबका अपनी-अपनी जातिमें। हिन्दू सिरिफ एक नाम है, नहीं तो यह

सैकड़ों जातियोंका अपना अलग संसार तो देख रहे हो न दुक्खू भाई। २० करोड़ औरत और अछूत कहकर जानवर बना दिया। फिर १० करोड़को सैकड़ों जातियोंमें तोड़-फोड़कर बिल्कुल कमजोर कर दिया। इससे फायदा किसको हुआ? बाहरवालोंको। घर फूटे गँवार लुटे, आज बिलायती जोकें हिन्दुस्तानपर राज कर रही हैं क्यों? इसीलिये कि हिन्दुस्तान फूटके कारन दुरबल है और दुरबलकी मेहरी गाँव भरकी भौजाई है। और दूसरा नफा उठानेवाला है हमारे देसके निकम्मे लोग, जोकें जो हाथ-पैर हिलाना नहीं जानतीं, जो दूसरोंका खून चूसती हैं, किसान उनकेलिये अनाज पैदा करता है, मजूर उनकेलिए कपड़ा बुनता है।

दुखराम—इन्हीं जोंकोंने क्या भैया जात-पात बनाई है क्या?

भैया—एक कहावत है दुक्खू भाई—जब गंगा हहाके समुन्दरके पास पहुँचीं तो समुन्दरको बड़ा डर लगा उसने सोचा जो गंगा इतने जोरसे चलेगी तो मुझे भी लाँघ जायेगी। उसने हाथ जोड़के कहा—"गङ्गा महारानी एक बातका बरदान माँगता हूँ एक धारासे आनेपर मुझे बहुत तकलीफ होगी आप हजार धारा बनकर आयें तो मुझपर बड़ी दया होगी। गङ्गा हजार धारा बन गई, उसका जोर हजार टुकड़ों में बँट गया और कहते हैं इसीलिए समुन्दर गङ्गा को खा गया। हमारा देश भी वैसे ही है। हजारों जातियोंमें बँटा है इसीलिये हमारे यहाँकी जोकें हजारों बरससे हमें खा रही हैं, हमारे लिए ये जोकें मजबूत हैं लेकिन यह भी हजारों टुकड़ोंमें बँटी हैं, इसलिये बिलायती जोकें हिन्दुस्तान में पहुँच गईं। तुमसे सुक्खू भाई पूछा जाय कि तुम तो इतना काम करते हो। बड़े भोरे ही हल नाधते हो बरसा हो या जाड़ा हो या गरमी हो कुछ नहीं गिनते। अढ़ाई पहर तक खेतमें हर जोतते हो, जमीन खोदते, खेत काटते हो, और मिलता तुम्हें क्या है?

सुखारी—चार पैसा, और पाव भर पनपियाव, न कुल: चार पैसाके साँवामें भी आज-कल पेट नहीं भरता, क्या अपने खायँ और क्या बाल-बच्चेको खिलायें सबकी हड्डी-हड्डी निकली हुई है। परसाल १२ बरसका लड़का भुक (मर) गया।

भया--१२ बरसका लड़का मरनेके लिये नहीं पैदा हुआ था सुक्खू भाई! जिसको आधा पेट भी भोजन नहीं मिलेगा, उसको तो बीमारी ढूँढ़ती ही रहती है। खाने का ठिकाना नहीं है तो दवाई कहाँसे लाके पिलाओगे ?

भैया--आज-कल भी भैया आठ सालका गदेला (लड़का) महीना भरसे जड़ैयामें पड़ा है। बस भगवान पर छोड़ दिया और क्या करे। पहिले चार पैसे-की कुनैनकी पुड़िया मिलती थी तो कहींसे माँग-जाँचकर खरीद लाते थे। लेकिन अब तो उसका कहीं पता ही नहीं है।

भैया--यह आदमीकी जिन्दगी नहीं है सुक्खू भाई, दो सौ पीढ़ीसे तो भगवानपर छोड़ा, लेकिन भगवानने आज तक तुम्हारी ओर झाँका भी नहीं।

सुखारी--सो तो जानता हूँ भैया! लेकिन अब आदमीका कुछ भी नहीं चलता तो क्या करे ? सुनते हैं गाँधी महात्मा हम लोगकी सुध ले रहे हैं।

भैया--अपनी सुध न लोगे सुक्खू भाई तो कोई तुम्हारी सुध न लेगा। हिन्दू और गाँधीजी भी जो हरिजन-हरिजन कहने लगे तो इसमें भी दूसरा ही मतलब है।

दुखराम--दूसरा मतलब क्या है भैया और हरिजन क्या ?

भैया--हरि भगवान को कहते हैं और जनका माने है आदमी, भगवान का आदमी, नाम तो अच्छा है, लेकिन नाम से कुछ नहीं होता।

दुखराम--एक किस्सा सुना दें। किसी लड़केका नाम ठठपाल था, अच्छा नाम रखनेसे जम उठा ले जाता था इसलिये मतारीने खराब नाँव रख दिया। लड़का पढ़के हुसियार हुआ। दूसरे लड़के ठठपाल करके मजाक करते। उसने अपने गुरुसे कहा कि मेरा नाम बदल दें। गुरुने कहा--'नाम में कुछ नहीं है'। ठठपालने फिर-फिर जोर देकर कहा तो गुरुने कहा जाओ तुम्हीं कोई अच्छा-सा नाम ढूँढ़ लाओ। ठठपाल नाम ढूँढ़ने चला। किसी खेतमें फटे-चीथड़े लपेटे कोई औरत पिछुआ (छूटा दाना) बीन रही थी, ठठपालके पूछनेपर उसने अपना नाम लछमिनिया बताया। ठठपाल सोचने लगा कि लछमिनिया ऐसा अच्छा नाम है, लेकिन इससे उसे क्या नफा है ? ठठपाल और आगे बढ़ा, चैत-बैसाखकी दुपहरिया में कोई आदमी नंगे बदन हल जोत रहा था पूछनेपर

नाम बताया धनपाल। ठठपाल फिर सोचने लगा। लेकिन, फिर आगे बढ़ा। कुछ आदमी कन्धेपर मुर्दा उठाये "राम नाम सत्त है" कहते गाँवसे बाहर निकल रहे थे। ठठपाल ने नाम पूछा तो मालूम हुआ अमर। ठठपाल वहींसे गुरुजीके पास लौट आया। गुरुने पूछा--कोई नाम ढूँढ़ लाये? ठठपालने कहा—"बिनिया करत लछमिनिमा देखा, हल जोतत धनपाल। खटिया चढ़े हम अम्मर देखा, सबसे भला ठठपाल।"

दुखराम—हाँ नाम बदलनेसे क्या होता है भैया?

भैया—और नाम भी कैसा बदला है हरिजन, भगवानका आदमी। भगवानने अछूतोंकी ओर फूटी आँख भी कभी देखा? जोकें अपने सारे चूसनेको भगवान हीकी कृपा बतलाती हैं। सुखारी क्यों भूखे मरते हैं। भगवानकी कृपा, सुखारीका १२ सालका लड़का पथ और दवाईके बिना क्यों मर गया? भगवानकी मर्जी। सालमें १० महीना सुखारीको क्यों भूखा और आधा पेट रहना पड़ता है?—भगवानकी इच्छा। इनके दो करोड़ चमार भाई काहे नंगे-भूखे मरनेके लिये पैदा हुए हैं? भगवानकी खुशी! राजा सुरेमनपुर काहे २० लाख रुपया हर साल आतिसबाजी, रंडी और मोटरपर फूँकते?—भगवानकी दया। सेठ तिनकौड़ीमल मोटाईके मारे चारपाई परसे उठ भी नहीं सकते। उन्होंने चोर बाजारमें अनाज बेंचकर एक करोड़ रुपया काहे मार लिया? भगवानकी दया। सेठ तिनकौड़ीमलके भाई बन्दोंने अनाज छिपाके उसे मँहगाकर बंगालमें २० लाख आदमियोंको भूखा क्यों मार डाला? भगवानकी दया। कोई काम करते-करते मर जाता, लेकिन उसे एक साँझ भी पेट भर अन्न न मिलता, यह भी भगवानकी दया। किसीके कुत्ते हलुवा-मलीदा खाते हैं और कोई भूखके मारे कुत्तोंका जूठन छीनके खाता है यह भी भगवानकी दया।

दुखराम—जिनके कुत्ते हलुवा-मलीदा खायँ वह भले ही भगवानकी दयाकी तारीफ करते फिरें, लेकिन जिनके ऊपर भगवानके नामसे हमेशा ही बज्र गिराया है, वह काहेको भगवानके आदमी बनने जायँ?

भैया—गांधीजी ने अछूतोंको हरिजन—भगवानका आदमी बनाया और एक काम और किया।

सुखारी—सो क्या है भैया ?

भैया—हरिजनों के लिए मन्दिरका दरवाजा खोल देना चाहिए। जब हरिजन हैं तो इनको हरिका दरसन जरूर मिलना चाहिए। लेकिन बाभन पोथी खोल-खोलके दिखाते फिरते हैं कि चमारके मन्दिरके भीतर जानेसे मन्दिर असुद्ध हो जाता है, भगवान असुद्ध हो जाते हैं। मैं तो उनसे कहता हूँ दुक्खू भाई कि क्या हिन्दुस्तानमें गायका गोबर और मूत नहीं है, क्यों नहीं खिला-पिला के भगवानको सुद्ध कर लेते।

दुखराम—चमार के लिए मन्दिरका दरवाजा खोल देनेसे क्या उसका पेट भर जायगा ?

सुखारी—बड़े होकर नहीं, भैया।

भैया—दस करोड़ अछूत भाइयोंको जानवरसे आदमी बनाना है। दसो करोड़ आदमी अपने मन से जानवर नहीं बने, जोंकोंने उन्हें जानवर बनाया।

सुखारी—किस तरह हम लोगोंको आदमी बनाना चाहते हैं भैया ?

भैया—कहते हैं हिन्दुओंमें एक तिहाई अछूत हैं, उनको भी बड़ी-बड़ी नौकरी मिलनी चाहिए। काहे जज, कलट्टर, मजिट्टर सब बड़ी-बड़ी जातिके ही लोग बनेंगे। हम एक-तिहाई हैं, इसलिए नौकरीमें एक-तिहाई हमारा हिस्सा होता है।

सुखारी—तो भैया, क्या हमारी जातिमें भी अब कलट्टर-मजिट्टर बन रहे हैं ?

भैया—हाँ, दस-बीस काहे नहीं बने हैं। लेकिन सुक्खू भाई जो तिहाई नौकरी मिल जाये, तो यह भी ऊँटके मुँहमें जीरा होगा। दस करोड़में एक हजार को नौकरी मिल जाने से दसो करोड़की भूख भाग जायगी ?

सुखारी—कहाँ भागेगी भैया ! रजपूत-बाभन कायथ में हजारों नोकरिहा हैं, लेकिन हर गाँवमें तो पेटमें पत्थर बाँधके ढेला पीटने वाले भरे पड़े हैं।

भैया—मैं यह नहीं कहता, अछूतोंको नौकरी नहीं मिलनी चाहिए लेकिन ओसके चाटनेसे प्यास बुझेगी सुखारी भाई !

सुखारी—और भी कोई रास्ता बतलाते हैं भैया ?

भैया—राज-काज चलानेके लिए जो छोटे लाट बड़े लाटकी पंचायत (एसेम्बली, कौंसिल) है, उसमें भी एक-तिहाई हमारे भाइयोंको जाना चाहिए।

सुखारी—तो इससे भैया हम लोगों को रोटी-कपड़ा मिलेगा ?

भैया—बड़ी जाति के लोग तो पंचायतमें गये हैं। देख रहे हो न उनकी जाति के ढेला फोड़नेवालों को कितना खाना-कपड़ा मवस्सर हो रहा है।

सुखारी—तो यह भी बेकार ही हुआ न भैया ?

भैया—बेकार नहीं है सुक्खू भाई, अछूतोंको उस पंचायतमें जाना चाहिए, तभी न बड़े लोगों को मुँहतोड़ जवाब मिलेगा और फिर छाता-जूता उतरवाने का नाम नहीं लेंगे। लेकिन सीक बोरके पानी देनेसे कंठ नहीं भीगेगा सक्खू भाई !

सुखारी—तो भैया, कौन उपाय है, जिससे हम लोगों का दुख-दलिद्दर जाय ?

भैया—बस रोगोंकी एक ही दवा है सुक्खू भाई और वह दवा मरकस बाबा बतला गये हैं।

सुखारी—मरकस बाबाकी बात दुक्खू भाईने बतलाई है।

भैया—ताल-तलैया, डबरा-गड्ढा; चाहे गड़हा-गड़ही, चाहे गाय-भैंसके खुरका दाग; एक-एक चीजको लोटाके पानीसे भरनेमें जिनगी बीत जायगी लेकिन वह नहीं भरेंगे और एक बेर बाढ़ आ जाय, तो सब भर जायँगे। मरकस बाबा कहते हैं कि खून चूसनेवाली सभी जोंकों को निकाल बाहर करो और खेती-बारी, बाग-बगैचा, खान-कारखाना सब साझेमें करके मिलकर काम करो, बस सबका दुख-दलिद्दर दूर हो जायगा।

सुखारी—हमारे नेता इसे क्यों नहीं मानते भैया ?

भैया—इनको बाढ़के आनेपर विश्वास नहीं।

सुखारी—बाढ़ के आनेपर विश्वास नहीं है, तो क्या लोटा-लोटा पानीसे भर देनेका विश्वास है, यह तो और अनहोनी बात है।

भैया—वह सोचते हैं कि अबकी साल सौ नौकरी मिलेगी अगले साल दो

सौ आदमी हाकिम हो जायँगे। इसी तरह कुछ दिनमें हमारी जातिके दस-बीस हजार आदमीको नौकरी मिल जायगी। कोई दो हजार महीना पायेगा, कोई हजार, कोई पाँच सौ, कोई सौ।

सुखारी—दो हजार या सौ महीना लेके अपने ही अंडे-बच्चे को पालेगा न भैया! बहुत हुआ तो दो लाख आदमियोंका इससे काम चल जायगा, लेकिन दस करोड़में दो लाख क्या है?

भैया—बड़ी जातिवालोंके पास तो भैया जमीन मकान भी है, कल कारखाना भी है, हमारे पास तो मँड़ई डालनेकी भी जमीन नहीं, तो दस-पन्द्रह हजार नौकरियोंके मिल जानेसे हमारा क्या बनेगा?

भैया—नौकरीवाले जमीन मकान खरीदेंगे, कारखानों में भी हिस्सेदार बनेंगे, हो सकता है, पचास बरसमें अछूतोंमें भी कुछ हजार भूमिदार और कारखानेदार बन जायँ।

दुखराम—लेकिन इससे तो भैया! जोंक ही बढ़ेगी न? जोंकोंके बढ़ानेसे हमारा दुख जायगा या खतम करनेसे?

भैया—यही तो ये लोग नहीं समझते। उन्होंने खुद सब तकलीफ और अपमान भोगा है। उनके दिलमें अपने भाइयोंके लिए बड़ा दर्द है। वह अछूतोंको उठा रहे हैं, यह सब अच्छा है। वह गाँधीजीके हरिजन-उद्धार या अछूत-उद्धार को बेकार समझते हैं, यह भी ठीक है। और गाँधीजी जो मन्दिरमें अछूतोंको भेजना चाहते हैं तो यह मायाजाल है। मन्दिर और भगवान सब धोखेकी टट्टी है। चारा देकर बहेलिया मारता है। अछूतोंको भगवानको दूर हीसे सलाम करना चाहिये और कह देना चाहिए—"बाबा! जाओ, बहुत दिनों तुमने छातीपर मूँग दला।"

सुखारी—मरकस बाबाके रस्तासे चलनेसे हम लोगोंका कैसे उद्धार होगा भैया?

भैया—सुक्खू भाई! यही अपने दाउदपुरकी बात ले लो। बामन-चमार सब मिलाकर १०० घर हैं। तुम्हारे यहाँ ५०० सौ बीघा खेत है और सब रब्बीका। अभी तो १०० घरमें २० घर चमारोंके पास कुल मिलाकर ३, ४

बीघासे ज्यादा जमीन नहीं, और उसके लिए भी मालिककी गाली-मार सहनी पड़ती है, और भी कितने ही बामनों, अहीरों और दूसरी जातिके घर हैं, जिनमें किसी-किसीके पास नामके लिए थोड़ी-सी जमीन है। ८, ९ घर हैं, जिनमें पास जमीन भी बेसी है और मुँहमें गाली भी। मरकस बाबाके रस्ते का मतलब है कि पाँचौ सौ बीघा इकट्ठा कर दिया जाय, कोले-कोलियोंकी मेड़ें तोड़ दी जायँ, और पाँचौ सौ बिगहाकी सभी घरकी साझी हो। जितने देहसे काम करने लायक आदमी मर्द-औरत हैं, सब काम करें।

सुखारी—लेकिन भैया, सुखलाल तेवारीके घरकी बुढ़िया भी चौखटसे बाहर नहीं निकलती, उनके घरकी औरतें कैसे निकाई-रोपाई करने आयेंगी ?

भैया—सान परदेके भीतर रहना, चौखट नही लाँघना, हाथमें मेंहदी लगाके बैठना, यह सब जोंकोंका धरम है भाई। कमेरोंका धरम है, काम करना। सुखलाल तेवारी और उनके घरकी औरतोंको दोमेंसे एक बात चुननी पड़ेगी। जो वह जोंक धरम पालन करना चाहते हैं, तो "काम नहीं तो रोटी नहीं" वाली बात होगी, और एक हफ्तामें सब पटपटाके दाउदपुर को छोड़ जायँगे। जोंकोके मरनेसे धरतीका भार उतरता है दुक्खू भाई ! और जो कमेरा धरमपर चलना चाहेंगे, तो सबके भाई हैं, सबसे साथ मिलके काम करें। खूब धन पैदा करें, और सब बाँट-चोटकर खायें-पियें।

सुखारी—तो मरकस बाबाके रस्तामें भैया, काम पियारा होता है, चाम नहीं, यही न भैया !

भैया—जो दाउदपुर में सभी घर चामसे पियार करने लगे तो धरती माता एकहू अच्छत अनाज देंगी ?

सुखराम—धरती माताका दिल तब तक नहीं पसीजता भैया, जब तक चोटीका पसीना एड़ी नहीं पहुँचता।

भैया—दाउदपुरमें सब घर काम करेगा। खेतोंमें मोटरका हल चलेगा, सिंचाईके लिए पाइप और बिजली लगेगी। खेत-खेतमें बिलायती खाद पड़ेगी। २०० बीघा गेहूँ बोनेमें लोगोंका साल भरका खाना हो जायगा। ३०० बीघा जो सिगरेटवाला तमाकू बो दो, तो खाली तमाकू बेंच देनेसे सालमें ३ लाख रुपया

आ जाय। लेकिन तमाकू काहेको बेचोगे सुक्खू भाई! दाउदपुर में सिगरेट का कारखाना खुल जायगा। खेतीका समय छोड़कर मरद-औरत अपने कारखानामें रोज ६ घण्टा काम करेंगे। बीस लाखका सिगरेट सालमें बिक जायगा और गाँव-वाले जितना सिगरेट पियेंगे उतना मुफुत रहेगा।

सुखारी--तो भैया इसी दाउदपुरकी मिट्टीसे २० लाख २५ लाख सालाना निकलेगा न?

भैया—और यह २०, २५ लाख सुक्खू भाई सब घरका धन होगा। फिर दाउदपुरमें कोई सुअरकी खोभार नहीं दिखाई पड़ेगी, कोई छान और खपड़ैल भी नहीं बच रहेगी। उसकी जगह दाउदपुरमें होगी--एक चौड़ी सड़क जिसके दोनों ओर ईंट, सीमन्ट और लोहेसे बने पक्के मकान होंगे। हर मकानमें नलसे पानी जायगा और बिजली दीया बारेगी। हर घरके पीछे पक्का पाखाना होगा, और अबदुल भाईको उठाना नहीं पड़ेगा; नलसे पानी छोड़ा जायगा और वह धरतीके भीतर ही भीतर बहा ले जायगा। फिर आजके नंगे-भूखे आदमी दाउद-पुरमें नहीं दिखाई पड़ेंगे। सब साफ कपड़ा पहिनेंगे। लड़के-लड़की सब पढ़ेंगे। सुखलाल तेवारीके पोते और सुखारी चमारके पोते एक दूसरेको भाई समझेंगे और एक परिवारके बेकति (आदमी)।

अबदुल—लेकिन भैया, यह सपना जैसी बात मालूम होती है।

भैया—सपना वह होता है अबदुल भाई, जिसे धरतीपर कहीं न देखा जाय, लेकिन जो बात धरतीके किसी कोने में देखी जाय, उसे भी क्या सपना कहेंगे?

अबदुल—धरतीपर ऐसी बात कहीं हुई है भैया?

भैया—हाँ अबदुल भाई! और बहुत दूर नहीं। दो दिन रेल और तीन दिन मोटर से चलनेपर तुम उस देसमें पहुँच जाओगे जहाँ सब कारबार साझेके परि वारका है, जहाँ कोई अछूत और बड़ी जातिका नहीं है, जहाँ कोई जोंक नहीं है उस देसका नाम है सोवियत भूमि, किसानों-मजदूरोंका पंचायती राज, और उसके पहले रूस भी कहा करते थे।

भैया—तो हिन्दुस्तानमें कोई विदेसी चीज नहीं चलनी चाहिये, यह कौन कहता है ?

सोहनलाल—गाँधीजी कहते हैं, गाँधीजी के चेले लोग कहते हैं ।

भैया—गाँधीजी नहीं कह सकते सोहन भाई ! गाँधीजी रूसके तालस्तायको अपना गुरू मानते हैं, बिलायतके रस्किनका अपनेको रिनिया मानते हैं। उन्होंने कभी नहीं कहा, छापाखाना बिलायतसे आया है, इसलिए उसमें छपी गीताको नहीं पढ़ना चाहिये। घड़ी भी बिलायतसे आई है, और गाँधीजी उसको बाँधे-बाँधे फिरते हैं, चसमा बिलायतसे आया है लेकिन उसे लगाते हैं। ईसामसीका धरम विदेससे आया है, लेकिन गाँधीजी उसका बहुत आदर करते हैं। हिन्दुस्तानके चार आदमीमें एक आदमी जिस मुसलल्मान धरमको मानता है और वह भी दूसरे देससे आया, लेकिन उन्होंने कभी नहीं कहा कि अरबके पैगम्बरको हिन्दुस्तानसे निकाल बाहर करना चाहिये ।

सोहनलाल—लेकिन वह कहते हैं, कि मरकस बाबाके रस्तेमें हत्याकी बात आती है और हिन्दुस्तानके रिसि मुनि बेहत्याका रास्ता बताते हैं।

भैया—यह दोनों बात गलत है। मरकस बाबा हत्याका रास्ता नहीं बताते, वह ऐसा रास्ता बताते हैं, कि दुनियामें फिर आदमीको आदमीकी हत्या करनेकी कभी जरूरत ही न पड़े । अकाल, महामारीमें करोड़ों आदमी मर जाते हैं वह चाहते हैं दुनियामें अकाल-महामारीका नाम ही न रहे । जोंकें अपने स्वारथके लिए बराबर लड़ाई करवाती हैं, हमारे सामने ही दो बड़ी बड़ी लड़ाइयाँ हुईं, जिनमें करोड़ों आदमियों की हत्या हुई, जोंक गुण्डोंने लाखों बेकसूर बच्चों और औरतोंको तड़पा-तड़पाकर मार डाला । मरकस बाबाने ऐसा रस्ता बतलाया है, कि जोंक ही न रह जायें और दुनिया भरके सारे आदमियोंका एक परिवार बन जाय। गाँधीजी जोंकों को भी रखना चाहते हैं और यही जोंकें हत्याकी जड़ हैं। दुक्खू भाई, बताओ कौन हत्याका रस्ता बताता है, कौन बेहत्याका ?

दुखराम—इससे तो मरकस बाबा का ही रास्ता बेहत्या (अहिंसा) का हुआ और गाँधीजीका रास्ता दुनियासे कभी हत्याको नहीं हटा सकेगा।

सोहनलाल—लेकिन यह तो तब होगा न जब सारी दुनिया मरकस बाबाके रस्ते पर चलने लगेगी। लेकिन यह तो अनहोनी बात मालूम होती है।

भैया—जो दुनियामें जोकें रह जायगीं तो हत्या भी रह जायगी, सोहन भाई! लेकिन इसका दोस तो जोंकोंको रहेगा, मरकस बाबाके रास्तेको नहीं। फिर सोहन भाई आप मरकस बाबाके रास्तेके ऊपर सारी दुनिया आ जायगी इसे तो अनहोनी समझते हैं, और तब जब कि अपने सामने देख रहे हैं कि ३८ बरस पहले दुनियाका छठवाँ हिस्सा मरकस बाबाके रस्तेको अपना चुका और ६ बरस पहलेके भी नहीं। जिसे अभी दुनिया अपना चुकी, उसे तो तुम अनहोनी कहते हो। और जोंकें बनी रहेंगी, जिनक जीना ही दूसरेके खूनपर होता है, लेकिन वे भगत बन जायँगी और सेर-बकरी एक जगह पानी पियेंगे। है यह होनेवाली बात ?

सोहनलाल—जोंकोंके हटानेकी बात तो गाँधीजी भी कहते हैं, लेकिन हत्याके रास्तेसे नहीं बेहत्याके रास्तेसे।

भैया—बुद्ध गाँधीजीसे बहुत बड़े आदमी थे। उन्होंने भी बेहत्याके रास्ते जोंकोंको भगत बनाना चाहा, लेकिन नहीं हो सका। ईसामसीने भी बेहत्याके रास्तेसे सबको ले जाना चाहा, लेकिन देख रहे हो न, उनके चेले क्या कर रहे हैं ? गाँधीजीके चेलों हीकी ओर नहीं देखते ? मिलवाले सेठ क्या कर रहे हैं ? उनके चेलोंने बम्बईमें मजदूरोंपर गोलियाँ चलवाई। उनके चेलोंने किसानोंपर घोड़े दौड़वाये। बेहत्याकी बात उसी दिन खतम हो गई जिस दिन लड़ाईके समय गाँधीजीने कहा था कि कांगरेस सरकार में जायेगी तो पलटन, गोला बारूद सभी तरहसे फसिहोंका संहार करेगी। जरमन-जापान फसिहोंके सामने निहत्था बन बेहत्याके रास्ते काम नहीं चलेगा इसलिए गाँधीजीने भी हथियारके साथ फसिहोंका मुकाबला करनेके लिए कहा। मरकस बाबा भी हथियार लेकर जोंकोंका मुकाबला करनेके लिए कहते हैं। बताओ दुक्खू भाई! है दोनोंमें कोई फरक ?

दुखराम—कोई फरक नहीं मालूम होता भैया ?

भैया—और मरकस बाबा हथियार लेके मुकाबिला करनेके लिए क्यों कहते, इसीलिए कि जोंकें सिरसे पैर तक हथियारसे लैस हैं, तुम्हें निहत्था देखकर वह

भून देंगी। जोंकोंमें दया-मया है, इसे वही विस्वास कर सकता है जिसको जोंकोंकी करनी मालूम नहीं, उनका स्वभाव नहीं मालूम। फिर हिन्दुस्तानके रिसि-मुनि बेहत्याका रास्ता बताते हैं यह बिलकुल गलत है। अठारहों अध्याय गीता हत्या करनेके लिये कही गई। अर्जुन बेचारा तो तीर धनुष छोड़कर बैठ गया था, उसने लड़ाई करनेसे इनकार कर दिया था, लेकिन किरसनने उसे तरह-तरहसे समझाया और लड़नेको तैयार किया। वह लड़ाई भी गरीबों कमेरोंकी भलाईके लिए नहीं हुई थी, कुरुक्षेत्रमें दोनों ओर जोकें ही आमने-सामने खड़ी थीं। जिरजोधन (दुरजोधन) राजमें हिस्सा नहीं देता था, इसी-लिए पांडव लड़ रहे थे। जिरजोधन सारे राजके किसानों, कारीगरों, मजदूरोंकी कमाईको छीनके ऐसजैस करना चाहता था। पांडवोंने उसी ऐसजैसके लिए कौरवोंको मारा, लाखोंका संहार किया। गीताको गाँधीजी बहुत मानते हैं। गीताको जो कहे कि वह बेहत्या (अहिंसा) का रास्ता बताती है, इसके लिए हम यहीं कहेंगे कि वह दिन-दोपहर का अंधा है। और दूसरे कौन रिसि-मुनि हैं जो बेहत्याका रास्ता बतलाते हों?

सोहनलाल—बुद्ध और महाबीर।

भैया—बुद्धको तो हिन्दुस्तानने निकाल बाहर किया, इसीलिए उनकी सिच्छा को स्वदेसी कौन मुँह लेकर कहेंगे। रहा महाबीर, लेकिन उन्होंने किसी राजाको युद्धमें हथियार डाल देनेके लिए कहा, इसका तो हमें कोई पता नहीं। हाँ, आदमी अपनी मुकती और निरवान चाहे तो उसे सब जीव-जन्तु पर दया करनी चाहिये। वहाँ एक देसको दूसरे देसकी गुलामीसे छूटने या एक जमातको दूसरी जमातके खूनी हाथोंसे बचनेके लिए, हथियार रखकर बेहत्या मान लेनेकी बात तो कहीं देखनेमें नहीं आती।

सन्तोखी—पोथी पतरा बहुत है भैया? क्या जाने कहीं रिसि-मुनिके मुँहसे ऐसी बात निकली हो।

भैया—बुद्ध और महाबीरसे पहिले किसी रिसि-मुनिने बेहत्याकी बात कही हो, इसपर मुझे बिलकुल विस्वास नहीं, उस समयके रिसियों मुनियोंका रसोई-

खाना पूजा-घर नहीं, कसाई-घर होता था; वहाँ बीचमें बछिया या बकरेको रिसि मुनि अपने हाथसे मारते थे।

दुखराम—क्या कहा भैया ! रिसि-मुनि बछिया मारते थे, राम-राम ऐसी बात कभी हो सकती है ? हिन्दू गौ माताके इतने भगत हैं तो उनके रिसि-मुनि भला कैसे गाय मार सकते हैं ?

भैया—बुद्धसे पहिले और कुछ सौ बरस पीछे तक हिन्दू रिसि और सभी लोग गायका मास खाते थे, उससे उनको कोई परहेज नहीं था। हिन्दुओंकी एक-दो नहीं, पचासों पोथियोंमें लिखा है, रन्तिदेव राजाकी कथा महाभारत* में आती है। उनके घरमें रोज दो-दो हजार गायें मेहमानों, मुसाफिरों के खानेके लिए मारी जाती थीं।

दुखराम—लेकिन भैया जो हिन्दुओंका पोथीमें गाय मारनेकी बात लिखी है और पहलेके मामूली नहीं,—रिसी-मुनी तक गाय खाते थे, तो आज गोकसी के लिये काहे हिन्दू लोग मुसलमानों का सिर फोड़ते हैं ?

भैया—हिन्दुओंसे पोथीकी बात छिपा दी गई, इसीलिए नहीं तो क्या ६०

* "राज्ञो महानसे पूर्वं रन्तिदेवस्य वै द्विज।
अहन्यहनि वध्येते द्वे सहस्रे गवां तथा।"
"समांस ददतो ह्यन्नं रन्तिदेवस्य नित्यशः।
अतुलाकीर्त्तिरभवन्नृपस्य द्विजसत्तम !"—वनपर्व २२८। ८-१०
"महानदी चर्मराशेरुत्क्लेदात् संस्रुजे यतः।
ततश्चर्मण्वतीत्येवं विख्याता सामहानदी।"—शान्ति पर्व २६-३०
सांकृति रन्तिदेव च मृत संजय ! शुभ्रुम।
आसन् द्विशत-साहस्रा तस्य सूदा महात्मनः।
गृहानभ्यागतान् विप्रान् अतिथीन् परिवेषकाः।—द्रोण पर्व ६७। १-२
"तत्रास्य सूदाः क्रोशन्ति सुमृष्ट-मणि-कुन्डलाः।
सूपं भूयिष्ठमश्नीध्वं नाद्य मांसं यथापुरा।"—द्रोण पर्व ६७। १७-१८
—शांति पर्व २७-२८।

पीढ़ी पहलेके उनके अपने गो-मच्छक पुरखा मिल जायँ, तो क्या यह उनका सिर फोड़ते फिरेंगे ? मैं यह नहीं कहता दुक्खू भाई, कि पहलेके पुरखा गाय खाते थे, तो हम आज भी खायँ। इसकी कोई जरूरत नहीं। लेकिन लाठी लेकर दूसरोंको मारने दौड़ना यह तो जबर्जस्ती है न ?

दुखराम—जबर्जस्ती ही नहीं भैया यह तो भारी झगड़ेकी जड़ है।

सोहनलाल—लेकिन भैया ! हम लोगोंकी सारी खेती-बारी दूध-घी गाय हीसे मिलता है, इसलिए गायकी रक्षा करनेको बुरा कैसे कहा जाय।

भैया—गायकी रक्षा करना अच्छा है सोहन भाई ! हम लोगोंको अच्छी-अच्छी नसलके बैल-गाय पैदा करने चाहिये, उनको बढ़ाना चाहिए। ३० करोड़ आदमीमेंसे बहुत थोड़े हीको पीनेको दूध मिलता है। जब दूध-घी खानेको मिलता था, तो आदमी खूब तगड़े होते थे। दूध-घीकी इफरात हो इसके लिए जरूर हमें कोसिस करनी चाहिए। यह हमारे फायदेकी बात है और मुसलमानोंके भी। मुसलमान भाइयोंको समझाइये—हमारे भी पुरखा गायका बलिदान करते थे, गायका मांस खाते थे, लेकिन पीछे समझा कि गायकी रक्षासे हमारा ज्यादा फायदा है, इसीलिए उन्होंने गायका मांस त्याग दिया। देस भरके लोगोंको खूब घी-दूध खानेको मिले, हल-गाड़ीके लिए अच्छे-अच्छे बैल मिलें, इसीलिए हमें गायोंकी रक्छा करनी चाहिये।

सोहनलाल—गाँधीजीकी अहिंसा और दूसरी बातोंके बारेमें तो आपने बतलाया, तो भी बहुत लोग कहते हैं कि रूस और हिन्दुस्तानमें इतना फरक है। वहाँकी बात यहाँ चलाना उल्टी गंगा बहाना है। वह यहाँ चलेगी नहीं, नाहक झगड़ा-झंझट बढ़ेगा।

भैया—नहीं चलेगी, तो अपने ही बेकार हो जायगी, उसके लिए चिन्ता करनेकी जरूरत क्या ? और झगड़ा-झंझटकी बात जो कहते हो, वह तो जोकें करती हैं। गाँधीजी सेठों और जमींदारोंको समझा दें कि वह हथियार रख दें और १० बरस किसानों-मजदूरोंको मरकस बाबाके रस्तेपर चलने दें। जो साझेकी खेती, मोटरके हल, पानीके पाइप और बिलायती खादसे हरा भरा खेत ऊसर

बन जाने लगे, तो किसानोंको भूखे मरना पड़ेगा। फिर तुरन्त ही जमींदार आकर काम सँभाल लें।

दुखराम—बस यही भैया गाँधीजी जमींदारोंसे मनवा दें तो हम महात्माजी-को सबसे बड़ा अवतार मान लेंगे।

भैया—सेठ लोगोंको भी गाँधीजी मना लें कि बेसी नहीं पाँच बरसके लिए अपने द्वारपर लिखे "लाभ-सुभ" को मिटा दें।

दुखराम—"लाभ-सुभ" क्या है भैया ?

भैया—बनिया लोगोंकी गद्दीके ऊपर दीवारमें "लाभ-सुभ" सिन्दूरसे लिखा देखा है कि नहीं। सेठ लोगोंकी जिनगीका सबसे बड़ा मन्तर यही लाभ-सुभ है। मजूर २०) की चीज रोज पैदा करें, उन्हें ।।।) देकर टर्का दें, और बाकी रुपया हुआ लाभ-सुभ, और रखे उसे गोलकमें। सेठ लोग २०) में ।।।) ही नहीं, कुल रुपया मजूरोंके हाथमें दे दें और कह दें कि देखो तुम लोग बड़े जोखिममें हाथ डाल रहे हो। अब हम चीनीकी मिल, कपड़े की मिल, जूटकी मिल, लोहेका कारखाना किसीका इन्तजाम नहीं करेंगे, हम "लाभ-सुभ" भी छोड़ते हैं और इन्तजाम भी। जो मजूर कारखानेको ठीकसे नहीं चला सके, तो उनको ही भूखा मरना पड़ेगा। फिर सेठजी आकर कारखानेको सँभाल लेंगे, झगड़ा-झंझट मिटानेका यह रस्ता है।

दुखराम—हाँ भैया ! बेसी नहीं पाँच ही बरसके लिए जमींदार और कारखानेवाले सेठ राम-नामा ओढ़कर माला फेरें, और हम लोगोंको मरकस बाबाके रस्तेपर चलने दें, इससे तो बिना झगड़ा-झंझटके फैसला हो जायगा। जब हम देखेंगे कि मरकस बाबाका रस्ता हिन्दुस्तानमें नहीं चल सकता, तो क्या पागल हुए हैं, कि देसभरका संहार करेंगे।

सोहनलाल—लेकिन जमींदार और सेठ गाँधीजीकी बात मानेंगे थोड़े ही ?

भैया—चार हजार बरससे जोंकोंने अपना रस्ता चलाया और उसके कारण पंचानबे सैकड़ा कमेरोंके लिए नंगे-भूखे मरनेके सिवा कोई चारा नहीं। हम तो सिरिफ पाँच बरस ही चाहते हैं। जो जोंकें उतना भी देनेके लिए तैयार नहीं हैं, उनके गुन्डे लाठी छूरा लेकर घूमते-फिरते रहेंगे, पुलिस-पलटनको

उन्होंने अलग तैयार कर रखा है, अदालत-कचहरी सब उनके हाथमें है, इतना होनेपर भी जो महात्माजी कहते हैं कि किसानो-मजूरो ! तुम हमारा रस्ता ले लो, फुफकार भी मत छोड़ो; तो इसके लिए हम लोग तैयार नहीं है। यह तो सोलहो आना जोकोंकी मदद करना है।

सोहनलाल—क्या समझते हो भैया, गाँधीजी जोकोंकी मदद करना चाहते थे ?

भैया—इस बातको अब किससे पूछें। मै तो समझता हूँ, वह इन्कार न करते, हाँ, उसके साथ यह भी कहते कि मै सबकी भलाई चाहता हूँ। कोई चाहता है, इसे वही जान सकता है, दूसरा आदमी दिलकी बातको क्या जाने ? लेकिन गाँधीजी जो कहते थे, उससे सबसे ज्यादा नफा सेठोंको हुआ। दूसरे नम्बरपर जिमींदारोंको, और तुरन्त नफा तो उतना नहीं, हाँ आगेके लिए किसान-मजूरोंको बहुत मदद मिली। तुम समझते होगे सोहन भाई, कि मै गाँधीजीके कामको बहुत बुरा समझता हूँ, और मानता हूँ कि उन्होंने हिन्दुस्तान-के लिए नहीं किया। गाँधीजीके उपकारको बहुत मानता हूँ। उन्होंने ही चम्पारनके निलहे साहबोंके मदको चूर किया और सैकड़ो बरसोंसे भेड़ बने सिकारोंको सेर बनाया। उन्होंने ही हिन्दुस्तानकी भुक्खड़ जनताको अपने पैरपर खडा होनेमें सबसे अधिक मदद की। जनताने अपने बलको समझा और अब वह सो नहीं सकती, जब तक कि वह अपने सतानेवालोंको हमेसाके लिए खतम नहीं कर देगी।

दुखराम—तो गाँधीजीकी कौन बात है जो हिन्दुस्तानके कमेरोंको नुकसान पहुँचानेवाली है ?

भैया—सबसे बड़ी बात तो यह कि वह जमींदारो, कारखानेदारोंको कायम रखना चाहते थे। वह उनसे इतना ही चाहते थे कि वह किसानों और मजूरोंका अपनेको माँ-बाप समझें। सवाल यह है कि माँ-बाप महलोंमें रहेंगे या झोपड़ीमें, बीस हजारकी कारमें चलेंगे या पैदल। लड़के-लड़कियोंके ब्याहमें दस-बीस लाख खर्च करेंगे या धरम-विवाह करेंगे। सिमला, नैनीताल, दार्जिलिंग, उटकमड,

बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली, बनारसमें बिड़ला हाउस बनाकर रहेंगे कि १०) भाड़ेकी कोठरीमें।

दुखराम—मुटिया धोती पहिरने और जौकी रूखी रोटी खानेके लिए यह जोंकें कभी नहीं तैयार होंगी।

भैया—मैं भी समझता हूँ इसके लिए कोई तैयार न होगा। क्या जाने ख्याल हो कि किसान-मजूर माँ-बाप बनानेकी आसरापर हाथपर हाथ धरकर बैठे रहें। लेकिन यह भी नहीं हो सकता, क्योंकि वह अपने पेटकी भूखको कैसे भुला सकते हैं। दूसरी बात गाँधीजी कहते थे कि कल-कारखाना नहीं, हमें चरखा चाहिये लेकिन यह भी होनेवाला नहीं। लोहेके जमानेसे आदमी लौटकर पत्थरके जमानेमें नहीं जा सकता। खद्दरसे जो मिलोंके बन्द हो जानेका डर होता, तो बिड़ला बजाज-साराभाई जैसे करोड़पति करोड़ोंमिलवाले लाखों रुपया खद्दर-फण्डमें दान न देते। गाँधीजी गुड़ खानेके लिए कहते हैं, लेकिन उनके चेला, बिड़ला और साराभाईकी चीनीकी मिलोंने चीनीको इतना सस्ता कर दिया, कि कोई गुड़ खाना चाहेगा नहीं, किसान ऊख बेचकर पैसा कमा लेते, उसकी जगह वह गुड़ बनाने नहीं जायेंगे। बिड़लाने लाखों रुपया लगाकर हिन्द-साइकिलका कारखान खोला। वह पाँच लाख नफेमेंसे पाँच हजार गाँधीजीको दान दे सकता था, लेकिन कारखाना नहीं बन्द कर सकता। बिड़लाने करोड़ों रुपये लगाकर मोटर-कारखाना खोला है, उसी नफेमेंसे धरमसाला बनवा सकता है, मालवीजीके विश्वविद्यालयको दान दे सकता है, लेकिन कारखाना छोड़कर वह सतजुगकी ओर नहीं लौटेगा। चर्खेकी बात करना पत्थरके हथियारोंकी ओर आदमीको ले जानेकी कोसिस करना है।

दुखराम—वह तो नहीं हो सकता भैया! और लोहा बिना चरखेका तकुवा कहाँसे आएगा।

भैया—गुड़, हाथके कूटे चावल और चरखेको अपनानेकी बात कहकर छुट्टी नहीं मिल सकती। जो पीछे लौटना है, तो सभी बातोंको साफ-साफ कहो, चरखेका तकुवा लोहेका रखोगे या लकड़ीका। चरखेको लोहेके बसूलेसे बनाओगे या और किसीसे। जो लोहा रखना ही पड़ेगा तो ताताके बिजली

और पत्थरके कोयलेसे बने लोहेको लोगे या लोगोंको कहोगे कि बबूलका कोयला तैयार करो और पत्थरको गलाकर लोहा निकालो। लेकिन बबूलके कोयलेवाले लोहेको कौन खरीदेगा, जब कि उससे भी बढ़िया फौलाद उससे भी सस्ते दामोंमें मिल रहा है। पत्थरका कोयला भी चाहिए, बिजली भी चाहिए, लोहा भी चाहिए; तब तो रेल भी रखनी होगी, क्योंकि उसके बिना कोयला लोहा और बड़ी-बड़ी मसीनें एक जगहसे दूसरी जगह भेजी नहीं जा सकतीं। और विद्याके लिए क्या कहेंगे? छापाखानाके कारण आज किताब बहुत छपती हैं, बहुत सस्ती बिकती हैं। लेकिन उसको छुड़ाकर क्या हमें फिर ताड़के पत्तेपर हाथसे लिख-लिखकर किताबें पढ़नी चाहिए।

दुखराम—यह तो भैया जुम्मन दादा-सी बात है, जिसे हम लोग हँसीमें उड़ा देते हैं।

भैया—हँसीमें उड़ानेकी बात नहीं है दुक्खू भाई! जब लड़ाईका जमाना था, कपड़ा कम मिल रहा था और बहुत महँगा, ऐसे समयमें जो हम चरखेसे कपड़ा तैयार करते तो यह अच्छी बात थी। रेलकी लाइन उखड़ जाय, पिट्रोल बिना मोटर-लारी बन्द हो जाय, तो इक्का-बैलगाड़ी या पैदल चलनेको कौन नहीं कहेगा। लेकिन करोड़पति कारखानेवाले जो चरखामें भगती दिखाते हैं, उसके भीतर दूसरी ही बात है। वह समझते हैं कि किसान चरखा उठायेंगे तो गाँधीजीके रस्तेको भी अपनायेंगे और हमको माई-बाप समझेंगे फिर मरकस बाबाका नाम नहीं लेंगे, रूसकी बात नहीं सुनेंगे। लाल झण्डा लेकर "किसान-मजूर राज कायम हो" चिल्लाते नहीं फिरेंगे। "रघुपति राघव राजाराम" का कीर्त्तन करेंगे और इस दुनियासे बेसी परलोकका आसरा करेंगे।

दुखराम—तो चरखेवाली बातके भीतर भी भैया बहुत धोखा चल रहा है।

भैया—गांधीजी धोखा देना न चाहते हों; लेकिन सेठ लोग तो जरूर आँखमें धूल झोंकना चाहते हैं। जो उनका चरखेपर विश्वास है, तो कपड़ेके कारखानोंको क्यों नहीं तोड़ देते? जो उनका गुड़पर विश्वास है तो अपनी चीनीकी मिलोंमें आग क्यों नहीं लगा देते? जो उनको सेवागाँवकी बैलगाड़ीपर विश्वास है, तो क्यों मोटरका कारखाना खोल रहे हैं। जो उनको तालके पत्तेकी पोथीपर

विश्वास है, तो बिड़ला औ डालिमाने क्यों कागजकी बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ खोलीं ?

दुखराम—ढोलके भीतर सारा पोल ही पोल मालूम होता है भैया !

भैया—सेठ लोग और कूद कूदकर कह रहे हैं कि मरकसका रास्ता विदेसी है, हिन्दुस्तान धर्मात्मा देस है, वह यहाँ नहा चलनेका, इसको कहते हैं कि आँख की लाज जो छोड़ दो मुँहमें जो आये कहते फिरो। पचरुखीकी चीनी मिल उसकी मसीनें और कारीगरी सब अहमदाबादकी बनी हैं और वहींके दिमागसे निकली हैं न, जब पंचरुखी मिलके लिये मसीनें मँगाने लगे तो उस वक्त ख्याल किया था कि यह स्वदेसी है या विदेसी ? हिन्दुस्तानमें सतजुगसे क्या अखबार निकलते आये थे जो बिड़ला लाखों रुपया लगाकर "हिन्दुस्तान टाइम्स्य" (दिल्ली), "सर्च लाइट", (पटना), "लीडर" (इलाहाबाद), "हिन्दुस्तान" (दिल्ली), जैसे रोजाना अखबारोंको चला रहे हैं।

दुखराम—यह अखबार क्यों चलाते हैं भैया !

भैया—सेठोंके दरवाजेपर दो ही सबद लिखे रहते हैं दुक्खू भाई "लाभ-सुभ" लाखों रुपया लगाते और लाखों रुपया पैदा करते हैं। यह बात तो हुई है, लेकिन एक इससे भी बड़ा नफा है।

दुखराम—इससे बड़ा नफा क्या है भैया ?

भैया—अखबार, ताप, टंक और हवाई जहाजसे भी बढ़कर खतरनाक हथियार है। बिड़लाके अखबार तो अभी तीस-तीस चालिस-चालिस हजार तक छपते हैं, लेकिन बिलायती करोड़पतियोंके अखबार पन्द्रह-पन्द्रह सोलह-सोलह लाख रोजाना छपते हैं। उसमें जो कुछ लिखा जाता है, वह अपने मतलबका ख्याल करके। किसानोंके ऊपर जमींदार जुलुम कर रहा है, उनकी जमीन छीन लेना चाहता है। किसान जीविका छोड़ते नहीं हैं, जमींदार उन्हें गुन्डोंसे पिटवाता है। किसानोंकी ओर से इसकी खबर अखबारमें भेजी जाती है, जोंकोंका अखबार उसे क्यों छापने लगे ? वह छापेगा जिमींदारोंकी ओरसे भेजी गई खबरको जिसमें किसानोंको गुंडा-बदमास कहा गया है। किसान पिटे हैं, घायल हो गये हैं, कोई मर भी गया है, अभी थानेमें खबर भी नहीं पहुँचने पाई कि राज-

धानीमें जोंकोंके अखबारने जमींदारोंकी बात छाप दी। सूबाके पुलिसके बड़े अफसरने उसे पढ़ लिया। कलट्टर-मजिट्टरने उसे पढ़ लिया। एक तो वह स्वय जोंकोंकी जातिके हैं, दूसरे उन्हें खबर भी एक ओरकी मिली है। अब वह मनमें बैठा लेंगे कि किसान जरूर बदमास है। इसी तरह कोई कारखानेवाला जुलुम कर रहा है, मजूर अपनी तकलीफ लिखकर भेजते हैं, तो जोंकोका अखबार उन्हें छापता नहीं। कारखानेवाला लारी दौड़ाकर कितनोको घायल और एक मजूरको मार भी डालता है, लेकिन वह मजूरोंके खिलाफ जो कुछ लिखके भेजता है वह सब जोंकवाले अखबारमें छपता जाता है, हाकिम और दूसरे भोले-भाले पढ़ने-वाले एक ही ओरकी बात सुन पाते है और उसे ही सच्ची मान लेते हैं।

दुखराम—तब तो भैया यह अखबार नहीं, हम लोगोंके गलेकी फाँसी है।

भैया—और जोंकोंके अखबार स्वदेसी धरमका खूब प्रचार करते है। किसी सेठने निहायी (अहरन) की चोरी की है, और सुईका दान दिया है। बस सुईके दानको सेठकी तसवीर देकर बड़े-बड़े अच्छरोंमें छापा जायगा, भोली-भाली जनता समझेगी कि सेठ बड़ा धरमात्मा, बडा दानी है, हे भगवान तुम इसकी रच्छा करो। जब लाखो आदमी अन्न बिना मर रहे हैं उस वक्त कोई पागल या मक्कार सैकड़ों मन अनाज और पचासो मन घी आगमें फूंक देता है, उसकी भी खबर खूब गोल-मटोल अच्छरोंमें छापी जाती है, भोली-भाली जनता समझती है कि अब भी बड़े-बड़े धरमात्मा दुनियामें हैं। अब भी जग्गका अलोप नहीं हुआ है।

दुखराम—कितना बड़ा फरेब।

भैया—किसीने झूठी-सच्ची खबर उड़ा दी कि दिल्लीमें ऐसी लड़की पैदा हुई है, जो अपने पहिले जनमकी बात बतलाती है। फिर महीनों तक जोंकोंके अखबार उसके बारेमें लिखते रहेंगे। कितने ही लोग कसम खाकर गवाही देंगे वह भी छपेगी। किसीने उसके खिलाफ लिखा तो नहीं छापा जायगा। जोंकोंको तो यह मनवाना है कि आदमी मरकर फिर दुनियामें जनम लेता है, और जैसा करम वैसा फल। सेठ लोगोंने पहिले जनममें अच्छा करम किया था, इसीलिये वह आज करोड़पती अरबपती बने हैं। जोंकोके अखबारोंमें जोतिसकी बातें भी

छपती हैं, जोतिसी लोग बालकी खाल निकालते दुनियाका आगम (भविष्य) बतलाते हैं। उनके पत्रेमें जोंकोंके मारनेवाले गरह कमी नहीं मिलेंगे। जोंके उसे इसीलिये छापती हैं कि भोली-भाली जनता समझे कि हमारे आगमका बनना-बिगडना अपने हाथमें नहीं गरहोंके हाथमें है; इसलिये जोंकोंके साथ लड़ने-झगडनेसे कुछ नहीं मिलेगा। जोंकोंके अखबारमें तसवीरके साथ किसी एक नबरके बदमास, लम्पट, ठगका जीवनचरित्र छपेगा और उसमें उसे बडा सिद्ध महात्मा बतलाया जायगा। भोली-भाली जनता उसे पढ़कर समझेगी, कि अब भी भगवानके दरसन करनेवाले महात्मा दुनियामें मौजूद हैं। अब भी भगवान हैं। और वह दुनियाकी खोज खबर लेते हैं, इसलिये छोडो दुनियाका झझट और भगवानकी ओर लौ लगाओ।

दुखराम—दिलमें तो आग ही लग जाती है लेकिन तुम कहते हो दिमाग ठंडा रखना चाहिये, इसीलिये मनको समझाता हूँ। इससे तो मालूम होता है कि सचमुच ही अखबार बडा जबर्जस्त हथियार है।

भैया—और दुक्खू भाई ! जोंके जो किसानोंके घरोंमें दस पैसा रखवाने और बीस पैसा खानेका इतजाम सोच रही हैं, तो फिर गॉव-गॉवमें नहीं, घर-घरमें अखबार आने लगेंगे। फिर जोंकोंके अखबार हजारों नहीं लाखों रोज छपेंगे। अभीसे बिडला मनसूबा बॉध रहा है कि सारे हिन्दुस्तानमें जगह-जगहसे हिन्दी, अँगरेजी और दूसरी भाषाओंमें अपना अखबार निकालें। सिंहानियों, डालमियॉ और दूसरे करोडपति भी अब अखबारोंकी ताकतको समझने लगे हैं लेकिन दुक्खू भाई देखा न ? अखबार विदेसी चीज है, लेकिन उससे पूँजीपतियों को नफा है, उससे उनकी तागत बढ़ती है, इसलिये अब वह स्वदेसी हो गया। अमेरिका और बिलायतके दिमागसे वहॉ के कारखानेमें बना छापेकी मसीन भी स्वदेसी हो गई। बिलायतके लोगोंने भाप और बिजलीवाले कारखानेको दिमागसे निकाला और उन्हें कायम करके हजारों मजूरोंका खून चूसना शुरू किया। वह लखपतीसे करोडपती और करोड़पतीसे अरबपती हो गये। हिन्दुस्तानी सेठ जब उन्हीं कारखानोंको हिन्दुस्तानमें खोलकर करोड़पती बन गये तब उनको स्वदेसी-विदेसीका कुछ खयाल नहीं आया। लेकिन जब बिलायती मजूरोंने अपने मालिकों

के खिलाफ मरकस बाबाके जिस सिच्छाका सहारा लिया, उसीको जब हिन्दुस्तान-के मजूर अपनाने लगे तो वह विदेसी बन गयी।

सोहनलाल—हिन्दुस्तानी जोके यह भी कहती हैं कि हिन्दुस्तान धरमात्माओं का देस है, यहाँ मरकसकी सिच्छा नहीं चलेगी।

भैया—यह धर्मात्माओंका देस है इसमें क्या सक है। यहाँ १६०० बरस तक डेढ़ अरब औरतें सती के नामपर आग में जलाई जाती रहीं। यहाँ सरग जानेके लिये लोग हिमालयमें गलते और अछ्यवटके बरगदसे त्रिवेनी में कूदकर धरम कमाते थे। यहाँ १० करोड़ आदमियों को अछूत और जानवर बनाना, धरमका सबूत है। यहाँ गायका पेशाब-पाखाना खाना धरम है! यहाँ औरतोंको कोई अधिकार न देना जरूरी समझते हैं, पत्थर, बन्दर, सुअर, कुत्ता, गदहा, उल्लू सबके लिये यहाँ आदमीका सिर झुकनेके लिये तैयार है। यहाँ एक ओर बरहमचारीपनका ढोंग है, दूसरी ओर अप्सराओं के साथ क्रीडा करनेमें भी पुन्य माना जाता है। यहाँ एक ओर सराबको हराम कहकरके भगवतीका जूठ मिलने-पर पवित्तर समझा जाता है। यहाँ गाड़ीके गाड़ी पोथे पढ़के भी आदमी गदहा बनता है, भूगोल पढ़के भी हिमालयके पास सरग ढूँढ़ता है। सायस पढ़के भी राहुके कारण चंदर गरहन, सूरज गरहन मानता है, और गङ्गामें नहाकर उद्धार करता है, मुँहसे "एको ब्रह्म। द्वितीयोनास्ती" बोलते हैं, आदमीसे छू जानेसे, या छुआ रोटी पानी खा लेनेसे पतित हो जाना मानते हैं। सोहन भाई यह देश जरूर धरमात्माओंका है लेकिन १० करोड़ अछूतों को धरमात्मा मानते हैं कि नहीं।

दुखराम—मानते तो उन्हें भी न धरम करनेके लिये मदिरमें जाने देते?

भैया—१० करोड़ औरतोंको धरमात्मा मानते हैं कि नहीं?

दुखराम—मानते तो उन्हें भी जनेव देते न?

भैया—कायथोंको धरमात्मा मानते हैं कि नहीं?

दुखराम—उन्हें सराबी, कबाबी, सुदर कहकर हटा देते हैं।

भैया—राजपूतोंको धरमात्मा मानते हैं कि नहीं?

दुखराम—मानते तो "रजपुत भगत न मूसल धनुही" कहके उन्हें भगत बनने के अजोग न कहते ?

भैया—बगाली बरहमनोंको धरमात्मा मानते हैं या नहीं ?

दुखराम—कन्ठी पहनकर जो मछली-मास खाय वह क्या धरमात्मा होगा भैया !

भैया—पंजाबी बरहमनको धरमात्मा मानते हैं कि नहीं ?

दुखराम—मैं नहीं कह सकता भैया !

भैया—मै कहता हूँ दुक्खू भाई, वह भी धरमात्मा नही, क्योंकि वह चौका-चूल्हा नहीं मानते और कहार के हाथकी रोटी-दाल खाते हैं। गौड़, कनौजिया, युभौतिया, सनाढ्य बरहमन भी धरमात्मा नहीं है क्योंकि वह हल चलाते हैं। दक्खिनवाले बरहमन भी धरमात्मा नहीं हैं, काहेसे कि वे मामा, बुआ, बहिन तककी लडकी से ब्याह करते हैं।

दुखराम—तो भैया, हिन्दुस्तान में धरमात्मा है कौन ? यह तो प्याज के छिलके की तरह सब अधरमी ही बन जाते हैं।

भैया—अच्छा जो मोटा-मोटी धरमात्मा मान लो तो मानना पडेगा कि यहाँ-के, हिन्दुस्तान के हिन्दू भी धरमात्मा हैं, मुसलमान भी धरमात्मा है, ईसाई भी धरमात्मा हैं, बौद्ध भी धरमात्मा हैं। फिर तो रूसमें भी ईसाई धरमात्मा हैं, मुसलमान धरमात्मा हैं, यहूदी धरमात्मा हैं। वहाँ भी उनके बड़े-बड़े मन्दिर, मठ, गिरजा और मसजिद बनी है। वहाँ मुसलमानों के तो बल्कि कई बड़े-बड़े पीर समरकन्द-बुखारामें पैदा हुए।

दुखराम—तब उनका यह कहना निलज्जताई ही है न कि मरकस बाबा की सिच्छा रूस में इसलिये चली कि वहाँके लोग धरमात्मा नहीं थे।

अध्याय १५

ग्यान और भाखा

सोहनलाल—दुक्खू मामा ! अभी तक हमने भैया से बहुत सँभल-सँभल के सवाल पूछा है, अब एकाध अपने मनका भी सवाल पूछ लेने दो।

दुखराम—पूछो भैने ! हम भी सुनेंगे, लेकिन दो-चार आना हम भी समझें, ऐसा पूछना ।

सोहनलाल—नहीं समझ पाओगे दुक्खू मामा, तो दो ही चार आना भर, नहीं तो सभी समझोगे । अच्छा तो भैया ! जोंकें जो कहती हैं, कि जितना ग्यान-विग्यान दुनियामें है, वह सब हमने ही पैदा किया है, हम न रहेंगे तो दिया बुझ जायगा ।

भैया—हम कब कहते हैं कि जोंकोंने कभी अच्छा काम किया ही नहीं । लेकिन जो दिया बुझ जानेकी बात कहते हैं, वह गलत है । हम दिया बुझने नहीं देंगे । हमारे कमेरोंके राजमें ग्यान-विज्ञान बहुत चमकेगा । वहाँ ग्यानके बिना कुछ हो भी नहीं सकता । जोंकोंने राजमें आज अपढ़-अबूझ हलवाहेसे भी काम चल सकता है, लेकिन हमारे लिए तो मोटर-हल चलानेवाले हलवाहे चाहिए । राज सँभालते ही पहला काम हमें यह करना पड़ेगा कि देस भरमें कोई बेपढ़ नहीं रहे ।

दुखराम—लेकिन भैया ! कितने लोगोंमें तो जेहन ही नहीं होती, वह कैसे पढ़ेंगे ?

भैया—जोंकोंकी जैसी पढ़ाई होगी, तब तो सबको पढ़ू नहीं बना सकते । जोंकें विद्या पढ़ानेके लिए भाखा पढ़ाती हैं । अपनी भाखा पढ़ावें तो उतनी मेहनत नहीं, लेकिन वह पढ़ाती हैं अंगरेजी, फारसी, अरबी, संसकीरत । जो हम देस भरको अंगरेजी पढ़ा देनेकी परतिग्या करेंगे, तो वह सात जनमका काम है दुक्खू भाई ! हम तो बलिक भाखा पढ़ायेंगे ही नहीं । क्या कोई आदमी गूँगा है, कि भाखा पढ़ाये । लोग कथा-कहानी कहते हैं, हँसी-मजाक करते हैं, देस-बिदेसकी बात बतलाते हैं, सब अपनी ही भाखामें कहते है न ? बस हम पहले तो यही कहेंगे कि दो तीन दिनमें अच्छर सिखला देंगे । अडतालिस अच्छर तो कुल हई हैं । दो-तीन नहीं तो पाँच-छ दिन लग जायेंगे, फिर आदमी जो भाखा बोलता है, उसीमें छपी किताब हाथमें थमा देंगे ।

दुखराम—ऐसा हो भैया ! तब पढ़ना काहेका मुस्किल हो ।

भैया—ढोला-मारु, सारंगा-सदाबिच्छ, लोरिकी, सोरठी, नैका, कँअर

विजयमल, बेहुलाके कितने सुन्दर-सुन्दर खिस्से और गाने हैं। इन्हींको छापके दे दिया जाय, तब कहो दुक्खू भाई !

दुखरीम—तो बूढ़े सुग्गे भी राम-राम करने लगेंगे। क्या किसीको पढ़नेमें परिश्रम मालूम होगा।

भैया—बिद्या अलग चीज है दूक्खू भाई ! भाखा अलग चीज है। लेकिन जोके हमको सिखलाती हैं कि भाखा पढ़ लेना ही ग्यान है। यह ठीक है, कि ग्यान सिखाते बखत उसे किसी भाखामें बोला जाता है। लेकिन अँगरेजीमें काहे बोला जाय, अरबी-संसकीरतमें काहे बोला जाय, उसे अपनी बोलीमें काहे न बोला जाय।

सोहनलाल—लेकिन बोली तो पाँच कोसपर बदल जाती है, ऐसा करनेमें तो हजारों भाखा बन जायेंगी, और कौन-कौनमें किताब छापते फिरेंगे ?

भैया—पाँच कोस नहीं जो ५ अंगुलपर ही भाखा बदल जाय, तो भी हमको उसीमें किताब छापनी पड़ेगी। तभी हम दस बरिसके भीतर अपने यहाँ किसीको बेपढ़ नहीं रहने देंगे।

सोहनलाल—लेकिन हिन्दी भी तो अपनी भाखा है।

भैया—जिसकी अपनी भाखा हो, उसे हिन्दी हीमें पढ़ाना चाहिए, तुम्हारे बनारस में सब लोग घरमें हिन्दी ही बोलते हैं ?

सोहनलाल—किताबवाली भाखा तो नहीं बोलते भैया ! बोलते तो हैं वही बोली जो बनारस जिलाके गाँवमें बोली जाती है।

भैया—जो क-ख अच्छी तरह सिखा दिया जाय, तो अपनी बोलीमें आदमी कितने दिनोंमें सुद्ध-सुद्ध लिखने लगेगा ?

सोहनलाल—अपनी बोलीको तो भैया ! अशुद्ध कोई बोल ही नहीं सकता। अच्छरमें चाहे भले ही एकाध गलती हो जाय, लेकिन व्याकरनकी गलती कभी नहीं होगी।

भैया—और हिन्दी कितना दिन पढ़नेपर व्याकरनकी गलती नहीं करेगा।

सोहनलाल—कोई-कोई आदमी तो भैया जिन्दगी पर पढ़नेपर भी न सुद्ध बोल सकते हैं न लिख सकते हैं।

भैया—लेकिन अपनी बोलीको तो आदमी चाहे भी तो अशुद्ध नहीं बोल सकता, यह तो मानते ही हो। अच्छा जिनगी भर हिन्दी न बोलनेवालोंकी बात छोड़ो। मामूली तौरसे सुद्ध हिन्दी लिखने-बोलनेमें कितना समय लगेगा। हमारे गाँवके एक लडकेको ले लो, जिसकी भाखा हिन्दी नहीं बल्कि भोजपुरी या बनारसी है।

सन्तोखी—मैं कहूँ भैया ! हमारे यहाँ लड़के आठ बरस पढ़के हिन्दी मिडिल पास करते हैं, लेकिन तो भी न शुद्ध हिन्दी बोल सकते हैं, न लिख सकते हैं।

भैया—सोहन भाई ! तुम इन्ट्रेन्स पासवालोंकी बात कहो।

सोहनलाल जब पूछते ही हो, तो मै बतलाता हूँ कि कितने तो बी० ए० पासकरके भी शुद्ध हिन्दी लिख-बोल नहीं सकते।

भैया—न मै आठ साल पढे मिडिलवालेको लेता हूँ न बी० ए० की चौदह सालकी पढाई। मैं इतना समझता हूँ. कि आदमीकी जेहन बहुत खराब न हो और भाखा ही भाखा पढ़ता रहे, तो हिन्दीमें पाँच बरस तो जरूर ही लगेंगे। लेकिन हिसाब और दूसरी चीज साथ ही साथ पढ़नी हो, तब काम नहीं बनेगा। हमारे मदरसोंमें जो हिसाब, जुगराफिया सब कुछ अपनी ही भाखामें पढ़ना हो, तो पाँच बरस क्या भाखा सीखनेमें एक दिन भी नहीं देना होगा। ग्यान है हिसाब, जुगराफिया, इतिहास, खेतीकी बिद्दा, इजनकी बिद्दा, सड़क, पुल, मकान बनानेकी बिद्दा और पचीसों तरहकी बिद्दा। ग्यान पढ़ानेके लिए जब हम यह सरत रख देते हैं, कि जब तक तुम पराई भाखा न पढ़ोगे, तब तक ग्यानमें हाथ नहीं लगा सकते, तब वह बहुत मुश्किल हो जाती है।

सन्तोखी—हम लोगोंकी भाखाको तो भैया ! लोग गँवारू कहते हैं।

भैया—"आइल-गइल", "आयन-गयन", "आयो गयो", "एल-गेल" बोलनेसे तो गँवारू भाखा हो गई, और "आये-गये" कहनेसे वह अच्छी भाखा होगी। और "कम् वेन्ट" कहनेसे वह बहुत अच्छी भाखा हो गई काहेसे वह साहेब लोगोंकी भाखा है। साहेब लोगोंका डंडा सिरपर था, उनका राज था, इस लिए अँगरेजी बोली बहुत अच्छी भाखा थी, वह देवताओंकी भाखासे भी बढ़कर

थी, जब गँवार किसान-मजूर अपना पंचायती राज कायम कर लें, तो क्या तब भी उनकी भाखा गँवारू रहेगी ? गँवारू कह देने से काम नहीं चलेगा ! जिस बखत इसी गँवारू भाखामें चिट्ठा पढ़ाई जायगी, उसीमें हजारों किताबें छपेंगी, उपन्यास, कविता, कहानी सब कुछ गँवारू भाखामें मिलने लगेगा। रोजाना, हफ्तावार, माहवारी, अखबार निकलने लगेंगे, तब इस भाखाको कोई गँवारू नहीं कहेगा।

दुखराम—क्या ऐसा होगा भैया ?

भैया—जो तुम लोग हमेसा गँवार बने रहना चाहोगे, तो नहीं होगा; जो तुम हमेसा गुलाम बने रहोगे, तो भी नहीं होगा; जो हिन्दुस्तानके आधे आदमियोंको बेपढ़ बनाये रखना है, तो नहीं होगा; नहीं तो इसमें अनहोनी कौन-सी बात है ? बल्कि अपनी बोली पकड़नेसे तो छ बरसका रस्ता एक दिनमें पूरा हो जाता है।

सोहनलाल—लेकिन अपनी-अपनी बोली पढ़ाई जाने लगी, तो दरभंगा, बनारस, मेरठ, और उज्जैनके आदमी एक जगह होनेपर कौन-सी भाखा बोलेंगे ?

भैया—आज भी गौहाटी, ढाका, कटक, पूना, सूरत, शिमलाके आदमी एकट्ठा होनेपर क्या बोलते हैं।

सोहनलाल—हिन्दी बोलते हैं, टूटी-फूटी हिन्दीसे काम चला लेते हैं।

भैया—लेकिन इकट्ठा होनेका ख्याल करके उनसे यह नहीं न कहा जाता कि तुम असामी, बँगला, उड़िया, मराठी, गुजराती, छोड़के सिरिफ हिन्दी पढ़ो, नहीं तो कभी जो इकट्ठे होओगे तो बात करनेमें मुसकिल पड़ेगा। जैसे उन लोगोंको अपनी भाखामें सब कुछ पढ़ाया जाता है, उसी तरह दरभङ्गावालोंको मैथिली, भागलपुरवालोंको भगलपुरिया (अंगिका), गयावालोंको मगही, छपरा-वालोंको छपरही (भोजपुरी) लखनऊवालोंको अवधी, बरेलीवालोंको बरेलवी (पंचाली), गढ़वालवालोंको गढ़वाली, मेरठवालोंको मेरठी (खड़ी बोली या कौरवी), रोहतकवालोंको हरियानवी (बाँगरी), जोधपुरवालोंको मारवाड़ी, मथुरावालोंको ब्रजभाखा, झाँसीवालोंको बुन्देलखंडी, उज्जैनवालोंको मालवी,

उदयपुरवालोंको मेवाड़ी; झालावाड़वालोंको बागडी, खँडुआवालोंको नीमाड़ी, छत्तीसगढ़वालोंको छत्तीसगढ़ी—सबको अपनी-अपनी भाखामें पढ़ाया जाय।

सोहनलाल—पढ़ानेमें तो सुभीता होगा भैया! हर आदमीका पाँच-पाँच साल बच जायेगा और डरके मारे जो बीच हीमें पढ़ाई छोड़ बैठते हैं, वह भी बात नहीं होगी, लेकिन हिन्दी भाखावालोंका एका टूट जायगा।

भैया—एका टूटनेकी बात तो इस बखत नहीं कह सकते सोहन भाई! इस बखत तो एका सिर्फ दिमागमें है। मध्य देस अलग है, उत्तर-प्रदेश और बिहार भी अलग है, हरियाना भी पंजाबमें है।

सोहनलाल—लेकिन हम तो चाहते हैं कि सबको मिलाकर हिन्दका एक बडा सूबा बना दिया जाय।

भैया—सूबा नहीं, पंचायती राज, गणराज और हमारा पचायती गण राज रहे, जो एक नहीं बहुतसे पंचायती-राजोंका संघ हो। जो लोग चाहेंगे तो दरभङ्गासे बीकानेर, और गगोत्तरीसे खँडुवा तकका एक बडा प्रजातन्त्र-संघ कायम कर लें, जिसके भीतर पचीसों प्रजातन्त्र रहें।

सोहनलाल—तो भैया! मल्ल प्रजातन्त्रकी बोली मल्लिका रहेगी और मालव प्रजातन्त्रकी मालवी, यौधेय (अंबाला कमिश्नरी) प्रजातन्त्रकी हरियानवी फिर जब वह हिन्द प्रजातन्त्र संघकी बड़ी पंचायत (पार्लामेंट) में बैठेंगे, तो किस भाखामें बोलेंगे?

भैया—हिन्दीमें बोलेंगे और किसमें बोलेंगे? इन्हींकी बात क्यों पूछ रहे हो, मदरास, कालीकट, बेजवाड़ा, पूना, सूरत, कटक, कलकत्ता और गोहाटीके मेम्बर भी जब सारे हिन्दुस्तानके प्रजातन्त्र-संघकी बड़ी पचायतमें इकट्ठा होंगे, तो क्या वह अंगरेजीमें लेक्चर देंगे? अँगरेज जोंकोंके जुवाके उतार फेंकनेके साथ ही अँगरेजी भाखाका राज हिन्दुस्तानमें खतम समझो तब हिन्दुस्तानमें एक दूसरे के साथ बोलने-चालने और सारे देसकी सरकारके काम-काजके लिये एक भाखा हिन्दी ही होगी।

सोहनलाल—तो भैया! हिन्दी भाखाको तो तुम उजाड़ना नहीं चाहते हो न?

भैया—हम उजाड़ेंगे कि उसे और मजबूतीसे बसावेंगे। सारे हिन्द प्रजातन्त्र-सघकी वह संघ भाखा होगी। मदरसोंमें जैसे अँगरेजीके साथ दूसरी भाखा पढ़ाई जाती है, वैसे ही बारह बरसकी उमरसे ३-४ साल तक लड़कोंको हर रोज एक घंटा हिन्दी पढ़नेका कायदा बना दें। उस बखत हिन्दीका जोर और बढ़ेगा कि घटेगा?

सोहनलाल—आज तो हिन्दी ही हिन्दी सब कुछ है, फिर तो ब्रिज, मालवी मैथिली, न अपने घरकी मालकिन बन जायेगी? फिर बेचारी हिन्दी को जब कोई बुलायेगा, तभी न चौखटके भीतर आयेगी।

भैया—आजकल यह कहना तो गलत है कि हिन्दी सब कुछ है, काहेसे कि सब कुछ तो अब अँगरेजी है। दूसरे हिन्दीके चौखटके भीतर बैठानेकी बात भी ठीक नहीं है। मेरठ कमिश्नरीके सवा-तीन जिले, (मेरठ, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, बुलदसहर ½) की भी तो जनम भाखा वही है। उसके बाद सारे हिन्दुस्तानमें घर-घर में उसकी आव-भगत रहेगी।

सोहनलाल—तो लोग अपनी-अपनी भाखाका प्रजातन्त्र बना लेंगे, फिर तो हिन्दुस्तान सौ टुकड़ोंमें बँट जायेगा।

भैया—सोवियतकी आबादी हम लोगोंसे आधी है, २० करोड़ ही है, लेकिन वहाँ तो १८२ भाखा बोली जाती है और सबका अपना छोटा-बड़ा पचायती-राज है। तुम चाहते हो कि पाचों उँगुलियोंको खुला नहीं रखा जाय; बल्कि मिलाके सी दिया जाय, लेकिन इससे हाथ मजबूत नहीं होगा सोहन भाई! सोवियत १८२ प्रजातन्त्रवाला होनेपर भी एक प्रजातन्त्र है। हिन्दुस्तान भी १०० प्रजातन्त्रोंवाला; एक बड़ा प्रजातन्त्र हो तो कौन-सी बुरी बात है?

सोहनलाल—अच्छा तो यही होता कि सारे हिन्दुस्तानका एक ही प्रजातन्त्र होता।

भैया—अच्छा तो होता, जो हिन्दुस्तानके लोग एक ही बोली बोलते होते, लेकिन वह तो अब हमारे हाथमें नहीं है। क्या सारे हिन्दुस्तानका तुम एक सूबा बनाना चाहते हो?

सौहनलाल—नहीं सूबा तो हम अलग-अलग चाहते हैं। बंगाल, उड़ीसा, सबको मिटाकर एक सूबा तो बनाया नहीं जा सकता।

भैया—अनेक सूबोंको तो तुम मानते ही हो, उसका मतलब ही है कि अनेक प्रजातन्त्र हिन्दुस्तानमें रहें और हिन्दुस्तान प्रजातन्त्रका संघ रहे। अब झगड़ा यही है न कि १४ प्रजातन्त्र रहें या सौ? मैं कहता हूँ कि उतने ही प्रजातन्त्र हों जितनी भाषा लोग बोलते हैं और अपने-अपने प्रजातन्त्रमें पढ़ाई-लिखाई, कचहरी-पंचायतका सब कारबार अपनी भाषामें हो लेकिन सौ प्रजातन्त्र होनेका मतलब यह तो नहीं है कि उनका एक दूसरेसे कोई वास्ता नहीं और कछुएकी तरह मुंडी समेटकर अपनी खोपड़ीमें घुस जाएँ। हमारे महा-प्रजातन्त्रके ये सभी प्रजातन्त्र हाथ-पैर, नाक-कानकी तरह अंग हैं। सब एक-दूसरेकी मदद करें। जब रेलकी लाइनें आजसे भी ज्यादा बढ़ जायेंगी, पक्की सड़कें गाँव-गाँवमें पहुँच जायँगी। हर प्रजातन्त्रमें हवाई जहाजके अड्डे होंगे। लोगोंकी जेबमें पैसा रहेगा, सालमें महीने डेढ़-महीनेकी सबको छुट्टी मिलेगी। तो बताओ लोग कूएँ के मेंढक बनकर बैठे रहेंगे या अपने महादेसमें घूमने-फिरने जायेंगे?

दुखराम—घूमने फिरने जायँगे भैया! देस परदेस देखनेका किसका मन नहीं कहता, नातेदारों-रिस्तेदारोंसे मिलनेकी किसकी तबियत नहीं होती।

भैया—जनम-भाखाको कबूल करनेसे हिन्दीको नुकसान होगा यह ख्याल गलत है सोहन भाई! उस बखत बनारसवाले कानपुरवालोंसे बहुत नगीच रहेंगे टेलीफून भी नगीच कर देगा, हवाई जहाज भी और जेबका पैसा भी। हिन्दी सीखना लोग बहुत पसन्द करेंगे, क्योंकि सारे देसकी साझेकी भाखा वही है, फिर हिन्दीमें पोथियाँ सबसे अधिक निकलेंगी। आज कल देखते हैं न हिन्दी के सिनेमा फिल्म जितने निकलते हैं, उतने बँगला, मराठी, तामिल, तेलगू सारी भाखाओंके मिलके भी नहीं निकलते। हिन्दी भाखाकी किताबोंकी भी वही हालत होगी; उसके पढ़नेवाले देश भरमें मिलेंगे। मुझे उमेद है, कि जैसे चौपटाध्याय फिल्म हिन्दीमें निकल रहे हैं, वह किताबें वैसी नहीं होंगी।

सोहनलाल—चौपटाध्याय फिल्म क्यों कह रहे हो भैया? जो चौपटाध्याय

होते तो इतने लोग देखने क्यों जाते और फिल्मवालोंको लाखों रुपयेका नफा कैसे मिलता ?

भैया—देखनेवाले तो इसलिए जाते हैं, कि दूसरा अच्छा फिल्म है कहाँ ? दूसरे नाच, गाना और सुन्दर मुँहके देखनेकी आदत लोगोंकी पहिले हीसे है, बस वह समझते हैं, कि चलो दो आनामें तवायफका नाच ही देख आएँ, लेकिन सिरिफ सुन्दर मुँह और सुरीले कंठ तकमें ही फिल्मको खतम कर देना अच्छी बात नहीं है, सोहन भाई। उसमें बात-चीत, हाव-भाव और तसवीरोंसे दुनियाका असली रूप दिखलाना होता है, साथ ही साथ लोगोंको रस्ता भी दिखलाना होता है। लेकिन रस्ता दिखलानेकी बात छोड़ दो, काहेसे कि जोकोंके राजमें वह अनहोनी बात है। लेकिन हिन्दी फिल्मोंमें सब चीजोंमें बेपरवाही देखी जाती है। फिल्म बनानेवाले तो जानते हैं कि उनके पास रुपया चला ही आयेगा, फिर क्यों परवाह करें ?

सोहनलाल—हिन्दी फिल्मोंमें आपको क्या दोस मालूम होता है भैया ?

भैया—पहिले गुन बताता हूँ तब दोस बताऊँगा। गुन तो यह है कि हमारे फिल्म के खिलाड़ी अभिनेता और खिलाड़िनें (अभिनेत्रियाँ) अपना करतब दिखलानेमें दुनियाके किसी भी खेलाड़ी-खेलाड़िनीसे कम नहीं हैं। और अच्छे फिल्मके लिए यह बहुत अच्छी चीज है। वह अपनी बात-चीत, हाव-भाव, गीत-नाच सबमें अच्छे हैं—मैं सभी खेलाड़ी-खेलाड़िनोंके बारेमें नहीं कहता, लेकिन अच्छे खेलाड़ी-खेलाड़िनोंमें यह सब गुन हैं। और इन्हीं गुनों का परताप है, कि मदरास, कालीकट और बेजवाड़ामें भी लोग अपनी भाखाके फिल्मोंको छोड़कर हिन्दी फिल्मोंको देखने आते हैं, चाहे बेचारे फिल्मकी भाखाको नहीं समझ पाये। मैं समझता हूँ कि ये हमारे खेलाड़ी-खेलाड़िनोंके गुनका ही परताप है। पैसा बनानेवाले फिल्म-मालिकोंकी चले तो सायद उसमें भी कुछ खराबी कर दें।

सोहनलाल—और दोस क्या है भैया !

भैया—भाखा तीन कौड़ीकी होती है, न उसमें लचक, न कहावत और न गहराई होती है। यह क्यों होता है ? बहुतसे फिल्म-मालिक भाखा जानते

ही नहीं, लेकिन तो भी अपने को महाविद्वान् समझते हैं। एक तो उनके भाखा लिखनेवाले भी बहुतसे उन्हींकी तरह हैं, और जो कोई अच्छा भी लिखता हो, तो अच्छेको बुरा और बुरेको अच्छा कहनेका अख्तियार फिल्म तैयार करने वाले अपने हाथमें रखते हैं। समझ लो पूरी दमद-सोधन हो जाती है।

सोहनलाल—दमद-सोधन क्या है भैया ?

भैया—किसी पंडितने एक मुरुखसे अपनी लड़की ब्याह दी। दामाद एक दिन ससुरार आया। छापाखानेसे पहिलेकी बात है, उस वक्त किताबोंको उतारने-वाले मामूली पढ़े-लिखे लेखक हुआ करते थे। वह मजूरी लेकर किताब उतार दिया करते थे। पडित लोग किताब लेके फिर पढ़ते और जो अशुद्ध होता उस-पर पीला हड़ताल फेरते और जिसको ज्यादा ध्यानमें रखना होता, उसे गेरूसे लाल कर देते। पंडितके दामादने पोथी, हड़ताल और गेरूको देखा। उन्होंने पोथीको हाथमें ले लिया। पडिताइनको अपने दामाद पर बहुत गरब था, उन्होंने समझा कि दामाद भी बड़ा पंडित है और उससे कहा—'पंडित गेरू और हड़तालसे किताबको सोध रहे हैं। तुम भी तो सोधते होगे बाबू !' दामाद कब पीछे रहनेवाले थे। उन्होंने कहा—"हाँ अइया ! मैं अच्छी तरह जानता हूँ।' फिर जहाँ मन आया हड़ताल लगाया, जहाँ मन आया गेरू, पोथीकी दमद-सोधन हो गई।

सोहनलाल—तो इसमें फिल्म पैदा करनेवालोंका ज्यादा दोस है या भाषा लिखनेवालोंका।

भैया—फिल्म पैदा करनेवालोंका बहुत बड़ा दोस है, उनमें खुद लियाकत नहीं है और न लायक आदमियोंको चुन सकते हैं। भाखा लिखनेवालोंमें जो थोड़ेसे अच्छे भी हैं, उनमें भी एक बड़ा दोस है। वह हिन्दी या उर्दूकी किताबी-भाखा लिखते हैं। किताबसे पढ़के सीखनेवालेकी भाखामें जीवट नहीं होता और सहरोंमें जो थोड़े-बहुत बाबू लोग अपने घरोंमें हिन्दी भाखा बोलते हैं, वह भी किताबी-भाखा जैसी होती है।

सोहनलाल—तो जीवटवाली भाखा कौन बोलते हैं भैया ?

भैया—मेरठ, मुजफ्फरनगर, सहारनपुरके जिलोंके गँवार।

सोहनलाल—तब तो फिल्मकी भाखा लिखनेवालोंको भाखा सीखनेके लिए इन गँवारोंके पास जाना पड़ेगा ?

भैया—उनके चरनमें जाकर बैठना पड़ेगा। हिन्दी भाखाको किताबवालोंने नहीं पैदा किया बल्कि इन्हीं गँवारोंने पैदा किया। हिन्दी पढ़नेवालोंने सैकड़ों बरस पहले उन गँवारोंसे भाखा तो ले ली, लेकिन भाखामें जीवट लानेके मुहाविरे, कहावतें, सबदोंका तोड़ना-मरोड़ना और उन्हें मनमाने तौरसे रखना इत्तादि बातें नहीं सीखीं; इसलिए हिन्दी भाखामें वह चमतकार नहीं आ सका। किताब पढ़नेमें तो किसी तरह आदमी बरदास भी कर लेगा लेकिन नाटककी बातचीतमें इससे काम नहीं चल सकता।

सोहनलाल—तो भैया ! तुमने कोई फिल्म ऐसा नहीं पाया, जिसमें कुछ जीवटवाली भाखा दिखाई दे।

भैया—मैंने सिर्फ एक फिल्म ऐसा देखा है जिसकी भाखा मुझे पसंद आई, वह था—"जमीन।" मैं समझता हूँ जब तक फिल्म पैदा करनेवाले अपनेको सब कुछ जाननेवाला मानना नहीं छोड़ेंगे और जब तक भाखा लिखनेवाले मेरठके उन गँवारोंके चरनोंमें नहीं बैठेंगे, तब तक यह दोस नहीं जायेगा।

सोहनलाल—और दूसरे दोस क्या हैं भैया ?

भैया—दूसरे दोस फिल्म पैदा करनेवालोंका है चाहे उन्हें उनका अंधापन कहलो, चाहे "कम दाम ज्यादा नफा" का ख्याल समझ लो, चाहे फिल्म मालिकोंका अपने घरके पास ही फिल्म बनानेका हठ समझ लो। हिन्दीके फिल्म बम्बई या कलकत्तामें ही तैयार किये जाते हैं। वहांके आसपासके गाँवों, पहाड़ों नदियोंका फोटो खींचा जाता है। वहाँ न हिन्दी बोलने वाले गाँव हैं, न हिन्दीवालोंके रीति-रवाज कपड़े लत्ते। इसका फल यह होता है कि सब चीजें बनावटी दीख पड़ती हैं। बहुत-सी चीजोंको तो वह आने नहीं देते। "जमीन" की तसवीरोंमें भी यह दोस मौजूद है। यह दोस बँगला, मरहठी या तामिल फिल्मोंमें नहीं पाया जाता, काहेसे कि उनमें उन्हीं गावों, नदियों, पहाड़ों और लोगोंकी तसवीरें ली जाती हैं, जो उस भाखाको बोलते हैं। हिन्दी-फिल्मोंका यह दोस

तब तक दूर नहीं होगा, जब तक देहरादून, कालसी जैसी जगहोमें फिल्मवाले अपने डडा-कंडा उठाके नहीं आ जाते।

सोहनलाल—और कौन दोस है भैया ?

भैया—हिन्दी फिल्मोकी सारी तसवीरें दो एक मीलके छोटेसे घेरेमें घूमती रहती हैं, वह विसाल नहीं होतीं। नदियों, पहाड़ों, खेतों, गाँवोंका जो विसाल रूप हमें मिलना चाहिए उसे नहीं पाते। क्या जाने यह पैसा बचानेके ख्यालसे होता होगा।

सोहनलाल—और कोई दोस है भैया ?

भैया—हस्तिनापुरके पास गङ्गाका विसाल कछार है, वहाँ सैकड़ों गाएँ-भैंसें चरती हैं, चरवाहे मस्त होकर गाना गाते हैं, गङ्गामें मलाह नाव खेता है, और अपनी तानमें सारी मेहनत भूल जाता है। धोबी, कुम्हार सबके अपने-अपने गीत, अपने-अपने बाजे, चित्र-विचित्र नाच हैं। सहरो में भी औरतोंके ब्याह और दूसरे वक्तके अपने खास-खास नाच और नाटक हैं। इस तरहकी सैकड़ों चीजें हैं, जिनका बम्बई और कलकत्ताके फिल्मोंमें कहीं पता नहीं है।

सोहनलाल—और कोई दोस है भैया ?

भैया—मैं अब एक ही दोस और कहूँगा। हिन्दी भाखा हिमालयकी गोदमें बोली जाती है। दुनियाके फिल्मवाले हिमालयके सुन्दर पहाड़ों, नदियों, झरनो, देवदारके वनों और बरफीली चोटियोंको पाके निहाल हो जाते; लेकिन हिन्दी फिल्मवालोके लिए वह कोई चीज नहीं। जापानके राजाकी राजधानी तोकियो है, लेकिन फिल्मोंकी राजधानी क्योतो है, काहेसे कि क्योतोको थोड़ा-सा हिमालय-का रूप मिला है। लेकिन हमारे आजके फिल्मवालोंको इसका कभी ख्याल आयेगा, इसमें सक है।

सोहनलाल—तो भैया ! जो फिल्म बनानेवाले मेरठ कमिसनरीके हिमालय-वाले टुकड़ेमें आ जायँ, तो उनके बहुतसे दोस हट जायँगे ?

भैया—यह मैं मानता हूँ, लेकिन यह भी समझता हूँ, कि सेठ अपना घर छोड़ तपोवनमें थोड़े जाना चाहेंगे, वह पचास तरहका बहाना कर सकते हैं। और सबसे बड़ी बात यह है, कि नफा तो उन्हें खूब हो ही रहा है और थोड़े

ही खर्चमें। लेकिन हम फिल्मकी बात करते-करते बहुत दूर चले गये सोहन भाई! मैं कह रहा था हिन्दी भाखाके बारेमें।

सोहनलाल—हाँ, तो तुम समझते हो, कि अपनी-अपनी भाखाको पढ़ाईकी भाखा मान लेनेपर हिन्दीको नुकसान नहीं होगा? लेकिन भैया! दुनियाको हमें और एक दूसरेके नगीच लाना है। मरकस बाबा तो सारी मानुख जातिको एक बिरादरी देखना चाहते थे, फिर किसी संजोगसे जो हिन्दीके नाते हिन्दुस्तान-के आधे लोग एक भाखासे बँध गये हैं, उनको फिर तोड़-फोड़के अलग करना, यह तो पैर पकड़के पीछे खींचना है।

भैया—पैर पकड़कर पीछे खींचना नहीं है सोहन भाई? यह हाथ पकड़कर आगे बढ़ाना है। जनम-भाखासे पढ़ाई करनेपर दस बरसके भीतर ही हमारे यहाँ कोई अपढ़ नहीं रह जायगा। और एक दूसरी जगह जाने, आपसमें मिलनेसे, हिन्दी भाखा सभी लोग थोड़ी-बहुत बोल लेंगे। और समझनेमें तो किसीको मुसकिल नहीं होगा, काहेसे कि इन सब भाखाओंमें बहुतसे सबद एक हीसे हैं। कबिता, कहानी, उपन्यासका ढंग भी एक-सा ही रहेगा। हिन्दी पोथियोंकी उतनी ही ज्यादा माँग होगी, जितनी ही अधिक इन भाखाओंके पढ़ने-लिखनेवाले बढ़ेंगे। कमी इतनी होगी, कि आज जो हमारे कितने ही भाई यह समझते हैं, कि अवधी, ब्रज, मालवी, बनारसी, मैथिली इत्तादि भाखायें कुछ दिनोंमें मर जाएँगी, उनको जरूर निरास होना पड़ेगा। निरास वैसे भी होना पड़ेगा, क्योंकि जो जनम-भाखाओंको किताबकी भाखा न भी बनाया जाय, तो भी सौ-पचास सालोंमें उन भाखाओंके मरते देखनेकी खुसी हमारे भाइयोंको नहीं मिलेगी। अभी उन्हें मरना भी नहीं चाहिये, क्योंकि उन्होने अपने भीतर अपनी जातिकी भाखा, समाज, बिचार-बिकास ओगैरहके इतिहासकी बहुत-सी अनमोल सामिगरी रखी है। मैं ज्ञानता हूँ जो दुनियासे जोकें उठ जायँगी, तो मानुख जाति जरूर एक होगी और फिर सबकी एक साझी भाखा भी होगी। हो सकता है, कि एक साझी और एक अपनी जनम-भाखा दो भाखाओंका रहना मुसकिल हो जाय। लेकिन वह अभी सैकड़ों बरसोंकी बात है। उस बखत तक हरेक भाखाके भीतर

जितने रतन छिपे हुए हैं, सब जमा करके अच्छी तरह रख लिए गये रहेंगे। इसलिए किसी भाखाके नास होनेसे उतना नुकसान नहीं होगा।

सोहनलाल—लेकिन भैया! यह बोलियाँ अभी ऐसी नहीं हैं कि इनमें साइंस-विग्यानपर किताबें लिखी जायँ। हिन्दीने बडी मुसकिलसे यह कर पाया है।

भैया—जो मान लें कि बनारसी बोलीमें साइन्सकी किताब नहीं लिखी जा सकती, तो उतने ही दिनों तक हिन्दीमें किताबें पढ़ेंगे, जब तक कि बोली नाबालिगसे बालिग न हो जायगी। हिन्दी जैसी किसी भाखाकी किताब पढ़ना और उसमें लिखना-बोलना दोनोंमें बहुत फरक है—समझ लेना बहुत सहज है। अपनी बोलीके पढ़ानेका मतलब यह नहीं है, कि हिन्दीको लोग छुयेंगे नहीं। दूसरी बात यह है कि बनारसी मालवी किसी भी भाखामें साइन्स, इन्जीनिरिङ्गकी किताबोंके लिखनेमें उतनी ही दिक्कत होगी, जितनी हिन्दीमें। आखिर हिन्दीने भी साइन्सके सबदोंको संसकीरतसे लिया है, बँगला, गुजराती, मराठी भी संसकीरतसे ही सबदोंको लेती हैं, फिर बनारसी, मैथिली, ब्रिज, मालवीने क्या कसूर किया है?

सोहनलाल—हिन्दी-उर्दूके बारेमें तुम्हारी क्या राय है भैया?

भैया—मेरी राय क्या पूछ रहे हो, मैंने तो पहिले ही कह दिया है, कि जिसकी जो जनम-भाखा हो उसको उसी भाखामें पढ़ाना चाहिए। बनारसमें बहुतसे बंगाली भी रहते हैं, उन्हें बँगलामें पढ़ाना होगा। मराठे भी हैं, उनको मराठीमें पढ़ाना होगा। हाँ, कोई दो भाखा बोलनेवाला हो तो वह चाहे जिस पाठसालामें जाय। इसी तरह बनारसमें जिस लड़केकी जनम-भाखा हिन्दी है, उसके लिए हिन्दीकी पाठसाला कायम करनी होगी, जिसकी जनम-भाखा उर्दू है उसके लिए उर्दूका मदरसा कायम करना होगा।

सोहनलाल—तो भैया, तुम हिन्दी-उर्दूको मिलाके एक भाखा नहीं करना चाहते।

भैया—मिलाना हमारे बसकी बात नहीं है, दस-पाँच आदमी बैठकर भाखा नहीं गढ़ा करते। हिन्दी-उर्दूके बननेमें सैकड़ो बरस न जाने कितनी पीढ़ियोंने काम किया है। मैं मानता हूँ कि हिन्दी और उर्दू भाषा पूलमें एक

ही भाखा है। 'का, में, पर, से, इस, उस, जिस, तिस, ना, ता, आ, गा" दोनों हीमें एकसे हैं, खाली झगड़ा है उधार लिए सबदोंका। हिन्दीने संसकीरतसे सबदोंको उधार लिया है और उर्दूने अरबी और कुछ-कुछ पारसीसे भी; लेकिन दोनोंने इतना अधिक उधार लिया है, कि अकबालकी कविताको समझनेवाला सुमित्रानन्दन पन्तकी कविताको बिलकुल नहीं समझ सकता और सुमित्रानन्दन पन्तकी कविता जाननेवाला अकबालको बिलकुल नहीं समझ सकता। इसलिए मूलमें दोनों एक हैं, कहनेसे काम नहीं चलेगा। अकबाल और पन्त दोनोंके समझनेके लिए दोनों भाखाओंको अच्छी तरह पढ़ना होगा।

सोहनलाल—तो हिन्दू-मुसल्मानोंकी भाखाओंके मिलनेका कोई रस्ता है?

भैया—चोटियोंपर तो नहीं मालूम होता, लेकिन जडमें उसका झगड़ा ही नहीं है।

सोहनलाल—जड़ क्या है भैया?

भैया—जड़ यही है कि, जिसे जनम-भाखा कहते हैं, अवधी बोलनेवाले गाँवमें चले जाइये, वहाँ चाहे ब्रामन देवता हो, चाहे मोमिन जोलाहा, दोनों एक ही बोली बोलते हैं, बनारस, छपरा, गुड़गाँवा, थानाभवनके पास किसी गाँवमें चले जाइये, किसानों-मजूरोंकी भाखा एक है, चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान।

दुखराम—वही जोकांसे जिनका बेसी रिसता-नाता नहीं है।

भैया—देखा न सोहन भाई! जड़में अपनी एक भाखा तैयार है, हिन्दू मुसलमान दोनों कमेरे उसी भाखाको बोलते हैं और फिर उनका न संसकीरतके साथ पच्छपात है न अरबी-फारसीके साथ। यही दुक्खू भाईने जो अभी कहा, "बेसी रिसता-नाता" इसमें बेसी और रिसता पारसी भाखासे आया है और नाता अरबी भाखासे। रिसता-नाता कहनेसे बिलकुल निपढ़, गँवार बुढ़िया भी समझ लेगी, लेकिन "सम्बन्ध" कहनेसे उतना नहीं समझ पायेगी। हमने भी अपने इतने दिनोंके सत्संगमें पाँच-छ सौ अरबी-फारसी सबदोंको लिया है, और हिन्दीमें उनकी जगह अब सिरिफ ससकीरतके सबद ही लिखे जाते हैं। मैं समझता हूँ कि कोई आदमी समरकन्द बुखारासे सात पीढ़ी पहिले आया हो,

लेकिन अब उसकी भेख-भाखा सब हिन्दुस्तानकी है, तो वह हिन्दुस्तानी है। वह अपने पुरखाके सहर समरकन्द-बुखारामें जायगा, तो वहाँ भी उसे लोग हिन्दुस्तानी कहेंगे—आजकल समरकन्द, बुखारा, उजबेकिस्तान, सोवियत प्रजा-तन्त्रके अच्छे सहर हैं। उसी तरह जिन अरबी, पारसी सबदोंको निपढ़ गँवारोंने अपना लिया है और उसको वह अपने ढगसे तोड़-मरोड़के बोलते हैं, वे सबद अब बिदेसी नहीं, सुदेसी हैं। जिन संसकीरत सबदोंको हमारे "गँवार" छोड़ चुके हैं, उनको फिरसे लादना भी ठीक नहीं।

सोहनलाल—लेकिन भैया, इन गँवारोंनेतो हजार-बारह सौ ससकीरतके सबदो को निकालकर अरबीके सबद लिए हैं। 'हमेसा' 'दिक्कत', 'मुसकिल', 'मवस्सर', 'अरज', 'गरज', 'लेकिन', 'बेसी', 'अमहक' (अहमक), 'इफरात', 'जमीन', 'हवा', 'तुफान', 'सहर', 'नौबत', 'जुलुम', 'परेसानी', 'मेहरबानगी', 'बगैरह' सबदोंको उन्होंने लेकर संसकीरतके सबदोंको छोड़ दिया है। जो संसकीरतके सबद रखे हैं, उनके बोलनेमें भी लाठीसे पीटके ठीक-ठाक कर डालते हैं। और आप इसी भाखाको अपनानेको कहते हैं?

भैया—दोनों बातोंको एकमें न मिलाओ सोहन भाई! जहाँ तक जनम-भाखाकी बात है, उसके लिए न रामसरूप पंडितकी बात मानी जायगी न कुतुबदीन मोलबीकी; उसके लिए तो धनिया भौजी—गाँवकी बेपढ़ अहिरिनको ही परमान माना जायगा। दोनों सबदोंको उसके सामने रखा जायगा, जो अरबी-वाले सबद हो वह समझेगी तो उसे ले लिया जायगा, संसकीरतवालेको समझेगी तो उसको। बोलनेमें कठिन सबदोंकी धनिया भौजी कपाल-किरिया करे हीगी, और उसकी कपाल-किरियाको भी मानना पड़ेगा। हिन्दी-उर्दूको मिलानेका काम भी यही जनम-भाखायें करेंगी, क्योंकि जनम-भाखाओंमें हिन्दू-मुसल्मानका झगड़ा नहीं है। जड़वालोंका रस्ता साफ है, चोटीवालोंका झगड़ा है। उनमें जो अपनी जनम-भाखा उरदू मानता है, वह उरदूमें लिखे पढ़ेगा जो हिन्दी मानता है वह हिन्दीमें। मेरठ कमिसनरीके साढ़े तीन जिलेमें भी कौन भाखा माननी चाहिए, इसका फैसला वहाँ कोई जाटकी धनिया भाभीके हाथमें होगा।

सोहनलाल—और जो हिन्दुस्तानके संघकी भाखा हिन्दी होगी, उसमें हिन्दी-उरदूका झगड़ा कैसे मिटेगा ?

भैया—पहिले तो हिन्दीके अपने साढ़े-तीन जनम-जिलोंकी भाखाके मुताबिक उसको मानना पड़ेगा। जिसके कारन बहुतसे संसकीरतके सबद छूट जायँगे, और बहुतसे अरबी-फारसीके भी।

अध्याय १६

सुतन्त भारत

सन्तोखी—दुक्खू भैया ! सुना है, रजबली भैया आये हैं।

दुखराम—सुना क्या है, हम रजबली भैया के ही पास जा रहे हैं। तीन बरिसपर लौटे हैं। कितना दुनिया-जहान देखकर आये हैं। तुम भी आओ, चले, कुछ नई बात सुने।

सन्तोखी—हाँ, दुक्खू भैया ! चलो चलें। १० बरिसमें दुनिया बहुत बदल गई। १५ अगस्त (१६४७) से तो अब अपना देस गुलामीसे छूट गया है।

दोनों दोस्त चले। रजबली महुआके पेड़के नीचे खाटपर बैठे थे। दोनों पुराने दोस्तोंको देखते ही उठकर दौड़े और छातीसे लगकर मिले। फिर तीनों जने खटियापर जा बैठे।

—कहो दुक्खू भाई ! कहो सन्तोखी भाई ! कैसे चल रहा है ? बाल-बच्चे सब नीके तो हैं ?

दुखराम—बस, किसी तरहसे जिन्दगी बीत रही है। अनाजका दाम बढ़ गया है और कपड़े-लत्तेका दाम तो और भी बढ़ गया है। नून-तेलका तो मानो अकाल पड़ गया है।

भैया—अनाजका दाम बढ़नेसे तो किसानका फायदा है।

दुखराम—उसी किसानको फायदा है, जिसको खाने भरसे जियादा अनाज होता है। जिसकी चैतकी फसल जेठतक भी नहीं पहुँचती, उसके तो जिव पर संकट है।

भैया—हाँ, ठीक कहा भैया ! और हमारे किसानोंमें सौ में पाँच ही दस ऐसे घर होते हैं, जिनके पास अपने खानेसे अधिक अनाज होता है। मुदा अब देस सुतन्तर है। अब हमें यह सब दुख दूर करना होगा।

सन्तोखी—हाँ भैया ! जब तुम कहते थे कि लड़ाईके बाद हिन्दुस्तान सुतन्तर हो जायेगा, तो मुझको तो बिसवास नहीं होता था, कि अँगरेज हमारे देसको छोड़कर चले जायेंगे।

दुखराम—तो, सन्तोखी भाई, तुम समझ रहे हो कि अँगरेज राजी-खुसीसे भारत छोड़के चले गये ?

सन्तोखी—कुछ लोग तो ऐसा ही कहते हैं। लेकिन मुझे तो इसपर बिसवास नहीं पड़ता। भैयासे पूछते हैं, यही बतावे। मुझे तो सन्देह होता है, कि कॉत देख-देखकर अँगरेज कलकत्ता-बम्बई या दूसरी जगह जाकर बैठ गये हैं। मौका मिलते ही फिर चढ़ दौड़ेंगे।

भैया—राजी खुसीसे जानेकी बात गलत है और कॉत बैठानेकी भी बात नही है। लड़ाईके बाद ऐसी हालत हुई, कि अँगरेजोंको भागना छोड कोई दूसरा रास्ता न दिखाई पड़ा।

दुखराम—लेकिन उनके पास पल्टन-पुलिस थी। हाकिम-हुकुम सब उनके हाथमें थे। फिर काहे बना-बनाया घर छोड़कर भाग गये ?

भैया—नदीके किनारे सेठ छदामीमलका बहुत पक्का महल था। गगा काटने लगीं और भीतर ही भीतर नेवके नीचेकी मट्टी बहा ले गईं। सेठ छदामीमल रात ही रात बाल-बच्चे सहित भाग गये।

दुखराम—हाँ भैया, हम एक बेर अजोधाजी गये रहे। उहाँ देखा, मौनी बाबाकी रेतीमें एक गोल चौड़ा जैसी दुई पोरसाकी चीज खड़ी है। हमने पूछा—बाबा, यह क्या है ? तो हमारे कुटियाके बाबा बालकिसुनदासने कहा—"नहीं जानते ? ई पक्का इनारा (कुआँ) रहा। सरजुग महरानी कुल माँटी बहा ले गईं। अब ई ढाँचा बेकार खडा है।" साँच ही बेकार था भैया ! कौन सीढ़ी लगाके पानी भरने जायगा ? और, थोड़ा टेढ़ा भी हो गया था।

भैया—उहां तो टेढ़ा-मेढ़ा ढाँचा खड़ा भी रहा, लेकिन अँगरेजी राज को

उसकी भी उमेद नहीं। यह लड़ाई जो न करे। लड़ाईमें अँगरेज तबाह-तबाह हो गये।

दुखराम—इससे भी अधिक तबाह हुए भैया ?

भैया—हम लोग तो पहले हीसे इनारकी पेदी पर पड़े हुए थे। अँगरेज लोग पंचमहलाके ऊपर बैठे थे। दुनिया भरका धन-माल खींच-खींचकर उनका पंचमहला बना था। साढ़-पाच सालकी लडाईमें पीढ़ियोंका बटोरा धन खरच हो गया और ऊपरसे इतना करजका बोझ हो गया कि सम्हारे मानका नहीं।

दुखराम—क्या कहा भैया, करजका बोझ ! अँगरेज तो दुनिया भरको करज देते रहे।

भैया—देते रहे तब देते रहे, अब करजके बोझसे गला दब गया, साम तर-ऊपर होने लगी। छोटी-बड़ी जितनी रेलवे लाईन तुम देख रहे हो, सबको बेचकर खा डाला। हिन्दुस्तानपर सौ सालसे जो झूठ-फुर करजा बनाकर रक्खे थे और जिसपर हर साल करोडो सूद लेते थे, वह भी सूद-मूर सहित बेबाक हो गया।

दुखराम—तो अब हमारा देस करजसे अकंटक है भैया ?

भैया—करजसे अकटक ही नहीं अब तो उलटा हिन्दुस्तानका दसो अरब रुपया अँगरेजोपर चढ़ गया है।

सन्तोखी—कहीं करजवा मार तो नहीं लेंगे भैया ?

भैया—हाँ, चाल तो चल रहें हैं। कभी लाचारी दिखलाते है...।

सन्तोखी—टाट तो नहीं उलट गया भैया ?

भैया—टाट उलटना ही समझो, जब आदमी अपना देना नहीं चुका सकता, तो उसे दिवालिया छोड़ और क्या कह सकते है ? फिर, खाली हिन्दुस्तानका ही करज नहीं है। मिसिर, अर्जन्तीन और कहाँ-कहाँसे करज लिये हुए हैं। सबसे बेसी करज तो अमिरिकाका है। करज ही नहीं, रोजका रोटी-माखन भी अमिरिकाके ही भरोसे चल रहा है !

दुखराम—इतने करजपर भी रोटी-माखन !

भैया—बिलायतमें रोटी-माखनका बड़ी मतलब है, जो हमारे यहाँ साग-

रोटीका। अच्छा, यह तो मालूम हुआ, कि करजके मारे अँगरेज लोग खोखले हो गये हैं और उनका गला पूरी तौरसे अमिरिकाके हाथ में है।

दुखराम—मालूम हो गया। अमिरिका जो कहेगा, वही अँगरेजोंको मानना पड़ेगा।

भैया—देखा न, हिन्दुस्तानके बाजारोंमें अमिरिकाका माल भरा पड़ा है।

दुखराम—तब तो अमिरिकाकी मर्जीके खिलाफ अँगरेज नहीं जा सकते। किरिप (क्रिप्स) के आने के बखत भी अमिरिका ने बहुत जोर लगाया था ?

भैया—करज और अमिरिका ही कारन नहीं है। अँगरेज यह भी जानते थे, कि अपना राज कायम करनेके लिये हिन्दुस्तानसे फिर लड़ना होगा। अबके सिर्फ निहत्थी जनता हीसे मुकाबिला नहीं होगा। हिन्दुस्तानके २५ लाख पढ़े-लीखे पल्टनिया अफसर और सिपाही अब अपनी लड़ाई लडेंगे।

सन्तोखी—हाँ, भैया ! इसमें कौन सका ? उनमेंसे बेसी तो पल्टनसे फरक भी हो गये हैं। देसके गुहारमें ऊ कैसे पीछे रहते ?

भैया—जरमनी और जापानके फसिहोकी हारमें सबसे बड़ा हाथ रूसकी लाल पलटनका रहा।

दुखराम—हाँ भैया ! और यह भी देखा कि जितना मजिल दूसरी पलटन एक महीनेमें मारती उतना लाल पलटन एक दिनमें। मुदा सुनते हैं कि हिटलर अभी जिन्दा है।

भैया—जिन्दा भी होता, तो भी मरेसे अच्छा न होता। मुदा वह मर गया है। जब लाल पलटन उसके भुँइधराके पास पहुँची, तो उसने अपने हाथसे गोली मार ली।

सन्तोखी—भँइधरामें लुकाया ! बड़ा कायर था !

भैया—कायर तो था ही, नहीं तो सामने आकर लड़ना और अपने हाथसे नहीं, सत्रुकी गोलीसे मरना चाहिये था।

दुखराम—कहाँ भँइधरा बनाये था भैया ?

भैया—बरलिनमें, अपनी राजधानीमें; और कहाँ ? माँटीका भुँईधरा नहीं था। इतना गहरा और मजबूत भुँईधरा बनाये था, कि बड़के बमगोलोंका भी

असर नहीं हो सकता था। लेकिन जब लाल पलटन दुआरपर पहुँच गई, तो क्या करता ?

दुखराम –अँगरेज और अमिरिकाकी पलटन वहाँ नहीं पहुँची थी ?

भैया—वह लोग चींटीकी चालसे बढ़ रहे थे। एक चौथाई भी हिटलर की पलटन उनसे नहीं लड रही थी, मुदा तो भी वह परेसान थे।

सन्तोखी—रूसका तो बहुत नोकसान हुआ होगा भैया ?

भैया—नोकसान ? घर-दुआर, कल-कारखाना, गाँव-नगरका जो नुकसान हुआ, उसका लेखा कौन लगा सकता है ? सबसे अनमोल चीज है आदमीका जीव। हिटलरके गुंडोने सत्तर लाख आदमियोंको मार डाला।

दुखराम—सत्तर लाख सिपाही ?

भैया—सिपाही बीस-पचीस लाखसे बेसी नहीं, बाकी तो गाँव-सहरमें रहने-वाले मरद-मेहर, बूढ़ा-बच्चा जो कोई सामने आया, सबके खूनसे हाथ रँगा।

सन्तोखी –अततताई !

भैया—अनतताई, इसमें कोई सका नहीं। रूसके कमेरोंको भारी बलिदान देना पडा।

दुखराम—रूसवाले कमजोर तो नहीं पड़ गये !

भैया—कमजोर नहीं पड़े। लेकिन इसकी बात फिर कहेंगे। अभी हम लोग क्या बात कर रहे थे !

दुखराम—यही कि अँगरेज काहे हिन्दुस्तान छोड़ गये ? हमको तो मालूम हो गया भैया कि अंगरेज राजी-खुसीसे नहीं भागे।

भैया—हाँ, भागना छोड़ और कोई रस्ता नहीं था। करजके बोझसे लदे, दाने-दानेके मुहताज, अमिरिकाका कुरुख, हिन्दुस्तानका हर तरहसे सुतंतर होनेका संकलप रूसका जनताके राज बनानेपर जोर—सबने मिलकर पासा पलट दिया। मुदा जाते-जाते भी अंगरेज जितना भी अपकार हो सका, करके गये।

सन्तोखी—अपकार तो जरूर कर गये भैया !

भैया –बहुत अपकार ! हिन्दुस्तानका दो टुकड़ा कर दिया।

दुखराम—लेकिन दो टुकड़ा तब हुआ, जब कंगरेसने माना। और तुम भी तो, भैया कहते थे, कि जब लोग चाहते हैं, तो बँटवारा कर लेना चाहिये।

भैया—मुदा इसके लिये मजबूर अंगरेजोंने किया। अंगरेजोंने हिन्दू-मुसलमानका वोट अलग कर दिया। देसभगत मुसुलमानोंके लिये वोट पाना मुसकिल हो गया, काहेसे कि सरकारके पिट्ठू लोग हिन्दू-मुसुलमानमें झगड़ा कराके अपने को पक्का मुसुलमान दिखाने लगे। जितने अधिक हिन्दू-मुसुलमान दंगे होते रहे उतनी ही उनकी नेतासाही बढ़ती रही।

दुखराम—मुदा मुसुलमान पउलिक (पब्लिक) का मन भी तो वैसई बन गया ?

भैया—"आग लगा जमालो दूर खड़ी" की कहावत नहीं सुनी ? हिन्दू-मुसुलमानका वोट बाँटा था अंगरेजोंने इसी खियालसे। जो अन्तमें भी उनके मनमें ईमान्दारी होती, तो एकट्ठा करके वोट लेते। लेकिन उन्होंने हर तरहसे फूट डालनेवाले मुसुलमानोंका पच्छ लिया। उनका मन था, कि देसका बटवारा करके हिन्दुस्तानको निर्बल बना दें।

दुखराम—तो उन्होंने जान-बूझके ऐसा किया।

भैया—जो इसमें कुछ संका हो तो दूसरी बात देखो। जब तक अंगरेज रहे, तब तक उन्होंने राजाओंको छूट दे दी थी और वह मनमाना अपनी परजा पर जुलुम करते थे। अंगरेज चलने लगे, तो उन्हीं राजाओंको कर्ता-धर्ता बनाकर गये और परजाके हकका कुछ खियाल नहीं किया।

सन्तोखी—यह बात तो परतच्छ हैदराबादमें देखी गई है !

भैया—हाँ, हैदराबादका नवाब बहुत दूरका सपना देख रहा था। कितने दूसरे राजा भी "परम सुतंत्र, न सिरपर कोऊ" बनना चाहते थे। कासमीरमें भी राजा दाव देख रहा था, मुदा जब जान लेकर सिरीनगरसे भागना पड़ा, और कोई रस्ता दिखाई नहीं पड़ा तब जेलसे बन्द नेताओंको छोड़कर मुखिया बनाना और हिन्दुस्तानमें आनेकी बात मानी।

सन्तोखी—भैया, हमको भी एक बात पूछना है। ई करपतरी महतमा कहाँसे ऊपर भये हैं ?

दुखराम—अउर ई डालूमियाँ कबसे गोरच्छाके झंडा उठाये हैं ?

सन्तोखी—दू मर्दे ? मियाँ होके गोरच्छा करे तो कोई खराब बात है ?

भैया—आपसमें बहसा-बहसी करनेका काम नहीं।

दुखराम—बहसा-बहसी ना सही, लेकिन जब पचखाके जिमदार सरब-दमन-सिंहको करपतरी महराजका झंडा उठाये देखा, तो हमें तुरन्त गोसाईंजी की चउपाई याद आई "जानि न जाय निसाचर माया।" जे सरबदमन परजाका खून चूस-चूस मोटे हुए और साहबनकी खुसामद करते-करते जिनगी बिता दिये, वह भला कबसे गऊभगत और देसभगत हो गये ?

भैया—हाँ, ठीक कह रहे हो। इन लोगोंका देसभगतीमें कहीं पता नहीं था, जब अगरेज राज करते थे। अब जब कँगरेसने राज सम्हाला, देस सुतन्तर हुआ, तब आँखमें धूल झोंकनेके लिए गोरच्छाका झंडा उठा लिए हैं, और सतिया गरह करना चाहते हैं।

दुखराम—सतियागरह नहीं भैया ! ई हतियागरह है। हम लोगनके बेकूफ गँवार समुझिके आँखमें धूल झोंकना चाहते हैं। राजा-रजुल्ली, सेठ-सेटुल्ली, संत-महंत सबका धरमातमापन देख लिया है। हम इनके फेरमें नहीं पड़ेंगे। है न भैया ?

सन्तोखी—मुदा करपतरी महतमाको यह क्या सूझा ? सुनते हैं, वह उतराखडमें तपसिया करते थे।

दुखराम—तुम भी, संतोखी, रह गये बकलोल ही ! सुना नहीं है "दुनिया ठगिये मक्करसे, रोटी खाइये घी सक्करसे" ?

सन्तोखी—नहीं, ऐसा न कहो दुक्खू भाई ! सुनते हैं, वह बड़े निरलोभ महतिमा हैं। उनमें बहुत दया-माया है।

दुखराम—दया-मायाकी बात न करो सन्तोखी भाई ! कमेरोंके गला रेतनेवाले सेठों-जिमदारोंका जो पायक बने, उसको दया-माया कहाँ ?

भैया—दया-मायाका परतोख तो यही समझो, जे जब दाना-दानाके बेहाल हो लाखन आदमी बंगालमें मर रहे थे और समूचे भारतमें अन्नके लिए 'तराहि

तराहि' मची थी, तब करपतरी महराज दिल्लीमें सैकड़ों मन अनाज और कनस्तरका कनस्तर घी स्वाहा कर रहे थे।

दुखराम—हतियार ? भैया चाहे तुम नराज हो, मुदा हमतो यही कहेंगे।

भैया—अपने मुँह नहीं खराब करना चाहिये दुक्खू भाई !

भैया—पकिस्तानी गोइन्दा मुसुलमानोंको हिन्दुओंके जुलुमका बखान करके भरमाना चाहते हैं। हम लोगोंको अपने यहाँ मुसुलमानोंके साथ कोई अनियाव नहीं करना चाहिये।

दुखराम—अनियावकी कौन बात है भैया ? अब तो झगड़ा लगानेवाले मुसुलमान भी ठंडे पड़ गये हैं। वह समझते हैं कि हमारा जनम-करम हिन्दुस्तानमें है, दूसरी जगह कोई ठौर ठिकाना नहीं। उमरपुरके कालूमियाँ बेचखोंचके लड़िका परानीके साथ लाहौर गये थे। वहाँ गुंडोंने मुँह मलके पैसा कौड़ी तो ले ही लिया, बेकत परानी कहाँ गई, इसका भी पता नहीं; रोते कलपते लौटके आये हैं। कहते हैं " यह माँटी अब पुरखोंकी कबुरके पास लगे तो अच्छा।"

भैया—वहाँ कालूमियाँ जैसोंको कौन पूछता है ? वहाँ पुछार है तो खाली बड़ी-बड़ी जोकनकी। मुसुलमान जोक ही नहीं, हिन्दू सेठको भी ठेका मिला है।

दुखराम—इहाँ गोरच्छा और उहाँ ठीका.....वाह डालूमियाँ वाह !

भैया—हम लोगोंको हिन्दुस्तानमें मजहबका झगड़ा नहीं होने देना चाहिये। सब कमेरोंको मिलके रहना चाहिये। जगिरदारी, तलुकदारीका नाम भी न रहे। नदीसे सिंचाईकी नहर निकाली जाये। कारखाना चलाने और घर-दुवार उजियार करनेके लिये बिजुली निकालनी चाहिये। मेवाका बाग लगाना चाहिये। जिसमें दसगुना, बिस-गुना साल-दुसाला बने बिके, ऐसा इतिजाम करना चाहिये।

दुखराम—माने जौन तरीकासे कमेरनके पास बेसी धन आवै, वह काम करना चाहिए। जो ऐसा हो तो मुसुलमान कमेरनको कौन फोड़ सकता है ?

भैया—बस, यही रास्ता है दुक्खू भाई !

सन्तोखी—तो तुमको भैया बिसवास है न, कि अंगरेजोंका पवरा फिर लौटके नहीं आवेगा।

भैया—नहीं आवेगा, नहीं आवेगा। देखा न हम लोगोंका चक्करवाला तिरङ्गा झंडा अब सब थाना कचहरीके ऊपर फहरा रहा है।

सन्तोखी—हाँ, भैया! मुदा ई महतमाजीका चरखा क्यों झंडे परसे अलोप हो गया?

दुखराम—भैयाको तकलीफ मत दो, ई हमसे सुनो संतोखी! हम बतावैं। हमको भी का मालूम, सोमारूने बतलाया।

सन्तोखी—कौन सोमारू? वही सदाफलका बेटा, जो रेलवइ ऐंजनमें काम करता है?

दुखराम—हाँ, उसीने बतलाया कि अब हमारा देस सुतन्तर हो गया। आगे कल मसीनका काम चलेगा। रेलकी लाईन बहुत बढ़ाई जायगा। खेत जोतनेके लिये भी मोटरका हल आयेगा। जानते हो न? कल मसीनमें सब जगह चक्का चक्का होता है। वही चक्कर अब हम लोगोंकी पताकापर आया है।

सन्तोखी—महतिमाजीको कैसा मालूम हुआ होगा? सब जगह कल-मसीन चल जायगी, तो चरखेको कौन पूछेगा?

दुखराम—महातिमाके जिनगीभर चरखा रहा फिर अब वह लौटकर देखने थोड़े आवेंगे, कि अपसोस होगा?

भैया महातिमाके लिये ऐसा मत कहो दुक्खू! उन्होने देसका बहुत बड़ा काम किया। आँखके देखते ही देस सुतन्तर हो गया, यही उनके लिये संतोख-की बात थी। ऐसे तो बाल-बुद्धि किसमें नहीं होती? हमारा देस अब सदाके लिये सुतन्तर है। अंगरेज या कोई दूसरा फिर यहाँ लौटकर नहीं आ सकता। मुदा अभी दो बड़े-बड़े काम हमें करने हैं।

दुखराम और सन्तोखी—कौन काम भैया?

भैया—अब यह बात कल कहेंगे। "कथा समापत होतु है, सुनहु बीर हनुमान।"

———

अध्याय १७

दुनिया-जहान की बात

भैया—भाई लोग कहाँ भूल गये थे? मैं तो समझता था कि कहीं चुनावके मेलाकी तैयारी तो नहीं हो गई?

दुखराम—चुनाव के मेलासे भी मुश्किल बात है भैया! दूकानसे नून अलोप हो गया। ई तो सन्तोखी भाई साथे रहे, कितना अगवार-पिछवार चक्कर लगाने-पर पावभर मिला और सो भी पाँच पैसाकी जगह रुपैया सेरके भावसे। ऐसी चोरबाजारी तो पराजउ में नहीं देखी थी?

भैया—जब तक जोंकोंकी चलती-बनती रहेगी, तब तक सब देखनेको मिलेगा।

दुखराम—फिर गाँधीमहात्मा काहे कहते थे, कि जोंकोंपर से सब अंकुस उठा दिया जाय? चीनीपरसे अकुस उठा लिया गया। अनाजपरसे अकुस उठाया गया है। महतिमाजीका रामराज जोंकोंके लिये ही तो नहीं है?

सन्तोखी—जोकनके ऊपरसे कुल अंकुस उठ गया तो गरीबोंकी मौत है।

भैया—ठीक है।

सन्तोखी—मुदा भैया, एक बात सुनके तो हमारा मन सिहर गया। मनोरी साहुका लड़का कह रहा था, कि जल्दी ही फिर लड़ाई होनेवाली है। बाबूजी तो दो ही तीन लाख कमाकर रह गये, बाकी मैं अबके चालीस-पचास लाखसे कम कमाये बिना नहीं रहूँगा। मेरा तो कलेजा काँप रहा था। तुम्हींने कहा था भैया, कि रूसमें ७० लाख आदमीकी जान पिछली लड़ाईमें गई। आगेकी लड़ाई तो और भी खराब होगी?

भैया—भय मत खाओ सन्तोखी भाई! लड़ाई इतना ठट्ठा खेल नहीं है कौन किससे लड़ेगा?

सन्तोखी—साहुके लड़केने खबरका कागज पढ़कर कहा कि रूस और अम-रीकामें कचवाबध लड़ाई होने जा रही है।

भैया—हाँ, अमरीका की जोंकोंके मुँहमें खून लग गया है।

दुखराम—हिटलरवा की तरह इनकी भी मत तो नहीं मारी गई ? अब अमरीकाकी जोंकें दुनियाकी दिगविजय करना चाहती हैं क्या ?

भैया—गाल तो वैसी ही बजा रही हैं।

दुखराम—हिटलरवा भी पहले गाल ही बजाता था, मुदा अन्तमें उसने दुनियाको लड़ाईमें ढकेल ही दिया और हमारे देसके भी आध करोड़ आदिमियों की जान गई।

भैया—लेकिन अमेरिकाकी जोंकें हिटलर जैसी पागल नहीं हैं।

दुखराम—मुदा सुनते हैं भैया, अमरीकाके पास अणुआँ बम है। एक बम गिरानेसे कलकत्ता ऐसी नगरीमें चिड़िया-चुनमुन कोई नहीं बच सकता।

भैया—हाँ, वह सबसे खतरेका हथियार है, इसमें संका नहीं। एक बमसे पचास-साठ हजार आदमीका जान जाना कम नहीं। मुदा दुखू भाई, यह भी बूझे रहो, कि अमरीकाने काहे उस हथियारको जर्मनपर नहीं छोड़ा ?

सन्तोखी—हमारा भैने (भांजा) सोहनलाल कहता था, कि जापान काला आदमी था, इसीलिये अमेरिकाने उसके हिरोसिमा नगरपर अणुआँ-बम फेंका।

भैया—यह भी हो सकता है। लेकिन खाली इसी कारन से नहीं। अमिरिका समझता था, कि जो जर्मनी के एक भी सहर पर इस बमको फेंका, तो हिटलरवा बिख-माहुरका बतास भरके बिलाइत पर उझिल देगा, औ बिलाइतके छोटेसे मुलुकमें 'रहा न कुल कोउ रोवनिहारा' हो जायगा ?

दुखराम—हिटलरके पास बिख-माहुरका ऐसा बतास था, तो काहे नहीं उसने चलाया।

सन्तोखी—जानते नहीं, दुतरफा डर है। दोनों निरवंस हो जाते, तो जीत किसकी, हार किसकी ?

भैया—हाँ, यही बात थी। जापान, अमरीका और बिलाइतसे बहुत दूर था, इतना दूर कि यहाँ तक जापानी उड़नखटोले बिखका बतास नहीं पहुँचा सकते थे, इसीलिए अमरीकाका हियाव बढ़ा।

सन्तोखी—यह तो अतताईका काम हुआ भैया! अमरीकाने अपने साथी-संगीसे पूछके ऐसा किया कि अपने मनसे ?

भैया—खाली चर्चिलसे पूछा।

दुखराम—अहिरावनसे। हम तो भैया; चरचिलवाको दानो समझते हैं; जो रामजीका औतार लेना था, तो इसी दानवके खातिर औतार लेना चाहता था। उसकी एक-एक बातमें विख और उसकी एक-एक चालमें सौ-सौ पातक होता है। इस्तालिन वीरसे नहीं पूछा इस बारेमें।

भैया—पूछनेकी बात पूछते हो ? उसीकेलिए तो अमरीकाने जल्दी-जल्दी अणुआँ बम गिराया। उसने देखा, जर्मनकी लड़ाईमें तो दुनिया-जहानने देख लिया, जे रूसकी पल्टनके सामने अमिरिकाकी पल्टन पसंगा भी नहीं। चीनके मंचूरिया सूबामें जापानने छाँट-छाँटकर बीर-बंका पल्टन रखी थी। अँगरेज और अमिरिकाकी पल्टन जापानकी छँटवी पल्टनसे सालों लड़ती रही और इंच-इंच भर हटते रहे। उधर जब रूसने जापानके ऊपर तेगा उठा लिया, तो तीरकी तरह घास-मूलीकी तरह काटते-मारते जापानियोंके सारे बीर-बंकापनको धूलमें मिला दिया।

दुखराम—हूँ! तो अमिरिकाने समझा, कि यहाँ भी रूसवाले मीर बन जायेंगे और दुनिया जान जायेगी, कि उनमें कितनी बीरता है। इसीलिए यह अतताईपना किया।

भैया—और नहीं तो। जापान तो हथियार डालने ही जा रहा था।

सन्तोखी—कहते हैं, अमिरका ढेरका ढेर अणुआँ-बम जमा कर रहा है। साहुका लड़का कहता था, कि ऐसा बम अमिरकाके ही पास है। छ घंटेमें वह सारे रूसको खतम कर देगा।

भैया—रूस, जानते हो, कितना बड़ा देस है। हिन्दुस्तान ऐसे सात देस उसमें समा जायेंगे। ८ हजार कोस लम्बा, ४ हजार कोस चौड़ा देस है। इतना बम कहाँ धरा है, कि धाप-धापपर उसे गिराया जाय। फिर, रूसभी हाथपर हाथ रखकर बैठा नहीं है। उसके पासभी ऐसे बम और उससेभी भारी-भारी हथियार हैं।

सुखराम—तो यह अँगरेज काहे बीचमें फुदक रहे हैं?

भैया—ठीक कहते हो, अमिरिका और रूसतो बड़े-बड़े देस हैं। वहाँ सब लोग खाली सहर हीमें नहीं बसते हैं। बिखके बतास और बमसे गाँवके आदमी बचभी सकते हैं, मुदा एक चौथाई अँगरेज तो लन्दन हीमें बसते हैं। पाँच-सात और बड़े सहरोंको लेलो, तो सौमें से अस्सी-नब्बे अँगरेज वहीं बसते हैं। फिर जो ऐसे बमोकी लड़ाई हुई और बिख-बतास गोलाभी चला, तो बिलाइतमें तो सचमुच ही 'रहा न कुल कोउ रोवनिहारा' हो जायगा।

दुखराम—यह देखकर तो, भैया, मुझको बुझाता है, कि यह सब और कुछ नहीं, खाली बनरघुड़की है।

भैया—और रूसमें भी "इहाँ कुँहड़ बतिया कोउ नाहीं" वाली बात है।

दुखराम—तो उहाँ कोई डरता-वरता नहीं न भैया?

भैया—तनिक भी नहीं। "हाथी चलै बजार, कुत्ता भूँकै हजार।"

सन्तोखी—भला, सुनते हैं कि अमिरिका रूसको चारों ओरसे घेर रहा है।

भैया—हाँ, घेरनेकी कोसिस कर रहा है। जापानके फसिहोंको फिर खड़ा कर रहा है। चीनीमें जोंकोंके पायककारकी चाङको टापूमें भाग जानेपर खिला-पिला रहा है। और करोड़न-करोड़न रुपया बरसा रहा है। ईरानमें भी रुपया बोके उसने वहाँकी जोंकोंको हथियाया। यही तुर्की और यूनानमें किया है। इरोपके पूरबवाले देसोमें दाल नहीं गली तो खिसियानी बिल्लीकी तरह खम्भा नोचता है। इटली, फ्रांस, सब जगह छुन्द बन्द कर रहा है।

दुखराम—तब तो, भैया, यह लड़नेकी ही तैयारी है।

भैया—लड़नेकी तैयारी नहीं! वह जानता है, कि जब तक रूस और उसके साथी देसोंके ऊपर सीधे चढ़ाई नहीं होगी, तब तक रूस नहीं लड़ेगा। उधर दूसरे देसोंमें सभी जगह कमेरे जोंकोंका टाट उलट देना चाहते हैं। जोंकोंमें अकेले इतनी तागत नहीं, कि अपना बचाव करें। अमिरकासे चानीका जूता उधार ले लेके वह अपने यहाँके देसबेचुआ नेताओंको खरीद रही हैं और जोंक-राजको बचा रही हैं।

दुखराम—चीनमें भी अमिरका जोंकोंकी बड़ी मदत करता था।

भैया—मदतकर रहा था, मुदा उसका कोई फल नहीं हुआ है। चीनके देस-भगत लोग और उनकी पलटन चारों ओरसे जोंकोंपर पड़ी। जोंकें एक जगह बचाव करने जातीं, तो दूसरी जगह चढ़ाई हो जाती। नाकमें दम था। चीन इतना बड़ा दलदल है, वहाँ अरबों रुपयोंका पता क्या लगता! अमिरका नया-नया हथियार भेजता और पलटनकी पलटन हथियार लिये-दिये देस-भगतोंके पास चली जाती। किसान-मजूर चारों ओर बिगड़ गये थे।

सन्तोखी—तभी न चीनमें जोंकोंका दाव नहीं लगा।

भैया—चीनके लोग समझ गये, कि पहले जपान हमें गुलाम बनाना चाहता था और अब अमिरकाकी डारलशाही।

दुखराम—औ कोरियामें क्या बात हुई भैया?

भैया—उतरमें आधे कोरियाका इन्तिजाम रूसकी देख-रेखमें होता था। वहाँ किसान-मजूर लिखे-पढ़े लोग खूब सुखी थे। नये तरीकेसे खेती की जाती थी। गाँव-गाँव सहर-सहर इस्कूल-अस्पताल था। पूरा परजा-राज बन गया था। जिसे दक्खिनी कोरियाके लोग देख-देख सिहाते थे और वैसे ही अपने यहाँ भी बनाना चाहते थे, इसपर अमिरका और उसके कुकठपुतली कोरियन देस-भगतोंको पकड़-पकड़के जेहलमें डाल रहे थे। हम कह चुके हैं, इससे काम न चलता देख लड़ाई छेड़ दी, सो हम कह चुके हैं।

दुखराम—अमिरकाको रुपिया बरसानेका ही आसरा था, मुदा समूची दुनियामें कितने दिन तक अमिरका रुपिया बरसाता रहेगा।

सन्तोखी—जिस दिन रुपियाकी बरसा बन्द होगी, उस दिन जोंकोंकी क्या दसा होगी?

भैया—जोंकें छटपटाके मरेंगी।

दुखराम—तो इस बखत दुनियाकी सारी जोंकें अमिरकाकी जोंकोंका आसरा लगाये बैठी हैं।

भैया—वही दुनियाकी जोंकोंका सिरताज है, चारों ओर हाथ-पैर मार रहा है। उसने लड़ाईमें खूब रुपिया कमाया है।

दुखराम—काहे नहीं कमायेगा ! अमिरकामें लड़ाई नहीं हुई। पलटन भी उतनी मरी नहीं।

भैया—हाँ, लड़ाईमें अमिरका एकका नौ बनाता रहा, मुदा कुबेरका अखुट खजाना उसके पास भी नहीं है।

दुखराम—तो रूस चुपचाप बैठा देख रहा है, कि अमिरिका कितना अरब-खरब रुपिया दुनियामें बोता है। उधर देस-भगत लोग भी अपना बल-बूता लगा रहे हैं। दस बरस, बीस बरस कितने समय तक अमिरका चाँदीके भरोसे दुनिया-की जोंकोंको पोसता रहेगा ! आखिरमें हाथ खींचना ही पड़ेगा।

भैया—चीनमें हाथ खींचना ही पडा और सोलह अरब गँवाके।

सन्तोखी—हमको तो यही सन्तोख है भैया, कि रूस अँणुआ-बमसे नहीं डरता और उसके पास भी अँणुआ-बम और दूसरे बड़े-बड़े हथियार हैं। रूसी जोधा तो बीर-बंका हई हैं।

दुखराम—इसीलिए लड़ाई नहीं होगी। यह खाली अँगरेज और अमिरकाकी बनरघुड़की है।

भैया—अँगरेजका काहे नाम लेते हो ? आजकल वह खाली सिखंडी रह गया है। ढोलके भीतर खाली पोल है।

दुखराम—तब भी बेहया बनके हर जगह पंच बनना चाहता है।

सन्तोखी—लेकिन सुनते हैं, कि अँगरेज पाकिस्तानसे बहुत साँठ-गाँठ कर रहा है। पाकिस्तानको लेके कहीं फिर तो हिन्दुस्तानपर चढ़ाई नहीं करेगा ?

भैया—'लड़ो भतीजो पाछ दो पूतो' कहावत नहीं सुनी है ?

सन्तोखी—'आनका मैदा आनका घीव भोग लगावें बाबाजीव' वाली बात मालूम होती है।

भैया—जो अँगरेजोंको अपना घीव मैदा लगाना होता, तो हिन्दुस्तान छोड़के काहे जाते ? और पाकिस्तान कौन बिरतेपर हिन्दुस्तानसे लड़ाई करेगा। न उसके पास लोहेका कारखाना है, न हथियारका कारखाना है, न कोयला, न तामा, न उतने हुसियार कल-मसीन जाननेवाले, न उतने इलिम-विद्दा सीखे लोग। ऊपरसे एक टुकड़ा पूरुबमें लटक रहा है, तो दूसरा टुकड़ा पच्छिममें।

पागल कुत्ता काटे नहीं है, कि वह सब करे-धरेपर लीपा-पोती कर देगा। अभी सुना है न, हिन्दुस्तानका इतना करजा पाकिस्तानपर हो गया है कि पचास-साल-की किस्तमें भी बेबाक करना मुस्किल है।

सन्तोखी—कहीं भैया, करजा मार तो नहीं लेगा? सूद तो ठीक-ठेकानेसे लगाया गया है? अब उनके साथ मोह-मुरौअत काहेकी?

भैया—महाजन कमजोर होता है, तभी करज मारा जाता है। हिन्दुस्तान जन-धन-बल सबमें पाकिस्तानसे बहुत बड़ा है।

सन्तोखी—सुनते हैं, कि पाकिस्तानकी आमदनी पलटनके खरचा हीमें चली जा रही है। उसको इतनी पलटनकी क्या जरूरत है, जब हिन्दुस्तानसे लडके पार नहीं पाना है?

भैया—पाकिस्तान बड़े फेरमें पड़ा है। पलटनसे लोगोंके निकालनेपर बेरोजगार हो वे काटने दौड़ेंगे। उधर पठान पखतूनिस्तान बनानेपर तुले हुये हैं। अँगरेज हरसाल कई करोड़ रुपिया सरहदके पठानोंको सुंघाते रहे। तब तो हिन्दुस्तानका बड़ा खजाना था, अब वह पाकिस्तानके माथे है।

सन्तोखी—पाकिस्तानने हिन्दुस्तानसे भी कुछ देनेके लिए कहा था न?

भैया—कहा था, मुदा हिन्दुस्तान काहेको देगा! वह इलाका हिन्दुस्तानकी सरहद पर थोड़े ही है।

सन्तोखी—तब तो भैया, पेसावरका इलाका पाकिस्तानमें चला गवा यह अच्छा ही हुआ, नहीं तो हमीं लोगोंको सारी रुपिया-सुंघाइ करनी पड़ती?

भैया—इसीसे पहिले तो पठानोंको कासमीरमें लूटनेके लिए भेज दिया। अब जब वहाँ खोरिस भागेंगे, तब मालूम होगा।

दुखराम—पठान लोग अपना पठानिस्तान माँग रहे हैं न? उसे लियाकत अली कब तक रोके रखेंगे?

भैया—तभी तक रोकेगा, जब तक दीन-धरमके नामपर लोगोंको पागल कर सकता है।

सन्तोखी—लेकिन सुनते हैं कि पाकिस्तान सारी दुनिया-जहानके मुसलमानों-को एक करके लड़ना चाहता है।

भैया—भूल गये, मैंने कहा न था, कि सबसे बेसी मुसलमान हिन्दुस्तान ही में रहते हैं। नाम गिनानेको चाहे आठ मुसलमानी राज गिन लो, लेकिन हैं वह एक-एक दो दो जिलेके बराबर है और सभी पिछलग्गू। आज कलके जमानेमें लाठी और छूरेकी लड़ाई नहीं है। 'समूचे दुनियाके मुसलमान' खाली नाम ही बड़ा है। इससे घबरानेकी जरूरत नहीं।

सन्तोखी—मुदा 'घरका भभीखन लंका ढाहे', कहीं हिन्दुस्तानके भीतरके मुसलमान तो धोखा नहीं देंगे ?

भैया—पन्द्रह अगस्तके बाद मुसलमानोंके चाल व्योहारमें तुम्हें फरक मालूम होता है कि नहीं ?

सन्तोखी—फरक तो बहुत है भैया। अब न कहीं मसजिदके सामने बाजाकी बात उठाते हैं, न छुरा-खञ्जर दिखाते हैं। बल्कि भाई-चारा बढ़ानेकी पूरी कोसिस करते हैं।

भैया—भिभीखनको तो हमारे यहाँ जगह नहीं। भिभीखनके लिए सीधे पाकिस्तानका रास्ता बता देना चाहिये। नहीं बतानेपर भी वे चला ही जाना होगा। बाकी जो मुसलमान हिन्दुस्तानमें रहनेका निश्चय कर चुके हैं, वह भली-भाँति जानते हैं, कि जो हमने कुछ भी तीन-पाँच किया, तो खैरियत नहीं। पाकिस्तानकी सरहद बहुत दूर है। वहाँ तक जान बचाके भागना भी नहीं हो सकता।

दुखराम—यह तो मैं भी समझता हूँ, मुसलमानोंकी भलाई इसीमें है, कि यहाँके लोगोंसे मिताई करें, अपनी जनम-धरतीसे स्नेह राखें।

भैया—इतना ही नहीं। मुसलमानोंको वही बोली-बानी, वही पर-पोसाक, वही खान-पान अपनाना होगा, जो कि हिन्दुओंका है। बिलाइतमें इसाई रहते हैं, यहूदी भी रहते हैं, लेकिन उनको देखके कोई नहीं कह सकता, कि वह दो दीन-धरमको मानते हैं।

दुखराम—दीन-धरम अपने मनकी बात है भैया, जिसका जो मन हो वैसा माने। मुदा हर जगह अपनेको नक्कू बनाना ठीक नहीं है न भैया !

भैया—हाँ, धरमकी जगह मन्दिर-महजिद, गिरजा अगियारी में है। उसका हर जगह साईनबोट टाँगना ठीक नहीं है।

सन्तोखी—कोई-कोई मुसलमान हिन्दुईको राज-भाखा बनानेपर चिढ़ते हैं।

भैया—मूरख हैं मूरख। हमारे यहाँकी भाखा हिन्दुई न होगी तो क्या अरबी, फारसी होगी! अपने चाहे जो भाखा पढ़ते रहें, मुदा सरकारी कारबार तो अब अपनी ही भाखामें होगा।

सन्तोखी—जब अँगरेजा इतना दिन तक पढ़ते रहे, और कभी उजुर नहीं किया, तो बिदेसी भाखा छोड़के अपनी हिन्दुई भाखा पढ़ने लिखनेमें काहे इतनी नखराबाजी?

भैया—'पाँडेजी पछुतायेंगे और वही चनेकी खायेंगे' नखरा छोड़कर हिन्दुई भाखा सबको पढ़ना होगा। बहुतसे मुसलमान भी अब यह समझने लगे हैं।

सन्तोखी—हाँ, इस बातका तो पता आठ साल पहिले (१९४७) परागराजसे मिला। दिसम्बरमें जब जवाहिरलाल पराग पहुँचे, तो लोगोंने जगह-जगह बन्दनवारसे सजाके दरवाजा बनाया। मुसलमानोंका दरवाजा सुन्दर था, और उसपर हिन्दीके मोटे-मोटे अच्छरोंमें लिखा था, उर्दूमें भी लिखा था, लेकिन छोटे-छोटे अच्छरोंमें।

भैया—मुसलमानोंको उर्दू पढ़ना हो, तो पढ़ें; कौन रोकता है। लेकिन राजभाखा हिन्दी छोड़ दूसरी नहीं होगी।

सन्तोखी—कोई-कोई मुसलमान कहते हैं कि जो उर्दू भाखा नहीं रहेगी, तो मुसलमानी धरम उठ जायगा।

भैया—जो धरम ऐसा कच्चा है, तो उसको उठ ही जाना चाहिये। मुदा हिन्दुस्तानमें किसीके धरमपर रोक-थाम नहीं है। पारसी लोग गुजराती लिखते-पढ़ते हैं, उनका धरम तो नहीं चला गया। ईसाई बड़े उछाहसे अपनी हिन्दी पढ़ते हैं; बंगाला, मन्दराजके रहवैया वहाँकी भाखा पढ़ते हैं। बौध हिन्दी पढ़ते हैं, अपनी भाखासे परेम करते हैं। इनमेंसे कोई नहीं कहता कि हिन्दी पढ़नेसे हमारा धरम चला जायेगा।

दुखराम—तो काहे ऐसी उल्टी-पुल्टी बात मुसुलमानोंके मुँहसे निकलती है।

भैया—आखिरी बेर निकल रही है दुक्खू भाई। तुर्कीमें नमाज तक अपनी बोलीमें पढ़ते हैं, अरबीमें नहीं। अरबी अच्छरोंको भी वहाँ ठाँव नहीं है, मुदा वहाँसे तो मुसुलमान-धरम नहीं चला गया। खाली घर या महजिदमें रोजा-नमाज छोड़के हिन्दू-मुसलमानोंमें बोली-बानी, कपड़ा-लत्ता किसी बातमें फरक नहीं होना चाहिए। हम तो समुझते हैं, कि धीरे-धीरे रोटी-बेटी सब एक हो जायगी।

अध्याय १८

अनाज कैसे बढ़े

सन्तोखी—दुक्खू भाई, रजबली भैयाने बहुत बात तो बता दी है। आज उनसे क्या पूछना चाहिए?

दुखराम—अभी तो सन्तोखी भाई, सब दूरे-दूरेकी बात रही है। अब तनी नजीककी बात करनी चाहिए।

सन्तोखी—हाँ, दुक्खू भाई, देखे न नून-तेल सब अलोप होता जा रहा है। जहाँ देखो तहाँ दुइ-दुइ तरहका भाव। सब जगह ईमानधरम लोगोंका उठ गया है। हम सब गरीबोंकी दसा और बिगड़ती जा.....

दुखराम—लो भैया भी आगये। जैहिन्द रजबली भैया!

भैया—जैहिन्द दुक्खू भाई, जैहिन्द सन्तोखी भाई। कहो आज क्या बात बिचार करना है?

दुखराम—आज भैया, तुमको जादा तकलीफ नहीं देंगे। बस, घर-दुआरकी बातचीत और येही नून-तेल-लकड़ीकी चिन्ता।

भैया—यह छोटी बात है दुक्खू भाई? कबीर साहब कह गये हैं—'ना किछु देखा भाव-भजनमें, ना किछु देखा पोथीमें। कहे कबीर सुनो भाई सन्तो, जे देखा सो रोटीमें।' रोटी सब चीजकी मूल है। रोटीके लिए सुराज भया है।

दुखराम—यह तो हम भी बूझते हैं भैया, खाली हँसी करते रहे। मुदा देखते हो न अनाज दिन-पर-दिन अजुर होता जा रहा है।

भैया—रोटीका इन्तिजाम सबसे पहले करना है। जानते हो न इस साल तोड़ा पूरा करनेके लिए तीन अरब रुपियाका अनाज दूसरे देससे मँगाना पड़ा है।

सन्तोखी—तीन अरब रुपिया बहुत होता है भैया! जो ऐसे रुपिया देना हुआ तो घर-दुआर बिक जायगा।

भैया—तीन अरब तो सरकारकी सारी आमदनी है। औ अनाज न मँगायें, तो वही बङ्गालकी हालत होगी। लाखों परानी भूखे पटपटाके मर जायेंगे।

दुखराम—हमारे यहाँ अनाजका ऐसा टोंटा तो कभी नहीं देखा गया। अब तो अँगरेज चले गये, और इहाँसे बिलायत भी अनाज नहीं जाता। फिर काहे अनाजका इतना अकाल?

भैया—अनाजका अकाल काहे न हो? खानेवाले मुँह पहलेसे बढ़ गये और धरती एक भी अँगुल नहीं बढ़ी। साले-साल धरतीका सत्त खींचते रहे और खाद नहीं देते। भैंस बियाती है, तो काहे माँडी (पखेव) देते हो?

दुखराम—बियानेसे भैंस दूबर हो जाती हैं। माँडी (पखेव) न देंगे तो कहाँसे दूध देंगी?

भैया—उसी तरह धरतीको भी माँडी चाहिये। फसल काटो और माँडी दो।

दुखराम—माने खाद दो। और पानी भी धरतीको बहुत चाहिए भैया।

सन्तोखी—और अच्छी जोताई भी। खेतको जोता-हेङ्गाके तोसक जैसा नरम कर दें, जब धरती-माता परसन्न होती हैं।

भैया—कुल बात तो तुमने बता दी। माँडी (पखेव), पानी, जोताई और इनके साथ अच्छा बीज दे दो, देखो थनहर भैंस जैसे जितना चाहो उतना दूध दुह लो। लेकिन माँडी कहाँ है हमारे गाँवमें? थोड़ा बहुत गोबर होता है। उसको भी और उपाय न होनेसे ईंधन बनाके जला देते हैं।

दुखराम—हाँ भैया, यह तो रोज ही देखते हैं, कि जिस खेतमें खाद-गोबर पड़ता है, उसमें कट्ठा-बिस्वामें मनभर गोहूँ उपजता है। पथर-कोयला

पर भोजन मीठा तो नहीं होता है, मुदा वह भी मिल जाता, तो सब गोबर बचाके खेतमें डालते।

भैया—खाली मनका भरम है। पथर-कोयला पर भोजन फीका नहीं होता। मुदा पथर-कोयला इतना कहाँसे मिलेगा, कि देस भरके चुल्होंमें उसे जलाया जाय? इसकी यह मनसाय नहीं कि हमारे देस में पथर-कोयला कम है। पथर-कोयला बहुत निकाला जा सकता है और गोबरको बचाके खाद बनाना चाहिये। धरतीके पेटमें बहुत खाद है।

दुखराम—क्या कहा भैया, धरतीके पेटमें भी खाद है?

भैया – हाँ, जैसे कोइलाकी खान है, लोहाकी खान हैं, वैसे ही खादकी भी खान है - और वह खाद बहुत तेज होती है। जहाँ दूसरी खाद दो मन लगती है वहाँ उस खादके दो सेरसे ही काम चल जाता है। हमारे देसमें धरतीके पेटमें न जाने क्या-क्या है। हमारी धरतीमें अपार धन है। उसे निकालना चाहिये, और बहुत जल्दी। जानते हो, सत्ताइस लाख खाने वाले मुँह हमारे यहाँ हर साल बढ़ रहे हैं।

सन्तोखी—क्या कहा भैया, सत्ताइस लाख मुँह? मेरा तो कलेजा सिहर गया।

दुखराम—देख नहीं रहे हो सन्तोखी भाई, तुम्हारे घरमें तो एक ही लड़का-लड़की होके रह गये। मुदा रामदीन बाबाको नहीं देखते। अभी जिन्दा ही है। चार पीढ़ी सामने है। और खाली लड़कोंपे आजकल बत्तीस परानी हैं।

भैया—औ लखनऊके बड़े लिखवैया सामबिहारी मिसिर अपनी देहसे छत्तीस परानी देखके मरे।

दुखराम—हाँ भैया, ई तो बड़े संकटकी बात है। और मेहरिओकी मुरुखताईको पूछो ही नहीं, जो घरमें बहूको आये दो साल हो गया और कोई लड़का-फड़का नहीं हुआ, तो फिर देखो, आज सैयदबाबा किहाँ, काल डीहबाबा किहाँ, परसों परमजोतमाई किहाँ, चौथा दिन ओझा-सयान किहाँ। जनु गदी सूनी होती जा रही है। हमारे लड़का-फड़का नहीं हुआ, भाईके हो गया। बस, नाम-निसान क्या उससे नहीं होगा?

सन्तोखी—भाईके क्या, गाँवभर तो एक ही पुरुखा का है। चार घरमें धिया-पूता नहीं हुआ, तो पुरुखाका बंस, निरबंस थोड़े ही होगा। ई तीन अरब रुपया हर साल बाहर भेजनेकी समरथाय अपने देसमें नहीं है। हम तो बूझते हैं भैया, जो परानी आधे हो जायें, तो कुछ चिन्ता मिटे।

दुखराम—दुर् मर्दे, क्या मुँहसे कुबचन निकालता है। परानी आधा करनेके लिये हैजा बुलाएगा कि पलेक!

सन्तोखी—नराज मत हो दुक्खू भाई, हम उस दिनके लिए भूख रहे हैं, जब रुपया देना नहीं सँपरेगा, अनाज बाहरसे नहीं आयेगा, और लड़को सयानों-को निरघिन मौत मरना न होगा। सुने नहीं हो, बङ्गालमें जब अन्नका अकाल पड़ा, तो आदमी इज्जत बेचके भी परान नहीं बचा सके। वैसी मौतसे हैजा पलेक अच्छा।

दुक्खू—तो तुम्हारे भगवान क्या करते हैं। खाली हर साल सत्ताईस लाख मुँहई बढ़ानेमें बहादुर हैं!

सन्तोखी—भगवानको भी तो तुमने कह-कहके भुलवा दिया। अब कहाँ उतनी पूजा-पाठ करते हैं? हम भी देखते हैं, कि एक-एक आदमीके बचाने खातिर कहाँ धाय-धायके औतार लेते थे, औ कहाँ लाखों आदमीके मारके आत-ताईके मोंछपर ताव देते हैं तो भी उनकी नींद ही नहीं टूटती।

भैया—अब दुखराम कहेगे कि रहने दो उनको छीरसागरमें हमेसा खातिर सोते। मुदा भगवानका काम है, न हैजा-पलेकका। अगले पचास साल तक जो इसी तरह बढ़ती हुई, तो हिन्दुस्तानमें एक अरब मुँह हो जायेंगे। उसके लिए भी सन्तोखी भाई! हैजा-पलेक मत मनाओ। हमारी धरती एक अरब मुँहके भोजन, तन ढाकनेको अच्छा कपड़ा, रहनेकी नीचुर घर और सब चीज दे सकती है। मुदा गाधी महतिमाके रहतासे नहीं। उसके वास्ते कल-मसीन का नये ईलिमका काम है। तुम कट्टा-बिस्वा मन कह रहे हो, रूस मुलुकमें तो बिस्वामें डेढ़-डेढ़ मन गेहूँ होता है और एक खेतमें नहीं, जिलाके जिलामें।

दुखराम—तो उहाँ खूब खाद देते होगे।

भैया—खूब, हर फसिल बोनेसे पहले नापके बिलायती खाद देते हैं। मोटर-

वाले हलसे एक हाथ गहरी जुताई करते हैं। ढेला एक भी नहीं रहने पाता। फिर चुनके बढ़िया बीज बोते हैं। और पानी हर बखत हाजिर। बड़ी-बड़ी नदीको बाँध दिये हैं। नर्बदा, सरजू, कोसी, गंडक जैसी नदियाँ जो वहाँ होतीं, तो इतना पानी अकारथ थोड़े ही बहने पाता। वहाँ तो बड़ा-बड़ा सागर और झील बनाके बरसातका पानी भी जमा कर लेते हैं।

दुखराम—ईतो बहुत बड़ा काम है भैया!

भैया—बहुत बड़ा काम है, और वह काम हियाँ भी हो सकता है। गंगाजीसे नहर निकाली गई है जानते हो न? उसी तरह सब नदियोंके पानी को खेतोंमें डाला जा सकता है। फिर एक बड़ी गंगा तो धरतीके भीतर हर जगह बह रही हैं।

दुखराम—वही न जिसका पानी कुएँमें आता है?

भैया—हाँ, वही। और वह पानी नदियोंके पानीसे भी जादा है। पहले जमानेमें उसके निकालनेमें बहुत मेहनत करनी पड़ती थी। आदमी या बैल लगाकर चिल्लू-चिल्लूभर निकालते, लेकिन आजकल तो पानीकी कल ऐसी बन गई है, कि पाइप बैठा दो, तेल या बिजुलीका अंजन लगादो, और एक-एक दिनमें सौ-सौ बिगहा सींचलो। देखा नहीं बनारस, पटना, कलकता, बम्बई सब जगह अब डोरी-लोटा चाहे घड़ासे पानी नहीं खींचा जाता, बीस-बीस लाख आदमीके लिये और सतमहला परभी कल-मसीन पानी पहुँचा देती है।

दुखराम—तो वह कल-मसीन अब धरतीमें लगाना चाहिए, नहीं तो सन्तोखी भाई फिर हैजा-पलेककी मनौती करेंगे।

भैया—हमारा देस दुक्खू भाई, धन-धानसे भरा है, लेकिन अकिल बिना सब काम चौपट है। रूस या बिलाइतके मुलुकको देखो, वहाँ छ महीना धरती-पर दो-दो चार-चार हाथ तक बरफ पड़ी रहती है, और कोई खेती-बारी नहीं हो सकती। मुदा अपने देसमें हम हर खेतसे तीन-तीन फसल ले सकते हैं। और आलू, तरकारी, प्याज की तो पाँच-पाँच फसल भी उसी खेतसे निकाल सकते हैं।

सन्तोखी—सहरके पासके कोइरी (मुराव) काछी, कुँजड़ा लोग चार-चार पाँच-पाँच फसल निकालते ही हैं।

भैया—इसीलिये न कि वहाँ सहरके पासमें खूब खाद है। जोताई, पानी, बीज सबका अच्छा इंतिजाम है। और धानके खेतमें भी हमारे यहाँ रब्बी और बादमें पियाज तरकारी लगाके तीन फसल कर सकते हैं।

दुखराम—अगहनी धानके खेतमें खैसे रब्बी होगी ?

भैया—ऐसा इलिम निकला है, कि अगहनी धानको कतिका बनाया जा सकता है, माने उसकी फसल पाख डेढ़पाख पहले ही तैयार हो जायेगी।

दुखराम—बताओ भैया, हम अगले ही सालसे वही धान बोयेंगे।

भैया—लेकिन बड़े-बड़े ईलिमकी बात एक-एक घरमें नहीं चलती दुक्खू भाई। जैसे एक घर चाहे कि गंगाकी नहर बना दे, पानी निकालनेवाला इंजन बैठा दे, तो नहीं हो सकता। यह काम तभी हो सकता है, जब गाँवके गाँव मिल जायँ और सरकार तन-मन-धनसे सहायता देनेको तैयार हो जाय। वैसे बीजको भिगाके कुछ देर तक गरमाईमें रखना पड़ता है। उसके लिये मसीन, बड़े घर, और हुसियार ईलिम जाननेवाले आदमीकी जरूरत पड़ती है।

दुखराम—तो रूसमें यह सब इंतिजाम हुआ है ?

भैया—इंतिजाम न होता, तो सत्तर-सत्तर लाख परानीके मर जानेपर करोड़न बिगहा खेतके बेकार हो जानेपर भी रूस कैसे इतना अनाज पैदा करता, कि अपने खाके दूसरोंको भी करोड़ों मन अनाज देता ?

सन्तोखी—रूस हम लोगोंको भैया, अनाज क्यों नहीं देता ?

भैया—दिया है और-और भी देना चाहता है। फिर बिना सरतके मुदा को गरेसी सरकार मँहगे दामपर देसको बंधक रखकर अमेरिका से लेना चाहती है। चीनने भी २८ करोड़ मन अनाज दिया है, उतना ही देना चाहता था, और सस्तेमें।

दुखराम—तो भैया ! जोकें कमेरोंके मुलुकका अन्न भी लेनेमें डरती हैं ? रूसके कमेरोंने आखिर सब कुछ अपने जाँगर हीसे किया है न ? क्या हम भी अपने जाँगरके भरोसे वैसा नहीं कर सकते ?

भैया—जॉगर और ईलिम दो ही बात तो चाहिये। फिर हमारे यहाँकी भी धरती सोना उगलने लगेगी। आजकल सउतर-पड़तर (औसतन्) हर एकड़में सात मन धान हो जाय तो बहुत। यह हम एक-दो या सुतरे खेतकी बात नहीं कर रहे हैं जिलाके जिला और सालोंके हिसाब लगानेपर फसिलकी यही उपज है।

सन्तोखी—इसका मतलब यह है कि नये इलिमसे जो खेती की जाय, तो पाँचगुना फसिल बढ़ जायगी।

दुखराम—और एक फसिला खेत दो-फसिला माने खेतमें तीन-तीन चार-चार फसिल काटी जा सकती है। यह भी दूना हुआ।

सन्तोखी—माने आजके जितने ही खेतमें दस गुना फसिल पैदा हो सकती है।

भैया—और आज जितना खेत है, उसको सवाया कर सकते हैं, जो खेती-लायक सब परती, बजर जमीनको जोत लिया जाय।

दुखराम—तब तो सन्तोखी भाई तुम भगवानसे हैजा-पलेक मत मनाओ। रजबली भाई ठीक कह रहे हैं, कि खूब जॉगर औ ईलिम लगाया जाय, तो बाहर से न अन्न मँगानेकी जरूरत है न भूखे मरनेकी। और अभी तीन पुस्त तक बराबर मुँह बढ़नेसे भी डर नहीं है। हाँ, लेकिन मालूम होता है, कि बाढ़का पानी गाँवके गोएड़ा चला आया है। तनिक भी देर करनेसे सारा गाँव डूब जायगा।

भैया—यह ठीक कह रहे हो दुक्खू भाई। एक छन भी चुप बैठना बहुत खतरेकी बात है।

दुखराम—तो अब तो भैया, अपनी सरकार है, अपने मंतिरी लोग हैं। उन लोगोंकी आँखोंमें पट्टी बँधी है क्या? काहे नहीं इस बाढ़को देखते?

भैया—पट्टी ही बँधी है ना, तभी न कछुआकी चालसे चल रहे हैं।

दुखराम—ये भी बड़ा औगुन है भैया, घरमें आग लगी हो, और बुझाने-वाला कछुआकी चालसे चले तो यह बहुत खराब है।

भैया—कछुआकी चाल बहुत खराब है। जो काम करना ही है, उसमें

घिसिर-फिसिर करनेकी क्या जरूरत ? जिमदारी उठा देना था मुदा आजकल करते लासको घसीटते रहे । अब हाल-चाल खराब है ।

सन्तोखी—खराब क्यों न होगी भैया ? जब हरसाल सत्ताइस लाख खवैया मुँह नये बढ़ रहे हैं । चटपट जिमदारीको गंगालाभ कराके नया इलिम लगा अनाज बेसी उपजानेके काममें लग जाना चाहिये था ।

भैया—एक-एक परिवारकी नये ढगकी खेती भी नहीं हो सकती साझेकी खेती, पंचाइती खेतीका रस्ता लेना होगा तब नया इलिम लगेगा ।

दुखराम—"साझेकी मुई सेड्रापर उठती है" की कहावत हर खेतिहरके मुँहपर है ।

भैया—हमारे ही देसमें नहीं, दुनिया भरमें यह कहावत किसानोंके ठोरपर थी, मुदा इस कहावतपर चलनेसे काम नहीं चलेगा । कितने ही गाँव हैं, जहाँ परिवार पीछे आध-बीघा भी खेत नहीं पड़ता, और वह भी आठ जगह छितराया हुआ है । कितनी जिमीन तो मेंड़ ही में चली जाती है । इलिमदार लोग बताते हैं, जो मेंड़ तोड़ दी जाय, तो अनाज चोरानेवाले मूसोके भगानेसे ही उपज सवाई हो जायगी ।

दुखराम—हम तो तइयार हैं भैया, मुदा गाँवके आदमी क्या राजी होंगे ? किसीके पास बेसी खेत है, किसीके पास कम, और किसीके पास कुछो नहीं । कैसे राजी होगे ?

भैया—राजी होना पड़ेगा दुक्खू भाई ! नावमें पानी भर रहा है, जो दोनों हाथसे न उलीचोगे, तो सब डूब जायँगे ।

सन्तोखी—हाँ, भैया ! जो सत्ताइस लाख खवैया मुँह हरसाल बढ़ते रहे और तीन-तीन अरब रुपैया का अनाज बाहरसे मँगाना पड़ा तो यह डूबनेका रास्ता तो है ही । मुदा बेसी कम खेत वालो को भी कोई रस्ता निकालना होगा ।

भैया—रस्ता यही है, कि खेतकी उपजमेंसे जोताई-बोआई-कटाई-सिंचाईका खरच निकाल दो, बीजका दाम निकाल दो, मालगुजारी निकाल दो और भी कुछ खरच पड़ा हो, सब निकाल दो; फिर देखो कि सब खरच काट देनेपर कितना अनाज बच रहा है ?

सन्तोखी—कुल खर्च निकालनेपर सात मनमें दो मन बचेगा।

भैया—हर खेत वाले आदमीको एकड़ पीछे दो अनाज दे दो। अच्छा खेत हो तो और कुछ बाँध दो।

सन्तोखी—कहीं-कहीं उपज बेसी है, वहाँ दो मन कम होगा।

भैया—हम दो मन बर्म्हाकी रेख थोड़ई कहते हैं।

दुखराम—माने, जितनी उपज हो उसमेंसे सब खरच निकालकर फरक-फरक जमीनपर फरक-फरक भाव बान्ह दो, तो बेसी खेत वाले लोग काहे न राजी होगे?

सन्तोखी—एक आदमी राजी नहीं होगा, तो क्या कुल नावको डुबायेंगे? और जिसके पास बेसी खेत है, उसका खेत भी तो दो पुहुतमें बँटकर छोटा-छोटा कोला हो जायगा।

भैया—हम यह नहीं कहते कि पंचाइती खेती हँसते-खेलते हो जायगी, किसी गाँवमें फुटमत बहुत होती है, वहाँ कोई एक दूसरेको देख नहीं सकता। किसी गावमें मुरुखताई बहुत होती है, लोग अपना भला बुरा नहीं समझते मुदा सौ गाँवमें एक गाँव ऐसा भी मिल सकता है जहाँ सुलह-सराकत बेसी है। उसी गाँवको ले लो। खेतका मलिकाना बान्ह दो। फिर सरकारसे कहो कि हमारा गाँव पंचइती खेती करेगा। हमको सींचनेके लिये पानीका अंजन दो, जोतनेके लिये मोटरका हल दो। मोटर-हल बहुत न मिल सके, तो नये ढंगका हल और मजबूत बैल दो। बीज और बिलइतिया खाद दो। पत्थर-कोइला दो, हमारा गाँव अब गोबर नहीं जलायेगा, अब सारे गोबरकी खाद बनैगी।

दुखराम—और गाय-भैंस कैसे रहेंगे भैया?

भैया—दूध देने वाला जानवार अपना-अपना रहेगा। भेड़-बकरी, सूअर, मुर्गा भी अपना अपना।

दुखराम—माने, खाली जोतने वाले जानवर ही पंचइती रहेंगे। मुदा, दुधार जानवरके वास्ते भूसा कहाँसे मिलेगा?

भैया—जिसके घरमें जितने ही पशू होंगे, उतना ही गोबर और खाद भी

होगा। पंचायत गोबर और खादका दाम देगी। उसीके मुताबिक भूसा मिलेगा। फिर बछड़ा जो तैयार होगे, उसका भी तो दाम मिलेगा।

सन्तोखी—औ भेड़-बकरी-मुर्गा ?

दुखराम—दुर मरदे ! मुर्गा भूसा नहीं खाता, न भेड़-बकरी को सानी खिलाई जाती। मुदा भैया ! अकिल बताने के वास्ते खेती का इलिमदार भी सरकार से माँगना चाहिये।

भैया—जोंकोंकी नहीं बल्कि हमारी सरकार जब होगी, तो वह कुल काम करेगी। तीन अरब रुपया जमाकरके विदेस भेजना कैसे होगा।

दुखराम—जैसे रूसमें जैसे चीनमें, वैसे ही हियाँ भी पचइती खेती ?

भैया—बिलेतिया खाद, सिंचाईका इंजन, बढ़िया बीज, मोटरका हल, सब पहले पंचइती खेतीको मिलेगा तब किसी औरको।

सन्तोखी—हमको तो भैया, सब बात साफ-साफ लौकती है। जो नये ढंगसे पंचइती खेती हो, तो अनाज, आलू, गोभी, तमाकू, मिर्चाका टाल लग जाये। और ऊख भी।

भैया—ऊख तो पाँच सौ एकड़ बो दो, तो गाँवमें एक छोटीसी चीनीकी कल बैठा देंगे।

सन्तोखी—तब तो भैया, लछिमी पैर तोड़कर गाँवमें बैठ जायँगी।

भैया—गाँवमें छोटा-मोटा बहुत तरहका कारखाना खुलैगा सन्तोखी भाई। कूसौ एकड़ सिगरेटवाला तमाकू जिस गाँवमें बो दिया जाये, वहाँ छोटासा सिगरेटका कारखाना भी खड़ा कर दिया जायगा।

दुखराम—तब तो मुक्खू भाईकी तस्वीर छापके गाँवके नामपर अपना सिगरेट हम चारों खूँटमें चलायेंगे और चारो ओरसे पैसा बहता चला आवैगा।

सुखराम—हमारा फोटू छपैगा, तो उसके साथ सोमरिया भौजीका भी छपाना चाहिए।

दुखराम—हमको उजुर नहीं, जाके अपनी भौजीसे पहिले पूछ लो।

भैया—पंचइती खेती होने लगेगी तो सोमरिया भौजी भी वही नहीं रहेगी

सुक्खू भाई ! अभी कामकी बात तो हमने कही नहीं। उपजके बारेमें इतना ही समझो, कि वह सैकड़ों गुना बढ़ जायेगी। गाँवमें अपनी लोरी होगी जो ढोकर फल-तरकारी सहरमें ले जायगी।

सन्तोखी—तब तो भैया, सहरमें अपनी तरकारीकी दूकान खोल लेंगे ? गाँवके लोगोंका टिकाव भी वहीं हो जायगा।

भैया—कुल होगा सन्तोखी भाई, मुदा मुख बात है धनके आवगको बढ़ाना रेंड़ी भी गाँवमें चकका चक बोयेंगे। तेल अलग निकालेंगे। खली की खाद बनेगी और पत्तोंको खिलाकर रेसमका कीड़ा पोसेंगे। गाँवही में कतायँ-बिनायके असमिया अंडी तैयार होगी।

दुखराम—तब तो मेहरियोंको भी कताईका काम बहुत मिलेगा और गाँवके जोलाहा भी जी जायेंगे ?

भैया—औ गाँवमें मधुमक्खी भी पोसेंगे।

दुखराम—यह नहीं करना चाहिये भैया, एक मरखही गायसे रस्ता रुक जाता है, मधुमाखी काट-काटके मुँह तुम्बा बना देंगी।

भैया—नहीं दुक्खू भाई, यह मधुमक्खी नहीं काटतीं। दूसरे देसोंमें लोग बहुत पोसते हैं। हमारे गाँवमें मधु निकलेगी और मोम ऊपरसे। खूब पैसा आयेगा। लोगोंको बतला देंगे, अपने घर-घरमें मधुमक्खी पोसेंगे। इसे पंचइती करनेका काम नहीं।

सन्तोखी—और साबुन नहीं बनाया जा सकता भैया ?

भैया—रेंड़ीके तेलसे चाहे तो साबुन बना लें चाहे बढ़िया महकौआ तेल। पंचइती खेतीसे सौ तरहका आमदनीका रास्ता निकल आवेगा।

सन्तोखी—आमदनी कैसे बाँटा जायगा भैया ?

भैया—खेत मालिकका बँधा हुआ अनाज पहले निकाल दिया जायगा। फिर बीज, खाद औ हथियारका दाम चुका दिया जायगा। बाकी आमदनीमें जो जितना काम किये हैं, उसी हिसाबसे बाँट दिया जायगा।

सन्तोखी—काम भी तो कई तरहका है भैया ? कोई बेसी काम करता है, कोई कम। कोई बेसी मसक्कतका काम करता है, कोई अकिलका।

भैया—'सब धान बाइस पसेरी' नहीं होगा, सन्तोखी भाई ! एक-एक दिनके कामका हिसाब होगा। एकड़का छठाँ हिस्सा एक दिनमें कोड़नेका हिसाब रखा हो और कोई आदमी तिहाई एकड़ कोड़ देगा, तो हाजिरी बहीमें एक ही दिनमें उसके नामपर दो दिनका काम दरज होगा। जो आधा काम करेगा, उसका आधा दिन दरज होगा।

दुखराम—माने कामकी तौल रहेगी। तब तो लोग खूब बेसी-वेसी काम करेंगे ?

भैया—हर फसिलमें गाँवके समूचे मरद-मेहरारू मिलके जितने दिन काम किये हैं, सब बहीमें दर्ज रहेगा। साल भरमें गाँवभरमें कितना काम हुआ, उसको हाजिरी-बही ऐनाकी तरह झलका देगी। आमदनी को उसीपर बाँट दिया जायगा।

दुखराम—और जिसका सब बखत इन्तिजाममें ही लग जायगा उसको ?

भैया—उसको भी तनखाह दी जायगी। मिस्त्रीको जास्ती पैसा मिलेगा। गाँवमें अपनी पंचइती दुकान भी होगी।

दुखराम—तब तो भैया, नून-तेलकी भी आफत न होगी। कपड़ा-लत्ता सब गाँव हीमें मिलैगा ?

भैया—गाँवमें पंचइती खेती हो जानेपर सब ठीक हो जायगा। अपनी सरकार भी जिउ-जानसे मदद करेगी। एक गाँवको नमूना बनाकर देखा देना चाहिये, फिर सैकड़ों गाँव दौड़-दौड़कर आयेंगे और कहेंगे—दुखराम भैया, चलो, हमारे गाँवमें पंचइती खेती बनवा दो।

दुखराम—और जो दू चार आदमी गाँवके सरकसई करें ?

भैया—दू-चारके सरकसईसे कुछ नहीं बनता बिगड़ता। उनका खेत एक छोरपर फरका कर देंगे।

दुखराम—और जो न माने ?

भैया—कानूनके सामने मानना न मानना कोई नहीं चलता। कानून ही मनवानेके लिए तो पुलिस-पल्टन रखी जाती है।

सन्तोखी—नावमें पानी भर रहा हो और कोई आदमी टाँग पसारकर कहे, कि हम उलीचने नहीं देंगे, तब बताओ दुक्खू भाई क्या करोगे ?

दुखराम—क्या करेंगे ? उसको टाँग पकड़कर गंगालाभ करा देंगे।

सन्तोखी—पंचइती खेतीसे बेखेतवाले लोगोंका भी बहुत निस्तार होगा।

भैया—बेखेतवाले लोगोंकी रोजीका रस्ता जो न निकाला गया, तो जैसे ही कारखाने बढ़ने लगे, वह गाँव छोड़के चले जायँगे। अब दूसरेको भूखा रखके, बाबू बनके, सूद-सवाई करके धनी बननेका जमाना गया। गाँव भरके सुखमें सुख मानना पड़ेगा और सुख होगा पंचइती खेती हीसे।

सन्तोखी—तो कारखाना बहुत बढ़ेगा भैया ?

भैया—कारखानेकी बात अब कल होगी। आज बस यहीं तक।

अध्याय १६

कल-कारखानोंका फैलाव

दुखराम—अच्छा हुआ, मँगरू ! तुम भी आ गये। बड़े मौकेसे आये। आज रजबली भैयासे कल-कारखानेकी बात हो रही है। तुमको तो गिरीडीहकी कोइलरीका हाल मालूम ही है।

मँगरू—कोइलरीकी बात क्या पूछते हो दुक्खू भाई ? हम लोग चाहते हैं, कि खूब जास्ती कोइला निकालें, देसको कोयलेका बहुत काम है, मुदा मालिक बीचमें कोई न कोई ऐसा अड़ंगा लगा देता है, कि काम होने नहीं पाता।

सन्तोखी—कोयलेकी तो बड़ी जरूरत है। हम लोग अपने गाँवमें भी चाहते हैं, कि गोबरकी खाद बनावें और पथर कोइलासे भात पकें, मुदा ई मालिक काहे बीचमें टाँग अड़ाते हैं ?

दुखराम—इसीलिए न भैयाने उनका नाम जोंक रखा है। लो भैया, भी पहुँच गये। जय हिन्द भैया !

भैया—जय हिन्द सब भाई लोगोंके ! कहो मँगरू ! कब आये गिरीडीहसे ?

मँगरू—राते आये रजबली भैया ! तीन बरस हो गया देखे, कहा, रजबली भैयासे भी भेंट कर आवें ।

भैया—अच्छा तो, आज बात भी वही होगी, जो तुम्हारे कामकी है । कल-कारखानेका बढ़ाना बहुत जरूरी है और यह काम बहुत जल्दी होना चाहिये ।

दुखराम—माने, कछुआकी चालसे नहीं होना चाहिए ।

भैया—पेटकी भूख दूर करनेके लिए पचइती खेती करनी चाहिए । देस हमारा सुतन्तर औ मजबूत तभी होगा, जब कल-कारखाना बढ़ेगा । जानते हो न "दुब्बरकी मेहरारू सबकी भौजाई ?"

सन्तोखी—और धनकी आमदनी भी भैया कारखाने हीसे ज्यादा होती है ।

भैया—बल और धन दोनों खातिर कल-कारखाना चाहिए । अब हमारा देश सुतन्तर है । हमारे पास अपनी पल्टन है । पल्टनमें कितना हथियार चाहिये और आजकलका हथियार बुद्ध ठाकुरकी लोहसारमें नहीं बन सकता ।

सन्तोखी—अपने यहाँ भी अणुआ-बम बनना चाहिए भैया ! क्या जाने, कभी किसी दुसमनकी आँख हमारे ऊपर पड़े ।

भैया—वह भी चाहिए, लेकिन सबसे पहले अपनी फौजके लिए लड़नेवाला उड़नखटोला (हवाई जहाज) चाहिये, लड़नेवाली मोटर चाहिये, और टंक भी चाहिये ।

दुखराम—टंकके बारेमें तो कहा था न भैया ?

भैया—टंक है चलता-फिरता किल्ला । जैसे किलेकी दीवारपर छोटी-मोटी तोपका कोई असर नहीं होता, वैसे ही दो-दो तीन-तीन अंगुल मोटी इस्पातकी चादरवाले टंकपर गोला-गोलीका कोई असर नहीं होता । गोला-गोलीकी बरसा होती रहे, तो भी वह चला जाता है । वह सड़कपर ही नहीं, खेत-खाई भीट-पहाड़ सबपर रेंगता चला जाता है । बड़े-बड़े घरोंको तो वैसे ही उलटते चला जाता है, जैसे सूखे पत्तेके ढेरोंको भैंसा । वह पहिया नहीं, सिक्कड़पर चलता है ।

सन्तोखी—अपनी पल्टनमें टंक है भैया ?

भैया—है, मुदा सब उधारका। माँगे हथियारसे आज-कल अपना बचाव नहीं हो सकता। संकट आनेपर अँगरेज या दूसरे देसका मुँह जोहना पड़ेगा।

दुखराम—नहीं भैया! हथियारके बारेमें मुँहजोहाई ठीक नहीं।

भैया—इसीलिए पिस्तौल, बन्दूक, तोप, टंक, उड़नखटोलासे लेकर अणुआ-बम तक सब अपने यहाँ तैयार होना चाहिए।

सन्तोखी—हमारे यहाँ कोई हथियार तैयार भी होता है भैया?

भैया—अँगरेज हमारा हथियार छीन लिए थे, इसीलिए न कि हम बाछी बन जायँ? वह भला काहे हिन्दुस्तानमें हथियार बनने देते? पिछली लड़ाईका जब चाँप पड़ा तो कुछ छोटे-छोटे हथियार बननेका इन्तिजाम किया। अच्छे किसिमके इस्पात तकको नहीं बनने देते थे। इसी लड़ाईमें एक इस्पातका भट्ठा तातको बनाने दिया। अपने देसमें न मोटर बनती, न उड़नखटोला, न टंक, न रेडियो-बाजा बनता। बताओ जो कभी देसपर लड़ाईका संकट आये, तो हमारा गला दूसरोंके ही हाथमें रहेगा न?

दुखराम—हाँ, भैया! इसमें क्या सन्देह। छोटेसे बड़े तक सब तरहका हथियार जब तक अपने देसमें नहीं बनेगा, हम निहत्थेके निहत्थे रहेंगे।

भैया—सब हथियार अपने यहाँ बनना चाहिये। हथियारका कारखाना बनेगा, तो उसीमें सवारीकी मोटर, माल ढोनेकी लारी, मुसाफिरीका उड़नखटोला भी बनेगा और देसका करोड़ों रुपया बाहरसे बच जायेगा। यही नहीं, हम अपना माल दूसरे देसमें भेजेंगे और बाहरसे भी खूब धन आयेगा।

सन्तोखी—है तो भैया ठीक! मुदा, हमारे पास कारखाना खड़ा करने और माल तैयार करनेके लिए सब चीज-बसुत भी है? फिर बेसी ईलिम भी तो चाहिए।

भैया—लोहा, तामा, कोइला, रबड़ सब चीज* अपने इहाँ है। इलिम अकिलका जो अपने यहाँ टोटा है, वह भी ऐसा नहीं है, कि पूरा नहीं किया जा सके। मतारीके पेटसे कोई इलिम-अकिल सीखके नहीं आता। बड़े-बड़े लोग हमारे देसमें आज भी हैं, जिनका लोहा दुनिया मानती है।

---

* इसके बारेमें देखो 'आजकी राजनीति।'

मँगरू—हाँ, भैया ! हम अपनी कोइलरीमें देखते हैं, कि सब बड़का-बड़का इंजिनियर और मिस्त्री अपने देसके हैं। भैया सब चीज अपने देसमें है। जल्दी अपने देसको मजबूत करना बहुत जरूरी है। अब एक-दो लोहा-इस्पातके कारखानेसे काम नहीं चलेगा।

दुखराम—कैसे काम चलेगा ? पंचइती खेतीके लिए हमें मोटर-हल चाहिये, सिंचाईके लिए अंजन चाहिये, चीनी औ सिगरेट बनानेकी कल-मसीन चाहिये।

सन्तोखी—बाहरसे सब चीज मँगानेमें एकका नौ देना पड़ेगा, फिर इतना पैसा हम कहाँसे लायेंगे ?

भैया—हाँ, सन्तोखा भाई ! छ-छ सात-सात लाख गाँव हैं ! एक-दो गाँवका इन्तिजाम करना हो, तो बेंच-खोंचकर कुछ पैसा बटोर भी ले, लेकिन कुल देसका काम इस बेंचाई-खोंचाईसे नहीं होगा। हमारे यहाँ पचासों जगह लोहा भरा पड़ा है। एक-एक जगह एक-एक ताता जैसा कारखाना खड़ा कर सकते है। छोटा नागपुरमें और कितनी दूसरी जगह ताँबा है। सब ताँबा निकालना होगा, नहीं तो कल-कारखानेकी चीज नहीं बन सकेगी। मटिया तेल खाली आसाममें निकसा है। अभी बहुत जगह उसके वास्ते भुइँसोधाई करनी है। नदियाँ सब बिजलीसे भरी हुई हैं, वह मुफुत पानी मीठा बहाके समुन्नर में ले जाकर खारा नहीं बनातीं, बलुक टालकी बटाल बिजली भी बहा ले जाती है। जहाँ नहरका बड़ा-बड़ा बान्ह बहेगा, वहाँ बिजली भी बहुत पैदा की जा सकती है और गाँव-गाँव मटिया तेलकी ढिबरी बालनेका काम नहीं पड़ेगा।

सन्तोखी—गाँव-गाँव बिजली बत्ती लग जायगी, तो गाँव जगमगा उठेगा और हमारे पंचइती गाँवमें तो सबसे पहले बिजली आयेगी। है न भैया ?

भैया—जरूर ! मुदा बिजलीसे घर ही नहीं जगमगायेगा, उससे तेल-कोइलाका खरच हट जायगा। सिंचाईके अंजनका खरच कम हो जायगा। तेल-कोइलाका अंजन न लगाकर हम लोग बिजलीका छोटा अंजन लगा लेंगे। चीनी-सिगरेटकी कल बिजलीसे चलेगी। चरकट्टी मसीनमें भी बिजली लगा देंगे, चारेका टाल लग जायेगा। मोटर-हल भी बिजलीसे चलेगा। फिर जितनी रेल है, सबमें कोयला झोंकनेका काम नहीं पड़ेगा।

मँगरू—पथरकोइलाका काम तो बन्द नहीं हो जायगा भैया ?

भैया—नहीं मँगरू ? पथर-कोइयाका खरच बहुत बढ़ जायेगा, उसीको बचानेके लिये पनबिजलीकी बहुत जरूरत पड़ेगी। लोहा, तामा, अलमुनियाको गलाकर तैयार करनेमें पथर-कोइला बहुत खर्च होगा और गोबर बचानेके लिए घर-घरमें चूल्हेके लिए पथरकोइला देना पड़ेगा। तुम घबड़ाओ मत मँगरू, कोइलरीका काम बन्द नहीं होगा। आज जितना कोइला निकलता है, उससे बीस गुना अधिक कोइलेकी माँग होगी। फिर खाली लोहा-तामाकी सिल्ली ढाल करके ही छोड़ नहीं देना है, उनसे सब कल-मसीन बनाना होगा।

सन्तोखी—हाँ, भैया ! कल-मसीन बाहरसे मँगाकर एकका नौ देना बेबूझका काम है।

भैया—अपने देसमें घड़ी बनेगी, रेडिहाबाजा और फोनूगिलाफ बनेगा। मोटर और बाइसिकिल बनेगी। बिड़लाकी तरह नहीं कि पुर्जा बाहरसे मँगा लिया और यहाँ बैठकर जोड़ दिया औ बस ! सब चीज अपने ही यहाँ ढाली जायगी, अपने ही यहाँ जोड़ी जायगी। जो चीज अपने देसमें नहीं है, उसे अपने यहाँके कारखानेका माल भेजकर बदल मँगाया जायगा।

मँगरू—मुदा जो यह कुल कल-कारखाना सेठोंके जिम्मे लगा दिया, तो सब गुर-गोबर...

भैया—ठीक कहते हो मँगरू ! बिजली, लोहा, तामा, कोइला, कल-मसीन-बनाई यही देसका जीव है। जोंकोंको अपने जीवसे खेलवाड़ करनेका मौका नहीं देना चाहिये। सेठोंके पास इतना पैसा भी नहीं है, कि ऐसे बड़े-बड़े कारखानोंको जल्दीसे देसके चारों खूँटपर खोल दें।

मँगरू—हाँ भैया ! सेठ देसकी भलाईका कभी ख्याल नहीं करते। उनको सबसे पहले अपना 'लाभ-सुभ' चाहिये, देस जाय चूल्हा-भाड़में। हम लोग कोइलाखान वाले मजूर तिलमिलाकर रह जाते हैं। हम चाहते हैं कि बेसीसे बेसी कोइला निकालें, मुदा सेठ सोचता है—बेसी कोइला निकला, तो सस्ता हो जायेगा, नफा कम होगा। फिर सेठ ऐसा तिकड़म लगाता है, कि कोइलरीमें हड़ताल हो जाय।

दुखराम—माने मजूर लोग काम करना छोड़ दें, और कोइला निकलना बन्द हो जाय। यह भी तो कसाईका काम है।

भैया—कोइला सबकी जड है दुक्खू भाई! कोइला कम हुआ कि कारखानाको रोकना पड़ा, रेलको कम करना पडा। सब जगह मजूर बेकार हो जायेंगे औ कारखानोंसे कपडा और दूसरी चीजोंके न उपजनेसे देसभरमें हाहाकार मच जायगा।

मँगरू—तो भैया जो काम देसके जीवकी तरह है, उसे कभी सेठोंके हाथमें देना नहीं चाहिये।

भैया—अभी तक जो सेठोंके हाथमें लोहा-कोइला, पनबिजलीका काम है, सबको सरकार हथिया ले, और आगे खूब जोर लगाके नये-नये कारखाने खोले। पनबिजली भी बढ़ाना चाहिये, नहीं तो सचमुच ही कोइलेसे पूर नहीं पड़ेगा। पनबिजली तो हमारे यहाँ अलमगंज है। सतलज, बियास, जमुना, गंगा, रामगंगा, सरजुग, रापती, गंडक (नरइनी), कमला, कोसी, ब्रह्मपुत्र, सौन, दमोदर, महानदी, नरबदा, तापती, गोदावरी, किसुना, काबेरी...देखो न कितनी बड़ी-बड़ी नदियाँ अपने देसमें हैं?

दुखराम—और नदियाँ सब सिंचाईका पानी कामकी बिजली बेकार बहाये लिये जा रही हैं।

भैया—हाँ, सबको जूएमें नाधना होगा। बाँध बाँधके पाचासों कोसका समुंदर एक-एक जगह बनाना होगा।

दुखराम—इसमें तो बहुत आदमियोंको काम मिलैगा।

भैया—एक-एक समुन्दर बनानेके लिए चार-चार पाँच-पाँच लाख आदमियोंका काम पड़ेगा। मुदा अपने यहाँ आदमियोंकी क्या कमी है?

सन्तोखी—कलकत्ता बम्बईकी चटकल-पटकल गाँवके मजूरोंको कलकत्ता खींच ले जाती रही। लडाईके बतखमें हवाई जहाजका अड्डा जब जगह-जगह बनने लगा, तो गाँवमें मजूरोंका मिलना मुसकिल हो गया। आदमीके बिना कहीं पंचइती खेतीमें तो हरज नहीं होगा?

मैया—मजूरोंकी कमी तो जरूर होगी दुक्खू भाई ! पंचइती खेतीसे फरक रहने वाले गाँवों के मजूर तो फुरसे उड जायँगे ।

दुखराम—अच्छा ! तब देखेंगे, बबुआ तिवारीका हल कैसे चलता है । मजूरी देते समय बडा सतजुगका अइन-कानून छाँटते हैं !

सन्तोखी—इसके वास्ते भी पंचइती खेतीका रास्ता ही ठीक मालूम होता है । मरद-मेहरारू सबको काम मिल जायेगा ।

मैया—कल कारखाना खूब जोरसे जो बढ़ाया गया, तो पचीस बरसमें अपना देस धनधानसे अटूट हो जायगा, कहीं कोई भूखा-दूखा नहीं रह जायेगा ।

मँगरू—जो कोइलाकी खान सेठोंके हाथसे निकलके समूचे देसके हाथमें चली आएगी, तो हम लोग खूब हुमुचके काम करेंगे, और कोइलाका कभी टोटा नहीं पड़ने देंगे ।

मैया—हाँ मँगरू, और लोहा, तामा पन-बिजुली सब जगह मजूर हुमुच-हुमुचके काम करेंगे । मजूरको जब मालूम होगा, कि वह सेठकी थैली भरनेके लिये नहीं काम कर रहा है, वह देसकी भलाईके लिये काम कर रहा है, तो न रात गिनेगा न दिन, खूब मन लगाके काम करेगा ।

मँगरू—हाँ क्या, हम आधा-पेट भूखा रहके भी देसके लिये काम करेंगे । मुदा सेठोंकी ही सरकारमें भी चलती है । पुलिस भी उनकी ही मदत करती है ।

मैया—आज तो सेठोंकी ही सरकार है । मजूर, इलिमदार लोग मिलकरके सब चीजका इंतिजाम करेंगे, तभी ठीकसे काम चलेगा । जोंकोंको बिदा करन ही होगा ।

मँगरू—तब सब जगह सांती हो जाएगी मैया । फिर काहे कोई हड़ताल करेगा ? आमदनी-खरच हम लोगोंकी आँखोंके सामने रहेगा और हम उतनी ही मजूरी लेंगे, जिसमें काम भी चलता रहे, और हमारी भी रोजी चले ।

मैया—खाली रोजी ही नहीं, मजूरोंके लड़कोंके पढ़ानेका इंतिजाम करन होगा । रहनेके लिये सूअरकी खोभार नहीं, पक्का मकान बनाना होगा । अस्प ताल, दवा-दरपनका पूरा इंतिजाम करना होगा । कमासुत पूतका खाली पेट भ देनेसे छुटकारा नहीं लेना होगा ।

सन्तोखी—और कपड़ा, चीनी और दूसरे कारखानोंके बारेमें क्या होगा भैया ?

भैया—कल-कारखाने तो सभी देसके हाथमें होने चाहिए, जोंकोंके हाथ में रहनेमें बहुत गड़बड़ होती है।

मँगरू—हाँ भैया, सेठ खाली अपनी थैलीकी ओर देखते हैं। चीज कमसे कम पैदा करके महँगा बनाकर सो भी चोर बाजारमें बेंचकर थैली भरते हैं।

सन्तोखी—और चीज मँहगी होनेसे समूचे देसको तकलीफ होती है।

भैया—आजकल जो देसमें चीज इतनी मँहगी है उसका कारन यही है, कि चीज कम पैदा होती है और खरीदनेवाले जादा है। सरकार जब चीजके भावपर अंकुस रखती है तो जोके चोरबाजारी करने लगती है और लोगोंकी आँखमें धूल झोंकके एकका नौ लेती हैं। मुदा पहले कुछ साल तक छोटे-मोटे कारखानोंको सेठोंके हाथमें रखना होगा।

मँगरू—तब तो मजूरोंका गला रेता गया न भैया ?

भैया—एक ही दिनमें मँगरू, सब कारखानोको लेनेकी जरूरत नहीं। पहले जड़को पकड़ना चाहिए। पन-बिजली, लोहा, तामा, कोइला, मशीन और रसायन बनानेका कारखाना देसके हाथमें चला जाना चाहिए, और दूसरे कारखानोंपर पूरा अकुस होना चाहिए, जिसमें मजूर हकसे बेहक न हों उनको पूरी मजूरी मिलनी चाहिए। रहनेके लिये अच्छा मकान बनना चाहिए। स्कूल-अस्पतालका पूरा इंतिजाम होना चाहिए। मजूर-सभासे बिना पूछे किसी मजूरको निकालना नहीं चाहिए। कारखानेके इन्तिजाममें भी मजूरोंके आदमी होने चाहिए। सेठके नफाको भी मनमाना नहीं होने देना चाहिए। पहले इतना हो जाना चाहिए। पीछे तो फिर जोंकोंको हटाना ही है।

मँगरू—मुद भैया, सेठ इसपर राजी होंगे ? कितने सालोंसे उनके मुँहमें खून लगा है। बड़े-बड़े भगत सेठ लोगोंको देखा है चींटीको चीनी सतुआ खिलाते हैं, मुदा मजूरका गला काटनेके लिये सबसे बड़े कसाई हैं।

भैया—यह तो लोगोंके हाथमें है मँगरू। जानते हो न, अब सरकारमें वो

ही लोग जायेंगे जिनको २०-२१ सालसे बेसी उमिरवाले सब मरद मेहरारू बोट देंगे।

दुखराम—तो भैया अब बोट खाली पैसेवालेके हाथमें नहीं है?

भैया—नहीं अब बोटमें न गरीब अमीर देखा जायगा, न मरद मेहरारू। सब लोग जिसको अपना बोट देके चुनेंगे वही जाकर राज-काज चलानेके लिये अपनी सरकार बनायेंगे। जो लोग चाहेंगे कि जोंकें रहें, तभी जोंकें रह पायेंगी।

सन्तोखी—लोगोंमें तो बेसी जोंकोंको अपना दुस्मन ही समझते हैं, फिर कौन जोंकोंको बोट देने जायगा भैया?

भैया—यह न कहो सन्तोखी भाई। लोगोंकी आँखमें धूल झोंकनेकी बिद्या जोंकें बहुत जानती हैं। वह भेस बदलके बहुरुपिआ बननेमें बहुत हुसिआर हैं। वह तो तुम्हारे पास आएँगी गोरच्छाका झंडा लेके कहेंगी जो हमको बोट न दोगे तो हिन्दू-धरमका छयकार हो जायगी।

सन्तोखी—बहुत बड़ा खतरा है भैया! जोंकें जातका नाम लेके आएँगी। अपनी मुढ़ताईसे लोग बहक जाते हैं, औ नहीं जानते कि जोंकोंकी कोई जात नहीं होती, वह सबका खून चूसती हैं।

भैया—बहुत सजग रहनेकी जरूरत है। जोंकोके फंदेमें जो पड़े तो फिर देसके सुतन्तर होनेसे कोई फायदा नहीं। उसी तरह हम भूखों मरेंगे।

सन्तोखी—हमको तो बराबर मनमें आ रहा है, वही हरसाल सत्ताईस लाख खवैया मुँहके बढ़ने और तीन अरब रुपिया भेजके बिदेससे अनाज मँगानेका। हमें किसीके धोखेमें नहीं पड़ना चाहिए, और जोंकोंके लिए तो एक भी बोट नहीं देना चाहिए।

भैया—हाँ, सब लोगोंको यह गाँठें बान्ह लेना चाहिए औ हिन्दू-मुसुलमानके नामपर मरना नहीं चाहिए। गरीबोंकी भलाई होगी, तो हिन्दू-मुसुलमान दोनोंकी! जोंकोंका जाल चला, तो मरना होगा हिन्दू-मुसुलमान दोनोंको।

दुखराम—यह जोंकों और कमेरोंकी खड़ाई कब तक रहेगी?

भैया—यह तब तक रहेगी, जब तक कि जोंकोंका टाट नहीं उलट जाता।

मँगरू—लड़ाई बहुत संगीन है और चारों ओर घूम रहे हैं बहुतसे रँगे सियार। देखें कैसे कमेरोंका बेड़ापार होता है।

भैया—बेड़ा जरूर पार होगा मँगरू। मुदा कमेरोंके हकके लिये लड़नेवाले जो आपसकी लड़ाई छोड़ दें तब।

मँगरू—हाँ क्या, इससे बड़ा नुकसान होता है। कमेरोंके लिये सोसलिस्ट भी लड़ते हैं, कमुनिस्ट भी लड़ते हैं, फरवरवलाकी भी लड़ते हैं; करान्तिवाले सोसलिस्ट भी लड़ते हैं, मुदा फिर आपसमें लड़ते बखत कमेरोंकी बात भूल जाते हैं। हम लोग तो बड़ी दुविधामें पड़ जाते हैं।

भैया—हाँ ठीक कहा मँगरू। असल मुद्दा है कमेरोंका राज बनाना, लेकिन अपनी मुहताईसे अपने-अपने दल औ पार्टीको ही वह असल मुद्दा समझ लेते हैं। चाहे, जो जिस पार्टीमें हो, उसमें रहे। अपना देस इतना बड़ा है, कि सब पार्टी के लिये जगह है मुदा कमेरोंकी भलाई मनमें रखते और मरकस बाबाके चेला होते जो आपसके मनमुटावको फरका रखके जोंकोंसे लड़नेमें आगे नहीं रहता, वह बहुत नालायक है। देस सुतन्तर हो गया, लेकिन किसान-मजूर और कलम-घिसवैया मजूरोंकी दसा पहले से भी बुरी है। अब सबको एक साथ उठके विजय-पताका गाड़नी है।

अध्याय २०

कमेरोंका राज

चौपालमें कोयला-मजूर मँगरू, गाँवकी छोटी दुकानवाले सन्तोखी, और किसान दुखराम बैठे किसीकी बाट जोह रहे थे। इसी बेरा रजबली आते दिखाई पड़े। तीनोंका मन हरा हो गया और पास आते ही 'भैया, जै हिन्द' कह कर उन्होंने स्वागत किया। आज भैया ही ने बात मुरूकी—सब भाई जानते हैं, कि लड़ाईके समयमें कितनी तकलीफ हमारे देसके गरीबोंको भोगनी पड़ी, पिछले छ बरसमें तो हद हो गई। हर साल नेता लोग कहते रहे अब अच्छा दिन लौटेगा, मुदा अच्छा दिनका कहीं पता नहीं।

मँगरू—पता कहते हैं भैया, औ अच्छे दिनका। आज तो नोन-तेल-लकड़ी जुटाना भारी मुस्किल है।

दुखराम—मँगरू भाई, सहरके लोग समझते होंगे, कि नून-तेल-लकड़ीका चाहे कुछ भी दुख हो, मुदा किसानोंको अन्नका कोई काल नहीं है।

मँगरू—हाँ दुक्खू भाई, झरिया वैसे तो कोइलरीके लिए मसहूर है, हजारों मजूर धरतीके पेटमें पैसके कोयला निकालते हैं, मुदा, हम लोगोंकी कमाईमें हिस्सा लेनेके लिए बनिया-महाजन भी बहुत बस गये हैं। ऊ लोग कहते हैं, कि आजकल जब सेर-सवा-सेरका चाउर बिक रहा है, तो सबसे मौजमें गाँवके किसान हैं।

दुखराम—आनके मुँहकी बहुरी (भुना हुआ जौ) बहुत मीठी लगती है। सहरके सेठ या बाबू लोगोंको क्या पता, कि हमारे गाँवमें आधे लोगोंके पास खेत ही नहीं है। वह मजूरी-बनिहारी करके जीते हैं।

मँगरू—सो भी सालमें कुछ ही दिन। जो सूखी रोटी भी मँडुआ-बजराकी मिल जाती, तो दुक्खू भाई, हम लोग काहे झरियामें जाकर दिन-रात खटते, गाली-मार सहते और घरके बेकत-परानीको दुख सहनेके लिए छोड़ जाते? भैया, तुम तो गाँवके हो और सहर, देस-परदेस भी देखे हो, हमारे लोगोंकी तकलीफ तुमसे छिपी नहीं है।

भैया—मँगरू भाई, हमारे देसमें मुट्ठीभर लोग हैं, जिनको अँगुरी पर गिना जा सकता है, वही मौजमें हैं और उन्हींके लिए ई सुराज भया है।

सन्तोखी—भैया, हमको तो दिखाई पड़ता है कि खाली सेठ लोग ही मौजमें हैं।

भैया—हाँ, सन्तोखी भाई, चोर-बजरिहा लोग बड़ी मौजमें हैं। एक लगावे चार पावेकी कहावत उनके लिए ही ठीक है। मुदा, ई मत समझो कि सहर-बजारमें जितने लोग कपड़ा, अनाज या दूसरी चीज चोरी-चोरी बेच रहे हैं, सब सुख और निचिन्ताईमें हैं। ठीकसे देखो, तो पता लगता है कि लखपती चोर-बजरिहा भी तुमसे अच्छी दसामें नहीं हैं। जो कभी पकड़-धकड़ होती है, तो यही पकड़े जाते हैं, बड़े-बड़े चोर-बजरिहोंको कोई नहीं पूछता। सबसे बड़े दस-

बारह चोर-बजरिहा हैं, उनका ही तो ई राज है। सुराज भया है, तो उन्हींके लिए। यह देसका गला रेत रहे हैं, मुदा कोई पुछवैया नहीं।

सन्तोखी—तो भैया, लखपती चोर-बजरिहाका भी कोई ठौर-ठिकाना नहीं है।

भैया—नहीं सन्तोखी भाई, ऊ तो वही घाघ चोर-बजरिहोंके दलाल हैं। थोड़ीसी दलाली इनको मिल जाती है, और जोखिम भी इन्हींको उठाना पड़ता है, बाकी समूचा धन तो बहकर वहीं बड़े चोर-बजरिहोंके घरमें चला जाता है। जिस बखत देसके ऊपर आखिरी संकट आयेगा, इनका टाट उलटनेमें देर नहीं होगी।

दुखराम—कहो भैया, ई लोग तो दुनिया भरका धन जमा करके घरमें रख रहे हैं।

सन्तोखी—दुक्खू भाई, हम तो न लखपती हैं न हजारपती। कुछ सौ रुपयाका सौदा-सुलुफ खरीदके ले आते हैं औ उसीसे चार पैसा कमाके लड़का-परानीको जिलाते हैं। मुदा हमें मालूम है, कि कितनी बेईमानी, सैतानी करनी पड़ती है, औ हम कितना जोखिम उठाते हैं। कहनेको तो कहते हैं कि कंटरोल लोगके फायदेके लिये किया गया है, मुदा यही समझो कि पहले खाली पुलिस और कचहरीके अमलाकी लूटके मारे लोग परेसान थे, और अब कंटरोलकी आड़में जो कुछ हो रहा है, उसकी कुछ न पूछो।

मँगरू—तो भैया, कन्टरोलवा उठाय काहे नहीं दिया जाता?

भैया—मँगरू भाई, यही तो बड़ी-बड़ी जोकें, बड़े-बड़े चोर-बजरिहा रात-दिन रट लगाये हैं। एक बार उन्होंने गाँधीजीको भी भरमाय दिया और जैसे ही कपड़ासे और-और चीजसे कन्टरोल हटा, कि इन अतताइयोंने दाम दूना चौगुना चढ़ाके अरबों रुपया लूटके धर दिया। देखा नहीं कपड़ा कितना मँहगा हो गया।

दुखराम—तो भैया कन्टरोल रखने पर सिपाही-चपरासीसे लेके हाकिम-हुकुम, सरकारी मन्तरी तक सब जगह घूंस-रिस्वत की बाढ़ आ जाती है। क्या किया

जाय ? हमारी तो सीधी-साधी अहिरकी जात है। जहाँ कोई रास्ता नहीं दिखाई पडता, वहाँ लाठीसे रास्ता निकालते हैं।

भैया—दुक्खू भाई, आज-कलके अणुवाँ बम, तोप, टक, बन्दूक, मसीन-गनके जमानेमें लाठी बेचारी क्या करेगी ?

दुग्वराम—भैया तो क्या करें, गाँवमें आधे लोगोंके पास खेत नहीं हैं। जिनके पास खेत नहीं हैं उनमें हमहूँ हैं। खाली नाँव रखनेके लिये दस परानी खातिर चार बीघा खेत है। चैतमें पेट भरता है, बैसाखमें मुसरिया हाथ खींच लेती है और बडे मुस्किलसे आधे असाढ तक आधा पेट देके लडके-बालकोंको जिलाती है। यही दसा गाँवके सौमें दस घर छोड़कर सबकी है। अनाज मँहगा हो गया है, तो इससे लाभ है खाली ओहीं सौमें दस घरवालोंको जिनके पास खानेसे फाजिल अनाज है। कपड़ा खरीदने जाते हैं, तो दाम सुनके टाँग थहराने लगती है। लौट आते हैं, लेकिन लडिकनको जैसे लँगोटी पहनाके वैसे सेहरियन-को तो नहीं रख सकते। अब तो नाकमें दम आ गई है।

भैया—दुक्खू भाई, तुम समझते होगे कि गाँवके गरीब किसानोंको ही नरक भोगना पड रहा है। यही दसा बजारके हजारपती नहीं कितने ही लखपती बनियोंकी भी है। भले दिनके आसरा पर मुनाफा नहीं मूल खा-खाके उनमेंसे कितने ही आज बडे संकटमें फँसे हैं। कलम घिसवइया बाबू लोगनकी तो दसा हमसे-तुमसे भी खराब है। लडका-लड़कीके पढ़ानेके लिए पैसा कहाँसे लावे, जब तनखाहमें से रुपयामें बारह आना नून-लकड़ीमें ही चला जाता है। लड़की सयानी हो जाती है, पैसा नहीं कि बियाहका इंतिजाम करें।

सन्तोखी—हम तो समझते थे भैया, कि बाबू लोग बड़े मौजमें होंगे, चोर-बजरिहा जैसे मुनाफा कमा-कमाके घरमें रुपया गाँज रहे हैं, वैसे बाबू लोग घूस-रिस्वत ले लेकर।

दुग्वराम—हाँ भैया, जब अँगरेज लोग भाग गये और अपने देसके नेता लोगके हातमें राज आया, तो बड़ी उमेद भई थी और घूस-रिस्वत लेनेवाले बाबू-भैया डर भी गये थे, मुदा अब कुछ ना पूछो। दरोगाजी नम्बर दसमें नाँव लिखनेकी धमकी देके घरका थाली-लोटा सब बिकवा रहे हैं। 'केतेक दिनवाँ,

हो केतेक दिनवाँ' कब तक ई कुल सहना पड़ेना। आगम तो अँधियारा मालूम होता है। भैया, अब तक हमारे जैसे लोगोंको आखिरमें लाठीका सहारा रहा, सोई तुम मना करते हो।

भैया—देसमें जो लोगोंको इतनी सासत सहनी पड रही है और अँगरेजोंके जानेके बाद दिन पर दिन दसा और खराब होती गई, इसे देखके तुम कहोगे कि अपने भाई लोगोंके हातमें अब तो सरकार है, अब काहे ई सब होता है।

मँगरू—भैया, हम कहें। हमें तो बूझ पड़ता है, कि जोकें किसीके भाई-बहन नहीं होतीं। जिसका भी खून उन्हे मिले, उसके देहमें मुँह लगा देती हैं, औ पेट भर जाने पर भी खून खींचती ही जाती हैं। वही जोकें ना हमारी सारी विपदाका कारन हैं?

भैया—ठीक कहा मँगरू भाई, ई सरकार भी जोकोंकी है, जोंकोके लिये है। काजलकी कोठरी है न? ईमानदार कांगरेसी भी सरकारमें गये थे। कुछने छ महीना अपनेको रोका, कुछने एक बरिस और किसी-किसीने कुछ और दिन, मुदा देखा की उनकी तपस्सासे कुछ नहीं होनेवाला है। सब जगह 'राम नामकी लूट है, लूट सकै सो लूट।' जोकोंने उनके सामने भेंट-सौगात, बेटा-बेटीके बियाह-सादीमें पूजा-पतिस्टाके नामसे सोना असरफी फैला दिया, हजार नहीं लाख-लाखके नोट हातमें थमा दिया।

सन्तोखी—हाँ भैया, देखते तो हैं, कल तक जिनको फटा लतरा नहीं मोवस्सर रहा, आज ऊ अपनी मोटर चढ़े घूमते हैं।

भैया—कितनोंने तो सन्तोखी भाई, मोटर लेनेको भी रोजगार बना लिया। कन्ठरोलमें छ हजारकी मोटर ली, औ चोर-बजरियोंमें चौदह हजारमें बेंच दी।

दुखराम—हमारी बूझमें आता है भैया, कि घूस-रिसवत लेनेवाले और चोर-बजरिहा लोगोंके मुँहमें खून लग गया है, मुँह लगा खून नहीं छूटता। फिर बताओ लाठी छोड़ इसकी कौन दवा है?

भैया—दुक्खू भाई, हत्याका रस्ता ठीक है कि बेहत्याका, इसके बारेमें हम यहाँ कुछ नहीं कहते। अततताईको जानसे मारनेमें दोस नहीं है। इहै बात ठीक है। मुदा ई बात भी मनमें गठियाय लो, कि जैसे अँगरेज हमारे देसकी जनतासे

डरते रहे, वैसे ई उनकी गद्दी सँभालनेवाले हमारे नेता लोग भी डरते हैं। इसीलिए इन्होने अँगरेजोंके समयके सभी कडे-कड़े आईन-कानूनोंको बनाये रखा। कांगरेस एक बेरा चिल्लाय-चिल्लायके अँगरेजोसे कहती थी, कि हथियारका कानून रद्द करो, उसे बनाके तुमने देसको निहत्था कर दिया। मुदा कांगरेसिया लोग जब गद्दी पर बैठे, तो ऊ कानून जैसाका तैसा आजहू काल चल रहा है। जो जगली जानवरके मै चोर-डाकूसे बचनेके लिए बन्दूकका लैसन माँगो, तो पूछा जाता है तुम कै सो एकम-टिक्कस देते हो, तुम खान्दानी हौ के बेखान्दानी।

दुखराम—तो इसका मतलब तो यही हुआ न, कि दुक्खूके हाथमें लाठी छोड़ बन्दूक न आने पावे।

भैया—मुदा, बन्दूक क्या तोप और टैंकसे भी बढ़कर हथियार जनताके हाथमें आगया है।

मँगरू—सो क्या भैया ?

भैया—ऊ है इकइस बरससे बेसी उमिरके सब मरद-मेहरियोको सरकार चलाने खातिर-मेंम्बर-पन्च चुननेका हक मिला है।

दुखराम—पंचाइतके चुनावमें तो हम सब नान्ह जातके लोग इकवट गये रहे, औ कितना गाँवनमें बाभन-छत्री-लाला लोग हमारी गोड़धरिया करते रहे, दाढ़ी सुहराते थे, कि भैया हमको भी वोट देदो, जे हम भी पंचाइतमें चले जायँ। मुदा रंगुवा सियारनको हम भली-भाँति पहिचानते हैं। हमने जो बाभन-छत्री-लालामें किसीको पंच बनने भी दिया, तो उन्हीं जवाननको, जो जोंकोंको नहीं पसंद करते।

भैया—बड़ी जातके गरीबोंकी ई मुढ़ताई है दुक्खू भाई, जो अपनी जातका होनेसे जोकोको अपना समझते हैं। फिर जिनको नान्ह जात मै अछोप (अछूत) कहते हैं, उनको तो सदा चूसते रहते। पनपनें नहीं देते, देहपर मांस नहीं चढ़ने देते। अपमान और बेइज्जती तो पग-पगपर करते ई हैं। इसीलिए पंचायतके चुनावमें छोप-अछोप, हिन्दू-मुसलमान सब नान्ह जातके लोग एक हो गये। जानते हो न सौमें बीस ही बड़ी जातके लोग हैं। चाहे बाभन-छत्री-लाला हों चाहे शेख-सैय्यद, मुगल-पठान हों। बाकी अस्सी नान्ह जातके लोग हैं। जौं

नान्ह जातके लोग एक हो जायँ, तो अपने बलबूतापर वह कमेरोंका राज बना सकते हैं। समझानेपर बड़ी जातके कमेरे भी समझ जायँगे, कि जोकोंके साथ रहनेमें उनकी भलाई नहीं है। जोकोंने उन्हे अपनी जातका कहके बड़ा जो बनाया है, वह खाली ठगनेके लिये।

मंगरू—लेकिन भैया, बड़ी जातके कमेरोंकी आँखोंमें पट्टी बँधी है, हम कमुनिस्तोंकी बात नहीं करते, वो तो तन-मन-धनसे कमेरोंका राज चाहते है। झरियामें हम रोज देखते हैं। वह जात-पाँत कुछ नहीं मानते। जो भी कमेरे हैं, उन सबको अपना भाई समझते हैं औ हम भी उनके खातिर परान देते हैं।

दुखराम—भैया तुमने जो जोंक पुरान सुनाया था औ कहा कि मरकस बाबाने जोंकोंसे बचानेके लिये कमेरोंको रस्ता दिखाया। उनका रस्ता तो हमें बहुत ठीक जँचता है। कमेरे खाली मरकस बाबाके चेलोंपर ही भरोसा कर सकते हैं।

भैया—औ उनके हात-पैर तुम्ही लोग हो, दुखबू भाई, खूटेके बल पर बछरू कूदता है।

दुखराम—तो भैया, काहे नहीं हम सब लोग कमुनिस्तोंको ही अपना वोट देके सरकारमें भेजें?

भैया—दुखबू भाई, हमारा देश बहुत बड़ा है। पैंतीस करोड आदमी रहते हैं। कमुनिस्त इतने अधिक नहीं हैं, कि हर जगह पहुँच सकें, मुदा ई बात ठीक है कि हम उनपर ही विश्वास कर सकते हैं, वह जोंकोंके फंदे में नहीं पड सकते।

मगरू—भैया ऊ तपे हुए सोना हैं। हमने कोयलरीमें देखा है, कैसे पुलिस उनके पीछे हाथ धोके पड़ी रहती है, हाथमें आते ही जेलमें बन्द करके सासत करती है। सांसत ही काहे जेहलमें उनके ऊपर गोली भी चलाई और कितनों को मारा। हमारे कोयला मजूरोंके भीतर काम करने वाले एक जनेका भाई तो उसी गोलीसे जेलमें मरा।

संतोखी—काहे भैया हात-पैर बाँधके जेलमें डाल देनेपर भी उनको गोलीसे मारा जाता है?

भैया—संतोखी भाई, जो काम अंग्रेजोने नहीं किया था, वो काम इस

सरकारने किया है। कमुनिस्तोंका यही दोस है, कि वह जोंकोंका पछ नहीं करते औ जोंकोंका टाट उलट कर कमेरोंका राज बनानेके लिये काम करते हैं।

दुखराम—तो भैया हम तो कमूनिस्तोंको ही बोट देना अच्छा समझते हैं।

भैया—बताया नहीं कि कमूनिस्त सब जगह के लिये नहीं मिल सकते, औ सब जगह वह खड़ा भी नहीं होना चाहते।

दुखराम—सो क्यों भैया ?

भैया—वह चाहते हैं कि कमेरा-राज चाहने वाले जितने लोग हैं, सबका एक गोल बन जाये औ इसी गोलके गोल सब जगह खड़े हों।

दुखराम—जो हम लोग समझ-बूझके बोट दे, तो कमेरा राज बन जायेगा भैया ?

भैया—पहले ई विस्वास है तुम्हें कि कमेरा राज बननेसे ही हम लोगोंका दुख दूर होगा, रोटी-कपड़ा मिलेगा।

दुखराम—हाँ भैया, जब तक जोंकोंका राज रहेगा तब तक उन्हींके बेटा-बेटी मौज करेंगे।

भैया—तो कमेरा-राज बनानेका एक ही रस्ता है कि कमुनिस्तोंके गोलका जो भी आदमी पंच (मेम्बर) होनेके लिये खड़ा किया जाय, उसीको बोट दिया जाय। ई समझ रक्खो कि सौमें से अस्सी बोट देने वाले नान्ह जात के ही हैं, जो जुग-जुगसे पीसे औ सताये जा रहे हैं।

दुखराम—गाँव-पंचायतके चुनावमें तो भैया कमुनिस्त नहीं दिखाई पड़े थे, अबहूँ कहाँ दिखाई पड़े हैं ?

भैया—आजकल देशमें दू गोल है। दोनों गोल चाहेगी कि जाके सरकार-को अपने हाथमें ले लें।

संतोखी—एक गोल तो जानते हैं भैया, जोंकोंकी है, चाहे ऊ कंग्रेसका नाम ले, गांधी बाबाका नाम ले, राम-राजका नाम लें, हिन्दू सभाका नाम लें। मुदा दूसरा गोल कौन है।

भैया—दूसरा गोल है कमूनिस्त और उनके साथी-समाजियोंका।

दुखराम—तब तो भैया हमारे पास जो भी आवैगा बोट माँगने, उससे पूछे

कि तुम कौन गोलके हो। अपनी नान्ह जातिके आदमी पर हमको भरोसा है, मुदा सेठ लोग सबको चाँदीके टुकड़ासे खरीद लेना जानते हैं। हम कहेंगे कि तुम जो उस गोलमें हो, जिसमें मरकस बाबाके चेला और जोंकनके दुश्मन कमूनिस्त लोग हैं, तब तो ठीक है। नहीं तो हम जात-भाईके फेरमें नहीं पड़ते।

मंगरू—हाँ भैया, काग्रेस और गाँधी बाबाके नामके धोखामें अब हम लोग नहीं पड़ेंगे। झरियामें मजूरनकी गलीमें तो गाँधी टोपी देके जो निकल जाये, तो लड़के थू-थू करने लगते हैं। हमारी चमारकी जात देखते हो न नान्ह जातमें भी कितनी छोटी है, औ हमसे दुखिया दुनियामें कोई नहीं है। अपनी जातके एक जनेंको वोट देके हमने मेम्बर बनाया, अँगरेजके जानेके बाद जब उनको मंतरी बनाया गया, तो खुशीके मारे हम लोगोंकी छाती फूल गयी। मुदाका देखते हैं। ऊ सोरहो आना जोंकोंके हाथमें हैं। सेठ लोग वैसे तो चमारको अपने ओसारेके पास भी नहीं आने देते, मुदा हमारी जातके इस मंतरीकी सेठ-सेठानी लोग आरती उतारते हैं। ऊ भला कमेरा राज कभी होने देंगे? दुखराम भाई, अपनी जातके या नान्ह जातके आदमीको वोट देनेमें भी समझ लेना होगा, कि वह जोंकोके हाथमें तो नहीं चले जायेंगे। सेठ लोग दस-बीस लाख रुपया देके मालामाल करेंगे। नान्ह जातके मतरीकी कोठा अटारी खड़ी हो जायगी। उनकी मेहरियोंके गलेमें खाली सोना ही सोना चमकने लगेगा, मुदा दस पाँच लखपती बना देनेसे हम लोगोंका दुख दूर नहीं होगा।

दुखराम—तौ भैया, हमें बहुत ठोक-ठाकके आदमीको परखना होगा।

संतोखी—दमड़ीकी हंडिया खरीदते हैं, तब भी ठोंक-ठठाके देखे बिना नहीं लेते।

मंगरू—औ 'दमड़ीकी हंडिया गई कुत्तेकी जात पैचानी गई' का ख्याल करके हमें रह नहीं जाना चाहिये।

भैया—रह जानेके माने है, अपनी गरदन फिर उन्हीं खून चूसनेवालोंके हाथमें थमा देना। औ यह भी ख्याल रक्खो, कि अबकी बड़ा राम-नामा

तैयार हो रहा है। पाँच बरस तक लूटके घर भरनेवाले औ देशको रसातल पहुँचाने वाले लोग फिर राम-नामा ओढ़के बोट माँगने आये।

दुखराम—हम राम-नामाके फेरमें नहीं पड़ेंगे भैया। हम राम-नामाके भीतरके मुँहको पहिचानेंगे नहीं क्या, कि यह वही भगत है जो छप्पन चूहा खा चुके हैं, और अभी तक इनकी भूख नहीं गई है।

मंगरू—सुनते हैं भैया, अब कांग्रेसवाले भी कहने लगे हैं कि हम भी कमेरोंका राज चाहते हैं।

भैया—कमेरोंका राज कैसा चाहते हैं, यह तो उनके छः बरसके राजसे खूब मालूम हो गया। जमीदारी उठा देनेकी बड़ी-बड़ी बात करते थे, मुदा उसमें भी इतने छन्द-बन्द लगाये, कि पहले तो उनका बनाया कानून ही गैर कानून हो गया औ अब जमीदारी उठाना नहीं बलुक जमीदारोंका तोंद भरना चाहते हैं और हम लोगोंका हाड़-मांस कूट पीस रहे हैं। कहते हैं कि राजा लोग अपनेसे अपना राज राजी खुशी छोड़ दिये, औ साधू-सन्यासी बन गये। मुदा, संतोखी भाई राजा लोग राजी खुशीसे राज छोड़के चले गये, यह सोरहो आना झूठ है। परजा राजाको खानेको तैयार थी, सैकड़ो बरसोंके उनके जुलुम और पापको देखते-देखते वह अकुता गई थी। कांग्रेसवालोंने जो किया, वह यही कि राजाओंको परजाके क्रोधसे बचा लिया औ साथ ही बीस-बीस तीस-तीस लाख सालियाना उनके लिये पिन्सन दे दी, जमीन-महल बंगला-धन जेवर जो दिया सो अलग।

संतोखी—हम कब तक अपना खून पिला-पिलाके इन सड़ी जोंकोको मोटी करते रहेंगे।

भैया—जब तक कमेरोंका राज नहीं होगा, तब तक खून चूसनेवाली जोकें पहलेसे भी बेसी दाँत पर सान चढ़ाये बनी रहेंगी। मुदा, अब समझ जाओ, की कमूनिस्त चाहे थोड़े ही हों वह जोंकोंके खिलाफ जितनी भी पार्टी, दल, गुट है, सबका एक गोल बाँधके कमेरोंका अपना राज बनानेका इंतजाम कर रहे हैं।

दुखराम—तब तो भैया, हम नान्ह जातवाले अपने नेता लोगोंको भी कहेंगे, कि जो ईमानदारीसे कमेरोंका राज बनाना चाहते हो, तो पहले मरकस बाबाका

गुर-मंतर ले आवो और कमूनिस्तोंके गोलमें मिलजाओ। जो कमूनिस्त कौन-सल में दिल्ली वाली पंचायत (पार्लियामेन्ट) में ना जायेंगे, तो रास्ता कौन बतलायेगा।

भैया—रास्ता बतलानेके लिए दस-पाँचका चला जाना बहुत है।

दुखराम—तो भैया, कमूनिस्त लोग डिल्लीकी पंचायतमें अपने ही जाने के लिये ललायत नहीं हैं?

भैया—नहीं, वह चाहते हैं, कि देशके सोसित, अछोप नान्ह जात भै दूसरे जो कमेरे हैं उनको गोल बाँधके भेजा जाय, तभी कमेरोंकी सरकार बन सकती है, तभी उन लोगोंका दुख दूर होगा।

दुखराम—तब तो भैया, इसी गोलमें नान्ह जात वालोंका ठाँव है, जो हमारी जातके लोग कांग्रेस वालोंके फेरमें पड़े, तो वही होगा जो इतने सालसे हमने देखा।

मंगरू—लेकिन सुनते हैं भैया, काग्रेसकी गोल और कमेरोंकी गोलसे अलग भी लोग अपना गोल बना रहे हैं।

दुखराम—मैं समझता हूँ भैया, जो मरकस बाबाके चेलोंके गोलमें नहीं हैं, वह जोंकोंके फंदेसे बच नहीं सकते।

संतोखी—परजा सोसलिस्त पार्टी, हिन्दू सभा, संघ सभा औ कितना-कितना नाम सुनते हैं।

मंगरू—संघ-सभा क्या संतोखी भाई?

भैया—संघ सभा नहीं संतोखी भाई, राष्ट्रीय सेवक संघ, वह लोग अपने दल-को कहते हैं। यह खाली सहरके रहवैया बाभन-छत्री लालाकी जमातके लोग हैं औ दक्खिनमें मराठे ब्राह्मणोंका जो एक बेर राज हुवा था, वैसा ही राज फिर बनाना चाहते हैं।

दुखराम—बाभन-छत्री लालाका राज अब हम नहीं होने देंगे। बहुत दिनों तक इन्होंने हमें नाकों चने चबवाया। लाठीमें हमारे सामने कोई नहीं ठहर सकता। जाँगर और मसक्कतके काम में हमारे सामने कोई खड़ा नहीं हो सकता।

भैया—औ विद्या पढ़नेका मौका मिलै, तो उसमें भी नान्ह जात वाले पीछे नहीं रह सकते। मुदा, बड़ी जात वाली जोकें हम लोगोंके पास पैसा-कौड़ी कहाँ रहने देती हैं, कि हम अपने लड़कोंको पढ़ावें।

संतोखी—तुमने कहा था भैया, कि हमारे देशमें सौमेंसे अस्सी नान्ह जात वाले लोग रहते हैं, जोंकोंके सबसे सताये यही लोग हैं, औ अब इकीस बरस-से बेसी उमरके सभी मरद-मेहरियोंको अपना बोट देके पंच और मेम्बर चुननेका अख्तियार है, फिर तो कमेरोंकी जीत निहचय है।

भैया—संतोखी भाई, नान्ह जात वालोंको बड़ी जात वालोने बहुत सताया है। लेकिन बड़ी जातके सभी लोगोंको इसका फल नहीं मिला। सब मजा जोंकोंने लिया। इसी वास्ते बड़ी जातके कमेरे, कलमघिसाई करने वाले औ दौरी-दुकान रखने वाले भूखे-दूखे लोग अब एकबट कर जोंकोंका राज खतम करना चाहते हैं। अखबारमें छपा है, कि कलकत्ताके पास चन्दरनगर शहरमें बोट देकर चुनाव हुआ था, जिसमें चौबीस पंचोंमें एक भी कांग्रेसका नहीं चुना गया।

मंगरू—वही चन्दरनगर न भैया, जहाँ पहले अंग्रेजोंका राज नहीं था?

भैया—हा, वहाँ फ्रांसीसियोंका राज था औ अभी थोड़े ही दिन हुआ उन्हें छोड़के जाना पड़ा। सहरका इंतिजाम करनेके लिये पचीस पंचोंको चुनना था। कांग्रेस वालोंने अपने पचीस आदमी खड़े किये 'उघरे अन्त न होंहिं निबाहू' जानते हो न, कांग्रेस वालोंका परदा उघड़ गया है। इसीलिये उनका एक भी आदमी चुनावमें नहीं जीता और सभी जगह कमेरोंकी गोलके आदमी चुन लिये गये।

दुखराम—हमको भैया वही करना है, जो चन्दरनगरमें हुआ। हम सोसित-संघके लोगोंसे कहेंगे, कि जो अपने भाइयोंकी भलाई चाहते हो, तो मरकस बाबाके चेलोंकी गोलमें मिल जावो।

मंगरू—और हम अछोप (अछूत) भाइयोंसे कहेंगे, कि अपनी जातके भभीखनों पर भरोसा मत करो। जो तुम्हारा इमान-धर्म ठीक है, तो उसी गोलमें चले जाओ, जिसमें कमुनिस्त हैं।

भैया—हाँ, दुख्खू भाई, मरकस बाबा कह गये हैं कमेरोंके पास अपने पैर की बेड़ियोंको छोड हारनेके लिए और है ही क्या और जीतने पर सारी दुनिया-का राज उन्हींके लिए है।

राहुल जी के ग्रंथ

यात्रा---(१) मेरी लदाख-यात्रा ।।।), (२) लंका ।।।-), (३) तिब्बत मे सव वर्ष ३।), (४) मेरी तिब्बत-यात्रा १।।।), (५) मेरी यूरोप-यात्रा १।।।), (६) जापान ३ (७) ईरान १।।), (८) रूस में पचीस मास ८), (९) यात्रा के पन्ने ६), (१०) यात्रावलि १ भाग ३), (११) घुमक्कड़-शास्त्र ३।), देश-दर्शन---(१२) सोवियत्-भूमि १,२ भा १०), (१३) सोवियत् मध्य-एशिया ५), (१४) किन्नर-देश में ६), (१५) दोर्जेलिंग परिचय ४), (१६) गढ़वाल १०), (१७) कुमाऊँ, (१८) नैपाल, (१९) जौनस देहरादून, (२०) हिमाचल-प्रदेश । साम्यवाद और राजनीति---(२१) बाईसव सदी १।), (२२) साम्यवाद ही क्यों १), (२३) तुम्हारी क्षय १), (२४) दिमागी गुलाम ।।।), (२५) क्या करें १), (२६) सोवियत् न्याय (अनुवाद १।)---(२७) राहुलजीव अपराध ।-), (२८) सो० सं० कम्यूनिस्त-पार्टी का इतिहास १,२ भाग ४), (२९) मानव समाज ४।।), (३०) आजकी समस्यायें ।।।), (३१) आज की राजनीति ६), (३२ भागो नही बदलो ३।), (३३) कम्युनिस्ट क्या चाहते हैं -)।।, । दर्शन---(३४ वैज्ञानिक भौतिकवाद २।), (३५) दर्शन-दिग्दर्शन १२), (३६) बौद्ध दर्शन ३।) विज्ञान---(३७) विश्व की रूपरेखा ५।।), साहित्य और इतिहास---(३८) पुरातत्व निबंधावलि २।), (३९) तिब्बत में बौद्धधर्म १।।), (४०) इस्लाम धर्म की रूपरेख १।।), (४१) हिंदी काव्यधारा (अपभ्रंश) ८), (४२) दखिनी हिंदी काव्यधा (४३) बौद्ध संस्कृति, (४४) मध्य-एशिया का इतिहास १,२ भाग (४५) आदि-हिंदी व कहानियाँ और गीतें २।), (४६) साहित्य-निबन्धावलि ३।।), । उपन्यास-कहान आदि---(४७) जीने के लिए ४।), (४८) सिंह सेनापति ३।), (४९) जय औधे ४), (५०) मधुर स्वप्न ५), (५१) विस्तृत यात्रा (५२) मतमी के बच्चे १।), (५३ वोल्गासे गंगा ४), (५४) बहुरंगी मधुपुरी ३), अनुवाद---(५५) शैतान की आँख २ (५६) विस्मृत के गर्भ में २।), (५७) जादू का शिल्क ३।), (५८) सोने की ढाल ३ (५९) दाखुंदा ५), (६०) जो दास थे ७।), (६१) अनाथ २।), (६२) अदीना, (६३ सूदखोर की मौत, (६४) शादी । जीवनी---(६५) राजस्थानी निवास ५), (६६ मेरी जीवन-यात्रा १,२ भाग १४), (६७) सर्दार पृथ्वीसिंह (६८) नये भारत के न नेता ४), (६९) स्तालिन ३), (७०) कार्ल मार्क्स, (७१) लेनिन, (७२) माओ चेत्से-तु (७३) स्वामी हरिकृष्णानन्द । बौद्ध धर्म---(७४) बुद्धचर्या (८) मज्झिमनिका ६), (७६) दीर्घनिकाय ६), (७७) विनयपिटक ६), (७८) धम्मपद ।।), । भोजपु नाटक---(७९---८०) तीन नाटक २), (८१-८६) पाँच अप्राप्य । संस्कृत---(संप दित या टीकाकृत)---(८७) विज्ञप्तिमात्रतासिद्धिः (अनूदिता) (८८) अधिधर्मकोश (टीका) ५), (८९) प्रमाणवार्त्तिकम्, (९०) प्रमाण वार्तिक-वृत्तिः प्रमाण-वार्त्ति स्ववृत्ति-टीका ३८), (९१) प्रमाणवार्त्तिकभाष्य, (९२) निदान-सूत्र (अनूदित), (९३ महापरिनिर्वाणसूत्र (अनूदित) । संस्कृत सिंहल---(९४-९८) १,२,३,४५ पुस्तकें तिब्बती---(९९) तिब्बती बालशिक्षा ।), (१००-२) तिब्बती पाठावलि १,२, (१०३) तिब्बती व्याकरण १) । कोश---(१०४) राष्ट्र-भाषा कोष ५), अँगरेजी-

कि ता ब घ र, म ह ल, इ ला हा बा द